"અહો ! શ્રુતજ્ઞાનમ્" ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર ૧૫૫

ઉણાદી ગણ વિવૃત્તિ

: દ્રવ્ય સહાયક :

શાસન સમ્રાટ પૂ. આ. શ્રી નેમીસૂરીશ્વરજી મ.સા. સમુદાયના
પૂ. આ. શ્રી શીલચંદ્રસૂરીશ્વરજી મ.સા.ની પ્રેરણાથી
શ્રી તૃપ્તિ જૈન શ્રાવિકા ઉપાશ્રય, ભાવનગરના
જ્ઞાનખાતાની ઉપજમાંથી

: સંયોજક :

શાહ બાબુલાલ સરેમલ બેડાવાળા
શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર
શા. વિમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન
હીરાજૈન સોસાયટી, સાબરમતી, અમદાવાદ-૫
(મો.) 9426585904 (ઓ.) 22132543

સંવત ૨૦૬૯ ઈ. ૨૦૧૩

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६५ (ई. 2009) सेट नं.-१

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

ક્રમાંક	પુસ્તકનું નામ	કર્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
001	श्री नंदीसूत्र अवचूरी	पू. विक्रमसूरिजी म.सा.	238
002	श्री उत्तराध्ययन सूत्र चूर्णी	पू. जिनदासगणि चूर्णीकार	286
003	श्री अर्हद्गीता-भगवद्गीता	पू. मेघविजयजी गणि म.सा.	84
004	श्री अर्हच्चूडामणि सारसटीकः	पू. भद्रबाहुस्वामी म.सा.	18
005	श्री यूक्ति प्रकाशसूत्रं	पू. पद्मसागरजी गणि म.सा.	48
006	श्री मानतुङ्गशास्त्रम्	पू. मानतुंगविजयजी म.सा.	54
007	अपराजितपृच्छा	श्री बी. भट्टाचार्य	810
008	शिल्प स्मृति वास्तु विद्यायाम्	श्री नंदलाल चुनिलाल सोमपुरा	850
009	शिल्परत्नम् भाग-१	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	322
010	शिल्परत्नम् भाग-२	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	280
011	प्रासादतिलक	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	162
012	काश्यशिल्पम्	श्री विनायक गणेश आपटे	302
013	प्रासादमञ्जरी	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	156
014	राजवल्लभ याने शिल्पशास्त्र	श्री नारायण भारती गोंसाई	352
015	शिल्पदीपक	श्री गंगाधरजी प्रणीत	120
016	वास्तुसार	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	88
017	दीपार्णव उत्तरार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	110
018	જિનપ્રાસાદ માર્તણ્ડ	શ્રી નંદલાલ ચુનીલાલ સોમપુરા	498
019	जैन ग्रंथावली	श्री जैन श्वेताम्बर कोन्फ्रन्स	502
020	હીરકલશ જૈન જ્યોતિષ	શ્રી હિમ્મતરામ મહાશંકર જાની	454
021	न्यायप्रवेशः भाग-१	श्री आनंदशंकर बी. ध्रुव	226
022	दीपार्णव पूर्वार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	640
023	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-१	पू. मुनिचंद्रसूरिजी म.सा.	452
024	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-२	श्री एच. आर. कापडीआ	500
025	प्राकृत व्याकरण भाषांतर सह	श्री बेचरदास जीवराज दोशी	454
026	तत्त्वोपप्लवसिंहः	श्री जयराशी भट्ट, बी. भट्टाचार्य	188
027	शक्तिवादादर्शः	श्री सुदर्शनाचार्य शास्त्री	214
028	क्षीरार्णव	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	414
029	वेधवास्तु प्रभाकर	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	192

030	**शिल्परत्नाकर**	**श्री नर्मदाशंकर शास्त्री**	**824**
031	**प्रासाद मंडन**	**पं. भगवानदास जैन**	**288**
032	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-१**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**520**
033	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-२**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**578**
034	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-३ (१)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**278**
035	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-3 (२) (३)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**252**
036	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-५**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**324**
037	વાસ્તુનિઘંટુ	પ્રભાશંકર ઓઘડભાઈ સોમપુરા	302
038	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૧	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	196
039	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૨	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	190
040	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૩	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	202
041	સપ્તસન્ધાન મહાકાવ્યમ્	પૂ. વિજયઅમૃતસૂરિશ્વરજી	480
042	સપ્તભઙ્ગીમિમાંસા	પૂ. પં. શિવાનન્દવિજયજી	228
043	ન્યાયાવતાર	સતિષચંદ્ર વિદ્યાભૂષણ	60
044	વ્યુત્પત્તિવાદ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	218
045	સામાન્યનિર્યુક્તિ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	190
046	સપ્તભઙ્ગીનયપ્રદીપ બાલબોધિનીવિવૃત્તિઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	138
047	વ્યુત્પત્તિવાદ શાસ્ત્રાર્થકલા ટીકા	શ્રીવેણીમાધવ શાસ્ત્રી	296
048	નયોપદેશ ભાગ-૧ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	210
049	નયોપદેશ ભાગ-૨ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	274
050	ન્યાયસમુચ્ચય	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	286
051	સ્યાદ્યાર્થપ્રકાશઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	216
052	દિન શુદ્ધિ પ્રકરણ	પૂ. દર્શનવિજયજી	532
053	બૃહદ્ ધારણા યંત્ર	પૂ. દર્શનવિજયજી	113
054	જ્યોતિર્મહોદય	સં. પૂ. અક્ષયવિજયજી	112

શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર

સંયોજક – બાબુલાલ સરેમલ શાહ

શાહ વીમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન

હીરાજૈન સોસાયટી, રામનગર, સાબરમતી, અમદાવાદ-૦૫.

(મો.) ૯૪૨૬૫૮૫૯૦૪ (ઓ) ૨૨૧૩૨૫૪૩ (ઇ-મેલ) ahoshrut.bs@gmail.com

અહો શ્રુતજ્ઞાનમ્ ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર – સંવત ૨૦૬૬ (ઈ. ૨૦૧૦) – સેટ નં-૨

પ્રાયઃ જીર્ણ અપ્રાપ્ય પુસ્તકોને સ્કેન કરાવીને ડી.વી.ડી. બનાવી તેની યાદી.

આ પુસ્તકો www.ahoshrut.org વેબસાઇટ પરથી પણ ડાઉનલોડ કરી શકાશે.

ક્રમ	પુસ્તકનું નામ	ભાષા	કર્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
055	श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहद्न्यास अध्याय-६	सं	पू. लावण्यसूरिजी म.सा.	296
056	विविध तीर्थ कल्प	सं	पू. जिनविजयजी म.सा.	160
057	ભારતીય જૈન શ્રમણ સંસ્કૃતિ અને લેખનકળા	ગુજ.	पू. पूण्यविजयजी म.सा.	164
058	सिद्धान्तलक्षणगूढार्थ तत्त्वलोकः	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	202
059	व्याप्ति पञ्चक विवृत्ति टीका	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	48
060	જૈન સંગીત રાગમાળા	ગુ.	श्री मांगरोळ जैन संगीत मंडळी	306
061	चतुर्विंशतीप्रबन्ध (प्रबंध कोश)	सं	श्री रसिकलाल एच. कापडीआ	322
062	व्युत्पत्तिवाद आदर्श व्याख्यया संपूर्ण ६ अध्याय	सं	श्री सुदर्शनाचार्य	668
063	चन्द्रप्रभा हेमकौमुदी	सं	पू. मेघविजयजी गणि	516
064	विवेक विलास	सं/ગુ.	श्री दामोदर गोविंदाचार्य	268
065	पञ्चशती प्रबोध प्रबंध	सं	पू. मृगेन्द्रविजयजी म.सा.	456
066	सन्मतितत्त्वसोपानम्	सं	पू. लब्धिसूरिजी म.सा.	420
067	ઉપદેશમાલા દોઘટ્ટી ટીકા ગુર્જરાનુવાદ	ગુજ.	पू. हेमसागरसूरिजी म.सा.	638
068	मोहराजापराजयम्	सं	पू. चतुरविजयजी म.सा.	192
069	क्रियाकोश	सं/हिं	श्री मोहनलाल बांठिया	428
070	कालिकाचार्यकथासंग्रह	सं/ગુ.	श्री अंबालाल प्रेमचंद	406
071	सामान्यनिरुक्ति चंद्रकला कलाविलास टीका	सं.	श्री वामाचरण भट्टाचार्य	308
072	जन्मसमुद्रजातक	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	128
073	मेघमहोदय वर्षप्रबोध	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	532
074	જૈન સામુદ્રિકનાં પાંચ ગ્રંથો	ગુજ.	श्री हिम्मतराम महाशंकर जानी	376

075	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રૂમ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	374
076	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રૂમ ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	238
077	સંગીત નાટ્ય રૂપાવલી	ગુજ.	**श्री विद्या साराभाई नवाब**	194
078	ભારતનાં જૈન તીર્થો અને તેનું શિલ્પસ્થાપત્ય	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	192
079	શિલ્પ ચિન્તામણિ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री मनसुखलाल भुदरमल**	254
080	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	260
081	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	238
082	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૩	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	260
083	આયુર્વેદના અનુભૂત પ્રયોગો ભાગ-૧	ગુજ.	**पू. कान्तिसागरजी**	114
084	કલ્યાણ કારક	ગુજ.	**श्री वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री**	910
085	**विश्वलोचन कोश**	**सं./हिं**	**श्री नंदलाल शर्मा**	436
086	કથા રત્ન કોશ ભાગ-1	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	336
087	કથા રત્ન કોશ ભાગ-2	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	230
088	હસ્તસઞ્જીવનમ્	સં.	**पू. मेघविजयजीगणि**	322
089	ઐન્દ્રચતુર્વિંશતિકા	સં.	**पू.यशोविजयजी, पू. पुण्यविजयजी**	114
090	સમ્મતિ તર્ક મહાર્ણવાવતારિકા	સં.	**आचार्य श्री विजयदर्शनसूरिजी**	560

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६७ (ई. 2011) सेट नं.-३

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टीकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
91	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-१	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	272
92	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-२	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	240
93	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-३	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	254
94	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-४	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	282
95	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-५	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	118
96	पवित्र कल्पसूत्र	पुण्यविजयजी	सं./अं	साराभाई नवाब	466
97	समराङ्गण सूत्रधार भाग-१	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	342
98	समराङ्गण सूत्रधार भाग-२	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	362
99	भुवनदीपक	पद्मप्रभसूरिजी	सं.	वेंकटेश प्रेस	134
100	गाथासहस्त्री	समयसुंदरजी	सं.	सुखलालजी	70
101	भारतीय प्राचीन लिपीमाला	गौरीशंकर ओझा	हिन्दी	मुन्शीराम मनोहरराम	316
102	शब्दरत्नाकर	साधुसुन्दरजी	सं.	हरगोविन्ददास बेचरदास	224
103	सुबोधवाणी प्रकाश	न्यायविजयजी	सं./गु	हेमचंद्राचार्य जैन सभा	612
104	लघु प्रबंध संग्रह	जयंत पी. ठाकर	सं.	ओरीएन्ट इन्स्टीट्युट बरोडा	307
105	जैन स्तोत्र संचय-१-२-३	माणिक्यसागरसूरिजी	सं,	आगमोद्धारक सभा	250
106	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-१,२,३	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	514
107	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-४,५	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	454
108	न्यायसार – न्यायतात्पर्यदीपिका	सतिषचंद्र विद्याभूषण	सं.	एसियाटीक सोसायटी	354
109	जैन लेख संग्रह भाग-१	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	337
110	जैन लेख संग्रह भाग-२	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	354
111	जैन लेख संग्रह भाग-३	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	372
112	जैन धातु प्रतिमा लेख भाग-१	कांतिविजयजी	सं./हि	जिनदत्तसूरि ज्ञानभंडार	142
113	जैन प्रतिमा लेख संग्रह	दौलतसिंह लोढा	सं./हि	अरविन्द धामणिया	336
114	राधनपुर प्रतिमा लेख संदोह	विशालविजयजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	364
115	प्राचिन लेख संग्रह-१	विजयधर्मसूरिजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	218
116	बीकानेर जैन लेख संग्रह	अगरचंद नाहटा	सं./हि	नाहटा ब्रधर्स	656
117	प्राचीन जैन लेख संग्रह भाग-१	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	122
118	प्राचिन जैन लेख संग्रह भाग-२	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	764
119	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-१	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
120	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-२	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
121	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-३	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	540
122	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-१	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	274
123	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-४	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	414
124	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-५	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	400
125	कलेक्शन ऑफ प्राकृत एन्ड संस्कृत इन्स्क्रीप्शन्स	पी. पीटरसन	अं.	भावनगर आर्चीऑलॉजीकल डिपा.	320
126	विजयदेव माहात्म्यम्	जिनविजयजी	सं.	जैन सत्य संशोधक	148

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६८ (ई. 2012) सेट नं.-४

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	भाषा	प्रकाशक	पृष्ठ
127	महाप्रभाविक नवस्मरण	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	754
128	जैन चित्र कल्पलता	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	84
129	जैन धर्मनो प्राचीन इतिहास भाग-२	हीरालाल हंसराज	गुज.	हीरालाल हंसराज	194
130	ओपरेशन इन सर्च ओफ सं. मेन्यु. भाग-६	पी. पीटरसन	अंग्रेजी	एशियाटीक सोसायटी	171
131	जैन गणित विचार	कुंवरजी आणंदजी	गुज.	जैन धर्म प्रसारक सभा	90
132	दैवज्ञ कामधेनु (प्राचिन ज्योतिष ग्रंथ)	शील खंड	सं.	ब्रज. बी. दास बनारस	310
133	करण प्रकाशः	ब्रह्मदेव	सं./अं.	सुधाकर द्विवेदि	276
134	न्यायविशारद महो. यशोविजयजी स्वहस्तलिखित कृति संग्रह	यशोदेवसूरिजी	गुज.	यशोभारती प्रकाशन	69
135	भौगोलिक कोश-१	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	100
136	भौगोलिक कोश-२	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	136
137	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	266
138	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	244
139	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	274
140	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	168
141	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	282
142	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	182
143	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-१	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	384
144	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-२	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	376
145	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-३	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	387
146	भाषवति	शतानंद मारछता	सं./हि	एच.बी. गुप्ता एन्ड सन्स बनारस	174
147	जैन सिद्धांत कौमुदी (अर्धमागधी व्याकरण)	रत्नचंद्र स्वामी	प्रा./सं.	भैरोदान सेठीया	320
148	मंत्रराज गुणकल्प महोदधि	जयदयाल शर्मा	हिन्दी	जयदयाल शर्मा	286
149	फक्कीका रत्नमंजूषा-१, २	कनकलाल ठाकूर	सं.	हरिकृष्ण निबंध	272
150	अनुभूत सिद्ध विशायंत्र (छ कल्प संग्रह)	मेघविजयजी	सं./गुज	महावीर ग्रंथमाळा	142
151	सारावलि	कल्याण वर्धन	सं.	पांडुरंग जीवाजी	260
152	ज्योतिष सिद्धांत संग्रह	विश्वेश्वरप्रसाद द्विवेदी	सं.	ब्रीजभूषणदास बनारस	232
153	ज्ञान प्रदीपिका तथा सामुद्रिक शास्त्रम्	रामव्यास पान्डेय	सं.	जैन सिद्धांत भवन	160
	नूतन संकलन				
१	आ. चंद्रसागरसूरिजी ज्ञानभंडार – उज्जैन	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	
२	श्री गुजराती श्वे.मू. जैन संघ-हस्तप्रत भंडार – कलकत्ता	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६९ (ई. 2013) सेट नं.-५

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	विषय	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
154	उणादि सूत्रो ओफ हेमचंद्राचार्य	पू. हेमचंद्राचार्य	व्याकरण	संस्कृत	जोहन क्रिष्टे	304
155	उणादि गण विवृत्ति	पू. हेमचंद्राचार्य	व्याकरण	संस्कृत	पू. मनोहरविजयजी	122
156	प्राकृत प्रकाश-सटीक	भामाह	व्याकरण	प्राकृत	जय कृष्णदास गुप्ता	208
157	द्रव्य परिक्षा और धातु उत्पत्ति	ठक्कर फेरू	धातु	संस्कृत /हिन्दी	भंवरलाल नाहटा	70
158	आरम्भसिध्धि – सटीक	पू. उदयप्रभदेवसूरिजी	ज्योतीष	संस्कृत	पू. जितेन्द्रविजयजी	310
159	खंडहरो का वैभव	पू. कान्तीसागरजी	शील्प	हिन्दी	भारतीय ज्ञानपीठ	462
160	बालभारत	पू. अमरचंद्रसूरिजी	काव्य	संस्कृत	पं. शीवदत्त	512
161	गिरनार माहात्म्य	दौलतचंद परषोत्तमदास	तीर्थ	संस्कृत /गुजराती	जैन पत्र	264
162	गिरनार गल्प	पू. ललितविजयजी	तीर्थ	संस्कृत/गुजराती	हंसकविजय फ्री लायब्रेरी	144
163	प्रश्नोत्तर सार्ध शतक	पू. क्षमाकल्याणविजयजी	प्रकरण	हिन्दी	साध्वीजी विचक्षणाश्रीजी	256
164	भारतिय संपादन शास्त्र	मूलराज जैन	साहित्य	हिन्दी	जैन विद्याभवन, लाहोर	75
165	विभक्त्यर्थ निर्णय	गिरिधर झा	न्याय	संस्कृत	चौखम्बा प्रकाशन	488
166	व्योम वती-१	शिवाचार्य	न्याय	संस्कृत	संपूर्णानंद संस्कृत युनिवर्सिटी	226
167	व्योम वती-२	शिवाचार्य	न्याय	संस्कृत	संपूर्णानंद संस्कृत विद्यालय	365
168	जैन न्यायखंड खाद्यम्	उपा. यशोविजयजी	न्याय	संस्कृत /हिन्दी	बद्रीनाथ शुक्ल	190
169	हरितकाव्यादि निघंटू	भाव मिश्र	आयुर्वेद	संस्कृत /हिन्दी	शीव शर्मा	480
170	योग चिंतामणि-सटीक	पू. हर्षकीर्तिसूरिजी	आयुर्वेद	संस्कृत /हिन्दी	लक्ष्मी वेंकटेश प्रेस	352
171	वसंतराज शकुनम्	पू. भानुचन्द्र गणि टीका	ज्योतिष	संस्कृत	खेमराज कृष्णदास	596
172	महाविद्या विडंबना	पू. भुवनसुन्दरसूरि टीका	ज्योतिष	संस्कृत	सेन्ट्रल लायब्रेरी	250
173	ज्योतिर्निबन्ध	शिवराज	ज्योतिष	संस्कृत	आनंद आश्रम	391
174	मेघमाला विचार	पू. विजयप्रभसूरिजी	ज्योतिष	संस्कृत/गुजराती	मेघजी हीरजी	114
175	मुहूर्त चिंतामणि-सटीक	रामकृत प्रमिताक्षय टीका	ज्योतिष	संस्कृत	अनूप मिश्र	238
176	मानसोल्लास सटीक-१	भुलाकमल्ल सोमेश्वर	ज्योतिष	संस्कृत	ओरिएन्ट इन्स्टीट्यूट	166
177	मानसोल्लास सटीक-२	भुलाकमल्ल सोमेश्वर	ज्योतिष	संस्कृत	ओरिएन्ट इन्स्टीट्यूट	368
178	ज्योतिष सार प्राकृत	भगवानदास जैन	ज्योतिष	प्राकृत/हिन्दी	भगवानदास जैन	88
179	मुहूर्त संग्रह	अंबालाल शर्मा	ज्योतिष	गुजराती	शास्त्री जगन्नाथ परशुराम द्विवेदी	356
180	हिन्दु एस्ट्रोलोजी	पिताम्बरदास त्रीभोवनदास	ज्योतिष	गुजराती	पिताम्बरदास टी. महेता	168

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543. E-mail : ahoshrut.bs@gmail.com
शाह विमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-380005.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०७१ (ई. 2015) सेट नं.-६

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की डिजिटाइझेशन द्वारा डीवीडी बनाई उसकी सूची।

यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टिकाकार	विषय	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
181	काव्यप्रकाश भाग-१	पूज्य मम्मटाचार्य कृत		संस्कृत	पूज्य जिनविजयजी	364
182	काव्यप्रकाश भाग-२	पूज्य मम्मटाचार्य कृत		संस्कृत	पूज्य जिनविजयजी	222
183	काव्यप्रकाश उल्लास-२ अने ३	उपा. यशोविजयजी		संस्कृत	यशोभारति जैन प्रकाशन समिति	330
184	नृत्यरत्न कोश भाग-१	श्री कुम्भकर्ण नृपति		संस्कृत	श्री रसीकलाल छोटालाल	156
185	नृत्यरत्न कोश भाग-२	श्री कुम्भकर्ण नृपति		संस्कृत	श्री रसीकलाल छोटालाल	248
186	नृत्याध्याय	श्री अशोकमलजी		संस्कृत /हिन्दी	श्री वाचस्पति गैरोभा	504
187	संगीरत्नाकर भाग-१ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	448
188	संगीरत्नाकर भाग-२ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	444
189	संगीरत्नाकर भाग-३ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	616
190	संगीरत्नाकर भाग-४ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	632
191	संगीत मकरन्द	नारद		संस्कृत	श्री मंगेश रामकृष्ण तेलंग	84
192	संगीत नृत्य अने नाट्य संबंधी जैन ग्रंथो	श्री हीरालाल कापडीया		गुजराती	मुक्ति-कमल-जैन मोहन ग्रंथमाला	244
193	न्यायबिंदु सटीक	पूज्य धर्मोतराचार्य		संस्कृत	श्री चंद्रशेखर शास्त्री	220
194	शीघ्रबोध भाग-१ थी ५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	422
195	शीघ्रबोध भाग-६ थी १०	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	304
196	शीघ्रबोध भाग-११ थी १५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	446
197	शीघ्रबोध भाग-१६ थी २०	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	414
198	शीघ्रबोध भाग-२१ थी २५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	409
199	अध्यात्मसार सटीक	पूज्य गंभीरविजयजी		संस्कृत/गुजराती	नरोत्तमदास भानजी	476
200	छन्दोनुशासन	एच. डी. वेलनकर		संस्कृत	सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ	444
201	मग्गानुसारिया	श्री डी. एस शाह		संस्कृत/गुजराती	ज्ञातपुत्र भगवान महावीर ट्रस्ट	146

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543. E-mail : ahoshrut.bs@gmail.com

शाह विमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-380005.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०७२ (ई. 201६) सेट नं.-७

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की डिजिटाइझेशन द्वारा डीवीडी बनाई उसकी सूची ।

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टिकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
202	आचारांग सूत्र भाग-१ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	285
203	आचारांग सूत्र भाग-२ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	280
204	आचारांग सूत्र भाग-३ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	315
205	आचारांग सूत्र भाग-४ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	307
206	आचारांग सूत्र भाग-५ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	361
207	सुयगडांग सूत्र भाग-१ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	301
208	सुयगडांग सूत्र भाग-२ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	263
209	सुयगडांग सूत्र भाग-३ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	395
210	सुयगडांग सूत्र भाग-४ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	386
211	सुयगडांग सूत्र भाग-५ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	351
212	रायपसेणिय सूत्र	श्री मलयगिरि	गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	260
213	प्राचीन तीर्थमाळा भाग-१	आ.श्री धर्मसूरि	सं./गुजराती	श्री यशोविजयजी ग्रंथमाळा	272
214	धातु पारायणम्	श्री हेमचंद्राचार्य	संस्कृत	आ. श्री मुनिचंद्रसूरि	530
215	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-१	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	648
216	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-२	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	510
217	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-३	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	560
218	तार्किक रक्षा सार संग्रह	आ. श्री वरदराज	संस्कृत	राजकीय संस्कृत पुस्तकालय	427
219	वादार्थ संग्रह भाग-१ (स्फोट तत्त्व निरूपण, स्फोट चन्द्रिका, प्रतिपादिक संज्ञावाद, वाक्यवाद, वाक्यदीपिका)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	88
220	वादार्थ संग्रह भाग-२ (षट्कारक विवेचन, कारक वादार्थ, समासवादार्थ, वकारवादार्थ)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	78
221	वादार्थ संग्रह भाग-३ (वादसुधाकर, लघुविभक्त्यर्थ निर्णय, शाब्दबोधप्रकाशिका)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	112
222	वादार्थ संग्रह भाग-४ (आख्यात शक्तिवाद छः टीका)	रघुनाथ शिरोमणि	संस्कृत	महादेव शर्मा	228

卐 श्रीविजयनेमिसूरीश्वरग्रन्थमालारत्नम् ६५ 卐

॥ आशैशवशीलशालिभ्यां श्रीविजयनेमि-लावण्यसूरीश्वराभ्यां नमः ॥

कलिकालसर्वज्ञश्रीहेमचन्द्रसूरिभगवत्प्रणीता स्वोपज्ञा

श्रीउणादिगणविवृतिः

विविधपरिशिष्टादिना समलङ्कृता ।

संपादकः

शासनसम्राट्-जगद्गुरु-सूरिचक्रचक्रवर्ति-सर्वतन्त्रस्वतन्त्र-तपोगच्छाधिपति-विविधतीर्थोद्धारक-

श्रीमद्विजयनेमिसूरीश्वर-पट्टालंकार-साधिकसप्तशतश्लोकप्रमित-

नूतनसंस्कृतसाहित्यसर्जकव्याकरणवाचस्पति-शास्त्रविशारद-कविरत्न-

साहित्यसम्राट् श्रीमद्विजयलावण्यसूरी-

श्वरान्तेवासि-विद्वद्विनेयरत्न-

मुनिराजश्रीमनोहरविजयः ।

प्रकाशकः

श्रीज्ञानोपासकसमिति

श्रीविजयलावण्यसूरीश्वरज्ञानमन्दिर

बोटाद (सौराष्ट्र)

मूल्यम्–पञ्चरूप्यकाणि

वीर संवत् २४९४]　　नेमि संवत् १९　　[वि० संवत् २०२४

प्रथमावृत्तिः ।

Aho ! Shrutgyanam

प्रकाशक:

चिमनलाल हरिचन्द बगडिया

प्रमुख

श्रीज्ञानोपासकसमिति

श्रीविजयलावण्यसूरीश्वरज्ञानमन्दिर

बोटाद (सौराष्ट्र)

卐 प्राप्ति-स्थान 卐

[१]
श्रीविजयलावण्यसूरीश्वरज्ञानमन्दिर
बोटाद
[सौराष्ट्र]

[२]
सरस्वती पुस्तक भण्डार
रतनपोल, हाथीखाना,
अहमदाबाद [गुजरात]

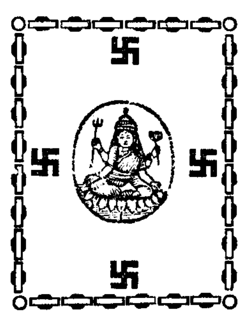

मुद्रक:

कुम्भट प्रिन्टर्स

घोड़ों का चौक, जोधपुर (राजस्थान)

Aho ! Shrutgyanam

प्रकाशकीय निवेदन

स्व० प० पू० सूरिसम्राट्ना सुप्रसिद्ध पट्टालंकार व्याकरणवाचस्पति–शास्त्रविशारद– कविरत्न– साहित्यसम्राट् स्व० प० पू० आ० **श्रीविजय-लावण्यसूरीश्वरजी** म० श्री कालधर्म पाम्या पछी अमे तेमना रचेला ग्रंथो वहेली तके प्रकाशित करवानो निर्णय लीधो हतो, तेमांये 'श्रीसिद्ध-हेमचन्द्रशब्दानुशासन' उपर रचायेला न्यासने प्रथम स्थान आप्युं। केटलाक प्रेसोमां काम आप्युं पण बधे स्थले परिस्थिति प्रतिकूल बनती गई परिणामे न्यासने प्रकाशित करवानुं काम विलंबे पडतुं गयुं, हजीये ए काम व्यवस्थित करतां थोडो समय लागशे एम अमारे सखेद जणाववुं पडे छे।

आजे अमे आ '**श्रीउणादिसूत्र-विवृति**' ग्रंथ प्रकाशित करी रह्या छीए, तेना उपर न्यास रचायेलो नथी, एक मात्र 'तत्त्वप्रकाशिका' नामक बृहद्वृत्ति, जे कलिकालसर्वज्ञ पू० आ० **श्रीहेमचन्द्रसूरीश्वरजी** म० श्रीए रचेली उपलब्ध थाय छे ते ज प्रकाशित करी रह्या छीए।

पू० आ० **श्रीविजयलावण्यसूरीश्वरजी**ना शिष्यरत्न मुनिराज **श्रीमनोहरविजयजी**ए आ ग्रंथनुं संपादन खूब कुशलताथी कर्युं छे, तेमणे विद्वानोने उपयोगी थाय ए रीते केटलांक परिशिष्टो वगेरेथी आ ग्रंथने विभूषित कर्यो छे। आशा राखीए के मुनिराज श्री अमने आ कार्यमां आ रीते सदा सहायक थया रहे।

लि०

चिमनलाल हरिचन्द बगडिया

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam

॥ अर्हँ ॥

॥ आशैशवशीलशालिने श्रीनेमीनाथ नमोनमः ॥

श्रीकुमारपालभूपाललालितचरणरेणुना कलिकालसर्वज्ञेन
श्रीहेमचन्द्रसूरिभगवता प्रणीतं–

स्वोपज्ञोणादिगणसूत्रविवरणम् ॥

श्रीसिद्धहेमचन्द्र-व्याकरणनिवेशिनामुणादीनाम् ।
आचार्य**हेमचन्द्रः**, करोति विवृत्तिं प्रणम्यार्हम् ॥१॥

कृ-वा-पा-जि-स्वदि-साध्य-ऽशौ-दृ-स्ना-सनि-जा-निरहीणभ्य उण् ॥१॥

करोत्यादिभ्यो धातुभ्यः सत्यर्थे वर्तमानेभ्यः संप्रदानाऽपादानाभ्यामन्यत्र कारके भावे च संज्ञायां विषये बहुलमुण् प्रत्ययो भवति । डुकृंग् करणे, कृंगट् हिंसायां वा, निरनुबन्धग्रहणे सामान्यग्रहणात्; करोति करति कृणोति वा– कारुः– कारी नापितादिः, इन्द्रश्च । वांक् गति-गन्धनयोः, पैं ओवैं शोषणे वा, वाति वायति वा द्रव्याणि-वायुः– नभस्वान् । पां पाने, पिबन्त्यनेन तैलादि द्रव्यं– पायुः– अपानमुपस्थश्च; पाति-पायत्योस्त्वर्थासंगतेर्न ग्रहणम् । जि अभिभवे, जयत्यनेन रोगान् श्लेष्माणं वा– जायुः– औषधं, पित्तं वा । ष्वदि आस्वादने, स्वद्यत इदमनेन वा– स्वादुः रुच्यः, स्वदनं वा– स्वादुः । साधंट् संसिद्धौ, उत्तमक्षमादिभिस्तपोविशेषैर्भावितात्मा साध्नोति– साधुः, सम्यग्दर्शनादिभिः परमपदं साधयति वा– साधुः– संयतः, उभयलोकफलं साधयति वा– साधुः– धर्मशीलः । अशौटि व्याप्तौ, अश्नुते तेजसा सर्वं केदारं वा– इत्याशुः– सूर्यो, व्रीहिश्च, अशनं वा– आशु– क्षिप्रम्, अश्नुत इति वा– आशुः– शीघ्रगामी शीघ्रकारी च । दृ भये, दृश् विदारणे वा, दरति दृणाति दीर्यते वा– दारु– काष्ठम्, भव्यं च । ष्णें वेष्टने, स्नायति– स्नायुः– अस्थिसंहननम् । षन भक्तौ, षणूयी दाने वा, सनति सनोति वा मृगादीनिति– सानुः– पर्वतैकदेशः । जनैचि प्रादुर्भावे, जायतेऽनेनाकुञ्चनादि– जानु– उरुजङ्घासन्धिमण्डलम्, जानीत्याकारनिर्देशात् "न जन-वधः" [४. ३. ५४.] इति प्रतिषिद्धाऽपि वृद्धिर्भवति । रह त्यागे, रहति गृहीत्वा सूर्याचन्द्रमसौ स्वशरीरं वा– राहुः– सैंहिकेयः । इंण्क् गतौ, एति– आयुः– पुरुषः, शकटम्, औषधम्, जीवनम्, पुरूरवःपुत्रो वा; जरायुः– गर्भवेष्टनम्, जलमलं च, जटायुः– पक्षी, धनायुः– देशः, रसायुः– भ्रमरः, "संप्रदानात्चान्यत्रोणादयः" [५. १. १५.] इति यथायोगं प्रत्ययो वेदितव्यः ॥१॥

अः ॥२॥

सर्वस्माद् धातोर्यथाप्रयोगमकारः प्रत्ययो भवति । भवः, तरः, वरः, प्लवः, शयः, शरः, परः, करः, स्तवः, चरः, वहः, ॥२॥

म्लेच्छीडेर्ह्रस्वश्च वा ॥३॥

आभ्यामः प्रत्ययो भवति, दीर्घस्य च ह्रस्वो वा भवति । म्लेछ अव्यक्तायां वाचि, म्लिच्छः– मूकः, म्लेच्छः– कुमनुष्यजातिः । ईडिक् स्तुतौ, इड ईडश्च– देवताविशेषौ मेदिनी च ॥३॥

नञः क्रमि-गमि-शमि-खन्याकमिभ्यो डित् ॥४॥

नञः परेभ्य एभ्यो डित् अः प्रत्ययो भवति । क्रमू पादविक्षेपे, न क्रामति– नक्रः– जलचरो ग्राहः । गम्लृ गतौ, नगः– वृक्षः, पर्वतश्च । शमूच् उपशमे, नशः– यक्षः । खनूग् अवदारणे, नखः– करजः, नास्य खमस्तीति वा– नख इत्यपि । कमूङ् कान्तौ, नाकः– स्वर्गः, नात्राकमस्तीति– नाक इत्यपि, नखादित्वात् "अन् स्वरे" [३. २. १२९.] इत्यन् न भवति । डित्करणमन्त्यस्वरादिलोपार्थम् ॥४॥

तुदादि-विषि-गुहिभ्यः कित् ॥५॥

तुदादिभ्यो विषि-गुहिभ्यां च कित् अः प्रत्ययो भवति । तुदः, नुदः, क्षिपः, सुरः, बुधः, सिवः । सुरत् ऐश्वर्य-दीप्त्योः ।

Aho ! Shrutgyanam

तुदादिर्न धातुगणः, किं तर्हि ? भिन्न इति, तेन बुधादीनामिति लिङ्गपरिणामस्तु ज्ञेयः, शिवः, तुदादीनां यथासंभवं कारकविधिः । विष्लृंकी व्याप्तौ, वेवेष्टि– विषं– प्राणहरं द्रव्यम् । गुहौग् संवरणे, गूहति– गुहः– स्कन्दः, गुहा– पर्वतैकदेशः ॥५॥

विन्देर्नलुक् च ॥६॥

विन्देः कित् अः प्रत्ययो भवति, तत्संनियोगे नस्य लुक् च । विदु अवयवे, विदः– गोत्रकृद् वृक्षजातिश्च ॥६॥

कृगो द्वे च ॥७॥

करोतेः कित् अः प्रत्ययो भवति, अस्य च धातोर्द्वे रूपे भवतः । डुकृंग् करणे, चक्रं– रथाङ्गम्, आयुधं च ॥७॥

कनि-गदि-मनेः सरूपे ॥८॥

किदिति निवृत्तम्, एभ्योऽकारः प्रत्ययो भवति, एषां च सरूपे– समानरूपे द्वे उक्ती भवतः । कनै दीप्ति-कान्ति-गतिषु, कनति– दीप्यते– कङ्कनः– कान्तः । गद व्यक्तायां वाचि, गदति–अव्यक्तं वदति, गद्यते–अव्यक्तं कथ्यते वा– गद्गदः– अव्यक्तवाक्, गद्गदम्– अव्यक्तं वचनम् । मनिच् ज्ञाने, मन्मनः– अविस्पष्टवाक् । सरूपग्रहणं "व्यञ्जनस्यानादेर्लुक्" [४. १. ४४.] इत्यादिकार्यनिवृत्त्यर्थम् ॥८॥

ऋतष्टित् ॥९॥

ऋकारान्ताद् धातोरकारः प्रत्ययो भवति, स च बहुलं टित्, धातोश्च सरूपे द्वे रूपे भवतः । दॄश् विदारणे, दीर्यते भिद्यतेऽनेन श्रोत्रमिति– दर्दरः– वाद्यविशेषः, पर्वतश्च, दर्दरी– सस्यलुण्टिः । कॄत् विक्षेपे, कर्करः– क्षुद्राश्मा, कर्करी– गलन्तिका । वृग्श् वरणे, वर्वरः– म्लेच्छजातिः, वर्वरी– केशविशेषः । भृश्, भरणे, भर्भरः– छद्मवान्, भर्भरी– श्रीः । जॄष्च् जरसि, जर्जरः– अदृढः, जर्जरी– स्त्री । झॄषच् जरसि, झर्झरः– वाद्यविशेषः, झर्झरी– झल्लरिका । गॄत् निगरणे, गर्गरः– राजर्षिः, गर्गरी– महाकुम्भः । मॄश् हिंसायाम्, मर्मरः– शुष्कपत्रप्रकरः, तद्धर्माऽन्योऽपि, क्षोदासहिष्णुर्मर्मरोदानवश्च । 'मर्मरायां दूर्वायाम्' इत्यत्र टित्वेऽपि ङीर्न भवति बहुलाधिकारात् । तत एव च ऋकारान्तादपि– घृं सेचने, घर्घरः– सघोषोऽव्यक्तवाक्, घर्घरी– किङ्किणिका ॥९॥

किच्च ॥१०॥

ऋकारान्ताद्धातोर्यथादर्शनं किदकारः प्रत्ययो भवति, धातोश्च सरूपे द्वे रूपे भवतः । मॄश् हिंसायाम्, मूर्यतेऽनेनेति– मुर्मुरः– ज्वलदङ्गारचूर्णम् । पॄश् पालन-पूरणयोः, पूर्यते जलाधातेन– पुर्पुरः– फेनः । तॄ प्लवन-तरणयोः, तीर्यतेऽनेनास्मिन् वा– तितिरः– संक्रमः । भॄश् भर्जने च, भूर्यते– संचीयते– भुर्भुरः– संचयः । शॄश् हिंसायाम्, शीर्यते समंतात्– शिशिरः– पुञ्जः ॥१०॥

पॄ-पलिभ्यां टित् पिप् च पूर्वस्य ॥११॥

आभ्यां टिदः प्रत्ययो भवति, अनयोश्च सरूपे द्वे रूपे भवतः, पूर्वस्य च स्थाने 'पिप्' इत्यादेशो भवति । पॄश् पालन-पूरणयोः, पृणाति छायया– पिप्परी– वृक्षजातिः । पल गतौ, पलत्यातुरं– पिप्पली– औषधजातिः । टित्करणं ङ्यर्थम् ॥११॥

क्रमि-मथिभ्यां चन्-मनौ च ॥१२॥

आभ्यामः प्रत्ययो भवति, सरूपे च द्वे रूपे भवतः, पूर्वस्य च स्थाने यथासंख्यं 'चन्-मन्' इत्यादेशौ भवतः । क्रमू पादविक्षेपे, क्रामति सुखमनेनास्मिन् वा– चङ्क्रमः– संक्रमः । मथे विलोडने, मथति चित्तं रागिणां– मन्मथः– कामः ॥१२॥

गमेर्जम् च वा ॥१३॥

गमेरः प्रत्ययो भवति, सरूपे च द्वे रूपे भवतः, पूर्वस्य च 'जम्' इत्यादेशो वा भवति । गम्लृं गतौ, गच्छति– पादविहरणं करोति– जङ्गमः– चरः, गच्छत्यमाध्यस्थ्यमिति– गङ्गमः– चपलः ॥१३॥

अदुपान्त्य-ऋद्भ्यामश्चान्तः ॥१४॥

अकारोपान्त्याद् ऋकारान्ताच्च धातोरः प्रत्ययो भवति, सरूपे च द्वे रूपे भवतः, पूर्वस्य चान्तोऽकारो भवति । पल फल शल गतौ, शलशलः । सल गतौ । सलसलः । हल विलेखने, हलहलः । कलि शब्द-संख्यानयोः, कलकलः । मलि धारणे, मलमलः । घटिष् चेष्टायाम्, घटघटः । वद व्यक्तायां वाचि, वदवदः । पदिच् गतौ, पदपदः । ऋदन्तः डुकृंग् करणे, करकरः । मृत् प्राणत्यागे, मरमरः । दृङ्त् आदरे, दरदरः । सृं गतौ, सरसरः । वृग्ट् वरणे, वरवरः । अनुकरणशब्दा एते ॥१४॥

मषि-मसेर्वा ॥१५॥

आभ्यामः प्रत्ययो भवति, सरूपे च द्वे रूपे भवतः, पूर्वस्य चान्तोऽकारो वा भवति । मष हिंसायाम्, मषमषः, मष्मषः । मसैच् परिमाणे, मसमसः, मस्मसः ॥१५॥

हृ-सृ-फलि-कषेरा च ॥१६॥

एभ्योऽः प्रत्ययो भवति, सरूपे च द्वे रूपे भवतः, पूर्वस्य चान्त आकारो भवति । हृंग् हरणे, हरति– नयति शास्त्राण्यस्खलन् लक्ष्यं– हराहरः– योग्याचार्यः । सृं गतौ,

Aho ! Shrutgyanam

धावति वायुना नीयमानः समन्तात्– सरासरः– सारङ्गः । फल निष्पत्तौ, फलति– निष्पादयति नानाविधानि पुष्पफलानि– फलाफलम्– अरण्यम् । कष हिंसायाम्, कषति– विदारयति– कषाकषः– क्रमिजातिः ।।१६।।

इदुदुपान्त्याभ्यां किदिदुतौ च ।।१७।।

इकारोपान्त्यादुकारोपान्त्याच्च कित् अः प्रत्ययो भवति, सरूपे च द्वे रूपे भवतः, पूर्वस्य च यथासंख्यमिकारोकारौ चान्तौ भवतः । किलत् श्वैत्य– क्रीडनयोः, किलिकिलः । हिलत् हावकरणे, हिलिहिलः । शिलत् उञ्छे, शिलिशिलः । छुरत् छेदने, छुरुच्छुरः । मुरत् संवेष्टने, मुरुमुरः । घुरत् भीमार्थ-शब्दयोः, घुरुघुरः । पुरत् अग्रगमने, पुरुपुरः । सुरत् ऐश्वर्य-दीप्त्योः, सुरुसुरः । कुरत् शब्दे, कुरुकुरः । चुरण् स्तेये, चुरुचुरः । हुल हिंसा-संवरणयोश्च, हुलुहुलः । गुजत् शब्दे, गुजगुजः । गुडत् रक्षायाम्, गुडगुडः । कुटत् कौटिल्ये, कुटुकुटः । पुटत् संश्लेषणे, पुटुपुटः । कुणत् शब्दोपकरणयोः, कुणुकुणः । मुणत् प्रतिज्ञाने, मुणुमुणः । अनुकरणशब्दा एते ।।१७।।

जजल-तितल-काकोली-सरीसृपाऽऽदयः ।।१८।।

एते अप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । जल घात्ये, अस्य द्वित्वे पूर्वस्य जभावः, जजलः, यस्य जाजलिः पुत्रः । तिलत् स्नेहने, अस्य द्वित्वे पूर्वस्य च तिभावे धातोरिकारस्य अकारे– तितलः । कुल बन्धु-संस्त्यानयोः, अस्य द्वित्वे पूर्वस्य च काभावे– काकोली, क्षीरकाकोलीति च वल्लीजातिः । सृप्लृं गतौ, अस्य द्वित्वे गुणाभावे पूर्वस्य च सरीभावे– सरीसृपः– उरगजातिः । आदिग्रहणाद् यथादर्शनमन्येऽपि ।।१८।।

बहुलं गुण-वृद्धी चादेः ।।१९।।

धातोः कित् अः प्रत्ययो भवति, सरूपे च द्वे रूपे भवतः, पूर्वस्य चेकारावन्तौ भवतः, यथादर्शनं च गुण-वृद्धी भवतः । केलिकिलः, कैलिकिलश्च– हसनशीलः । हिलत् हावकरणे, हेलिहिलः, हैलिहिलश्च– विलसनशीलः । शेलिशिलः, शैलिशिलश्च । शुभि दीप्तौ शोभते पुनः पुनरिति– शोभुशुभः, शौभुशुभः । णुदंत् प्रेरणे, नुदति पुनः पुनरिति– नोदुनुदः, नौदुनुदः । गुडत् रक्षायाम्, गुलति– भ्राम्यति पुनः पुनरिति– गोलुगुलः, गौलुगुलः । बुलण् निमज्जने, बोलयति पुनः पुनरिति– बोलुबुलः, बौलुबुलः । तत्तद्धात्वर्थास्तच्छीला अनुवादविशेषा वैते ।।१९।।

णेर्लुप् ।।२०।।

धातोरप्रत्ययसन्नियोगे बहुलं णेर्लुप् भवति । वज्रं धारयतीति– वज्रधरः– इन्द्रः । एवं– चक्रधरः– विष्णुः, भूधरः– अद्रिः, जलधरः– मेघः । बाहुलकात् प्रत्ययान्तरेऽपि, देवयतीति– दिव्– द्यौः, व्योम, स्वर्गश्च । पुण्यं कारयन्तीति पुण्यकृतो देवाः, एवं– पर्णं शोषयतीति– पर्णशुट् ।

"वान्ति पर्णशुषो वातास्ततः पर्णमुचोऽपरे,
ततः पर्णरुहः पश्चात् ततो देवः प्रवर्षति ।।१।।

तथा– महतः कारयांचक्रुराक्रन्दान्' इति प्राप्ते 'महतश्चक्रुरत्क्रन्दान्' इति भवति । "महीपालवचः श्रुत्वा जुघुषुः पुष्यमाणवाः ।" घोषयांचक्रुरित्यर्थः ।।२०।।

भीण्-शलि-वलि-कल्यति-मर्च्यर्चि-मृजि-कु-तु-स्तु-दा-धा-रा-त्रा-का-पा-निहा-नञ्शुभ्यः कः ।।२१।।

एभ्यः कप्रत्ययो भवति । ञिभींक् भये, बिभेति दुन्दुभात् परस्माच्च– भेकः– मण्डूकः, कातरश्च; बिभेति वायोः– भेकः– मेघः । इंण्क् गतौ, एत्यद्वितीय इति– एकः असहायः, संख्या, प्रधानम्, असमानम्, अन्यश्च । पल फल शल गतौ, शलन्त्यात्मरक्षणाय तमिति– शल्कः– शरणम्; शलति त्यक्तं बहिरिति– शल्कं– गृहीतरसं शकलम्, शल्कः– काष्ठत्वक्, मलिनं च काष्ठम्, मुद्गरः करणं च । वलि संवरणे, वल्कः– दशनः, वासः, त्वक् च । कलि शब्द-संख्यानयोः, कल्कः– कषायः, दम्भः, पिष्टपिण्डश्च । अत सातत्यगमने, अत्कः– आत्मा, वायुः, व्याधितः, चन्द्रः, उत्पातश्च । मर्चः सौत्रो धातुः प्राप्तौ, मर्कः– देवदारुः, वायुः, दानवः, मनः, पन्नगः, विघ्नकारी च । "च-जः क-गम्" [२. १. ८६.] इति कत्वम् । अर्च पूजायाम्, अर्कः– सूर्यः, पुष्प जातिः, कु[भ्राट]टजातिश्च । मृजौक् शुद्धौ, मार्कः– वायुः । कुंक् शब्दे, कोकः– चक्रवाकः । तुंक् वृत्ति-हिंसा-पूरणेषु, तोकम्– अपत्यम् । ष्टुंग्क् स्तुतौ, स्तोकम्– अल्पम् । डुदांग्क् दाने, दाकः– यजमानः, यज्ञश्च । डुधांग्क् धारणे च, धाकः– ओदनः, अनड्वान्, अम्भः, स्तम्भश्च । रांक् दाने, राकः– दाता, अर्थः, सूर्यश्च; राका– पौर्णमासी, कुमाररजस्वला च । त्रैङ् पालने, त्राकः– धर्मः, शरणस्थानीयश्च । कैं शब्दे, काकः– वायसः । पां पाने, पांक् रक्षणे वा, पाकः– बालः, असुरः, पर्वतश्च । ओहांक् त्यागे, निहाकः– निःस्नेहः, निर्मोकश्च, निहाको– गोधा । शुं गतौ, न शवतीति– अशोकः ।।२१।।

विचि-पुषि-मुषि-शुष्यवि-सृ-वृ-शु-सु-भू-धू-मू-नी-वीभ्यः कित् ।।२२।।

एभ्यः कित् कः प्रत्ययो भवति । विचूंपी पृथग्भावे,

Aho ! Shrutgyanam

विक्कः– करिपोतः । पुषंच् पुष्टौ, पुष्कः– निशाकरः । मुषश् स्तेये, मुष्कः– चौरः, मांसलो वा, मुष्कौ– वृषणौ । शुषंच् शोषणे, शुष्कम्– अपगतरसम् । अव रक्षणादिषु, ऊकः– कुन्दुमः । 'सृं गतौ, सृकः– वायुः, बाणः, सृगालः, बकः, निरयश्च, सृका– आयुधविशेषः । वृग्ट् वरणे, वृङ्श् संभक्तौ वा, वृकः– मृगजातिः, आदित्यः, धूर्तः, जाठरश्चाग्निः । शुं गतौ, शुकः– कीरः, ऋषिश्च । षुंग्ट् अभिषवे, सुकः– निरामयः । भू सत्तायाम्, भूकः– कालः, छिद्रं च । धूत् विधूनने, धूग्ट् कम्पने धूग्श् कम्पने वा, धूकः– वायुः, व्याधिश्च; धूका–पताका । मूङ् बन्धने, मूकः– अवाक् । णींग् प्रापणे, नीकः– खगः, ज्ञाता च; नीका– उदकहारिका, ज्ञातिश्च । वींक् प्रजनादिषु, वीकः– वायुः, व्याधिः, नाशः, अर्थः, मनः, वसन्तश्च; वीका– पक्षिजातिः, नेत्रमलं च ।।२२।।

कृगो वा ।।२३।।

कृगः कः प्रत्ययो भवति, स च कित् वा भवति । डुकृंग् करणे, कर्कः– अग्निः, सारङ्गः, दर्भः, श्वेताश्वश्च । कृकः– शिरोग्रीवम् ।।२३।।

घु-यु-हि-पि-तु-शोर्दीर्घश्च ।।२४।।

एभ्यः कित् कः प्रत्ययो भवति, एषां च दीर्घो भवति । घुङ् शब्दे, घूकः– कौशिकः । युक् मिश्रणे, यूका– क्षुद्रजन्तुः स्वेदजः । हिंट् गति-वृद्ध्योः, हीकः– पक्षी । पिंत् गतौ, पीकः–उपस्थो, जलाश्रयश्च । तुंक् वृत्त्यादिषु, तूकः– उपस्थः, पर्वतश्च । शुं गतौ, शूकः– किंशारुः, अभिषवः, शोकश्च, शूका– हृल्लेखः ।।२४।।

ह्रियो रश्च लो वा ।।२५।।

ह्रियः कित् कः प्रत्ययो भवति, रेफस्य च लकारो वा भवति । [ह्रींक् लज्जायाम्,] ह्रीकः, ह्लीकः– लज्जापरः, नकुलश्च । ह्रीको– लिङ्ग्यपि ।।२५।।

निष्क-तुरुष्कोदर्का-ऽलर्क-शुल्क-श्वफल्क-किञ्जल्कोल्का-वृक्क-च्छेक-केका-यस्काऽऽदयः ।।२६।।

एते कप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । नेः सीदतेर्डिच्च, निष्कः– सुवर्णादिः । तूरैचि त्वरायाम्, अस्य ह्रस्व उषश्चान्तः, तुरुष्कः– वृक्षः, म्लेच्छश्च । उदः परात् अर्तेः, उदर्कः– क्रियाफलम् । अली भूषणादौ, अस्मादर् चान्तः, अलर्कः– उन्मत्तः, मदालसात्मजश्च । "पल फल शल गतौ" इत्यस्योपान्त्योरत्वं च, शुल्कं– रक्षानिर्वेशः । शुनः परात् फलेर्ह्रस्वश्च, श्वफल्कः– अन्धकविशेषः । किमः परात् जृषो रस्य लश्च, किञ्जल्कः– पुष्परेणुः । ज्वलेरुलादेशश्च, उलेः सौत्रस्य वा, उल्का– औत्पातिकं ज्योतिः, अग्निज्वाला च, वृजैकि वर्जने, अगुणत्वं च, वृक्कः– मुष्कः । छ्यति-कायत्योरेत्वं च, छेकः– मनीषी, केका– मयूरवाक् । यमेर्मस्य सः, यस्कः– आदिग्रहणात् ढक्का-स्पृक्काऽऽदयोऽपि ।।२६।।

दृ-कृ-नृ-सृ-भृ-धृ-वृ-मृ-स्तु-कु-क्षु-लङ्घि-चरि-चटि-कटि-कण्टि-चणि-चषि-फलि-वमि-तम्यवि-देवि-बन्धि-कनि-जनि-मशि-क्षारि-कुरि-वृति-वल्लि-मल्लि-सल्लचलि भ्योऽकः ।।२७।।

एभ्योऽकः प्रत्ययो भवति । दृश् विदारणे, दरकः– भीरुः । कृत् विक्षेपे, करकः– जलभाजनम्, कमण्डलुश्च; करकाः– वर्षपाषाणः । नृश् नये, नरकः– निरयः । सृं गतौ, सरको– मद्यविशेषः, कंसभाजनविशेषश्च, सरका– मधुपानवारः । डुभृंग्क् पोषणे च, भरकः– गोण्यादिः । धृङ् अवध्वंसने, धरकः– सुवर्णोन्माननियुक्तः । वृग्ट् वरणे, वरकः, वधूजानिसहायः, वाजसनेयभेदश्च । मृंत् प्राणत्यागे, मरकः– जनोपद्रवः । ष्टुंग्क् स्तुतौ, स्तवकः– पुष्पगुच्छः । कुंङ् शब्दे, कवकम्– अभक्ष्यद्रव्यविशेषः । टुक्षुक् शब्दे, क्षवकः– राजसर्षपः । लघुङ् गतौ, लङ्घकः– रङ्गोपजीवी । चर भक्षणे च, चरकः– मुनिः । चटण् भेदे, चटकः– पक्षी । कटे वर्षा-ऽऽवरणयोः, कटकः– वलयः । कटु गतौ, कण्टकः– तरुरोम । चण शब्दे, चणकः– मुनिः, धान्यविशेषश्च । चषी भक्षणे, चषकः– पानभाजनम् । फल निष्पत्तौ, फलकः– खेटकम् । टुवमू उद्गिरणे, वमकः– कर्मकरः । तमूच् काङ्क्षायाम्, तमकः– व्याधिः, क्रोधश्च । अव रक्षणादौ, अवका– शैवलम् । देवृङ् देवने, देवका– अप्सराः, देविका– नदी । बन्धंश् बन्धने, बन्धकः– चारकपालः । कनै दीप्त्यादिषु, कनकं– सुवर्णम् । जनैचि प्रादुर्भावे, जनकः– सीतापिता । मश रोषे च, मशकः– क्षुद्रजन्तुः । क्षर संचलने, ण्यन्तः, क्षारकं– बालमुकुलम् । कुरत् शब्दे, कोरकं– प्रौढमुकुलम् । वृतूङ् वर्तने, वर्तका वर्तिका वा– शकुनिः वल्लि संवरणे, वल्लकी– वीणा । मल्लि धारणे, मल्लकः– शरावः, मल्लिका– पुष्पजातिः, दीपाधारश्च । सल्लः सौत्रः, सल्लकी– वृक्षः, सत्कृत्य लक्ष्यते स्वाद्यते गजैरिति वा– सल्लकी । अली भूषणादिषु, अलकः– केशविन्यासः, अलका– पुरी ।।२७।।

को रु-रुण्टि-रण्टिभ्यः ।।२८।।

कुशब्दात् परेभ्य एभ्योऽकः प्रत्ययो भवति । रुक् शब्दे, कुरवकः– वृक्षः । रुटु स्तेये, कुरुण्टको– वर्णगुच्छः । रण्टिः प्राणहरणे सौत्रः, कुरण्टकः– स एव ।।२८।।

Aho ! Shrutgyanam

ध्रु-धून्दि-रुचि-तिलि-पुलि-कुलि-क्षिपि-क्षुपि-लिखिभ्यः कित् ॥२९॥

एभ्यः कित् अकः प्रत्ययो भवति। ध्रु स्थैर्ये च, ध्रुवकः– स्थिरः, ध्रुवका– आवपनविशेषः। धूत् विधूनने, धुवकं– धूननम्, धुवकः– प्रधानं, स्त्री धुवका– आवपनविशेषः। उन्दैप् क्लेदने, उदकं– जलम्। रुचि अभिप्रीत्यां च, रुचकः– आभरणविशेषः। तिलत् स्नेहने, तिलकः– विशेषकः, वृक्षश्च। पुलण् समुच्छ्राये, पुल महत्त्वे वा, पुलकः– रोमाञ्चः। कुल बन्धु-संस्त्यानयोः, कुलकं– संयुक्तम्। क्षिपींत् प्रेरणे, क्षिपकः– वायुः, क्षिपका– आयुधम्। क्षुपः सौत्रो ह्रस्वीभावे, क्षुपकः– गुल्मः। क्षुभच् संचलने, क्षुभकः– पाञ्चालकः। लिखत् अक्षरविन्यासे, लिखकः– चित्रकरः ॥२९॥

छिदि-भिदि-पिटेर्वा ॥३०॥

एभ्योऽकः प्रत्ययो भवति, स च किद् वा भवति। छिदॄंपी द्वैधीकरणे, छिदकः– खड्गः, क्षुरश्च, छेदकः– परशुः। भिदॄंपी विदारणे, भिदकं– जलं, पिशुनश्च, भेदकं– वज्रम्। पिट शब्दे च, पिटकः– क्षुद्रस्फोटकः, पेटकं– संघातः ॥३०॥

कृषेर्गुण-वृद्धी च वा ॥३१॥

कृषेरकः प्रत्ययो भवति, गुण-वृद्धी चास्य वा भवतः। कृषंत् विलेखने, कर्षकः, कृषकः– परशुः; कार्षकः, कृषकः– कुटुम्बी ॥३१॥

नञः पुंसेः ॥३२॥

नञः परात् "पुंसण् अभिमर्दने" इत्यस्मात् किदकः प्रत्ययो भवति। नपुंसकं– तृतीया प्रकृतिः, नखादित्वात् "नञत्" [३.२.१२५.] न भवति ॥३२॥

कीचक-पेचक-मेचक-मेनका-ऽर्भक-धमक-वधक-लघक-जहकैरकैडका-ऽश्मक-लमक-क्षुल्लक-वटवका-ऽऽढकाऽऽदयः ॥३३॥

कीचकादयः शब्दा अकप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते। कचि बन्धने, अस्योपान्त्यस्येत्वं च, कीचकः– वंशविशेषः। डुपचींष् पाके, मचि कल्कने, मनिच् ज्ञाने, एषामुपान्त्यस्यैत्वं च, पेचकः– करिजघनभागः, मेचकः– वर्णः, मेनका– अप्सराः। अर्तेर्भश्चान्तः, अर्भकः– बालः। ध्मां शब्दाऽग्निसंयोगयोः, अस्य धमादेशश्च, धमकः– कीटः, कर्मारश्च, अन्यत्रापि धमादेशो दृश्यते, क्ते– धान्तः। हन्तेर्वधश्च, वधकः– हन्ता, व्याधिश्च, वधकं– पद्मबीजम्, अन्यत्रापि दृश्यते, वृत्रं हन्ति अचि– वृत्रवधः– शक्रः, वधिता– निर्मोचकः, बध्यः, वधनम्। लघुङ् गतौ, नलुक् च, लघकः– असमीक्ष्यकारी। जहातेर्द्वे रूपे अन्तलुक् च, जहकः– कालः, क्षुद्रश्च। ईरिक् गति-कम्पनयोः, ईडिक् स्तुतौ, अनयोर्गुणश्च, एरका– उदकतृणजातिः, एडका– अविजातिः। अशौटि व्याप्तौ, अस्य मोऽन्तः, अश्मका– जनपदः। रमि क्रीडायाम्, अस्य लमादेशः, लमकः– ऋषिविशेषः। क्षुदृपी संपेषे, अस्य क्षुल्लादेशश्च क्षुल्लकं– दभ्रम्; क्षुधं लातीति वा– क्षुल्लः, क्षुल्ल एव क्षुल्लक इति वा। वट वेष्टने, अस्यावोऽन्तश्च, वटवका– तृणपुञ्जः। आङ्पूर्वात् ढौकतेर्डिश्च, आढकं– मानम्। आदिग्रहणाद् बृहत्तन्त्रात्, कला आपिवन्तीति– कलापकाः– शास्त्राणि। कथण् वाक्यप्रबन्धे, कथयतीति– कथकः– तोटकाख्यायिकादीनां वर्णयिता। एवम्– उपक-चम्पक-फलहकादयोऽपि ॥३३॥

शलि-बलि-पति-वृति-नभि-पटि-तटि-तडि-गडि-भन्दि-वन्दि-मन्दि-नमि-कु-दु-पू-मनि-खजिभ्य आकः ॥३४॥

एभ्य आकः प्रत्ययो भवति। पल फल शल गतौ, शलि चलने च वा, शलाका– एषणी, पूरणरेखा, द्यूतोपकरणं, सूची च। बल प्राणन-धान्यावरोधयोः, बलाका– जलचरी शकुनिः। पत्लृ गतौ, पताका– वैजयन्ती। वृतूङ् वर्तने, वर्तका– शकुनिजातिः। णभच् हिंसायाम्, नभाकः– चक्रवाकजातिः, तमः, काकश्च। पट गतौ, पटाका– वैजयन्ती, पक्षिजातिश्च। तट उच्छ्राये, तटाकं– सरः। तडण् आघाते, तडाकं– तदेव। गड सेचने, गडाकः– शाकजातिः। भदुङ् सुख-कल्याणयोः, भन्दाकं– शासनम्। वदुङ् स्तुत्यभिवादनयोः, वन्दाकः– चीवरभिक्षुः। मदुङ् स्तुत्यादिषु, मन्दाका– औषधी। णमं प्रह्वत्वे, नमाका– म्लेच्छजातिः। कुंङ् शब्दे, कवाकः– पक्षी। टुदुंद् उपतापे, दवाकः– म्लेच्छः। पूङ् पवने, पवाका– वात्या। मनिच् ज्ञाने, मनाका– हस्तिनी। खज मन्थे, खजाकः– आकरः, मन्थाः, दर्विः, आकाशं, बन्धकी, शरीरं पक्षी च ॥३४॥

शुभि-गृहि-विदि-पुलि-गुभ्यः कित् ॥३५॥

एभ्यः किदाकः प्रत्ययो भवति। शुभि दीप्तौ, शुभाका– पक्षिजातिः। गृहणि ग्रहणे, गृहाकः। विदंक् ज्ञाने, विदाका– भूतग्रामः। पुल महत्त्वे, पुलाकः– अर्धस्विन्नो धान्यविशेषः। गुंङ् शब्दे, गुंत् पुरीषोत्सर्गे वा, गुवाकं– पूगफलम् ॥३५॥

पिषेः पिन्-पिण्यौ च ॥३६॥

"पिष्लृंप् संचूर्णने" इत्यस्मात् किदाकः प्रत्ययो भवति,

Aho ! Shrutgyanam

अस्य च 'पिन् पिण्य' इत्यादेशौ भवतः । पिनाकम्– ऐशं धनुः, शूलं वा, पिनाकः–दण्डः, पिण्याकः– तिलादिखलः ॥३६॥

मवाक-श्यामाक-वार्ताक-वृन्ताक-ज्योन्ताक-गूवाक-भद्राकाऽऽदयः ॥३७॥

एते आकप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । मव्य बन्धने, यलोपः, मवाकः– रेणुः । श्यैङ् गतौ, मोऽन्तश्च, श्यामाकः– जघन्यो व्रीहिः । वृतेर्वृद्धीश्च, वार्ताकी– शाकविशेषः तत्फलं वार्ताकम् । स्वराग्नोऽन्तश्च, वृन्ताकी उच्चबृहती, तत्फलं– वृन्ताकम् । ज्युङ् गतौ, न्तश्च प्रत्ययादिः, ज्यवतेऽस्मिन् स्विद्यमान इति- ज्योन्ताकं– स्वेदसद्मविशेषः । गुंत् पुरीषोत्सर्गे, गुङ् शब्दे वा, ऊवादेशश्च, गूवाकं– पूगफलम् । भदुङ् सुखकल्याणयोः, अस्य भद्रादेशश्च, भद्राकः– अकुटिलः । आदिग्रहणात् स्योनाक-चार्वाक-पराकाऽऽदयो भवन्ति ॥३७॥

क्री-कल्यलि-दलि-स्फटि-दूषिभ्य इकः ॥३८॥

एभ्य इकः प्रत्ययो भवति । डुक्रींगश् द्रव्यविनिमेये, क्रयिकः–क्रेता । कलि शब्द-संख्यानयोः, कलिका–कोरकः, उत्कलिका– ऊर्मिः । अली भूषणादौ, आलिकं– ललाटम् । दल विशरणे, दलिकं– दारु । स्फट स्फुट्ट विसरणे, स्फटिकः– मणिः । दुषच् वैकृत्ये, दूषिका– नेत्रमलः ॥३८॥

आङः पणि-पनि-पदि-पतिभ्यः ॥३९॥

आङः परेभ्य एभ्य इकः प्रत्ययो भवति । पणि व्यवहार-स्तुत्योः, आपणिकः– पत्तनवासी, व्यवहारज्ञो वा । पनि स्तुतौ, आपनिकः– स्तावकः, इन्द्रनीलः, इन्द्रकीलो वा । पदिंच् गतौ, आपदिकः– इन्द्रनीलः, इन्द्रकीलो वा । पत्लृ गतौ, आपतिकः– पथि वर्तमानः, मयूरः, श्येनः, कालो वा । आपणिकादयश्चत्वारो वणिजोऽपि ॥३९॥

नसि-वसि-कसिभ्यो णित् ॥४०॥

एभ्यो णिदिकः प्रत्ययो भवति । णसि कौटिल्ये, नासिका– घ्राणम् । वसं निवासे, वासिका– माल्यदामविशेषः, छेदनद्रव्यं च । कस गतौ, कासिका– वनस्पतिः ॥४०॥

पा-पुलि-कृषि-क्रुशि-व्रश्चिभ्यः कित् ॥४१॥

एभ्यः किदिकः प्रत्ययो भवति । पां पाने, पिकः– कोकिलः । पुल महत्त्वे, पुलिकः– मणिः । कृषींत् विलेखने, कृषिकः–पामरः, तृणजातिश्च । क्रुशं आह्वान– रोदनयोः, क्रुशिकः– क्रोष्टुकः, उलूकश्च । ओव्रश्चौत् छेदने, वृश्चिकः– सविषः कीटः, राशिश्च नक्षत्रपादनवकरूपः ॥४१॥

प्राङः पणि-पनि-कषिभ्यः ॥४२॥

'प्राङ्' इत्येतस्मादुपसर्गसमुदायात् परेभ्य एभ्यः किदिकः प्रत्ययो भवति । पणि व्यवहार-स्तुत्योः, प्रापणिकः– वणिक् । पनि स्तुतौ, प्रापनिकः– पथिकः । कष हिंसायाम्, प्राकषिकः– वायुः, खलः, नर्तकः, मालाकारश्च । प्रपूर्वात् पणेराङ्पूर्वाच्च कषेरिच्छन्त्यन्ये– प्रपणिकः– गन्धविक्रयी, आकषिको न कर्तव्यः ॥४२॥

मुषेर्दीर्घश्च ॥४३॥

मुषेरिकः प्रत्ययो भवति, दीर्घश्च स्वरस्य भवति । मूषिकः– आखुः ॥४३॥

स्यमेः सीम् च ॥४४॥

स्यमेरिकः प्रत्ययो भवति, अस्य च 'सीम्' इत्यादेशो भवति । स्यमू शब्दे, सीमिकः– वृक्षः, उदक कृमिश्च, सीमिका– उपजिह्विका, सीमिकं– वल्मीकम् । केचित् 'सिम्' इति ह्रस्वोपान्त्यमादेशं प्रत्ययस्य च दीर्घत्वमिच्छन्ति– सिमीकः– सूक्ष्मकृमिः ॥४४॥

कुशिक– हृदिक– मक्षिकेतिक– पिपीलिकादयः ॥४५॥

एते किदिकप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । कुषेः श च, कुशिकः– मुनिः । ह्लगो दोऽन्तश्च, हृदिकः– यादवः । मषेः सोऽन्तश्च, मक्षिका– क्षुद्रजातिः । एतेस्तोऽन्तश्च, इतिकः– मुनिः । पीलेर्द्वे च, पिपीलिका– मध्यक्षामा कीटजातिः । आदिग्रहणात् गब्दिक-भुरिक-भुलिकाऽऽदयो भवन्ति ॥४५॥

स्यमि-कषि-दूष्यनि-मनि-मलि-वल्यलि-पालि-कणिभ्य ईकः ॥४६॥

एभ्य ईकः प्रत्ययो भवति । स्यमू शब्दे, स्यमीकः– वृक्षः, वल्मीकः, नृप गोत्रं च, स्यमीकं– जलम्, स्यमीका– कृमिजातिः । कष हिंसायाम्, कषिका– कुद्दालिका । दुषंच् वैकृत्ये, ण्यन्तः, दूषीका– नेत्रमलः, वीरणजातिः, वर्तिः, लता, च । अनक् प्राणने, अनीकं– सेनासमूहः, संग्रामश्च । मनिंच् ज्ञाने, मनीकः– सूक्ष्मः । मलि धारणे, मलीकम्– अञ्जनम्, अरिश्च । वलि संवरणे, वलीकः– बलवान्, पटलान्तश्च, वलीकं– वेश्मदारु । अली भूषणादौ, अलीकम्– असत्यम्, अलीका– पण्यस्त्री, व्यलीकम्– अपराधः, व्यलीका– लज्जा । पलण् रक्षणे, पालीकं– तेजः । कण शब्दे, कणीकः– पटवासः, कणीका– भिन्नतण्डुलावयवः, वनस्पतिबीजं च ॥४६॥

जॄ-पॄ-दॄ-शॄ-वृ-मृ-भ्यो द्वेरश्चादौ ॥४७॥

एभ्यः ईकः प्रत्ययो भवति, द्वे च रूपे भवतः, एषां

Aho ! Shrutgyanam

चादौ रो भवति । जृष्च् जरसि, जर्जरीका– शतपत्री । पृश् पालन–पूरणयोः, पर्परीका– जलाशयः, सूर्यश्च; पर्परीकः अग्निः, कुररः, भक्ष्यम्, कुर्कुरश्च । दृश् विदारणे, दर्दरीकः– दाडिमः, इन्द्रः, वादित्रविशेषः, वादित्रभाण्डं च । शृश् हिंसायाम्, शर्शरीकः– कृमिः, विकलेन्द्रियः, दुष्टाश्वः, लावकश्च, शर्शरीका– माङ्गल्याभरणम् । वृगट् वरणे, वर्वरीकः– संवरणम्, उरणः, पतत्री, केशसंघातश्च, वर्वरीका– सरस्वती । मृत् प्राणत्यागे, मर्मरीकः– अग्निः, शूरः, श्येनश्च ।।४७।।

ऋच्यृजि-हृषीषि-दृशि-मृडि-शिलि-निलीभ्यः कित् ।।४८।।

एभ्यः किदीकः प्रत्ययो भवति । ऋचत् स्तुतौ, ऋचीकः– ऋषिः । ऋजि गति-स्थानार्जनोर्जनेषु, ऋजीकं– वज्रम्, बलं, स्थानं च । हृषू अलीके, हृषच् तुष्टौ वा, हृषीकम्– इन्द्रियम् । इषत् इच्छायाम्, ईष उञ्छे, ईष गति-हिंसा-दर्शनेषु वा, इषीका, ईषीका च– तृणशलाका । दृशृं प्रेक्षणे, दृशीकं– मनोज्ञम्, दृशीका– रजस्वला । मृडत् सुखने, मृडीकं– सुखकृत्, सुखं च । शिलत् उञ्छे, शिलीकः– सस्यविशेषः । लींङ्च् श्लेषणे, निपूर्वः, निलीकं– वृत्तम् । बाहुलकादीलुक् ।।४८।।

मृदेर्वोऽन्तश्च वा ।।४६।।

मृदेः किदीकः प्रत्ययो भवति, वकारश्चान्तो वा भवति । मृंदश् क्षोदे, मृद्वीका मृदीका च– द्राक्षा ।।४६।।

सृणीका–स्तीक–प्रतीक– पूतीक–समीक–वाहीक–वाह्लीक–वल्मीक–कलमलीक– तिन्तिडीक– कङ्कणीक–किङ्किणीक–पुण्डरीक–चञ्चरीक–फर्फरीक– झर्झरिक– घर्घरीकाऽऽदयः ।।५०।।

एते किदीकप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । सर्तेर्णोऽन्तश्च, सृणीकः– वायुः, अग्निः, अशनिः, उन्मत्तश्च, सृणीका– लाला । अस्तेस्तोऽन्तश्च, अस्तीकः– जरत्कारुसुतः । प्रांक् पूरणे, प्रातेस्तोऽन्तो ह्रस्वश्च, प्राति शरीरमिति– प्रतीकः– वायुः, अवयवः, सुखं च । सुप्रतीकः– दिग्गजः । पुवस्तोऽन्तश्च, पूतीकं– तृणजातिः । सम्पूर्वस्य एतेर्लुक् च, संयन्त्यस्मिन्निति– समीकं– संग्रामः । वहि-वल्ह्योर्दीर्घश्च, वाहीकः, वाल्हीकः, एतौ देशौ । वलेर्मोऽन्तश्च, वल्मीकः– नाकुः । कलेर्मलश्चान्तः, कल्मलीकं– ज्वाला । तिमेस्तिड् चान्तः, तिन्तिडीकः– पक्षी, वृक्षाम्लश्च, तन्तिडीक इति पूर्वस्यैत्वं नेच्छन्त्येके । चङ्क्षण्यतेः कङ्कण् च, कङ्कणीकः– घण्टाजालम् । किमः परात् कणतेः किण्च्, किङ्किणीका– घण्टिका । पुणेर्डर् चान्तः, पुण्डतेर्वा अर्, पुण्डरीकं– पद्मं, छत्रं, व्याघ्रश्च । चञ्चेरर् चान्तः, चञ्चरीकः– भ्रमरः । पिपर्त्तेर्गुणो द्वित्वं पकारयोः फत्वं रश्चान्तः पूर्वस्य, फर्फरीकं-पल्लवं, पादुका, मर्दलिका च । झीर्यतेर्द्वित्वं तृतीयाभावः पूर्वस्य रश्चान्तः, झर्झरीकः– देहः, झर्झरीका– वादित्रभाण्डम् । एवं– घरतेः, घर्घरीका– घण्टिका । आदिग्रहणादन्येऽपि ।।५०।।

मि-वमि-कटि-भल्लि-कुहेरुकः ।।५१।।

एभ्य उकः प्रत्ययो भवति । डुमिगट् प्रक्षेपणे, मयुकः– आतपः । बाहुलकात् "मिग्मीगो०" [४.२.८] इति नात्वम् । टुवमू उद्गिरणे, वमुकः– जलदः । कटे वर्षाऽऽवरणयोः, कटुकः– रसविशेषः । भल्लि परिभाषण-हिंसादानेषु, भल्लुकः– ऋक्षः । कुहणि विस्मापने, कुहुकम्– आश्चर्यम् ।।५१।।

सं-विभ्यां कसेः ।।५२।।

आभ्यां परस्मात् कसेरुकः प्रत्ययो भवति । कस गतौ, संकसुकः– सुकुमारः, परापवादशीलः, श्राद्धाग्निश्च, संकसुकं– व्यक्ताव्यक्तं, संकीर्णं च । विकसुकः– गुणवादी, परिश्रान्तश्च ।।५२।।

क्रमेः क्रम् च वा ।।५३।।

क्रमेरुकः प्रत्ययो भवति, अस्य च 'क्रम' इत्यादेशो वा भवति । क्रमू पादविक्षेपे, क्रमुकः– बन्धनम्, आदेशविधानबलाच्च न गुणः, क्रमुकः– पूगतरुः ।।५३।।

कमि–तिमेर्दोऽन्तश्च ।।५४।।

आभ्यामुकः प्रत्ययो भवति, दश्चान्तो भवति । कमूङ् कान्तौ, कन्दुकः– क्रीडनम् । तिमच् आर्द्रभावे, तिन्दुकः– वृक्षः ।।५४।।

मण्डेर्मड्डु च ।।५५।।

मण्डेरुकः प्रत्ययो भवति, मड्डु च आदेशो भवति । मड्ड भूषायाम्, मड्डुकः– वाद्यविशेषः ।।५५।।

कण्यणेर्णित् ।।५६।।

आभ्यां णिदुकः प्रत्ययो भवति । कण अण शब्दे, काणुकः– काकः, हिंस्रश्च, काणुकम् आणुकं च– अक्षिमलम् ।।५६।।

कञ्चुकांशुक-नंशुक-पाकुक-हिबुक-चिबुक-जम्बुक-चुलुक-चूचुकोलमुक-भावुक-पृथुक-मधुकादयः ।।५७।।

एते किदुकप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । कचि बन्धने, अशौटि व्याप्तौ, नशौच् अदर्शने, एषां स्वरान्नोऽन्तश्च ।

Aho ! Shrutgyanam

कञ्चुकः– कूर्पासः, अंशुकं– वस्त्रम्, नंशुको– रणरेणुः, प्रवासशीलः, चन्द्रः, प्रावरणं च । पचेः पाक् च, पाकुकः– लघुपाची, सूपः, सूपकारः, अध्वर्युश्च । हिनोति-चिनोति-जमतीनां वोऽन्तश्च, हिबुकं– लग्नाच्चतुर्थस्थानम्, रसातलं, च; चिबुकं– मुखाधोभागः, जम्बुकः– सृगालः । चुलुम्पः सौत्रः, अन्त्यस्वरादिलोपश्च, चुलुम्पतीति– चुलुकः– करकोशः । चतेश्चूच् च, चूचुकः– स्तनाग्रभागः । ज्वलेरुल्म् च, उल्मुकम्– अलातम् । भातेर्वोऽन्तश्च, भावुकः– भगिनीपतिः । प्रथिष् प्रख्याने, पृथुकः– शिशुः, व्रीह्याद्यभ्यूषश्च । मचि कल्कने, धश्चान्तादेशः, मधुकं– यष्टीमधु । आदिग्रहणाद् वालुकी-वालुकादयो भवन्ति ॥५७॥

मृ-मन्यञ्जि-जलि-बलि-तलि-मलि-मल्लि-भालि-मण्डि-बन्धिभ्य ऊकः ॥५८॥

एभ्य ऊकः प्रत्ययो भवति । मृंत् प्राणत्यागे, मरूकः– मयूरः, मृगः, निदर्शनेभः, तृणं च । मनिच् ज्ञाने, मनूकः– कृमिजातिः । अञ्जौप् व्यक्ति-म्रक्षण-गतिषु, अञ्जूकः– हिंस्रः । जल धात्ये, जलूका- जलजन्तुः । बल प्राणन-धान्यावरोधयोः, बलूकः-उत्पलमूलं, मत्स्यश्च । तलण् प्रतिष्ठायाम्, तलूकः-त्वक्कृमिः । मलि धारणे, मलूकः– सरोजशकुनिः । मल्लि धारणे, मल्लूकः– कृमिजातिः । भलिण् आभण्डने, भालूकः– ऋक्षः । मडु भूषायाम्, मण्डूकः– दुर्दुरः । बन्धंश् बन्धने, बन्धूकः– बन्धुजीवः ॥५८॥

शल्यणेर्णित् ॥५९॥

आभ्यां णिदूकः प्रत्ययो भवति । पल फल शल गतौ, शालूकं-जलकन्दः, बलवांश्च । अण शब्दे, आणूकम्– अक्षिमलम् ॥५९॥

कणि-भल्लेर्दीर्घश्च वा ॥६०॥

आभ्यामूकः प्रत्ययो भवति, दीर्घश्चानयोर्वा भवति । कण शब्दे, कणूकः– धान्यस्तोकः, काणूकः– पक्षी, काणूकम्– अक्षिमलः, तमो वा । भल्लि परिभाषण-हिंसा-दानेषु, भल्लूकः भाल्लूकश्च– ऋक्षः ॥६०॥

शम्बूक-शाम्बूक-वृधूक-मधूकोलूकोरुबूक-वरूकादयः ॥६१॥

एते ऊकप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । शमेर्बोऽन्तो दीर्घश्च वा । शम्बूकः– शङ्खः, शाम्बूकः– स एव । वृश् वरणे, अस्य वृधभावश्च, वृधूकः– मातृवाहकः, वृधूकं– जलम् । मदेर्धश्च, मदयतीति– मधूकः– वृक्षः । अलेरुच्चोपान्त्यस्य, उलूकः– काकारिः । उरुपूर्वाद् वातेः किच्च, उरु वाति उरुबूकः– एरण्डः । वृधेर्लोपश्च, वर्धत इति– वरूकः– तृणजातिः । आदिग्रहणादनूक-वा– वदूकाऽऽदयो भवन्ति ॥६१॥

किरोऽङ्को रो लश्च वा ॥६२॥

किरतेरङ्कः प्रत्ययो भवति, रेफस्य च लकारादेशो वा भवति । करङ्कः– समुद्रः, कलङ्कः– लाञ्छनम् ॥६२॥

रा-ला-पा-का-भ्यः कित् ॥६३॥

एभ्यः किदङ्कः प्रत्ययो भवति । रांक् दाने, रङ्कः अबलीयान् । लांक् दाने, लङ्कापुरी । पांक रक्षणे, पङ्कः कर्दमः । कैं शब्दे । कङ्कः पक्षी ॥६३॥

कुलि-चिरिभ्यामिङ्कक् ॥६४॥

आभ्यामिङ्कक् प्रत्ययो भवति । कुल बन्धुसंस्त्यानयोः, कुलिङ्कः चटकः । चिर हिंसायाम् सौत्रः, चिरिङ्कं जलयन्त्रम् ॥६४॥

कलेरविङ्कः ॥६५॥

कलेरविङ्कः प्रत्ययो भवति । कलि शब्दसंख्यानयोः, कलविङ्कः गृहचटकः ॥६५॥

क्रमेरेलकः ॥६६॥

क्रमू पादविक्षेपे, इत्यस्मादेलकः प्रत्ययो भवति । क्रमेलकः करभः ॥६६॥

जीवेरातृको जैव च ॥६७॥

जीव प्राणधारणे, इत्यस्मादातृकः प्रत्ययो भवति, जैव इत्यादेशश्च भवति । जैवातृकः आयुष्मान् चन्द्रः आम्रः वैद्यः मेघश्च । जैवातृका जीवद्वत्सा स्त्री ॥६७॥

हृ-भू-ला-भ्य आणकः ॥६८॥

एभ्य आणकः प्रत्ययो भवति । हृंग् हरणे, हराणकः चौरः । भूसत्तायाम्, भवाणकः गृहपतिः । लांक् आदाने, लाणकः हस्ती ॥६८॥

प्रियः कित् ॥६९॥

प्रींग्श् तृप्तिकान्त्योः । इत्यस्मादाणकः प्रत्ययो भवति सच कित् भवति । प्रियाणकः पुत्रः ॥६९॥

धा-लू-शिङ्घिभ्यः ॥७०॥

योगविभाग उत्तरार्थः । एभ्य– आणकः प्रत्ययो भवति । डुधांग्क् धारणे च, धाणकः दीनारद्वादशभागः हविषां ग्रहः छिद्रपिधानं च । लूग्श् छेदने, लवाणकः कालः तृणजातिः दात्रं च । शिघु आघ्राणे, शिङ्घाणकः नासिकामलः ॥७०॥

शी-भी-राजेश्चानकः ॥७१॥

शीभीराजिभ्यो धालूशिङ्घिभ्यश्च आनकः प्रत्ययो

Aho ! Shrutgyanam

भवति । शीङ्क् स्वप्ने, शयानकः-उजगरः, शैलश्च । ञिभींक् भये, बिभेत्यस्मादिति भयानकः-भीमः, व्याघ्रः, वराहः, राहुश्च । राजृग् दीप्तौ, राजानकः-क्षत्त्रियः । डुधांग्क् धारणे च, धानकः-हेमादिपरिमाणम् । लूग्श् छेदने, लवानकः-देशविशेषः, दात्रं च । शिङ्घन्त्यनेनेति शिङ्घानकः-श्लेष्मायुः, पुरीषं च ॥७१॥

अर्णोडित् ॥७२॥

अर्णोडिदानकः प्रत्ययो भवति अण शब्दे, आनकः-पटहः ॥७२॥

कनेरीनकः ॥७३॥

कनैं दीप्तिकान्तिगतिषु, इत्यस्मादीनकः प्रत्ययो भवति । कनीनकः-कनीनिका, वाक्षितारका ॥७३॥

गुङ ईधुकैधुकौ ॥७४॥

गुङ् शब्दे, इत्यस्मादीधुकएधुक- इत्येतौ प्रत्ययौ भवतः । गवीधुकं-नगरम्, धान्यजातिश्च । गवेधुका-तृणजातिः ॥७४॥

वृतेस्तिकः ॥७५॥

वृतूङ् वर्तने, इत्यस्मात्तिकः प्रत्ययो भवति । वर्त्तिका-चित्रकरोपकरणम्, शकुनिः, द्रव्यगुटिका च ॥७५॥

कृति-पुति-लति-भिदि-भ्यः कित् ॥७६॥

एभ्यः कित्तिकः प्रत्ययो भवति । कृतैत् छेदने, कृत्तिका-नक्षत्त्रम् । पुतिलती सौत्रो, पुत्तिका-मधुमक्षिका । लत्तिका-वाद्यविशेषः;गौः गोधा च, गो पूर्वात् । गोलत्तिका-गृहगोलिका; अवपूर्वात्, अवलत्तिका-गोधा, आलत्तिका-गान प्रारम्भः । भिदृंपी विदारणे, भित्तिका, कुड्यम्, माषादिचूर्णम्, शरावती च नदी ॥७६॥

इष्यशि-मसिभ्यस्तकक् ॥७७॥

एभ्यस्तकक् प्रत्ययो भवति । इषत् इच्छायाम्, इष्टका-मृद्विकारः । अशौटि व्याप्तौ, अष्टकाः-श्राद्धतिथयस्तिस्रः, अष्टम्यः, पितृदैवत्यं च । मसैच् परिणामे, मस्तकः-शिरः ॥७७॥

भियो द्वे च ॥७८॥

ञिभींक् भये, इत्यस्मात्तकक् प्रत्ययो भवति द्वे रूपे च भवतः । बिभीतकः-अक्षः ॥७८॥

हृ-रुहि-पिण्डि-भ्य ईतकः ॥७९॥

एभ्य ईतकः प्रत्ययो भवति । हृंग् हरणे, हरीतकी-पथ्या । रुहं जन्मनि, रोहीतकः-वृक्षविशेषः । पिडुङ् संघाते, पिण्डीतकः-करहाटः ॥७९॥

कुषेः कित् ॥८०॥

कुषश् निष्कर्षे इत्यस्मात् किदीकः प्रत्ययो भवति । कुषीतक-ऋषिः ॥८०॥

बलि-बिलि-शलि-दमि-भ्य आहकः ॥८१॥

एभ्य आहकः प्रत्ययो भवति । बल प्राणनधान्यावरोधयोः, बलाहकः-मेघः, वातश्च । बिलत् भेदने, बिलाहकः-वज्रः । बाहुलकान्न गुणः । शल गतौ, शलाहकः वायुः । दमूच् उपशमे, दमाहकः-शिष्यः ॥८१॥

चण्डि-भल्लि-भ्यामातकः ॥८२॥

आभ्यामातकः प्रत्ययो भवति । चडुङ् कोपे, चण्डातकं-नर्तक्यादिवासः । भल्लि परिभाषणहिंसादानेषु, भल्लातकः-वृक्षः ॥८२॥

श्लेष्मातकाम्रातकामिलातक-पिष्टातकादयः ॥८३॥

एतेआतकप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । श्लिषेर्मश्च परादिः, श्लेष्मातकः-कफेलुः । अमेर्वृद्धीरश्चातः, आम्रातकः- वृक्षः । नञः परस्य म्लायतेर्मिल् च, अमिलातकम्-वर्णपुष्पम् । पिषेस्तोऽन्तश्च, पिष्टातकं-वर्णचूर्णम् । आदिग्रहणात् कोशातक्यादयो भवन्ति ॥८३॥

शमि-मनिभ्यां खः ॥८४॥

आभ्यां खः प्रत्ययो भवति । शमूच् उपशमे, शङ्खः-कम्बुः, निधिश्च । मनिच् ज्ञाने, मङ्खः-मागधः, कृपणः, चित्रपटश्च; मङ्खा-मङ्गलम् ॥८४॥

श्यतेरिच्च वा ॥८५॥

शोंच् तक्षणे, इत्यस्मात् खः प्रत्यय भवति, इश्चास्यान्तादेशो वा भवति । शिखा-चूडा, ज्वाला च, विशिखा-आपणः । विशिखः-बाणः । शाखा-विटपः । विशाखा-नक्षत्रम् । विशाखः-स्कन्दः ॥८५॥

पू-मुहोः पुन्मुरौ च ॥८६॥

पुङ् पवने, मुहौच् वैचित्ये, इत्येताभ्यां खः प्रत्ययो भवति । अनयोश्च यथासंख्यं पुनमुर् इत्यादेशौ भवतः । पुङ्खः-बाणबुध्नभागः, मङ्गलाचारश्च । मूर्खः-अज्ञः ॥८६॥

अशेर्डित् ॥८७॥

अशौटि व्याप्तौ, इत्यस्मात् डित् खः प्रत्ययो भवति । अश्नुत इति खमाकाशमिन्द्रियं च, नास्य खमस्ति नखः, शोभनानि खानि अस्मिन् सुखम् । दुष्टानि खान्यस्मिन् दुःखम् ॥८७॥

उषेः किल्लुक् च ॥८८॥

Aho ! Shrutgyanam

उषू दाहे, इत्यस्मात् कित् खः प्रत्ययो भवति, लुक् चान्त्यस्य भवति । उषन्त्यस्यामिति उखा-स्थाली, ऊर्ध्व-क्रिया वा ॥८८॥

महेरुच्चास्य वा ॥८९॥

महपूजायाम्, इत्यस्मात् खः प्रत्ययः अन्तलुक् अकारस्य च उकारादेशो वा भवति । मुखमाननम्, मखः-यज्ञः, अध्वर्यः, ईश्वरश्च ॥८९॥

न्युङ्खादयः ॥९०॥

न्युङ्खादयः शब्दाः खप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । नयतेः ख उन् चान्तः, न्युङ्खाः-षडोङ्काराः । आदिग्रहणादन्येऽपि ॥९०॥

मये-धि-भ्यामूखेखौ ॥९१॥

मयि गतौ, एधि वृद्धौ, इत्याभ्यां यथासंख्यं उख, इख इत्येतौ प्रत्ययौ भवतः । मयूखः-रश्मिः । एधिखः-वराहः ॥९१॥

गम्यमि-रम्यजि-गद्यदि-छाग-डि-खडि-गृ-भृ-वृ-स्वृ-भ्यो गः ॥९२॥

एभ्यो गः प्रत्ययो भवति । गम्लृं गतौ, गङ्गा-, देवनदी । अम गतौ, अङ्गम्-शरीरावयवः, अङ्गः-समुद्रः, वह्निः, राजा च, अङ्गा-जनपदः । रमि क्रीडायाम्, रङ्गः-नाट्यस्थानम् । अज क्षेपणे च, वेगः-त्वरा, रेतश्च । गद व्यक्तायां वाचि, गद्गः-वाग् विकलः । अदंक् भक्षणे, अद्गः-समुद्रः, अग्निः, पुरोडाशश्च । छोंच् छेदने, छागः-बस्तः । गड सेचने, गङ्गः-मृगजातिः । खडण् भेदे, खड्गः मृगविशेषोः असिश्च । गृत् निगरणे, गर्गः-ऋषिः । टुडुभृंगक् पोषणे च, भर्गः-रुद्रः, सूर्यश्च । वृगट् वरणे, वर्गः संघातः । औस्वृ शब्दोपतापयोः, स्वर्गः-नाकः ॥९२॥

पू-मुदि-भ्यां कित् ॥९३॥

आभ्यां किद्गः प्रत्ययोभवति । पूग्श्पवने पूगः-संघातः, क्रमुकश्च । मुदि हर्षे मुद्गः-धान्यविशेषः ॥९३॥

भृ-वृ-भ्यां नोऽन्तश्च ॥९४॥

आभ्यांकिद्गः प्रत्ययो भवति, नकारश्चान्तो भवति । टुडुभृंगक् पोषणे च, भृङ्गः-पक्षी, भ्रमरः, वर्णविशेषः, लवङ्गश्च । वृगट् वरणे, वृङ्गः, पक्षीः, उपपतिः ॥९४॥

द्रमो णिद्वा ॥९५॥

द्रम गतौ, इत्यस्माद्गः प्रत्ययो भवति स च णिद्वा । द्राङ्गं-शीघ्रम्, द्राङ्गः-पांशुः द्रङ्गः-नगरम्, द्रङ्गा-शुल्कशाला ॥९५॥

शृङ्ग-शार्ङ्गादयः ॥९६॥

शृङ्गादयः शब्दा गप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । शृश् हिंसायाम्, इत्यस्य नोऽन्तो ह्रस्वश्च । शृङ्गं-विषाणम्, शिखर च, तस्यैव नोऽन्तो वृद्धिश्च, शार्ङ्गः-पक्षी । आदिग्रहणात् हृंग् हरणे, हार्गः-परितोषः । मृंत् प्राणत्यागे, मार्गः-पन्थाः ॥९६॥

तडेरागः ॥९७॥

तडण् आघाते, इत्यस्मादागः प्रत्ययो भवति । तडागं-सरः ॥९७॥

पति-तमि-तृ-पृ-कृ-शृल्वादेरङ्गः ॥९८॥

एभ्योऽङ्गः प्रत्ययो भवति । पत्लृ गतौ, पतङ्गः-पक्षी, शलभः, सूर्यः, शालि विशेषश्च । तमूच् काङ्क्षायाम्, तमङ्गः-हर्म्यनिर्यूहः । तॄ प्लवनतरणयोः, तरङ्गः-ऊर्मिः । पॄश् पालनपूरणयोः, परङ्गः-खगः, वेगश्च । कॄत् विक्षेपे, करङ्गः-कर्मशीलः । शॄश् हिंसायाम्, शरङ्गः-पक्षिविशेषः । लूग्श् छेदने, लवङ्गः-सुगन्धिवृक्षः । आदिग्रहणादन्येभ्योऽपि ॥९८॥

सृ-वृ-नृ-भ्यो णित् ॥९९॥

एभ्योणिदङ्गः प्रत्ययो भवति । सृं गतौ, सारङ्गः-हरिणः, चातकः, शबलवर्णश्च । वृगट् वरणे, वारङ्गः, काण्डखड्गयोः, शल्यं, शकुनिश्च । नॄश् नये, नारङ्गः-वृक्षजातिः ॥९९॥

मनेर्मतुमातौ च ॥१००॥

मनिच् ज्ञाने, इत्यस्मादङ्गः प्रत्ययो भवति, मतुमातौ चास्यादेशौ भवतः । मतङ्गः-ऋषिः, हस्ति च । मातङ्गः-हस्ती, अन्त्यजातिश्च ॥१००॥

विडि-विलि-कुरि-मृदि-पिशि-भ्यः कित् ॥१०१॥

एभ्यः किदङ्गः प्रत्ययो भवति । विड आक्रोशे, विडङ्गः-वृक्षजातिः, गृहावयवश्च । विलत् वरणे, विलत् भेदने वा, विलङ्गः-औषधम् । कुरत् शब्दे, कुरङ्गः-हरिणः, कुरङ्गी-भोजकन्या । मृदश् क्षोदे, मृदङ्गः-मुरजः । पिशत् अवयवे, पिशङ्गः-वर्णः ॥१०१॥

स्फुलि-कलि-पल्या-द्भ्य इङ्गक् ॥१०२॥

स्फुलादिभ्य आदन्तेभ्यश्च इङ्गक् प्रत्ययो भवति । स्फुलत् संचये च, स्फुलिङ्गः स्फुलिङ्गा च-अग्निकणः । कलि शब्दसंख्यानयोः, कलिङ्गः-राजा, कलिङ्गा-जनपदः । पल गतौ, पलिङ्ग-ऋषिः, शिला च । पातेः, पिङ्गः । भातेः, भिङ्गः । द्वावपि वर्णविशेषौ । ददातेः दिङ्गः-अध्यक्षः । दधातेः धिङ्गः-श्रेष्ठी । लातेः लिङ्गं-स्त्रीत्वादि हेतुश्च ।

Aho ! Shrutgyanam

आलिङ्गः-वाद्यविशेषः । श्यतेः शिङ्गः-वनस्पतिः, किशोरश्च ॥१०२॥

भलेरिदुतौ चातः ॥१०३॥

भलिण् आभण्डने, इत्यस्मादिङ्गक् प्रत्ययो भवति । अकारस्य च इकार-उकारौ भवतः । भिलिङ्गः-कर्मारोपकरणम् । भुलिङ्गः-ऋषिः, पक्षि च । भुलिङ्गाः-साल्वावयवाः ॥१०३॥

अदेर्णित् ॥१०४॥

अदंक् भक्षणे, इत्यस्मात् दिङ्गक्प्रत्ययो भवति । स चणित् भवति । आदिङ्गः-वाद्यजातिः ॥१०४॥

उच्चिलिङ्गादयः ॥१०५॥

उच्चिलिङ्गादयः शब्दा इङ्गक्प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । उत्पूर्वाच्चलेरस्येत्वं च उच्चिलिङ्गः-दाडिमी । आदिग्रहणादन्येऽपि ॥१०५॥

माङस्तुलेरुङ्गक् च ॥१०६॥

माङ्पूर्वात् तुलण् उन्माने, इत्यस्मात् उङ्गक् इङ्गक् च प्रत्ययौ भवतः । मातुलुङ्गः-बीजपूरः, मातुलिङ्गः-स एव ॥१०६॥

कमि-तमि-शमिभ्यो डित् ॥१०७॥

एभ्यो डिदुङ्गः प्रत्ययो भवति । कमूङ् कान्तौ, कुङ्गा-जनपदः । तमूच् काङ्क्षायाम्, तुङ्गः-महावर्ष्मा । शमूच् उपशमे, शुङ्गः-मुनिः, शुङ्गा-विनता । शुङ्गाः-कन्दल्यः ॥१०७॥

सर्ते सुर्च ॥१०८॥

सृं गतौ इत्यस्मादुङ्गः प्रत्ययो भवति सुर् चास्यादेशो भवति । सुङ्गा-गूढमार्गः ॥१०८॥

स्था-र्ति-जानिभ्यो घः ॥१०९॥

एभ्यो घः प्रत्ययो भवति । ष्ठां गतिनिवृत्तौ, स्थाघः-गाधः । ऋं प्रापणे च, अर्घः-मूल्यम्, मानप्रमाणं; पादोदकादि च । जनैचि प्रादुर्भावे, जङ्घा-शरीरावयवः ॥१०९॥

मघा-घङ्घाघ-दीर्घादयः ॥११०॥

एते घप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । मङ्घेर्न् घलोपश्च । मघा-नक्षत्रम् । हन्तेर्हस्य घश्च, घङ्घः-घस्मरः, घङ्घा-काङ्क्षा । अमेर्लुक् च, अघं-पापम् । दृणातेर्दीर् च, दीर्घ आयातः, उच्चश्च । आदिशब्दादन्येऽपि ॥११०॥

सर्तेरघः ॥१११॥

सृं गतौ, इत्यस्मादघः प्रत्ययो भवति । सरघा-मधुमक्षिका ॥१११॥

कू-पू-समिण्भ्यश्चट् दीर्घश्च ॥११२॥

कूपूभ्यां सम्पूर्वाच्चिइणश्चट् प्रत्ययो भवति । दीर्घश्च भवति, टो ङ्यर्थः । कुङ् शब्दे, कूचः-हस्ती, कूची-प्रमदा चित्रभाण्डम्, उदश्वित्, विकारश्च । पूग्श् पवने, पूचः, पूची-मुनिः । इंणक् गतौ, समीचः-ऋत्विक, समीचं-मिथुनयोगः । समीची-पृथ्वी, उदीची च, दीर्घवचनाद्गुणो न भवति ॥११२॥

कूर्च-चूर्चादयः ॥११३॥

कूर्च इत्यादयः शब्दाश्चट्प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । कवतेः किरतेः करोतेर्वा ऊरादेशश्चान्तस्य । कूर्च- श्मश्रु, आसनं, तन्तुवायोपकरणं, यति, पवित्रकं च । कूर्चमिव कूर्चकः कूर्चिकेति च भवति । चरतेश्चोरयतेर्वा चूरादेशश्च, चूर्चः-बलवान् । आदिशब्दादन्येऽपि ॥११३॥

कल्यवि-मदि-मणि-कु-कणि-कुटि-कृभ्योऽचः ॥११४॥

एभ्योऽचः प्रत्ययो भवति । कलि शब्दसंख्यानयोः, कलचः-गणकः । अव रक्षणादौ, अवचः-उच्चैस्तरः । मदैच् हर्षे, मदचः-मत्तः । मण शब्दे, मणचः-शकुनिः । कुङ् शब्दे, कवचं-वर्म । कण शब्दे, कणचः-कणयः । कुटत् कौटिल्ये:, कुटचः-वृक्षजातिः, कृत् विक्षेपे, करचः-धान्यावपनम् ॥११४॥

क्रकचादयः ॥११५॥

क्रकच इत्यादयः शब्दा अचप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । क्रमेः कश्च, क्रकचः-करपत्रः । आदिशब्दादन्येऽपि ॥११५॥

पिशेराचक् ॥११६॥

पिशत् अवयवे, इत्यस्मादाचक् प्रत्ययो भवति । पिशाचः-व्यन्तरजातिः ॥११६॥

मृ-त्रपिभ्यामिचः ॥११७॥

आभ्यामिचः प्रत्ययो भवति । मृंत् प्राणत्यागे, मरिच-मूषणम् । त्रपौषि लज्जायाम्, त्रपिचा-कुथा ॥११७॥

म्रियतेरीचण् ॥११८॥

मृंत् प्राणत्यागे, इत्यस्मादीचण् प्रत्ययो भवति । मारीचः-रावणमातुलः ॥११८॥

लषेरुचः कश्च ॥११९॥

लषी कान्तौ । इत्यस्मादुचः प्रत्ययो भवति । अन्त्यस्य च को भवति । लकुचः-वृक्षजातिः ॥११९॥

गुडेरूचट् ॥१२०॥

Aho ! Shrutgyanam

गुङत् रक्षायाम्, इत्यस्मादूचट् प्रत्ययो भवति । गूडूची-छिन्नरुहा । कुटादित्वात्, ङित्त्वम् ॥१२०॥

सिवेर्डित् ॥१२१॥

षिवूच् ऊतौ, इत्यस्मात् डिदूचट् प्रत्ययो डित् भवति । सूचः-पिशुनः, स्तिभिश्च । सूची-संधानकरणी ॥१२१॥

चि-मेर्डोचडञ्चौ ॥१२२॥

चिमिभ्यां प्रत्येकं डोच डञ्च इति प्रत्ययौ भवतः । वचनभेदान्न यथासंख्यम् । चिंग्ट् चयने, चोचः वृक्षविशेषः, चञ्चा-तृणमयः पुरुषः । डुमिंगट् प्रक्षेपणे, मोचा-कदली, मञ्चः-पर्यङ्कः ॥१२२॥

कुटि-कुलि-कल्युदिभ्य इञ्चक् ॥१२३॥

एभ्य इञ्चक् प्रत्ययो भवति । कुटेः, कुटिञ्चः-क्षुद्रकर्कटः । कुलेः, कुलिञ्चः-राशिः । कलेः, कलिञ्चः-उपशाखावयवः । उद आघाते सौत्रः, उदिञ्चः कोणः-येन तूर्यं वाद्यते, परपुष्टश्च ॥१२३॥

तुदि-मदि-पद्यदि-गु-गमि-कचि-भ्यच्छक् ॥१२४॥

एभ्यश्छक्-प्रत्ययो भवति । तुदींत् व्यथने, तुच्छः-स्तोकः । मदैच् हर्षे, मच्छः-मत्स्यः, प्रमत्तपुरुषश्च, मच्छा-स्त्री । पदिंच् गतौ, पच्छः-शिला । अदंक् भक्षणे, अच्छः-निर्मलः । गुङ् शब्दे, गुच्छः-स्तबकः । गम्लृं गतौ, गच्छः-क्षुद्रवृक्षः । कचि बन्धने, कच्छः-कूर्मपादः, कुक्षिः-नद्यवकुटारश्च । कच्छा-जनपदः । बाहुलकात् कत्वाभावः ॥१२४॥

पीपूङो ह्रस्वश्च ॥१२५॥

आभ्यां छक् प्रत्ययो भवति, ह्रस्वश्च भवति । पींङ्च् पाने, पिच्छम्-शकुनिपत्त्रम्, पिच्छः-गुणविशेषः । यद्वान् पिच्छिल उच्यते । पूङ् पवने, पुच्छं-वालधिः ॥१२५॥

गुलुञ्छ-पिलिपिञ्छैधिच्छादयः ॥१२६॥

एते छप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । गुडेर्ल उम् चान्तः, गुलुच्छः-स्तबकः । पीलेरिपि नोन्तो ह्रस्वश्च, पिलिपिञ्छः-रक्षो विशेषः । एधेरिट् च, एधिच्छः-नगः । आदिग्रहणात् पिञ्छादयोऽपि भवन्ति ॥१२६॥

वियो जक् ॥१२७॥

वींक् प्रजवकान्त्यसनखादनेषु च, इत्यस्मात् जक् प्रत्ययो भवति । बीजम्-उत्पत्ति हैतुः ॥१२७॥

पुवः पुन् च ॥१२८॥

पूङ् पवने, इत्यस्मात् जक् प्रत्ययो भवति । अस्य च पुन् इत्यादेशो भवति । पुञ्जः-राशिः ॥१२८॥

कुवः कुब्कुनौ च ॥१२९॥

कुङ् शब्दे, इत्यस्मात् जक् प्रत्ययो भवति । अस्य च कुब् कुन् इत्यादेशौ भवतः । कुब्जः-वक्रानताङ्ग, गुच्छश्च । कुञ्जः-हनुः, पर्वतैकदेशश्च । निकुञ्जः-गहनम् ॥१२९॥

कुटेरजः ॥१३०॥

कुटत् कौटिल्ये, इत्यस्मादजः प्रत्ययो भवति । कुटजः-वृक्षविशेषः । कुटादित्वात् ङित्त्वम्, कुटजी ॥१३०॥

भिषेर्भिषभिष्णौ च वा ॥१३१॥

भिषेरजः प्रत्ययो भवति, भिषभिष्ण इत्यादेशौ चास्य वा भवतः । भिषिः सौत्रः, भिषजः । आदेशबलान्न गुणः । भिष्णजः-वैद्यः, भेजषम्-औषधम् ॥१३१॥

मुर्वेर्मुर् च ॥१३२॥

मुर्वै बन्धने, इत्यस्मादजः प्रत्ययो भवति । अस्य च मुर् इत्यादेशो भवति । मुरजः-मृदङ्गः ॥१३२॥

बलेर्वोन्तश्च वा ॥१३३॥

बल प्राणनधान्यावरोधयोः, इत्यस्मात् अजः प्रत्ययो भवति, वकारश्चान्तो वा भवति । बल्वजः-मुञ्जविशेषः । बलजा-सबुसो, धान्यपुञ्जः ॥१३३॥

उटजादयः ॥१३४॥

उटजादयः शब्दा अजप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते, वटेर्वस्योत्वं च । उटजं-मुनिकुटीरः । आदिशब्दात् भूर्जभरुजादयो भवन्ति ॥१३४॥

कुलेरिजक् ॥१३५॥

कुल बन्धुसंस्त्यानयोः, इत्यस्मात् इजक् प्रत्ययो भवति । कुलिजं-मानम् ॥१३५॥

कृगोऽङ्गः ॥१३६॥

करोतेरङ्गः प्रत्ययो भवति । करङ्गः-वृक्षजातिः ॥१३६॥

झमेर्झः ॥१३७॥

झमू अदने, इत्यस्मात् झः प्रत्ययो भवति । झञ्झा-सशीकरो मेघवातः ॥१३७॥

लुषेष्टः ॥१३८॥

लुष स्तेय, इत्यस्माट्टः प्रत्ययो भवति । लोष्टो-मृत्पिण्डः ॥१३८॥

नमि-तनि-जनि-वनि-सनो लुक् च ॥१३९॥

एभ्यष्टः प्रत्ययो भवति, लुक् चान्तस्य भवति । णमं

Aho ! Shrutgyanam

प्रह्वत्वे, नटः-भरतपुत्रः । तनूयी विस्तारे, तटं-कूलम् । जनैचि प्रादुर्भावे, जटा-ग्रथितकेशसंघातः । वन षण संभक्तौ, वटः-न्यग्रोधः । सटा-अग्रथितः केशसंघातः ॥१३९॥

जनि-पणि-किजुभ्यो दीर्घश्च ॥१४०॥

एभ्यष्टः प्रत्ययो भवति, दीर्घश्चैषां गुणापवादो भवति । जनैचि प्रादुर्भावे, पणि व्यवहारस्तुत्योः, जाण्टः, पाण्टः-वृक्षविशेषवैतो । किजू सौत्रौ, कीटः-क्षुद्रजन्तुः । जूटः-मौलिः ॥१४०॥

घटा-घाटा-घण्टादयः ॥१४१॥

एते टप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । हन्तेर्घघाघनश्च, घटा-वृन्दम् । घाटा-स्वाङ्गम् । घण्टा-वाद्यविशेषः । आदिग्रहणात् छटादयो भवन्ति ॥१४१॥

दिव्यवि-श्रु-कु-कर्बि-शकि-कङ्कि-कृपि-चपि-चमि-कम्येधि-कर्कि-मर्कि-कक्खि-तॄ-कृ-सृ-भृ-वृभ्योऽटः ॥१४२॥

एभ्योऽटः प्रत्ययो भवति । दिवूच् क्रीडादौ, देवटः-देवकुलविशेषः, शिल्पी च । अव रक्षणादौ, अवटः-प्रपातः, कूपश्च । श्रुंट् श्रवणे, श्रवटः-छत्त्रम् । कुंक् शब्दे, कवटः-उच्छिष्टम् । कर्ब गतौ, कर्बटं-क्षुद्रपत्तनम् । शक्लृंट् शक्तौ, शटकम्-अनः । ककुङ् गतौ, कङ्कटः-सन्नाहः । कङ्कट-सीमा । कृपौङ् सामर्थ्ये,कर्पटं-वासः । चप सान्त्वने, चपटः-रसः । चमू अदने, चमटः-घस्मरः । कमूङ् कान्तौ, कमटः-वामनः । एधि वृद्धौ, एधटः-वल्मीकः । कर्कि मर्की-सौत्रौ । कर्कटः-कपिलः, कुलीरश्च, कर्कटी-त्रपुसी । मर्कटः-कपिः, क्षुद्रजन्तुश्च । कक्ख हसने, कक्खटः-कर्कशः । तॄ प्लवनतरणयोः, तरटः-पीनः । डुकृंग् करणे, करटः-काकः, करिकपोलश्च । सृं गतौ, सरटः-कृकलासः । टुडुभृंग्क् पोषणे च, भरटः-प्लवविशेषः, भृत्यः, कुलालश्च । वृग्ट् वरणे, वरटः-क्षुद्रधान्यम्, प्रहारश्च ॥१४२॥

कुलि-विलिभ्यां कित् ॥१४३॥

आभ्यां किदटः प्रत्ययो भवति । कुल बन्धुसंस्त्यानयोः, कुलटा-बन्धकी । विलत् वरणे, विलटा-नदी ॥१४३॥

कपट-कीकटादयः ॥१४४॥

कपटादयः शब्दा अटप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । कम्पेर्नलोपश्च, कपटं-माया । ककेरत ईच्च, कीकटः-कृपणः । आदिग्रहणात् लघटपर्पटादयो भवन्ति ॥१४४॥

अनि-शॄ-पॄ-वॄ-ललिभ्य आटः ॥१४५॥

एभ्य आटः प्रत्ययो भवति । अनक् प्राणने, अनाटः-शिशुः । शॄश् हिंसायाम्, शराटः-शकुन्तः । पॄश् पालनपूरणयोः, पराट-आयुक्तकः । वृङ्श् संभक्तौ, वराटः-सेवकः । ललिण् ईप्सायाम्, ललाटम्-अलिकम् ॥१४५॥

सृ-सृपेः कित् ॥१४६॥

आभ्यां किदाटः प्रत्ययो भवति । सृं गतौ, स्राटः-पुरः, सरः । सृप्लृं गतौ, सृपाटः-अल्पः, कुमुदादिपत्त्रं च । सृपाटी-उपानत्, कुप्यम्, अल्पपुस्तकश्च ॥१४६॥

किरो लश्च वा ॥१४७॥

किरतेः किदाटः प्रत्ययो भवति, लश्चान्तो वा भवति । किलाटो-भक्ष्यविशेषः, किराटो-वणिक्, म्लेच्छश्च ॥१४७॥

कपाट-विराट-शृङ्गाट-प्रपुन्नाटादयः ॥१४८॥

एते आटप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । कम्पेर्नलोपश्च, कपाटः-अररिः । 'जपादीनां पो वः' [२-३-१०५] इति वत्वे-कवाटः । वृङ इत्वं च, विराटः-राजा । श्रयतेः शृङ्ग् च, शृङ्गाटं-जलजविशेषः, विपणिमार्गश्च । प्रपूर्वात् पुणेर्नश्च, प्रपुनाटः-एडगजः । आदिशब्दात् खल्वाटादयो भवन्ति ॥१४८॥

चिरेरिटो भ् च ॥१४९॥

चिरेः सौत्रादिटः प्रत्ययो भवति, भकारश्चान्तादेशो भवति । चिर्भिटी-वालुङ्की ॥१४९॥

टिण्टश्चर् च वा ॥१५०॥

चिरेष्टिदिण्टः प्रत्ययो भवति, चर इति चास्यादेशो वा भवति । चरिण्टी चिरिण्टी च-प्रथमवयाः स्त्री ॥१५०॥

तॄ-कृ-कृपि-कम्पि-कृषिभ्यः कीटः ॥१५१॥

एभ्यः किदीटः प्रत्ययो भवति । तॄ प्लवनतरणयोः, तिरीटं-कूलवृक्षः, मुकुटं, वेष्टनं च । कृत् विक्षेपे, किरीटं-मुकुटं, हिरण्यं च । कृपौङ् सामर्थ्ये, कृपीटं-हिरण्यं, जलं च । कपुङ् चलने, कम्पीटं-कम्पः, कम्प्रं च । कृषींत् विलेखने, कृषीटं-जलम् ॥१५१॥

खञ्जेररीटः ॥१५२॥

खजु गतिवैकल्ये, इत्यस्मादरीटः प्रत्ययो भवति । खञ्जरीटः-खञ्जनः ॥१५२॥

गॄ-जॄ-दॄ-वॄ-भृभ्य उट उडश्च ॥१५३॥

एभ्य उट उडश्च प्रत्ययौ भवतः । भिन्नविभक्तिनिर्देश उटस्योत्तरत्रानुवृत्त्यर्थ । अप्रकृतस्यापि उडस्य विधानमिह लाघवार्थम् । गॄश् शब्दे, गरुटः-गरुडश्च-गरुत्मान् । जॄष्च् जरसि, जरुटः जरुडश्च-वनस्पतिः । दॄश् विदारणे, दरुटः दरुडश्च-बिडालः । वृग्श् वरणे, वरुटः वरुडश्च- मेषः भृष् भर्जने च, भरुटः भरुडश्च-मेष एव ॥१५३॥

मङ्केर्मकमुकौ च ॥१५४॥

Aho ! Shrutgyanam

मकुङ् मण्डने, इत्यस्मात् उटः प्रत्ययो भवति, मक मुक इत्यादेशौ चास्य भवतः। मकुटः मुकुटश्च-किरीटः ॥१५४॥

नर्कुट-कुक्कुटोत्कुरुट-मुरुट-पुरुटादयः ॥१५५॥

एते उटप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते। नृतेः कश्च, नर्कुटः-बन्दी। कुकेः कोऽन्तश्च, कुक्कुटः-कृकवाकः। उत्पूर्वात् कृगः कुर् च उत्कुरुटः-कचवर, पुञ्जः। मुरिपुर्योर्गुणाभावश्च, मुरुटः-यत् वेण्वादिमूलमृजूकर्तुं न शक्यते। पुरुटः-जलजन्तुः। आदिशब्दात् स्थपुटादयो भवन्ति ॥१५५॥

दुरो द्रः कूटश्च दुर् च ॥१५६॥

दूर् पूर्वात् द्रणातेः किदूट उटश्च प्रत्ययौ भवतो। दुर् चास्यादेशो भवति। दुर्द्रूटः-दुर्मुखः, दुर्द्रुटः-अदेशकालवादी ॥१५६॥

बन्धेः ॥१५७॥

बन्धंश् बन्धने, इत्यस्मात् कित् उटः प्रत्ययो भवति। बधूटी-प्रथमवयाः स्त्री ॥१५७॥

चपेरेटः ॥१५८॥

चप सांत्वने, इत्यस्मादेटः प्रत्ययो भवति। चपेटः चपेटा वा-हस्ततलाहतिः ॥१५८॥

ग्रो णित् ॥१५९॥

गॄत् निगरणे, इत्यस्मात् णिदेटः प्रत्ययो भवति। गारेटः-ऋषिः ॥१५९॥

कृ- शक्- शाखेरोटः ॥१६०॥

एभ्य ओटः प्रत्ययो भवति। डुकृंग् करणे, करोटः-भृत्यः शिरः, कपालं च, करोटं-भाजनविशेषः। शक्लृंट् शक्तौ, शकोटः-बाहुः। शाखृ श्लाखृ व्याप्तौ, शाखोटः-वृक्षविशेषः ॥१६०॥

कपोट-वकोटाक्षोट-कर्कोटादयः ॥१६१॥

एते ओटप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते। कबृङ् वर्णे, पश्च, कपोटः-वर्णः, कितवश्च। वचेः कश्च, वकोटः-बकः। अश्नातेः सश्च परादिः, अक्षोटः-फलवृक्षः। कृगः कोऽन्तश्च, कर्कोटः-नागः। आदिशब्दादन्येऽपि भवन्ति ॥१६१॥

वनि-कणि-काश्युषिभ्यष्ठः ॥१६२॥

एभ्यष्ठप्रत्ययो भवति। वन भक्तौ, वण्ठः-अनिविष्टः। कण शब्दे, कण्ठः-कन्धरा। काशृङ् दीप्तौ, काष्ठं-दारु, काष्ठा-दिक्, अवस्था च। उषू दाहे, ओष्ठः-दन्तच्छदः ॥१६२॥

पी-विशि-कुणि-पृषिभ्यः कित् ॥१६३॥

एभ्यः कित् ठः प्रत्ययो भवति। पीङ् च पाने, पीठम्-आसनम्। विशंत् प्रवेशने, विष्ठा-पुरीषम्। कुणत् शब्दोपकरणयोः, कुण्ठः-अतीक्ष्णः। पृषू सेचने, पृष्ठः-अङ्कुशः, शरीरैकदेशश्च ॥१६३॥

कुषेर्वा ॥१६४॥

कुषश् निष्कर्षे, इत्यस्मात् ठः प्रत्ययो भवति, स च वा कित् भवति। कुष्ठ-व्याधिः, गन्धद्रव्यं च, कोष्ठः-कुशूलः, उदरं च ॥१६४॥

शमेर्लुक् च वा ॥१६५॥

शमूच् उपशमे, इत्यस्मात् ठः प्रत्ययो भवति, लुक् चान्तस्य वा भवति। शठः-धूर्तः, शण्ठः-स एव, नपुंसकं च ॥१६५॥

पष्ठैघिठादयः ॥१६६॥

पष्ठादयः शब्दाः ष्ठप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते। पुषेः कित् ठः पषादेशश्च पष्ठः-प्रस्थः, पर्वतश्च। एधतेरिट् च, एधिठं-वनम्, एधिठः-गिरिसरिद्द्रहः। आदिशब्दादन्येऽपि ॥१६६॥

मृ-जृ-शृ-कम्यमि-रमि-रपिभ्योऽठः ॥१६७॥

एभ्योऽठः प्रत्ययो भवति। मृंत् प्राणत्यागे, मरठः-दध्यति, द्रवीभूतम्, कृमिजातिः, कण्ठ, प्राणश्च। जॄषच् जरसि, जरठः-कठोरः। शॄश् हिंसायाम्, शरठ-आयुधं, पापं, क्रीडनशीलश्च। कमूङ् कान्तौ कमठः-भिक्षाभाजनम्, कूर्मास्थि, कच्छपः, मयूरः, वामनश्च। अम गतौ, अमठः-प्रकर्षगतिः। रमि क्रीडायाम्, रमठः-देशः, कृमिजातिः, क्रीडनशीलः, म्लेच्छः, देवश्च, विलातानाम्। रपे व्यक्ते वचने, रपठः-विद्वान्, मण्डूकश्च ॥१६७॥

पञ्चमात् डः ॥१६८॥

पञ्चमान्तात् धातोर्डः प्रत्ययो भवति। षण् भक्तौ, षण्डः-वनं, वृषभश्च। बाहुलकात् सत्वाभावः। भण शब्दे, भण्डः-प्रहसनकरः, बन्दी च। चण शब्दे, चण्डः-क्रूरः। पणि व्यवहारस्तुत्योः, पण्डः-शण्ठः। गणण् संख्याने, गण्डः-पौरुषयुक्तः पुरुषः। मण शब्दे, मण्डः-रश्मिः, अग्रम्, अन्नविकारश्च। वन भक्तौ, वण्डः-अल्प, शेफः, निश्चर्माग्रशिश्नश्च। शमू दमूच् उपशमे, शण्डः-उत्सृष्टः, पशुः, ऋषिश्च। दण्डः-वनस्पतिप्रतानः, राजशासनं, नालं, प्रहरणं च। रमि क्रीडायाम्, रण्डः-पुरुषः, रण्डा-स्त्री, रण्डम्-अन्तःकरणम्। त्रयमपि स्वसम्बन्धिशून्यमेव मुच्यते। तमेस्तनेर्वा, तण्डः-ऋषिः। वितण्डा-तृतीयकथा। गमेः, गण्डः-कपोलः। भामि क्रोधे, भाण्डम्-उपस्करः ॥१६८॥

Aho ! Shrutgyanam

कण्यणि-खनिभ्यो णिद्वा ॥१६९॥

एभ्यो डः प्रत्ययो भवति, स च णिद्वा भवति । कण अण शब्दे, काण्डः-शरः, फलसंघातः, पर्व च । कण्डं-भूषणं, पर्व च । आण्डः-मुष्कः, अण्डः-स एव, योनिविशेषश्च । खनूग् अवदारणे, खाण्डः-कालाश्रयो, गुडः । खण्डः-इक्षुविकारोऽन्यः । खण्डं-शकलम् ॥१६९॥

कु-गु-हु-नी-कुणि-तुणि-पुणि-मुणि-शुन्यादिभ्यः कित् ॥१७०॥

एभ्यः कित् डः प्रत्ययो भवति । कुङ् शब्दे, कुडः-घटः, हलं च । गुङ्शब्दे, गुडः- गोलः, इक्षुविकारश्च, गुडासन्नाहः । हुंक् दानादनयोः, हुडः– मूर्खः मेषश्च । णींग् प्रापणे, नीडं– कुलायः । कुणत् शब्दोपकरणयोः, कुण्डं– भाजनम्, जलाधारविशेषश्च । कुण्डः-भर्तरि जीवति जारेण जातः अपटिवन्द्रियश्च । तुणत् कौटिल्ये, तुण्डम्-मुखम् । पुणत् शुभे, पुण्डः-भिन्नवर्णः । मुणत् प्रतिज्ञाने, मुण्डः-परिवापितकेशः । शुनत् गतौ, शुण्डा-सुरा, हस्तिहस्तश्च । आदिग्रहणादन्येभ्योऽपि भवति ॥१७०॥

ऋ-सृ-तॄ-व्या-लिह्यवि-चमि-वमि-यमि-चुरि-कुहेरडः ॥१७१॥

एभ्यो अडः प्रत्ययो भवति । ऋंक् गतौ, अरडः-तरुः । सृं गतौ, सरडः-भुजपरिसर्पः, तरुश्च । तॄ प्लवनतरणयोः, तरडः-वृक्षजातिः । व्येंग् संवरणे, व्याडः-दुःशीलः, हिंस्रः, पशुः, भुजगश्च । लिहींक् आस्वादने, लेहडः-श्वा, चौर्यग्रासी च । अव रक्षणादौ, अवडः-क्षेत्रविशेषः । चमू अदने, चमडः-पशुजातिः । टुवमू उद्गिरणे, वमडः-लूताजातिः । यमू उपरमे, यमडः-वनस्पतिः, युगलं च । चुरण् स्तेये, चोरडः-चोरः । कुहणि विस्मापने, कुहडः-उन्मत्तकः ॥१७१॥

विहड-कहोड-कुरड-केरड-क्रोडादयः ॥१७२॥

एतेऽडप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । विपूर्वात्, हन्तेरनो लुक्च, विहडः-शकुनिः, मूढचित्तश्च । कषेर्हः प्रत्ययोऽकारस्य च औकारः, कहोडः-ऋषिः । कुरेर्गुणाभावश्च. कुरडः-मार्जारः । किरतेः केर् च, केरडः-त्रैराज्ये राजा । क्रुगः कित् प्रत्ययाकारस्य च औकारः । क्रोडः-किरिः, अङ्कश्च । आदिग्रहणात् लहोडादयो भवन्ति ॥१७२॥

जॄ-कॄ-तॄ-शॄ-सॄ-भॄ-वृभ्योऽण्डः ॥१७३॥

एभ्योऽण्डः प्रत्ययो भवति । जॄष्च् जरसि, जरण्डः-अतीतवयस्कः । कॄत् विक्षेपे, करण्डः-समुद्गः, समुद्रः कृमिजातिश्च । तॄ प्लवनतरणयोः, तरण्डः-प्लवः, वायुश्च । शॄश् हिंसायाम्, शरण्डः-हिंस्रः, आयुधं च । सृं गतौ, सरण्डः-कृमिजातिः, इषीका, वायुः, भूतसंघातः, तृणसमवायश्च । टुडुभृंग्क् पोषणे च, भरण्डः-भण्डजातिः, पक्षी च । वृग्ट् वरणे, वरण्डः-कुडयम्, तृणकाष्ठादिभारश्च ॥१७३॥

पूगो गादिः ॥१७४॥

पूग्श् पवने, इत्यस्मात् गकारादिः अण्डः प्रत्ययो भवति । पोगण्डः-विकलाङ्गः, युवा च ॥१७४॥

वनेस्त च ॥१७५॥

वन भक्तौ, इत्यस्माद् अण्डः प्रत्ययो भवति, तकारश्चान्तादेशो भवति । वतण्डः-ऋषिः ॥१७५॥

पिचण्डैरण्ड-खरण्डादयः ॥१७६॥

एतेऽण्डप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । पिचेरगुणत्वं च, पिचण्डः- लघुलगुडः । ईरेर्गुणश्च, एरण्डः-पञ्चाङ्गुलः । खाद्दभक्षणे, अन्त्यस्वरादेररादेशश्च, खरण्डः-सर्वर्तुकम् । आदिग्रहणात् कूष्माण्डशयण्डशयाण्डादयोपि भवन्ति ॥१७६॥

लगेरुडः ॥१७७॥

लगे सङ्गे, इत्यस्मात् उडः प्रत्ययो भवति । लगुडः-यष्टिः । गॄ-जॄ-दॄ-वॄ-भृभ्यस्तु उडो विहित एव ॥१७७॥

कुशेरुण्डक् ॥१७८॥

कुशच् श्लेषे, इत्यस्मात् उण्डक् प्रत्ययो भवति । कुशुण्डः-वपुष्मान् ॥१७८॥

शमि-षणिभ्यां ढः ॥१७९॥

आभ्यां ढः प्रत्ययो भवति । शमूच् उपशमे, शण्ढः-नपुंसकम् । षन भक्तौ, षण्ढः-स एव । बाहुलकात् सत्वाभावः ॥१७९॥

कुणेः कित् ॥१८०॥

कुणत् शब्दोपकरणयोः, इत्यस्मात् कित् ढः प्रत्ययो भवति । कुण्ढः-धूर्तः । बाहुलकान्न दीर्घः ॥१८०॥

नञः सहेः षा च ॥१८१॥

नञ्पूर्वात् षहि मर्षणे, इत्यस्मात् ढः प्रत्ययो भवति, षा चास्यादेशो भवति । अषाढा-नक्षत्रम् ॥१८१॥

इणुर्वि-शा-वेणि-पॄ-कॄ-वॄ-तॄ-जॄ-दॄ-सृपि-पणिभ्यो णः ॥१८२॥

एभ्यो णः प्रत्ययो भवति । इंणक् गतौ, एणः-कुरङ्गः । उर्वै हिंसायाम्, उर्णा-मेषादिलोम, भ्रुवोरन्तरावर्तश्च । शोंच् तक्षणे, शाणः-परिमाणम्, शस्त्रतेजनं च । वेणृग् गतिज्ञानचिन्तानिशामनवादित्रग्रहणेषु, वेण्णा कृष्णवेण्णा च नाम नदी । पॄश् पालनपूरणयोः, पर्णं-पत्त्रं, शिरश्च । कॄत् वि-

Aho ! Shrutgyanam

क्षेपे, कर्णः-श्रवणं, कौन्तेयश्च । वृश् वरणे, वर्णः-शुक्लादिः, ब्राह्मणादिः, अकारादिः, यशः, स्तुतिः, प्रकारश्च । तॄ प्लवनतरणयोः, तर्णः-वत्सः । जॄषूच् जरसि, जर्णः-चन्द्रमाः, वृक्षः, कर्कः, क्षयधर्मा, शकुनिश्च । दॄङत् आदरे, दर्णः-पर्णम् । सृप्लृं गतौ, सर्प्णः-सरीसृपजातिः । पणि व्यवहारस्तुत्योः, पण्णम्-व्यवहारः ॥१८२॥

घृ-वी-ह्वा-शुष्युषि-तृषि-कृष्यर्तिभ्यः कित् ॥१८३॥

एभ्यः कित् णः प्रत्ययो भवति । घृं सेचने, घृणा-कृपा । वींक् प्रजनादिषु, वीणा-वल्लकी । ह्वेंग् स्पर्धाशब्दयोः, हूणः-म्लेच्छजातिः । शुषंच् शोषणे, शुष्णः-निदाघः । उषू दाहे, उष्णः-स्पर्शविशेषः । ञितृषच् पिपासायाम्, तृष्णा-पिपासा । कृषींत् विलखने, कृष्णः-वर्णः, विष्णुः, मृगश्च । ऋंक् गतौ, ऋणं-वृद्धिधनम्, जलं, दुर्गभूमिश्च ॥१८३॥

द्रोर्वा ॥१८४॥

द्रुं गतौ, इत्यस्मात् णः प्रत्ययो भवति, स च किद्वा भवति । द्रुणा- ज्या, द्रोणः-चतुराढकं, पाण्डवाचार्यश्च । द्रोणी-नौः, गौरादित्वात् ङीः ॥१८४॥

स्था-क्षु-तोरूच्च ॥१८५॥

एभ्यो णः प्रत्ययो भवति, ऊकारश्चान्तादेशो भवति । ष्ठां गतिनिवृत्तौ, स्थूणा-तन्तुधारिणी, गृहधारिणी, शरीरधारिणी, लोहप्रतिमा, व्याधिविशेषश्च । टुक्षुक् शब्दे, क्षूणम्-अपराधः । तुंक् वृत्त्यादिषु, तूणः-इषुधिः ॥१८५॥

भ्रूण-तृण-गुण-कार्क्ण-तीक्ष्ण-श्ल ाभीक्ष्णादयः ॥१८६॥

एते णप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । भृगो भ्रू च, भ्रूणः-निहीनः, अर्भकः, स्त्रैणगर्भश्च । तरतेर्ह्रस्वश्च, तृणं-शष्पादि । गायतेर्गमेर्गृणातेर्वा गुभावश्च, गुणः-उपकारः, आश्रितः, अप्रधानं, ज्या च । कृगो वृद्धिः कोऽन्तश्च, कार्क्णः-शिल्पी । तिजेर्दीर्घः सश्च परादिः, तीक्ष्णं-निशितम् । श्लिषेः सोऽन्तोऽचेतः श्लक्ष्णम्-अकर्कशं, सूक्ष्मं च । अभिपूर्वात् इषेः किच्च सोन्तः, अभीक्ष्णम्-अजस्रम् । आदिग्रहणादन्येऽपि ॥१८६॥

तॄ-कॄ-शॄ-पॄ-भृ-वृ-श्रु-रुहि-रु-लक्षि-विचक्षि-चुक्कि-बुक्कि-तङ्गचङ्गि-मङ्कि-कङ्कि-चरि-समीरेरणः ॥१८७॥

एभ्योऽणः प्रत्ययो भवति । तॄ प्लवनतरणयोः, तरणम् । कॄत् विक्षेपे, करणम् । शॄश् हिंसायाम्, शरणं-गृहम् । पॄश् पालनपूरणयोः, परणम् । डुडुभृंग्क पोषणे च, भरणम् । वृग्ट् वरणे, वरणः-वृक्षः, सेतुबन्धश्च । वरणं-कन्याप्रतिपादनम् । श्रुंट् श्रवणे, श्रवणः-कर्णः, भिक्षुश्च । रुक् शब्दे, रुंङ् रेषणे वा, रवणः-करभः, अग्निः, द्रुमः, वायुः, भृङ्गः, शकुनिः, सूर्यः, घण्टा च । रुहं जन्मनि, रोहणः-गिरिः । लक्षीण् दर्शनाङ्कनयोः, लक्षणं-व्याकरणम्, शुभाशुभसूचकं मषीतिलकादि अङ्कनं च । चक्षिक् व्यक्तायां वाचि, विचक्षणः-विद्वान् । चुक्कण् व्यथने, चुक्कणः-व्यायामशीलः । बुक्क भाषणे, बुक्कणः श्वा, वावदूकश्च । तगु गतौ, तङ्गणाः-जनपदः । अगु गतौ, अङ्गणम्-अजिरम् । मकुङ् मण्डने, मङ्कणः-ऋषिः । ककुङ् गतौ, कङ्कणः-प्रतिसरः । चर भक्षणे च, चरणः-पादः । ईरिक् गतिकम्पनयोः, सम्पूर्वः, समीरणः-वातः ॥१८७॥

कॄ-गॄ-पॄ-कृपि-वृषिभ्यः कित् ॥१८८॥

एभ्यः किद् अणः प्रत्ययो भवति । कॄत् विक्षेपे, किरणः-रश्मिः । गॄत् निगरणे, गिरणः-मेघः, आचार्यः, ग्रामश्च । पॄश् पालनपूरणयोः,पुरणः-समग्रयिता, समुद्रः पर्वतविशेषश्च । कृपौङ् सामर्थ्ये, कृपणः-कीनाशः । वृषू सेचने, वृषणः-मुष्कः ॥१८८॥

धृषि-वहेरिच्चोपान्त्यस्य ॥१८९॥

आभ्यां किद् अणः प्रत्ययो भवति, इच्चोपान्त्यस्य भवति । ञिधृषाट् प्रागल्भ्ये, धिषणः-बृहस्पतिः, धिषणा-बुद्धिः । वहीं प्रापणे, विहणः-ऋषिः, पाठश्च ॥१८९॥

चिक्कण-कुक्कण-कृकण-कुङ्कण-त्रवणोल्वणोरण-लवण-वङ्क्षणादयः ॥१९०॥

एते किद् अणप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । चिनोतेश्चिक्क् च, चिक्कणः-पिच्छिलः । कुकिकृगोः कोऽन्तश्च, कुक्कणः-शकुनिः । कृकणः-ऋषिः । कुकेः स्वरान्नोऽन्तश्च, कुङ्कणाः-जनपदः । त्रपेर्वश्च, त्रवणः-देशः । वलेर्वस्य उत्, वोऽन्तश्च, उल्वणः-स्फारः । अर्तेरुर् च, उरणः-मेषः, लीयतेः-क्लीद्यतेः-स्वद्यतेर्वा-लवादेशश्च । लवणं, गुणः-द्रव्यं च । वञ्चेः सः परादिर्नलोपाभावश्च, वङ्क्षणः-ऊरूमूलसंधिः । आदिशब्दात् ज्योतिरिङ्गणतुरणभुरणादयो भवन्ति ॥१९०॥

कृपि-विषि-वृषि-धृषि-मृषि-युषि-द्रुहि-ग्रहेराणक् ॥१९१॥

एभ्य आणक् प्रत्ययो भवति । कृपौङ् सामर्थ्ये, कृपाणः-खड्गः । विषू सेचने, विषाणं-शृङ्गम्, करिदन्तश्च । वृषू सेचने, वृषाणः । ञिधृषाट् प्रागल्भ्ये धृषाणः-देवः । मृषू सहने च, मृषाणः । युषि सेवने सौत्रः, युषाणः । द्रुहौच् जिघांसायाम्, द्रुहाणः- मुखरः । ग्रहीश् उपादाने, गृहाणः । वृषाणादयः स्वप्रकृत्यर्थवाचिनः सर्वेऽपि कर्तरि कारके

Aho ! Shrutgyanam

ज्ञेया: ॥१९१॥

पषो णित् ॥१९२॥

पषी बाधनस्पर्शनयोः इत्यस्माद् आणक् प्रत्ययो भवति, स च णिद् भवति । पाषाण:-प्रस्तर: ॥१९२॥

कल्याण-पर्याणादयः ॥१९३॥

कल्याणादय: शब्दा आणक्प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । कलेर्योऽन्तश्च, कल्याणं-श्वोवसीयसम् । परिपूर्वात् इणो लुक् च । पर्याणम्-अश्वादीनां पृष्टच्छद: । आदिशब्दाद् द्रेक्काण-बोक्काण-केक्काणादयो भवन्ति ॥१९३॥

द्रु-हृ-वृहि-दक्षिभ्य इणः ॥१९४॥

एभ्य: इण: प्रत्ययो भवति । द्रुं गतौ, द्रविणं-द्रव्यम् । हृंग् हरणे, हरिण:-मृग: । वृह वृद्धौ, बर्हिण:-मयूर: । दक्षि शैघ्र्ये च, दक्षिण:-कुशल:, अनुकूलश्च । दक्षिणा, दिग्, ब्रह्मदेयं च ॥१९४॥

ऋ-द्रुहेः कित् ॥१९५॥

आभ्यां किद् इण: प्रत्ययो भवति । ऋश् गतौ, इरिणम्-ऊषरम्, कुञ्ज:, वनदुर्गं च । द्रुहौच् जिघांसायाम्, द्रुहिण:-ब्रह्मा, क्षुद्रजन्तुश्च ॥१९५॥

ऋ-कॄ-वॄ-धृ-दारिभ्य उणः ॥१९६॥

एभ्य उण: प्रत्ययो भवति । ऋंक् गतौ, अरुण:-सूर्यसारथि:, उषा, वर्णश्च । कॄत् विक्षेपे, करुणा-दया, करुण:-करुणाविषय:, करुणं-दैन्यम् । वॄश् भरणे, वरुण:-प्रचेता: । धृंग् धारणे, धरुण:-धर्ता, आयुक्तो, लोकश्च । दॄश् विदारणे, णौ, दारुण-उग्र: ॥१९६॥

क्षः कित् ॥१९७॥

क्षैं क्षये, इत्यस्मात् किद् उण: प्रत्ययो भवति । क्षुण:-व्याधि:, क्षाम:, क्रोध, उन्मत्तश्च ॥१९७॥

भिक्षुणी ॥१९८॥

भिक्षेरुण: प्रत्ययो भवति, ङीश्च निपात्यते । भिक्षुणी-व्रतिनी ॥१९८॥

गा-दाभ्यामेष्णक् ॥१९९॥

आभ्यां एष्णक् प्रत्ययो भवति । गैं शब्दे, गेष्ण:-मेष:, उद्गाता, रङ्गोपजीवी च । गेष्णं-साम, मुखं च, रात्रिगेष्ण:-रङ्गोपजीवी, सुगेष्णा-किन्नरी । डुदांग्क् दाने, देष्ण:-बाहु:, दानशीलश्च । चारुदेष्ण:-सात्यभामेय: । सुदेष्णा-विराटपत्नी ॥१९९॥

दम्यमि-तमि-मा-वा-पू-धू-गॄ-जॄ-हसि-वस्यसि-वितसि-मसोण्-भ्यस्तः ॥२००॥

एभ्य: त: प्रत्ययो भवति । दमूच् उपशमे, दन्त:-दशन:, हस्तिदंष्ट्रा च । अम गतौ, अन्त:-अवसानम्, धर्म:, समीपं च । तमूच् काङ्क्षायाम्, तन्त:-खिन्न: । मांक् माने, मातम्-अन्त:प्रविष्टम् । वांक् गतिगन्धनयो:, वात:-वायु: । पूगश् पवने, पोत:-नौ:, अग्नि:, बालश्च । धूग्श् कम्पने, धोत:-धूम:, शठ:, वातश्च । गॄत् निगरणे, गर्त:-श्वभ्रम् । जॄष्च् जरसि, जर्त:-प्रजननं, राजा च । हसे हसने, हस्त:-कर:, नक्षत्रं च । वसूच् स्तम्भे, वस्त:-छाग: । असूच् क्षेपणे, अस्त:-गिरि: । तसूच् उपक्षये, वितस्ता-नदी । मसैच् परिणामे, मस्त:-मूर्धा । इणंक् गतौ, एत:-हरिण:, वर्ण:, वायु:, पथिकश्च ॥२००॥

शी-री-भू-दू-मू-घृ-पा-धाग्-चित्यर्त्यञ्जि-पुसि-मुसि-वुसि-विसि-रमि-धुर्वि-पूर्विभ्यः कित् ॥२०१॥

एभ्य: कित् त: प्रत्ययो भवति । शीङ्क् स्वप्ने, शीतं-स्पर्शविशेष: । रीश् गतिरेषणयो:, रीतं-सुवर्णम् । भू सत्तायाम्, भूत:-ग्रह:, भूतं-पृथिव्यादि । दूङ्च् परितापे, दूत:-वचोहर: । मूङ् बन्धने, मूत:-दध्यर्थं क्षीरे तक्रसेक:, वस्त्रावेष्टनबन्धनम्, आचमनी, आलानं, पाश:, बन्धनमात्रं, धान्यादिपुटश्च । घृं सेचने, घृतं-सर्पि: । पां पाने, पीतं-वर्णविशेष: । डुधांग्क् धारणे च, 'धाग:' [४-४-१५] इति हि:, हितम्-उपकारि । चितैं संज्ञाने, चित्तं-मन: । ऋंक् गतौ, ऋतं-सत्यम् । अञ्जौप् व्यक्तिम्रक्षणादिषु अक्त:-म्रक्षित:, व्यक्तीकृत:, परिमित:, प्रेतश्च । पुसच् विभागे, पुस्त:-लेख्यपत्रसंचय:, लेप्यादिकर्म च । मुसच् खण्डने, मुस्ता-गन्धद्रव्यम् । वुसच् उत्सर्गे, वुस्त:-प्रहसनम् । विसच् प्रेरणे, विस्तं-सुवर्णमानम् । रमिं क्रीडायाम्, सुरतं-मैथुनम् । धुर्वै हिंसायाम्, धूर्त:-शठ: । पूर्वै पूरणे, पूर्त:-पुण्यम् ॥२०१॥

लु-म्रो वा ॥२०२॥

आभ्यां त: प्रत्ययो भवति, स च किद्वा भवति । लूगश् छेदने, लूता-क्षुद्रजन्तु: । लोत:-बाष्पं, लवनं, वस्त:, कीटजातिश्च । मृंत् प्राणत्यागे मृत:-गतप्राण:, मर्त:-ऋषि:, प्राणी, पुरुषश्च ॥२०२॥

सु-सि-तनि-तुसेर्दीर्घश्च वा ॥२०३॥

एभ्य: कित् त: प्रत्ययो भवति, दीर्घश्च वा भवति । षुंग्ट् अभिषवे, सूत:-सारथि:, सुत:-पुत्र: । षिंग्ट् बन्धने, सीता-जनकात्मजा, सस्यं, हलमार्गश्च । सित:-वर्ण:, बन्धश्च । तनूयी विस्तारे, तात:-पिता, पुत्रेष्टनाम च, ततं-विस्तीर्णं, वाद्यविशेषश्च । तुस शब्दे, तूस्तानि-वस्त्रदशा:, तुस्ता:-जटा:, प्रदीपनं च ॥२०३॥

Aho ! Shrutgyanam

पुत-पित्त-निमित्तोत-शुक्त-तिक्त-लिप्त-सूरत-मुहूर्तादयः ॥२०४॥

एते कित् तप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । पूङो ह्रस्वश्च, पुतः-स्फिक् । पीङ्स्तोऽन्तश्च, पित्तं-आयुः । निपूर्वात् मिनोतेर्मित् च, निमित्तं-हेतुः, दिव्यज्ञानं च । उभेर्लुक् च, उत-आशङ्काद्यर्थमव्ययम् । शकेः शुचेर्वा शुक्भावश्च । शुक्तं-कल्कजातिः । ताडयतेस्तकतेस्तिजेर्वा तिक् च, तिक्तः-रसविशेषः । लीयतेः पोऽन्तो ह्रस्वश्च, लिप्तं-श्लेषः, अंसदेशश्च । सुपूर्वात् रमेः सोर्दीर्घश्च, सूरतः-दमितो हस्ती, अन्यो वा दान्तः । हुर्च्छेः मुश्च धात्वादिः मुहूर्तः-कालविशेषः । आदिग्रहणाद् अयुतनियुतादयो भवन्ति ॥२०४॥

कृगो यङः ॥२०५॥

करोतेर्यङन्तात् कित् तः प्रत्ययो भवति । चेक्रीयितः-पूर्वाचार्याणां यङ्प्रत्ययसंज्ञा ॥२०५॥

इवर्णादिर्लुपि ॥२०६॥

करोतेर्यङो लुपि, इवर्णादिस्तः प्रत्ययो भवति । चर्करितं, चर्करीतं-यङ्लुबन्तस्याख्ये ॥२०६॥

दृ-पॄ-भृ-मृ-शी-यजि-खलि-वलि-पर्वि-पच्यमि-नमि-तमि-दृशि-हर्यि-कङ्कि-भ्योऽतः ॥२०७॥

एभ्योऽतः प्रत्ययो भवति । दृङ्त् आदरे, दरतः-आदरः । पृंक् पालनपूरणयोः, परतः-कालः । डुडुभृंगक् पोषणे च, भरतः- आदिचक्रवर्त्ती, हिमवत्समुद्रमध्यक्षेत्रं च । मृंत् प्राणत्यागे, मरतः-मृत्युः, अग्निः, प्राणी च । शीङ्क् स्वप्ने, शयतः-निद्रालुः, चन्द्रः, स्वप्नः, अजगरश्च । यजीं देवपूजासंगतिकरणदानेषु, यजतः-यज्वा, अग्निश्च । खल संचये च, खलतः शीर्णकेशशिराः । वलि संवरणे, वलतः-कुशूलः । पर्व पूरणे, पर्वतः-गिरिः । डुपचींष् पाके, पचतः-अग्निः, आदित्यः, पालकः, इन्द्रश्च । अम गतौ, अमतः-मृत्युः, जीवः, आतङ्कश्च । णमं प्रह्वत्वे, नमतः-नटः, देवः, ऊर्णास्तरणं, ह्रस्वश्च । तमूच् काङ्क्षायाम्, तमतः-निर्वेदी, आकाङ्क्षी, धूमश्च । दृशृं प्रेक्षणे, दर्शतः-द्रष्टा, अग्निश्च । हर्य क्लान्तौ, हर्यतः-वायुः, अश्वः, कान्तः, रश्मिः, यज्ञश्च । ककुङ् गतौ, कङ्कतः-केशमार्जनम् ॥२०७॥

पृषि-रञ्जि-सिकि-का-ला-वृभ्यः कित् ॥२०८॥

एभ्यः किद् अतः प्रत्ययो भवति । पृषू सेचने, पृषतः-हरिणः । रञ्जीं रागे, रजतं-रूप्यम् । सिकिः सौत्रः सिकता-वालुका । कैं शब्दे, कतः-गोत्रकृत् । लांक् आदाने, लता-वल्ली । वृगट् वरणे, व्रतं-शास्त्रविहितो नियमः ॥२०८॥

कॄ-वृ-कल्यलि-चिलि-विलीलि-ला-नाथिभ्य आतक् ॥२०९॥

एभ्य आतक् प्रत्ययो भवति । कॄत् विक्षेपे, किरातः-शबरः । वृगट् वरणे, व्रातः- समूहः, उत्सेधजीविसंघश्च । कलि शब्दसंख्यानयोः, कलातः-ब्रह्मा । अली भूषणादौ, अलातम्-उल्मुकम् । चिलत् वसने, चिलाताः-म्लेच्छाः । विलत् वरणे, विलातः-शवाच्छादनवस्त्रम् । इलत् गत्यादौ, इलातः-नगः । लांक् आदाने, लातः-मृत्तिकादानभाजनम् । नाथृङ् उपतापैश्वर्याशीःषु च । नाथातः-आहारः, प्रजापतिश्च ॥२०९॥

हृ-श्या-रुहि-शोणि-पलिभ्य इतः ॥२१०॥

एभ्य इतः प्रत्ययो भवति । हृंग् हरणे, हरितः-वर्णः । श्यैङ् गतौ, श्येतः-वर्णः, मृगः, मत्स्यः, श्येनश्च । रुहं जन्मनि, रोहितः, वर्णः, मत्स्यः, मृगजातिश्च । लत्वे, लोहितः-वर्णः, लोहितम्-असृक् । शोणृ वर्णगत्योः, शोणितं-रुधिरम् । पल गतौ, पलितं-श्वेतकेशः ॥२१०॥

नञ आपेः ॥२११॥

नञ्पूर्वाद् आप्लृंट् व्याप्तौ, इत्यस्माद् इतः प्रत्ययो भवति । नापितः-कारुविशेषः ॥२११॥

क्रुशि-पिशि-पृषि-कुषि-कुश्युचिभ्यः कित् ॥२१२॥

एभ्यः किद् इतः प्रत्ययो भवति । क्रुशं आह्वानरोदनयोः, क्रुशितं-पापम् । पिशत् अवयवे, पिशितं-मांसम् । पृषू सेचने, पृषितं-वारिबिन्दुः । कुष्श् निष्कर्षे, कुषितं-पापम् । कुशच् श्लेषे, कुशितः-ऋषिः, कुशितम्-ऋणं, श्लिष्टं च । उचच् समवाये, उचितं-स्वभावः, योग्यं, चिरानुयातं, श्रेष्ठं च ॥२१२॥

हृग ईतण् ॥२१३॥

हृंग् हरणे, इत्यस्माद् ईतण् प्रत्ययो भवति । हारीतः-पक्षी, ऋषिश्च ॥२१३॥

अदो भुवो डुतः ॥२१४॥

अद्पूर्वात् भुवो डुतः प्रत्ययो भवति । अद् विस्मितं भवति तेन तस्मिन् वा मनः अद्भुतम्-आश्चर्यम् ॥२१४॥

कुलि-मयिभ्यामूतक् ॥२१५॥

आभ्यां ऊतक् प्रत्ययो भवति । कुल बन्धुसंस्त्यानयोः, कुलूताः-जनपदः । मयि गतौ, मयूता-वसतिः ॥२१५॥

जीवेर्मं च ॥२१६॥

जीव प्राणधारणे, इत्यस्माद् ऊतक् प्रत्ययो भवति, मन्तादेशो भवति । जीमूतः-मेघः, गिरिश्च ॥२१६॥

Aho ! Shrutgyanam

कबेरोतः प् च ॥२१७॥

कबृङ् वर्णे, इत्यस्माद् ओतः प्रत्ययो भवति, पश्चान्तादेशो भवति । कपोतः-पक्षी, वर्णश्च ॥२१७॥

आस्फायेर्डित् ॥२१८॥

आङ्पूर्वात् स्फायैङ् वृद्धौ, इत्यस्मात् डिद् ओतः प्रत्ययो भवति । आस्फोता नाम औषधिः ॥२१८॥

जॄ-विशिभ्यामन्तः ॥२१९॥

आभ्यां अन्तः प्रत्ययो भवति । जॄष्च् जरसि, जरन्तः-भूतग्रामः, वृद्धः, महिषश्च । विशत् प्रवेशने, वेशन्तः– पल्वलम् । वल्लभः– अप्राप्तापवर्गः, आकाशं च ॥२१९॥

रुहि-नन्दि-जीवि-प्राणिभ्यष्टिदाशिषि ॥२२०॥

एभ्य आशिषि टिदन्तः प्रत्ययो भवति । रुहं जन्मनि, रोहतात्, रोहन्तः-वृक्षः, रोहन्ती-औषधिः । टुनदु समृद्धौ, नन्दतात्, नन्दन्तः-सखा, आनन्दश्च, नन्दन्ती-सखी । जीव प्राणधारणे, जीवतात्, जीवन्तः– आयुष्मान्, जीवन्ती-शाकः । अनक् प्राणने, प्राण्यात्, प्राणन्तः– वायुः, रसायनं च, प्राणन्ती-स्त्री ॥२२०॥

तॄ-जि-भू-वदि-वहि-वसि-भास्यदि-साधि-मदि-गडि-गण्डि-मण्डि-नन्दि-रेविभ्यः ॥२२१॥

एभ्यष्टिदन्तः प्रत्ययो भवति । आशिषीत्येके । तॄ प्लवनतरणयोः, तरन्तः-आदित्यः, भेकश्च, तरन्ती-स्त्री । जि अभिभवे । जयन्तः-रथरेणुः, ध्वजः, इन्द्रपुत्रः, जम्बूः-द्वीपपश्चिमद्वारम्, पश्चिमानुत्तरविमानं च, जयन्ती-उदयनपितृष्वसा । भू सत्तायाम्, भवन्तः-कालः, भवन्ती । वद व्यक्तायां वाचि, वदन्तः, वदन्ती । वहीं प्रापणे, वहन्तः-रथः, अनड्वान्, रथरेणुः, वायुश्च, वहन्ती । वसं निवासे, वसन्तः-ऋतुः । भासि दीप्तौ, भासन्तः-सूर्यः, भासन्ती, ण्यन्तोऽपि, भासयन्तः–सूर्यः । अदंक् भक्षणे, अदन्तः, अदन्ती । साधंट् संसिद्धौ, साधन्तः-भिक्षुः, ण्यन्तोऽपि, साधयन्तः-भिक्षुः, साधयन्ती । मदैच् हर्षे, णौ, मदयन्तः, मदयन्ती-पुष्पगुल्मजातिः । गड सेचने, गडन्तः-जलदः, ण्यन्तोऽपि, गडयन्तः, गडयन्ती, गडु वदनैकदेशे, ण्यन्तः, गण्डयन्तः-मेघः । मडु भूषायाम्, ण्यन्तः, मण्डयन्तः-प्रसाधकः, अलंकारः, आदर्शश्च । टुनदु समृद्धौ, ण्यन्तः, नन्दयन्तः-सुखकृत्, राजा, हिरण्यं, सुखं च, नन्दयन्ती । रेवृङ् पथि गतौ, रेवन्तः-सूर्यपुत्रः । अनुक्तार्था धात्वर्थकर्त्रर्थाः ॥२२१॥

सीमन्त-हेमन्त-भदन्त-दुष्वन्तादयः ॥२२२॥

एतेऽन्तप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । सिनोतेः सीम् च, सीमन्तः-केशमार्गः, ग्रामक्षेत्रान्तश्च । हन्तेर्हिनोतेर्वा हेम् च, हेमन्तः-ऋतुः । भदन्तेर्नलुक् च, भदन्तः-निर्ग्रन्थेषु शाक्येषु च पूज्यः । दुषेर्वोऽन्तश्च । दुष्वन्तः– राजा । आदिग्रहणादन्येऽपि ॥२२२॥

शकेरुन्तः ॥२२३॥

शक्लृंट् शक्तौ, इत्यस्माद् उन्तः प्रत्ययो भवति । शकुन्तः-पक्षी ॥२२३॥

कषेर्डित् ॥२२४॥

कष हिंसायाम् इत्येतस्माद् डिदुन्तः प्रत्ययो भवति । कुन्तः-आयुधम् ॥२२४॥

कमि-प्रु-गार्तिभ्यस्थः ॥२२५॥

एभ्यस्थः प्रत्ययो भवति । कमूङ् कान्तौ, कन्था-प्रावरणम्, नगरं च । प्रुंङ् गतौ, प्रोथः-प्रियो, युवा, सूकरमुखं, घोणा च । गैं शब्दे, गाथा-श्लोकः, आर्या वा । ऋंक् गतौ, अर्थः-जीवाजीवादिपदार्थः, प्रयोजनम्, अभिधेयं, धनं, याच्ञा, निवृत्तिश्च ॥२२५॥

अवाद् गोऽच्च वा ॥२२६॥

अवपूर्वाद्गायतेः थः प्रत्ययो भवति, अच्चान्तादेशो वा भवति । अवगथः, अवगाथः-अक्षसंघः, प्रातःसवनं, रथयानं, साम, पन्थाश्च ॥२२६॥

नी-नू-रमि-तॄ-तुदि-वचि-रिचि-सिचि-श्वि-हनि-पा-गो-पा-वोद्गाभ्यः कित् ॥२२७॥

एभ्यः कित् थः प्रत्ययो भवति । णींग् प्रापणे, नीथं-जलम्, सुनीथो नाम राजा, नीतिमान्, धर्मशीलः, ब्राह्मणश्च । णूत् स्तवने, नूथं-तीर्थम् । रमिं क्रीडायाम्, रथः-स्यन्दनः । तॄ प्लवनतरणयोः, तीर्थं-जलाशयावगाहनमार्गः, पुण्यक्षेत्रम्, आचार्यश्च । तुदींत् व्यथने, तुत्थं-चक्षुष्यः, धातुविशेषः । वचंक् भाषणे, उक्थं-शास्त्रं, सामवेदश्च, उक्थानि-सामानि । रिचृंपी विरेचने, रिक्थं-धनम् । षिचींत् क्षरणे, सिक्थं-मदनं, पुलाकश्च । ट्वोश्वि गतिवृद्ध्योः, शूथः-यज्ञप्रदेशः । हनंक् हिंसागत्योः, हथः-पन्थाः, कालश्च । पां पाने, पीथं-बालघृतपानम्, अम्भः, नवनीतं च, पीथः-मकरः, रविश्च । गोपूर्वात्, गोपीथः-तीर्थविशेषः, गोनिपानं, जलद्रोणी, कालविशेषश्च । गैं शब्दे, अवगीथम्-यज्ञकर्मणि प्रातःशंसनम्, उद्गीथः-शुनामूर्ध्वमुखानां विरावः, सामगानम्, प्रथमोच्चारणं च ॥२२७॥

न्युद्भ्यां शीङः ॥२२८॥

नि- उद्पूर्वात् शीङ्क् स्वप्ने, इत्यस्मात् कित् थः प्रत्ययो भवति । निशीथः- अर्धरात्रः, रात्रिः, प्रदोषश्च । उच्छीथः-

Aho ! Shrutgyanam

स्वप्नः, टिट्टिभश्च ॥२२८॥

अवभृ-निर्ऋ-समिण्भ्यः ॥२२९॥

अवपूर्वाद् बिभर्तेः, निस्पूर्वादर्तेः, सम्पूर्वात् एतेश्च कित् थः प्रत्ययो भवति । अवभृथः-यज्ञावसानं, यज्ञस्नानं च । निर्ऋथः-निकायः, निर्ऋथं-स्नानम् । समिथः-संगमः, गोधूमपिष्टं च, समिथं-समूहः ॥२२९॥

सर्तेर्णित् ॥२३०॥

सृं गतौ, इत्यस्माद् णित् थः प्रत्ययो भवति । सार्थः-समूहः ॥२३०॥

पथ-यूथ-गूथ-कुथ-तिथ-निथ-सूरथादयः ॥२३१॥

एते थप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । पलतेर्लो लुक् च, पथः-पन्थाः । यौतेर्गुवतेश्च दीर्घश्च, यूथः-समूहः, गूथम्-अमेध्यं, विष्ठा च । किरतेः करोतेर्वा कुश्च, कुथः-कुथा वा-आस्तरणम् । तनोतेस्तिष्ठतेर्वा तिश्च, तिथः-कालः । तिम्यते, तिथः—प्रावृट्कालः । नयतेर्ह्रस्वश्च, निथः-पूर्वक्षत्रियः, कालश्च । सुपूर्वात् रमेः सोर्दीर्घश्च कित् च । सूरथः—दान्तः । आदिग्रहणाद् निपूर्वाद् रौतेर्दीर्घत्वं च । निरुथः-दिक्, निरुथं पुण्यक्रमनियतम् । एवं संगीथप्रगाथावयोपि ॥२३१॥

भृ-शी-शपि-शमि-गमि-रमि-वन्दि-वञ्चि-जीवि-प्राणिभ्योऽथः ॥२३२॥

एभ्योऽथः प्रत्ययो भवति । डुभृंग्क् पोषणे च, भरथः-कैकेयीसुतः, अग्निः, लोकपालश्च । शीङ्क् स्वप्ने, शयथः—अजगरः, प्रदोषः, मत्स्यः, वराहश्च । शपीं आक्रोशे, शपथः—प्रत्ययकरणम्, आक्रोशश्च । शमूच् उपशमे, शमथः-समाधिः, आश्रमपदं च । गम्लृं गतौ, गमथः-पन्थाः, पथिकश्च । रमिं क्रीडायाम्, रमथः—प्रहर्षः । वदुङ् स्तुत्यभिवादनयोः, वन्दथः—स्तोता, स्तुत्यश्च । वञ्चू गतौ, वंचथः-अध्वा, कोकिलः, काकः, दम्भश्च। जीव प्राणधारणे, जीवथः—अर्थवान्, जलम्, अन्नं,वायुः,मयूरः,कूर्मः,धार्मिकश्च । अनक् प्राणने, प्राणथः—बलवान्,ईश्वरः,प्रजापतिश्च ॥२३२॥

उपसर्गाद्वसः ॥२३३॥

उपसर्गात् परस्मात् वसं निवासे, इत्यस्मादथः प्रत्ययो भवति । आवसथः—गृहम्, उपवसथः—उपवासः, संवसथः—संवासः, सुवसथः—सुवासः, निवसथः—निवासः ॥२३३॥

विदि-भिदि-रुदि-द्रुहिभ्यः कित् ॥२३४॥

एभ्यः किदथः प्रत्ययो भवति । विदंक् ज्ञाने, विदथः-ज्ञानी, यज्ञः, अध्वर्युः, संग्रामश्च । भिदृंपी विदारणे, भिदथः—शरः । रुदृंक् अश्रुविमोचने, रुदथः-बालः, असत्त्वः, श्वा च । द्रुहौच् जिघांसायाम्, द्रुहथः-शत्रुः ॥२३४॥

रोर्वा ॥२३५॥

रुक् शब्दे, इत्यस्मादथः प्रत्ययो भवति, सच किद्वा भवति । रुवथः-शकुनिः, शिशुश्च । रवथः-आक्रन्दः, शब्दकारश्च ॥२३५॥

जॄ-वॄभ्यामूथः ॥२३६॥

आभ्यामूथः प्रत्ययो भवति । जॄष्च् जरसि, जरुथः-शरीरम्, अग्रमांसम्, अग्निः, संवत्सरः, मार्गः, कल्मषं च । वृग्श् वरणे, वरूथः-वर्म, सेनाङ्गं बलसंघातश्च ॥२३६॥

शा-शपि-मनि-कनिभ्यो दः ॥२३७॥

एभ्यो दः प्रत्ययो भवति । शोंच् तक्षणे, शादः-कर्दमः, तरुणतृणं, मृदुः, बन्धः, सुवर्णं च । शपीं आक्रोशे, शब्दः-श्रोत्रग्राह्योऽर्थः । मनिच् ज्ञाने, मन्दः-अलसः, बुद्धिहीनश्च । कनै दीप्त्यादिषु, कन्दः-मूलम् ॥२३७॥

आपोऽप् च ॥२३८॥

आप्लृंट् व्याप्तौ, इत्यस्मात् दः प्रत्ययो भवति । अस्य चाप् इत्ययमादेशो भवति । अब्दं-वर्षम् ॥२३८॥

गोः कित् ॥२३९॥

गुंत् पुरीषोत्सर्गे, इत्यस्मात् कित्दः प्रत्ययो भवति । गुदम्-अपानम् ॥२३९॥

वृ-तु-कु-सुभ्यो नोऽन्तश्च ॥२४०॥

एभ्यः कित् दः प्रत्ययो भवति, नकारश्चान्तादेशो भवति । वृग्ट् वरणे, वृन्दं-समूहः । तुंक् वृत्त्यादिषु, तुन्दं-जठरम् । कुंङ् शब्दे, कुन्दः-पुष्पजातिः । षुंग्ट् अभिषवे, सुन्दः-दानवः ॥२४०॥

कुसेरिदेदौ ॥२४१॥

कुसच् श्लेषे, इत्यस्मात् इद ईद इत्येतौ कितौ प्रत्ययौ भवतः । कुसिदम्-ऋणम्; कुसीदं-वृद्धिजीविका ॥२४१॥

इङ्ग्यर्बिभ्यामुदः ॥२४२॥

आभ्यामुदः प्रत्ययो भवति । इगु गतौ, इङ्गुदः—वृक्षजातिः । अर्ब गतौ, अर्बुदः-पर्वतः, अक्षिव्याधिः, संख्याविशेषश्च, निपूर्वात् न्यर्बुदम्—संख्याविशेषः ॥२४२॥

ककेर्णिद्वा ॥२४३॥

ककि लौल्ये, इत्यस्मादुदः प्रत्ययो भवति, स च णिद्वा भवति । काकुदं-तालु, ककुदं स्कन्धः ॥२४३॥

कुमुद-बुद्बुदादयः ॥२४४॥

एते उदप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । कमेः कुम् च, कुमुदं—

Aho ! Shrutgyanam

कैरवम् । बुन्देः किद् वोऽन्तश्च, बुद्बुदः– जलस्फोटः, बुद्बुदं- नेत्रजो व्याधिः । आदिग्रहणात् दुहींक् क्षरणे, प्रत्ययादेरत्वे, दोहदः– अभिलाषविशेषः । एवमन्येऽपि ॥२४४॥

ककि-मकिभ्यामन्दः ॥२४५॥

आभ्यामन्दः प्रत्ययो भवति । ककि लौल्ये । मकिः सौत्रः । ककन्दः मकन्दश्च राजानौ, यकाभ्यां निर्वृत्ता काकन्दी, माकन्दी च नगरी ॥२४५॥

कल्यलि-पुलि-कुरि-कुणि-मणिभ्य इन्दक् ॥२४६॥

एभ्य इन्दक् प्रत्ययो भवति । कलि शब्दसंख्यानयोः, कलिन्दः- पर्वतः, यतो यमुना प्रभवति । अली भूषणादौ, अलिन्दः– प्रघाणः, भाजनस्थानं च । पुल महत्त्वे, पुलिन्दः– शबरः । कुरत् शब्दे, कुरिन्दः- धान्यमलहरणोपकरणम्, तेजनोपकरणं च । कुणत् शब्दोपकरणयोः, कुणिन्दः– म्लेच्छः, शब्द उपकरणं च । मण शब्दे, मणिन्दः- अश्वबल्लवः ॥२४६॥

कुपेर्व च वा ॥२४७॥

कुपच् क्रोधे, इत्यस्माद् इन्दक् प्रत्ययो भवति । वश्चान्तादेशो वा भवति । कुपिन्दः, कुविन्दः- तन्तुवायः ॥२४७॥

पॄपलिभ्यां णित् ॥२४८॥

आभ्यां णिद् इन्दक् प्रत्ययो भवति । पॄश् पालनपूरणयोः, पल गतौ, पारिन्दः, पालिन्दः, द्वावपि वृक्षगाथकौ, पारिन्दः– मुख्यः पूज्यश्च । पालिन्दो- नृपतिः, रक्षकश्चेत्येके ॥२४८॥

यमेरुन्दः ॥२४९॥

यमूं उपरमे, इत्यस्माद् उन्दः प्रत्ययो भवति । यमुन्दः- क्षत्रियविशेषः ॥२४९॥

मुचेर्डुकुन्द-कुकुन्दौ ॥२५०॥

मुच्लृंती मोक्षणे, इत्यस्मात् डित् उकुन्दः किदुकुन्दश्च प्रत्ययौ भवतः । मुकुन्दः- विष्णुः, मुचुकुन्दः- राजा, वृक्षविशेषश्च ॥२५०॥

स्कन्द्यमिभ्यां धः ॥२५१॥

आभ्यां धः प्रत्ययो भवति । स्कन्दृं गतिशोषणयोः, स्कन्धः- बाहुमूर्धा ककुन्दविभागश्च । बाहुलकाद् दस्य लुक् । अम गतौ, अन्धः- चक्षुर्विकलः ॥२५१॥

नेः स्यतेरधक् ॥२५२॥

निपूर्वात् षोंच् अन्तकर्मणि, इत्यस्माद् अधक् प्रत्ययो भवति । निषधः- पर्वतः, निषधाः जनपदः ॥२५२॥

मङ्गेर्नलुक् च ॥२५३॥

मगु गतौ, इत्यमाद् अधक् प्रत्ययो भवति, नकारस्य च लुग् भवति । मगधाः जनपदः ॥२५३॥

आरगेर्वधः ॥२५४॥

आङ् पूर्वात् रगे शङ्कायाम्, इत्यस्माद् वधः प्रत्ययो भवति । आरग्वधः- वृक्षजातिः ॥२५४॥

परात् श्रो डित् ॥२५५॥

परपूर्वात् शॄश् हिंसायाम्, इत्यस्मात् डित् वधः प्रत्ययो भवति । परश्वधः- आयुधजातिः ॥२५५॥

इषेरुधक् ॥२५६॥

इषत् इच्छायाम्, इत्यस्माद् उधक् प्रत्ययो भवति । इषुधः- याञ्चा ॥२५६॥

कोरन्धः ॥२५७॥

कुङ् शब्दे, इत्यस्माद् अन्धः प्रत्ययो भवति । कवन्धः- छिन्नमूर्धा देहः ॥२५७॥

प्या-धा-पन्यनि-स्वदि-स्वपि-वस्यज्य-ति-सिवि-भ्यो नः ॥२५८॥

एभ्यो नः प्रत्ययो भवति । प्यैङ् वृद्धौ, प्यानः- समुद्रः चन्द्रश्च । डुधांग्क् धारणे च, धाना- भृष्टो यवः, अङ्कुरश्च। पनि स्तुतौ, पन्नं- नीचैःकरणम्, सन्नं- जिह्वा च । अनक् प्राणने, अन्नं- भक्तम्, आचारश्च । ष्वदि आस्वादने, स्वन्नं- रुचितम् । जिष्वपंक् शये, स्वप्नः- मनोविकारः निद्रा च । वसं निवासे, वस्नं- वासः मूल्यम्, मेढ्रम्, आगमश्च । अज क्षेपणे च, वेनः- प्रजापतिः, ध्यानी, राजा, वायुः, यज्ञः, प्राज्ञः, मूर्खश्च । अत सातत्यगमने, अत्नः- आत्मा, वायुः, मेघः, प्रजापतिश्च । षिवूच् उतौ, स्योनं- सुखम्, तन्तुवायसूत्रसंतानः, समुद्रः, सूर्यः, रश्मिः, आस्तरणं च ॥२५८॥

षसेर्णित् ॥२५९॥

षसक् स्वप्ने, इत्यस्मात् णिद् नः प्रत्ययो भवति । सास्ना- गोकण्ठावलम्बि चर्म, निद्रा च ॥२५९॥

रसेर्वा ॥२६०॥

रस शब्दे, इत्यस्माद् न प्रत्ययो भवति, णिद् वा भवति । रास्ना- धेनुः, औषधिजातिश्च । रस्नं- द्रव्यजातिः, रस्ना- जिह्वा, रस्नः- तुरङ्गः, दण्डश्च ॥२६०॥

जीण्-शी-दी-बुध्यवि-मीभ्यः कित् ॥२६१॥

एभ्यः किद् नः प्रत्ययो भवति । जिं अभिभवे, जिनः- अर्हन्, बुद्धश्च । इंण्क् गतौ, इनः- स्वामी, संनिपातः, ईश्वरः, राजा, सूर्यश्च । शीङ्क् स्वप्ने, शीनः- पीलुः ।

Aho ! Shrutgyanam

दीङ्च् क्षये । दीनः, कृपणः, खिन्नश्च । बुधिच् ज्ञाने, बुध्नः मूलं पृष्ठान्तः, रुद्रश्च । अव रक्षणादौ, ऊनम्- अपरिपूर्णम् । मीङ्च् हिंसायाम्, मीनः- मत्स्यः, राशिश्च ।।२६१।।

सेर्वा ।।२६२।।

षिग्ट् बन्धने, इत्यस्माद् नः प्रत्ययो भवति, स च किद्वा भवति । सिनः- कायः, वस्त्रं, बन्धश्च । सेना- चमूः ।।२६२।।

सोरू च ।।२६३।।

षुंग्ट् अभिषवे, इत्यस्मान्नः प्रत्ययो भवति, ऊकारश्चान्तादेशो भवति । सूना-घातस्थानम्, दुहितापुत्रः, प्रकृतिः, आधाटस्थानं च ।।२६३।।

रमेस्त् च ।।२६४।।

रमिं क्रीडायाम् इत्यस्माद् नः प्रत्ययो भवति, तश्चान्तादेशो भवति । रत्नं- वज्रादिः ।।२६४।।

क्रुशेर्वृद्धिश्च ।।२६५।।

क्रुशं आह्वानरोदनयोः, इत्यस्माद् नः प्रत्ययो भवत्यस्य च वृद्धिर्भवति । क्रौश्नः- श्वापदः ।।२६५।।

द्यु-सु-निभ्यो माङो डित् ।।२६६।।

द्युसुनिपूर्वात् मांङ्क् मानशब्दयोः, इत्यस्मात् डिद् नः प्रत्ययो भवति । द्युम्नं-द्रविणम्, सुम्नं-सुखम्, निम्नं- नतम् ।।२६६।।

शीङः सन्वत् ।।२६७।।

शीङ्क् स्वप्ने, इत्यस्मात् डिद् नः प्रत्ययो भवति, स च सन्वद्भवति । शिश्नं-शेपः ।।२६७।।

दिन-नग्न-फेन-चिह्न-ब्रध्न-धेन-स्तेन-च्यौक्नादयः ।।२६८।।

एते नप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । दीव्यतेः किल्लुक् च, दिनम्- अहः । नञ्पूर्वात् वसेर्गोऽन्तो धातोर्लुक्च । न वस्ते, नग्नः- अवसनः । फणेः, फलेः, स्फायेर्वा फेभावश्च, फेनः- बुद्बुदसंघातः । चहेरिच्चोपान्त्यस्य, चिह्नम्- अभिज्ञानम् । बन्धेर्ब्रध्च । ब्रध्नः- रविः, प्रजापतिः, ब्रह्मा, स्वर्गः, पृष्ठान्तश्च । धयतेरेत्वं च, धेना- सरस्वती, माता च; धेनः- समुद्रः, ईत्वं चेत्येके, धीना । स्त्यायेस्ते च, स्तेनः- चौरः च्यवतेर्वृद्धिः कोऽन्तश्च । च्यौक्नम्- अक्षस्थानम्, अनुजः, क्षीणम्, अपुण्यं च । च्यौक्नी- कांस्यादिपात्री । आदिशब्दादन्येऽपि ।।२६८।।

य्वसि-रसि-रुचि-जि-मस्जि-देवि-स्यन्दि-चन्दि-मन्दि-मण्डि-मदि-दहि-वह्यादेरनः ।।२६९।।

एभ्यः अनः प्रत्ययो भवति । युक् मिश्रणे, यवनाः- जनपदः, यवनं- मिश्रणम् । असूच्-क्षेपणे, असनः- बीजकः रसण् आस्वादनस्नेहनयोः, रसना-जिह्वा । रुचि अभिप्रीत्यां च, रोचना-गोपित्तम्, रोचनः-चन्द्रः, विपूर्वात्, विरोचनः- अग्निः, सूर्यः, इन्दुः, दानवश्च । जि अभिभवे, जयनम्- ऊर्णापटः । टुमस्जोंत् शुद्धौ, मज्जनं-स्नानं, तोयं च । देवृङ् देवने, देवनः-अक्षः, कितवश्च । स्यन्दौङ् स्रवणे, स्यन्दनः- रथः । चदु- दीप्त्याह्लादनयोः, चन्दनं- गन्धद्रव्यम् । मदुङ् स्तुत्यादौ, मन्दनं स्तोत्रम् । मडु भूषायाम्, मण्डनमलंकारः । मदैच् हर्षे, मदनः- वृक्षः, कामः, मधूच्छिष्टं च । दहं भस्मीकरणे, दहनः- अग्निः । वहीं प्रापणे, वहनं- नौः । आदिग्रहणात् पचेः पचनः- अग्निः । पुनातेः, पवनः- वायुः । बिभर्तेः, भरणं- साधनम् । नयतेः, नयनं नेत्रम् । द्युतेः, द्योतनः- सूर्यः । रचेः, रचनावैचित्र्यम् । गृञ्जेः, गृञ्जनम्- अभक्ष्यद्रव्यविशेषः । प्रस्कन्दनः, प्रपतनः इत्यादयो भवन्ति ।।२६९।।

अशो रश्चादौ ।।२७०।।

अशौटि व्याप्तौ, इत्यस्माद् अनः प्रत्ययो भवति, रेफश्चादौ भवति । रशना- मेखला । रश्मिमेके प्रकृतिमुपादिशन्ति, सा च राशिः, रशना, रश्मिः, इत्यत्र प्रयुज्यत इत्याहुः ।।२७०।।

उन्देर्नलुक् च ।।२७१।।

उन्दैप् क्लेदने, इत्यस्माद् अनः प्रत्ययो भवति, नलोपश्च भवति । ओदनः- भक्तम् ।।२७१।।

हनेर्घतजघौ च ।।२७२।।

हनंक् हिंसागत्योः, इत्यस्माद् अनः प्रत्ययो भवति, घतजघावित्यादेशौ चास्य भवतः । घतनः- रङ्गोपजीवी, पापकर्मा, निर्लज्जश्च । जघनं- श्रोणिः ।।२७२।।

तुदादि-वृजि-रञ्जि-निधाभ्यः कित् ।।२७३।।

एभ्यः किद् अनः प्रत्ययो भवति । तुदींत् व्यथने, तुदनः । क्षिपींत् प्रेरणे, क्षिपणः । सुरत् ऐश्वर्यदीप्त्योः, सुरणः । बुधिच् ज्ञाने, बुधनः । षिवूच् उतौ, सिवनः । एषां यथासंभवं कारकमुच्यते । लबुङ् अवस्रंसने, लम्बनः- शकुनिः । वृजैकि वर्जने, वृजिनम्- अन्तरिक्षम्, निवारणं, मुण्डनं च । रञ्जीं रागे, रजनं- हरिद्रा । महारजनं- कुसुम्भम्, रजनः- रङ्गविशेषः । डुधांग्क् धारणे च । निधनम्- अवसानम् ।।२७३।।

सू-धू-भू-भ्रस्जिभ्यो वा ।।२७४।।

एभ्यः अनः प्रत्ययो भवति, स च किद्वा भवति । सूत्

Aho ! Shrutgyanam

प्रेरणे, सुवनः- अङ्कुरः, आदित्यः, प्रादुर्भावश्च, सुवनं- चन्द्रप्रभा, सवनं- यज्ञः, पूर्वाह्णापराह्णमध्याह्नकालश्च- त्रिषवणम् । धूत् विधूनने, धुवनः- धूमः, वायुः, अग्निश्च, धुवनम्- एधः, धवनम् । भू सत्तायाम्, भुवनं- जगत्, भवनं- गृहम्, भ्रस्जींत् पाके, भृज्जनम्- अन्तरीक्षम्, अम्बरीषः, पाकश्च । भ्रजनः- पावकः ।।२७४।।

विदन-गगन-गहनादयः ।।२७५।।

एते किदनप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । विदु अवयवे नलोपश्च, विदनः- गोत्रकृत् । गमेर्ग् च, गगनम्- आकाशम् । गाहौङ् विलोडने, ह्रस्वश्च, गहनं- दुर्गमम् । आदिग्रहणात् काञ्चनकाननादयो भवन्ति ।।२७५।।

संस्तु-स्पृशि-मन्थेरानः ।।२७६।।

संपूर्वात् स्तोः स्पृशेश्च सम्पूर्वाभ्यां वा स्तु- स्पृशिभ्यां मन्थेश्च आनः प्रत्ययो भवति । ष्टुंग्क् स्तुतौ, संस्तवानः- सोमः, होता, महर्षिः, वाग्मी च । स्पृशंत् स्पर्शे, स्पर्शानः- मनः, अग्निश्च । मन्थश् विलोडने, मन्थानः– खजकः ।।२७६।।

यु-युजि-युधि-बुधि-मृशि-दृशीशिभ्यः कित् ।।२७७।।

एभ्यः किद्, आनः प्रत्ययो भवति । युक् मिश्रणे, युवानः- तरुणः । युजूंपी योगे, युजानः- सारथिः । युधिंच् संप्रहारे, युधानः- रिपुः । बुधिंच् ज्ञाने बुधानः- आचार्यः, पण्डितो वा । मृशंत् आमर्शने, मृशानः- विमर्शकः । दृशूं प्रेक्षणे, दृशानः- लोकपालः । युजादिप्रसिद्धकर्त्रर्था एते ईशिक् ऐश्वर्ये, ईशानः- ईश्वरः ।।२७७।।

मुमुचान- युयुधान- शिश्विदान- जुहुराण- जिह्रियाणाः ।।२७८।।

एते किद् आनप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । मुचेर्द्वित्वं च, मुमुचानः- मेघः । एवं युधिंच् संप्रहारे, युयुधानः- साहसिकः, राजा च कश्चित् । श्विताङ् वर्णे, अस्य दश्च, शिश्विदानः- दुराचारो द्विजः । हुर्च्छा कौटिल्ये, अस्यान्तलुक् च, जुहुराणः- कठिनहृदयः, कुटिलः, अग्निः, अध्वर्युः, अनड्वांश्च । ह्रींक् लज्जायाम्, जिह्रियाणः, नीतिमान् । सर्वे एवैते मुच्यादिप्रसिद्धक्रियाकर्तृवचना इत्येके । अन्ये तु मुमुक्षादिसन्नन्तप्रकृतीनामेतन्निपातनं, तेन सन्नन्तक्रियाकर्तृवचना इत्याहुः ।।२७८।।

ऋञ्जि-रञ्जि-मन्दि-सह्यर्हिभ्योऽसानः ।।२७९।।

एभ्यः असानः प्रत्ययो भवति । ऋजुङ् भर्जने, ऋञ्जसानः- महेन्द्रः, मेघः, श्मशानं च । रञ्जीं रागे, रञ्जसानः- मेघः, धर्मश्च । मदुङ् स्तुत्यादिषु, मन्दसानः- हंसः, चन्द्रः, सूर्यः, जीवः, स्वप्नः, अग्निश्च । षहि मर्षणे, सहमानः- दृढः, मयूरः, यजमानः, क्षमावांश्च । अर्ह पूजायाम्, अर्हसानः- चन्द्रः, तुरङ्गमश्च ।।२७९।।

रुहि-यजेः कित् ।।२८०।।

आभ्यां किद् असानः प्रत्ययो भवति । रुहं जन्मनि, रुहसानः- विटपः । यजीं देवपूजासंगतिकरणदानेषु इजसानः- धर्मः ।।२८०।।

वृधेर्वा ।।२८१।।

वृधेः असानः प्रत्ययो भवति, स च किद्वा भवति । वृधूङ् वृद्धौ, वृधसानः- गर्भः । वर्धसानः- गिरिः, मृत्युः, गर्भः, पुरुषश्च ।।२८१।।

श्या-कठि-खलि-नल्यवि-कुण्डिभ्य इनः ।।२८२।।

एभ्य इनः प्रत्ययो भवति । श्यैंङ् गतौ, श्येनः- पक्षी, अभिचारयज्ञश्च । कठ कृच्छ्रजीवने, कठिनम् अमृदु । खल- संचये च, खलिनम्- अश्वमुखसंयमनम् । णल गन्धे, नलिनं, पद्मम् । अव रक्षणादौ, अविनं- जलं, मृगः, नाशः, अग्निः, राजा, अध्वर्युः, विधानं, गुप्तिश्च । कुडुङ् दाहे, कुण्डिनः- ऋषिः, कुण्डिनं- नगरम् ।।२८२।।

वृजि-तुहि-पुलि-पुटिभ्यः कित् ।।२८३।।

एभ्यः किद् इनः प्रत्ययो भवति । वृजैकि वर्जने, वृजिनं- पापं, कुटिलं च । तुहृ अर्दने, तुहिनम्- हिममन्धकारश्च । पुल महत्त्वे, पुटत् संश्लेषणे पुलिनं पुटिनं च- नदीतीरं वालुकासंघातश्च ।।२८३।।

विपिनाजिनादयः ।।२८४।।

विपिनादयः शब्दाः किद् इनप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । डुवपीं बीजसंताने, टुवेपृङ् चलने इत्यस्य वा, इच्चोपान्त्यस्य । विपिनं- गहनम्, अब्जं, जलदुर्गं च । अज क्षेपणे च, अस्य वीभावाभावश्च । अजिनं- चर्म । आदिग्रहणादन्येऽपि ।।२८४।।

महेर्णिद्वा ।।२८५।।

मह पूजायाम्, इत्यस्माद् इनः प्रत्ययो भवति । स च किद्वा भवति । माहिनं- राज्यं, बलं च । महिनं- राज्यं, शयनं च । माहिनः- माहात्म्यवान् ।।२८५।।

खलि-हिंसिभ्यामीनः ।।२८६।।

आभ्याम् ईनः प्रत्ययो भवति । खल- संचये च, खलीनं- कवियम् । हिसुप् हिंसायाम्, हिंसीनः- श्वापदः ।।२८६।।

पठेर्णित् ।।२८७।।

पठ व्यक्तायां वाचि, इत्यस्मात् णिद् ईनः प्रत्ययो भवति । पाठीनः- मत्स्यः ।।२८७।।

Aho ! Shrutgyanam

यम्यजि-शक्य-र्जि-शी-यजि-तॄभ्य उनः ।।२८८।।

एभ्य उनः प्रत्ययो भवति । यमू उपरमे, यमुना- नदी । अज क्षेपणे च, वयुनं- विज्ञानम्, अङ्गं च, वयुनः- विद्वान्, चन्द्रः, यज्ञश्च । शक्लृंट् शक्तौ, शकुनः- पक्षी । अर्ज अर्जने, अर्जुनः- ककुभः वृक्षविशेषः, पार्थः, श्वेतवर्णः, श्वेताश्वः, कार्तवीर्यश्च । अर्जुनी- गौः । अर्जुनं तृणं, श्वेतसुवर्णं च । शीङ्क् स्वप्ने, शयुनः- अजगरः । यजीं देवपूजादौ, यजुना- क्रतुद्रव्यम् । तॄ प्लवनतरणयोः, तरुणः- समर्थः, युवा, वायुश्च । ऋफिडादित्वाल्लत्वे, तलुनः ।।२८८।।

लषेः श् च ।।२८९।।

लषी कान्तौ इत्यस्माद् उनः प्रत्ययो भवति, तालव्यः शकारश्चान्तादेशो भवति । लशुनं- कन्दजातिः ।।२८९।।

पिशि-मिथि-क्षुधिभ्यः कित् ।।२९०।।

एभ्यः किद् उनः प्रत्ययो भवति । पिशत् अवयवे, पिशुनः- खलः, पिशुनं- मैत्रीभेदकं वचनम् । मिथृङ् मेधा हिंसयोः, मिथुनं- स्त्रीपुंसद्वन्द्वम्, राशिश्च । क्षुधंच् बुभुक्षायाम्, क्षुधनः- कीटकः ।।२९०।।

फलेर्गोऽन्तश्च ।।२९१।।

फल निष्पत्तौ, इत्यस्माद् उनः प्रत्ययो भवति, गश्चान्तो भवति । फल्गुनः- अर्जुनः । फल्गुनी- नक्षत्रम् ।।२९१।।

वी-पति-पटिभ्यस्तनः ।।२९२।।

एभ्यस्तनः प्रत्ययो भवति । वींक् प्रजननादौ, वेतनं- भृतिः । पत्लृ गतौ, पत्तनम् । पट गतौ, पट्टनम् । द्वावपि नगरविशेषौ ।

पट्टनं शकटैर्गम्यं घोटकैर्नौभिरेव च ।
नौभिरेव तु यद् गम्यं पत्तनं तत् प्रचक्षते ।।२९२।।

पॄ-पूभ्यां कित् ।।२९३।।

आभ्यां कित् तनः प्रत्ययो भवति । पृंङ्त् व्यायामे, पृतना- सेना । पूग्श् पवने, पूतना- राक्षसी ।।२९३।।

कृत्यशौभ्यां स्नक् ।।२९४।।

आभ्यां स्नक्प्रत्ययो भवति । कृतैत् छेदने, कृत्स्नं- सर्वम् । अशौटि व्याप्तौ । अक्ष्णं- नयनं, व्याधिः, रज्जुः, तेजनम्, अखण्डं च ।।२९४।।

अर्तेः शसानः ।।२९५।।

ऋक् गतौ, इत्यस्मात्तालव्यादिः शसानः प्रत्ययो भवति । अर्शसानः- पन्थाः, इषुः, अग्निश्च ।।२९५।।

भा-पा-चणि-चमि-विषि-सृ-पॄ-तॄ-शी-तल्यलि-शमि-रमि-वपिभ्यः पः ।।२९६।।

एभ्यः पः प्रत्ययो भवति । भांक् दीप्तौ, भापः- आदित्यः, ज्येष्ठश्च भ्राता । पांक् रक्षणे, पापं- कल्मषम्, पापः- घोरः । चण हिंसादानयोश्च, चण्पा- नगरी, चण्पः- वृक्षः । चमू- अदने, चम्पा- नगरी । विष्लृंकी व्याप्तौ, वेष्पः- परमात्मा, स्वर्गः, आकाशश्च । निपूर्वात्, निवेष्पः- अपां गर्भः, कूपः, वृक्षजातिः, अन्तरीक्षं च । सृं गतौ, सर्पः- अहिः । पृश् पालनपूरणयोः, पर्पः- प्लवः, शङ्खः, समुद्रः, शस्त्रं च । तॄ प्लवनतरणयोः, तर्पः- उडुपः, नौश्च । शीङ्क् स्वप्ने, शेपः- पुच्छम् । तलण् प्रतिष्ठायाम्, तल्पं- शयनीयम्, अङ्गं, दाराः, युद्धं च । अली भूषणादौ, अल्पं- स्तोकम् । शमूच् उपशमे, शम्पा- विद्युत्, काञ्ची च । विपूर्वात्, विशम्पः- दानवः । रमि क्रीडायाम्, रम्पा- चर्मकारोपकरणम् । टुवपीं बीजसंताने, वप्पः- पिता ।।२९६।।

यु-सु-कु-रु-तु-च्यु-स्त्वादेरूच्च ।।२९७।।

एभ्यः पः प्रत्ययो भवति, ऊकारश्चान्तादेशो भवति । युक् मिश्रणे, यूपः- यज्ञपशुबन्धनकाष्ठम् । षुंग्ट् अभिषवे, सूपः- मुद्गादिभिन्नकृतः । कुंक् शब्दे, कूपः- प्रहिः । रुक् शब्दे, रूपं- श्वेतादि लावण्यं, स्वभावश्च । तुंक् वृत्त्यादौ, तूपः- आयतनविशेषः । च्युंङ् गतौ, च्यूपः- आदित्यः, वायुः, संग्रामश्च । ष्टुंग्क् स्तुतौ, स्तूपः- बोधिसत्त्वभवनम्, उपायतनं च । आदिशब्दादन्येऽपि ।।२९७।।

कॄ-शॄ-सृभ्य ऊर् चान्तस्य ।।२९८।।

एभ्यः पः प्रत्ययो भवति, अन्तस्य च ऊर् भवति । कृत् विक्षेपे, कूर्पम्- भ्रूमध्यम् । शॄश् हिंसायाम्, शूर्पः- धान्यादिनिष्पवनभाण्डं संख्या च । सृं गतौ, सूर्पः- भुजङ्गमः, मत्स्यजातिश्च ।।२९८।।

शदि-बाधि-खनि-हनेः ष् च ।।२९९।।

एभ्यः पः प्रत्ययो भवति, षश्चान्तादेशो भवति । शद्लृं शातने, शष्पं- बालतृणम् । शष हिंसायाम् इत्यस्य वा रूपम् । बाधृङ्- रोटने, बाष्पः- अश्रु, धूमाभासं च मुखपानीयादौ । खनूग् अवदारणे, खष्पः- बलात्कारः, दुर्मेधाः, कूपश्च । खष्पं- खलीनं, जनपदविशेषः, अङ्गारश्च । हनंक् हिंसागत्योः, हष्पः- प्रावरणजातिः ।।२९९।।

पम्पा-शिल्पादयः ।।३००।।

पम्पादयः शब्दाः पप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । पांक् रक्षणे, मोऽन्तो ह्रस्वश्च । पम्पा- पुष्करिणी । शीलयतेः शलतेः शेतेर्वा शिलादेश्च । शिल्पं- विज्ञानम् । आदिशब्दादन्येऽपि ।।३००।।

Aho ! Shrutgyanam

क्षु-चुपि-पूभ्यः कित् ॥३०१॥

एभ्यः कित् पः प्रत्ययो भवति । टुक्षुक् शब्दे, क्षुपः- गुच्छः । चुप मन्दायां गतौ, चुप्पं- मन्दगमनम् । पूग्श् पवने, पूपः- पिष्टमयः ॥३०१॥

नियो वा ॥३०२॥

णींग् प्रापणे, इत्यस्मात् पः प्रत्ययो भवति । स च किद्वा भवति । नीपः- वृक्षविशेषः, नेपः- नयः, पुरोहितः, वृक्षः, भृतकश्च; नेपम्- उदकं यानं च ॥३०२॥

उभ्यवेर्लुक् च ॥३०३॥

आभ्यां कित् पः प्रत्ययो भवति, लुक् चान्तस्य भवति। उभत् पूरणे । अव रक्षणादौ । उप, अप च- अव्यये ॥३०३॥

दलि - वलि - तलि - खजि - ध्वजि - कचिभ्योऽपः ॥३०४॥

एभ्यः अपः प्रत्ययो भवति । दल विशरणे, दलपः- प्रहरणम्, रणमुखम्, विदलं, दलविशेषश्च, दलपं- व्रण- मुखत्राणम् । वलि संवरणे, वलपः- कर्णिका । तलण् प्रतिष्ठायाम्, तलपः- हस्तप्रहारः । खज मन्थे, खजपः- मन्थः, खजपं- दधि, घृतम्, उदकं च । ध्वज गतौ, ध्वजपः- ध्वजः । कचि बन्धने, कचपः- शाकपणः, बन्धश्च ॥३०४॥

भुजि - कुति - कुटि - विटि - कुणि - कुष्युषिभ्यः कित् ॥३०५॥

एभ्यः किदपः प्रत्ययो भवति । भुजंप् पालनाभ्यवहारयोः। भुजपः- राजा, यजमानपालनादग्निश्च । कुतिः सौत्रः, कुतपः- छागलोम्नां कम्बलः, आस्तरणं, श्राद्धकालश्च । कुटत् कौटिल्ये, कुटपः- प्रस्थचतुर्भागः, नीडं च शकुनी- नाम् । विट् शब्दे, विटपः- शाखा । कुणत् शब्दोप- करणयोः । कुणपः- मृतकं, कुषितं, शब्दार्थसारूप्यं च । कुषश् निष्कर्षे, कुषपः- विन्ध्यः, संदंशश्च । उषू दाहे, उषपः- दाहः, सूर्यः, वह्निश्च ॥३०५॥

शसेः श इच्चातः ॥३०६॥

शंसू स्तुतौ च, इत्यस्मादपः प्रत्ययो भवति तालव्यः शकारोऽन्तादेशोऽकारस्य च इकारो भवति । शिशपाः- वृक्षविशेषः ॥३०६॥

विष्टपोलप-वातपादयः ॥३०७॥

विष्टपादयः शब्दा किद् अपप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । विषेस्तोऽन्तश्च । विष्टपं-जगत्, सुकृतिनां स्थानं च । वलेरुल् च । उलपं- पर्वततृणम्, पङ्कजं, जलं च । उलपः- ऋषिः । वातेस्तोऽन्तश्च । वातपः- ऋषिः । आदिग्रहणात् खर- पादयोऽपि भवन्ति ॥३०७॥

कलेरापः ॥३०८॥

कलि शब्दसंख्यानयोः, इत्यस्मादापः प्रत्ययो भवति । कलापः- काञ्चीसमूहः, शिखण्डश्च ॥३०८॥

विशेरिपक् ॥३०९॥

विशंत् प्रवेशने, इत्यस्मादिपक्प्रत्ययो भवति । विशिपः- राशिः । विशिपं- तृणं, वेश्म, आसनं, पद्मं च ॥३०९॥

दलेरीपो दिल् च ॥३१०॥

दल विशरणे, इत्यस्मादीपः प्रत्ययो भवति । दिल् चास्यादेशो भवति । दिलीपः- राजा ॥३१०॥

उडेरुपक् ॥३११॥

उड् संघाते, इति सौत्रात् उपक्प्रत्ययो भवति । उडुपः- प्लवः । जपादित्वाद् वत्वे, उडुवः ॥३११॥

अश ऊपः पश्च ॥३१२॥

अशौटि व्याप्तौ, इत्यस्मादूपः प्रत्ययः भवति, पश्चा- न्तादेशो भवति । अपूपः- पक्वान्नविशेषः ॥३१२॥

सर्तेः षपः ॥३१३॥

सृं गतौ, इत्यस्मात् षपः प्रत्ययो भवति । सर्षपः- रक्षोघ्नं द्रव्यम्, शाकं च ॥३१३॥

री-शीभ्यां फः ॥३१४॥

आभ्यां फः प्रत्ययो भवति । रीङ्च् श्रवणे, रेफः- कुत्सितः । शीङ्क् स्वप्ने । शेफः- मेढ्रः ॥३१४॥

कलि-गलेरस्योच्च ॥३१५॥

आभ्यां फः प्रत्ययो भवत्यस्य चोकारो भवति । कलि शब्दसंख्यानयोः, गल अदने, कुल्फः, गुल्फः- जङ्घाङ्घ्रि- सन्धिः । गुल्फः- पादोपरिग्रन्थिः ॥३१५॥

शफ-कफ-शिफा-शोफादयः ॥३१६॥

शफादयः शब्दाः फप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । श्यतेः कायतेश्च ह्रस्वश्च । शफः- खुरः, प्रियंवदश्च । कफः- श्लेष्मा । श्यतेरित्वमोत्वं च । शिफा- वृक्षजटा । शोफः- श्वयथुः, खुरश्च । आदिशब्दाद् रिफानफासुनफादयो भवन्ति ॥३१६॥

वलि-नितनिभ्यां बः ॥३१७॥

वलि संवरणे, निपूर्वाच्च, तनूयी विस्तारे, इत्याभ्यां बः प्रत्ययो भवति । वल्बः- वृक्षः । नितम्बः- श्रोणिः, पर्वतैक- देशः, नटश्च ॥३१७॥

Aho ! Shrutgyanam

शम्यमेर्णिद्वा ॥३१८॥

आभ्यां बः प्रत्ययो भवति, स च णिद्वा भवति । शमूच् उपशमे, शम्बः- वज्रः, कर्षणविशेषः, वेणुदण्डः, तोत्रम्, अरित्रं च । शम्बशाम्बौ- जाम्बवतेयौ । अम् गतौ, अम्बा- माता । आम्बः- अपह्नवः ॥३१८॥

शल्यलेरुच्चातः ॥३१९॥

आभ्यां बः प्रत्ययो भवत्यकारस्य चोकारो भवति । पल-फल-शल गतौ, शुल्बं- ताम्रम् । अली भूषणादौ, उल्बं- रजतम्, गर्भवेष्टनम् । शुल्बं- बम्भ्रुः तरक्षुश्च ॥३१९॥

तुम्ब-स्तम्बादयः ॥३२०॥

तुम्बादयः शब्दा बप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । ताम्यतेरत उत्वं च । तुम्बम्- अलाबु, चक्राङ्गं च । स्तम्भेर्लुक् च । स्तम्बः- तृणं, विटपः, संघातः, अङ्कुरसमुदायः, स्तबकः, पुष्पापीडश्च । आदिग्रहणात् कुशाम्बादयो भवन्ति ॥३२०॥

कृ-कडि-कटि-वटेरम्बः ॥३२१॥

एभ्यः अम्बः प्रत्ययो भवति । डुकृग् करणे, करम्बः- दध्योदनः, दधिसक्तवः, पुष्पं च । कडत् मदे, कडम्बः- जातिविशेषः, जनपदविशेषश्च । कटे वर्षावरणयोः, कटम्बः- पक्वान्नविशेषः, वादित्रं च । कडम्बकटम्बौ वृक्षौ च । वट वेष्टने, वटम्बः- शैलः, तृणपुञ्जश्च ॥३२१॥

कदेर्णिद्वा ॥३२२॥

कद वैक्लव्ये, इति सौत्राद् अम्बः प्रत्ययो भवति, स च णिद्वा भवति । कादम्बः- हंसः । कदम्बः- वृक्षजातिः ॥३२२॥

शिल-विलादेः कित् ॥३२३॥

शिलादिभ्यः किद् अम्बः प्रत्ययो भवति । शिलत् उञ्छे, शिलम्बः- ऋषिः, तन्तुवायश्च । विलत् वरणे, विलम्बः- वेषविशेषः- रङ्गावसरश्च । आदिग्रहणादन्येऽपि ॥३२३॥

हिण्डि-विलेः किम्बो नलुक् च ॥३२४॥

आभ्यां किद् इम्बः प्रत्ययो भवति, नस्य च लुग् भवति । हिडुङ् गतौ, विलत् वरणे, हिडिम्बः- विलिम्बश्च- राक्षसौ ॥३२४॥

डी-नी-बन्धि-शृधि-चलिभ्यो डिम्बः ॥३२५॥

एभ्यः डिद् इम्बः प्रत्ययो भवति । डीङ् विहायसा गतौ, डिम्बः- राजोपद्रवः । णीग् प्रापणे, निम्बः- वृक्षविशेषः । बन्धंश् बन्धने, बिम्बं- प्रतिच्छन्दः, देहश्च, बिम्बी- वल्लि- जातिः । शृधूङ् शब्दकुत्सायाम् । शिम्बः मृगजातिः । शिम्बी- निष्पाववल्ली च । चल कम्पने, चिम्बा यवागूजातिः ॥३२५॥

कुटयुन्दि-चुरि-तुरि-पुरि-मुरि-कुरिभ्यः कुम्बः ॥३२६॥

एभ्यः किद् उम्बः प्रत्ययो भवति । कुटत् कौटिल्ये, कुटुम्बं- दारादयः । उदैप् क्लेदने, उदुम्बः- समुद्रः । चुरण् स्तेये, तुरण् त्वरणे, सौत्रः, चुरुम्बः तुरुम्बश्च- गहनम् । पुरत् अग्रगमने, पुरुम्बः- आहारः । मुरत् संवेष्टने, मुरुम्बः- म्रियमाणपाषाणचूर्णम् । कुरत् शब्दे, कुरुम्बः- अङ्कुरः । निपूर्वात् निकुरुम्बः- राशिः ॥३२६॥

गॄ-दॄ-रमि-हनि-जन्यर्ति-दलिभ्यो भः ॥३२७॥

एभ्यो भः प्रत्ययो भवति । गॄत् निगरणे, गर्भः- जठरस्थः प्राणी । दॄश् विदारणे, दर्भः- कुशः । रमि क्रीडायाम्, रम्भा- अप्सराः, कदली च । हनंक् हिंसागत्योः, हम्भा- गोधेनुनादः । जनैचि प्रादुर्भावे, जम्भः- दानवः, दन्तश्च, जम्भा- मुखविदारणम् । ऋक् गतौ, अर्भः- शिशुः । दलण् विदारणे, दलभः- ऋषिः, वल्कलं, विदारणं च ॥३२७॥

इणः कित् ॥३२८॥

इणक् गतौ, इत्यस्मात् किद् भः प्रत्ययो भवति । इभः- हस्ती ॥३२८॥

कॄ-शॄ-गॄ-शलि-कलि-कडि-गर्दि-रासि-रमि-वडि-वल्लेरभः ॥३२९॥

एभ्यः अभः प्रत्ययो भवति । कॄत् विक्षेपे, करभः- त्रिवर्ष उष्ट्रः । शॄश् हिंसायाम्, शरभः- श्वापदविशेषः । गॄत् निगरणे, गरभः- उदरस्थो जन्तुः । पल- फल- शल- गतौ, शलभः- पतङ्गः । कलि शब्दसंख्यानयोः, कलभः- हस्ती यौवनाभिमुखः । कडत्- मदे, कडभः- हस्तिपोतकः । गर्द शब्दे, गर्दभः- खरः । रासृङ् शब्दे, रासभः- स एव । रमि क्रीडायाम्, रमभः प्रहर्षः । वडः सौत्रः, वडभी- वेश्माग्रभूमिका । ऋफिडादित्वाल्लत्वे वलभी । वल्लि संवरणे, वल्लभः- स्वामी, दयितश्च ॥३२९॥

सनेर्डित् ॥३३०॥

षण् भक्तौ इत्यस्मात् डिद् अभः प्रत्ययो भवति । सभा- परिषत्, शाला च ॥३३०॥

ऋषि-वृषि-लुसिभ्यः कित् ॥३३१॥

एभ्यः किद् अभः प्रत्ययो भवति । ऋषैत् गतौ, वृषू सेचने, ऋषभः वृषभश्च- पुङ्गवः, भगवांश्चादितीर्थकरः ।

Aho ! Shrutgyanam

ऋषभः- वायुः । लुसिः सौत्रः, लुसभः- हिंस्रः, मत्तहस्ती, वनं च ॥३३१॥

सिटि-किभ्यामिभः सैर-टिट्टौ च ॥३३२॥

आभ्याम् इभः प्रत्ययो भवति, दन्त्यादिः सैरः टिट्टश्चादेशौ यथासंख्यं भवतः । षिगट् बन्धने, सैरिभः- महिषः । टिकि गतौ, टिट्टिभः- पक्षी ॥३३२॥

ककेरुभः ॥३३३॥

ककि लौल्ये, इत्यस्माद् उभः प्रत्ययो भवति । ककुभः- अर्जुनः ॥३३३॥

कुकेः कोऽन्तश्च ॥३३४॥

कुकि आदाने, इत्यस्माद् उभः प्रत्ययो भवति, ककारश्चान्तादेशो भवति । कुक्कुभः- पक्षिविशेषः ॥३३४॥

दमो दुण्ड् च ॥३३५॥

दमूच् उपशमे, इत्यस्माद् उभः प्रत्ययो भवत्यस्य च दन्त्यादिष्टवर्गतृतीयान्तो दुण्ड् इत्यादेशो भवति । दुण्डुभः- निर्विषाहिः ॥३३५॥

कृ-कलेरम्भः ॥३३६॥

आभ्याम् अम्भः प्रत्ययो भवति । डुकृंग् करणे, करम्भः- दधिसक्तवः । कलि शब्दसंख्यानयोः, कलम्भः- ऋषिः ॥३३६॥

का-कुसिभ्यां कुम्भः ॥३३७॥

आभ्यां किद् उम्भः प्रत्ययो भवति । कै शब्दे, कुम्भः- घटः, राशिश्च । कुसच् श्लेषणे, कुसुम्भः- महारजनम् ॥३३७॥

अर्तीरि-स्तु-सु-हु-सृ-घृ-धृ-शृ-क्षि-यक्षि-भा-वा-व्याधा-पाया-वलि-पदिनीभ्यो मः ॥३३८॥

एभ्यो मः प्रत्ययो भवति । ऋंक् गतौ, अर्मः- अक्षिरोगः, ग्रामः, स्थलं च । ईरिक् गतिकम्पनयोः, ईर्मं- व्रणः । ष्टुंग्क् स्तुतौ, स्तोभः- समूहयज्ञः, स्तोत्रं च । षुंगट्- अभिषवे, सोमः- चन्द्रः, वल्ली च । हुंक् दानादनयोः, होमः- आहुतिः । सृं गतौ, सर्मः- नदः, कालश्च; सर्मस्नानं, सुखं च । घृं सेचने, घर्मः- ग्रीष्मः । धृङ्त्, स्थाने, धर्मः- उत्तमक्षमादिः, न्यायश्च । शृश् हिंसायाम्, शर्मसुखम् । क्षित् निवासगत्योः, क्षेमं- कल्याणम् । यक्षिण् पूजायाम्, यक्ष्मः- व्याधिः । भांक् दीप्तौ, भामः- क्रोधः, भामा- स्त्री । वांक् गतिगन्धनयोः । वामः- प्रतिकूलः, सव्यश्च । व्येंग् संवरणे, व्यामः- वक्षोभुजायतिः । डुधांग्क् धारणे च, धामं- निलयः- तेजश्च । पां पाने, पामाकच्छूः । यांक् प्रापणे, यामः- प्रहरः । वलि संवरणे, वल्मः- ग्रन्थिः । पदिच् गतौ, पद्मं- कमलम् । णींग् प्रापणे, नेमः- अर्धः, समीपश्च ॥३३८॥

ग्रसि-हाग्भ्यां ग्राजिह्मौ च ॥३३९॥

आभ्यां मः प्रत्ययो भवत्यनयोश्च ग्राजिह्माविस्यादेशौ यथासंख्यं भवतः । ग्रामः- समूहादिः । जिह्मः- कुटिलः ॥३३९॥

विलि-भिलि-सिधीन्धि-धू-सू-श्या-ध्या-रु-सिवि-शुषि-मुषीषि-सुहि-युधि-दसिभ्यः कित् ॥३४०॥

एभ्यः किद् मः प्रत्ययो भवति । विलत् वरणे, विल्मं- प्रकाशम् । भिलिः सौत्रः, भिल्मं- भास्वरम् । षिधू- गत्याम्, सिध्मं- त्वग्रोगः । ञिइन्धैपि दीप्तौ, इध्मम्- इन्धनम् । धूग्श् कम्पने, धूमः- अग्निकेतुः । षूङौच् प्राणिप्रसवे, सूमः- कालः, श्वयथुः, रविश्च, सूमम्- अन्तरिक्षम् । श्यैङ् गतौ, श्यामः- वर्णः, श्यामं- नभः । श्यामा- रात्रिः, औषधिश्च । ध्यैं चिन्तायाम्, ध्यामः- अव्यक्तवर्णः । रुक् शब्दे, रुमालवणभूमिः । षिवूच् उतौ, स्यूमः- रश्मिः-, दीर्घसूत्रतन्तुश्च, स्यूमम्- जलम् । शुषंच् शोषणे, शुष्मं- बलं, जलं, संयोगश्च । मुषश् स्तेये, मुष्मः- मूषिकः । ईष उञ्छे, ईष्मः- वसन्तः-, बाणः, वातश्च । षुहच् शक्तौ, सुह्माः- जनपदः, सुह्मः- राजा । युधिच् संप्रहारे, युध्मः- शरत्कालः- शूरः, शत्रुः, संग्रामश्च । दसूच् उपक्षये, दस्मः- हीनः, वह्निर्यज्ञश्च ॥३४०॥

क्षु-हिभ्यां वा ॥३४१॥

आभ्यां मः प्रत्ययो भवति, स च किद्वा भवति । टुक्षुक् शब्दे, क्षुमा अतसी, क्षोमं- वस्त्रम् । हिंट् गतिवृद्धयोः, हेमं- सुवर्णम्, हिमं- तुषारः ॥३४१॥

अवेर्ह्रस्वश्च वा ॥३४२॥

अव रक्षणादौ, इत्यस्मात् किद् मः प्रत्ययो भवति, ऊटो ह्रस्वश्च वा भवति । उमा- गौरी, अतसी, कीर्तिश्च । ऊमम्- ऊनम्, आकाशं, नगरम् ॥३४२॥

सेरी च वा ॥३४३॥

षिगट् बन्धने, इत्यस्मात् किद् मः प्रत्ययो भवति, ईकारश्चान्तादेशो वा भवति । सीमो- ग्रामगोचरभूमिः, क्षेत्रमर्यादा, हयश्च । सिमः- स एव सर्वार्थश्च ॥३४३॥

भियः षोऽन्तश्च वा ॥३४४॥

ञिभींक् भये, इत्यस्मात् किद् मः प्रत्ययो भवति । षकारश्चान्तादेशो वा भवति । बिभेति अस्मादिति भीष्मः- भयानकः । भीमः- स एव ॥३४४॥

Aho ! Shrutgyanam

तिजि-युजेर्ग् च ॥३४५॥

आभ्यां किद् मः प्रत्ययो भवति, गकारश्चान्तादेशो भवति । तिजि क्षमानिशानयोः, तिग्मं- तीक्ष्णं, दीप्तं, तेजश्च । युजूंपी योगे, युग्मं- युगलम् ॥३४५॥

रुक्म-ग्रीष्म-कूर्म-सूर्म-जाल्म-गुल्म-घ्रोम-परिस्तोम-सूक्ष्मादयः ॥३४६॥

एते किन्मप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । रोचतेः क् च, रुक्मं- सुवर्णं, रूप्यं च । ग्रसेर्गीष् च, ग्रीष्मः- ऋतुः । कुरतेर्दीर्घश्च, कूर्मः- कच्छपः । षूत् प्रेरणे, इत्यस्माद्रोऽन्तश्च भवति । सूर्मी- लोहप्रतिमा, चुल्लिश्च । जल घात्ये दीर्घश्च, जाल्मः- निकृष्टः । गुपच् व्याकुलत्वे लश्च, गुल्मः- व्याधिः, तरुसमूहः, वनस्पतिः, सेनाङ्गं च, गुल्मम्- आयस्थानम् । जिघ्रतेरोत्वं च, घ्रोमः- यज्ञाङ्गलक्षणः सोमः । परिपूर्वात् स्तौतेः षत्वाभावो गुणश्च, परिस्तोमः- यज्ञविशेषः । सूचण् पैशून्ये कत्वं षोऽन्तश्च । सूक्ष्मः- निपुणः, सूक्ष्मम्- अणु । आदिग्रहणात् क्ष्मादयो भवन्ति ॥३४६॥

सृ-पॄ-प्रथि-चरि-कडि-कर्देरमः ॥३४७॥

एभ्य अमः प्रत्ययो भवति । सृं गतौ, सरमा- देवशुनी । पॄश् पालनपूरणयोः, परमः- उत्कृष्टः । प्रथिष् प्रख्याने, प्रथमः- आद्यः । चर भक्षणे, चरमः- पश्चिमः । कडत् मदे, कडमः- शालिः । ऋफिडादित्वाल्लत्वे कलमः- स एव । कर्द कुत्सिते शब्दे, कर्दमः- पङ्कः ॥३४७॥

अवेर्ध च वा ॥३४८॥

अव रक्षणादौ, इत्यस्मादमः प्रत्ययो भवति, धश्चान्तादेशो वा भवति । अधमः, अवमश्च- हीनः ॥३४८॥

कुट्टि-वेष्टि-पूरि-पिषि-सिचि-गण्यर्पि-वृ-महिभ्य इमः ॥३४९॥

एभ्यः इमः प्रत्ययो भवति । कुट्टण् कुत्सने च, कुट्टिमं- संस्कृतभूतलम् । वेष्टि वेष्टने, वेष्टिमं- पुष्पबन्धविशेषः, भक्ष्यविशेषश्च । पूरैचि आप्यायने, पूरिमं- मालाबन्धविशेषः, भक्ष्यविशेषश्च । पिष्लृंप् संचूर्णने, पेषिमं- भक्ष्यविशेषः । षिचींत् क्षरणे, सेचिमं- मालाविशेषः । गणण् संख्याने, गणिमं- गणितम् । ऋंक् गतौ, णौ पौ, अर्पिमं- बालवत्साया दुग्धम् । वृग्ट् वरणे, वरिमं- तुलोन्मेयम् । मह पूजायाम्, महिमं- पूजनीयम् ॥३४९॥

वयिम-खचिमादयः ॥३५०॥

वयिमादयः शब्दा इमप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । वेंग् तन्तुसन्ताने, वयादेशश्च, वयिमं- माल्यं, कन्दुकः, तन्तुवायदण्डश्च । खनूग् अवदारणे, चश्च, खचिमं- मणिलोहविद्धं, घृतविहीनं च दधि । आदिशब्दादन्येऽपि ॥३५०॥

उद्वटि-कुल्यलि-कुथि-कुरि-कुटि-कुडि-कुसिभ्यः कुमः ॥३५१॥

उत्पूर्वाद्वटेः कुल्यादिभ्यश्च किदुमः प्रत्ययो भवति । वट वेष्टने, उद्वटुमः- परिक्षेपः । कुल बन्धुसंस्त्यानयोः, कुलुमः- उत्सवः । अली भूषणादौ, अलुमः- प्रसाधनम्, नापितः, अग्निश्च । कुथच् पूतीभावे, कुथुमः- ऋषिः, कुथुमं- मृगाजिनम् । कुरत् शब्दे, कुरुमः- कारुः, भाजनं च । कुटत् कौटिल्ये, कुटुमः- प्रेष्यः । कुडत् बाल्ये च, कुडुमा- भूमिः । कुसच् श्लेषे, कुसुमं- पुष्पम् ॥३५१॥

कुन्दुम-लिन्दुम-कुङ्कुम-विद्रुम-पट्टुमादयः ॥३५२॥

एते कुमप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । कुकि आदाने स्वरान्नो दश्च, कुन्दुमः- निचयः- गन्धद्रव्यं च । लींङ्च् श्लेषणे, लिन्दभावश्च, लिन्दुमः- गन्धद्रव्यम् । कुकेः स्वरान्नोन्तश्च । कुङ्कुमं- घुसृणम् । विद्लृंती लाभे, रोन्तश्च, विद्रुमः- प्रवालः । पदेष्टोऽन्तश्च । पट्टुमं- नगरम् । आदिग्रहणादन्येऽपि ॥३५२॥

कुथि-गुधेरूमः ॥३५३॥

आभ्यामूमः प्रत्ययो भवति । कुथच् पूतिभावे, कोथुमः- चरणकृदृषिः । गुधच् परिवेष्टने, गोधूमः- धान्यविशेषः ॥३५३॥

विहा-विशा-पचि-भिद्यादेः केलिमः ॥३५४॥

विपूर्वाभ्याम् ओहांक् त्यागे, शोंच् तक्षणे, इत्येताभ्यां पच्यादिभ्यश्च किद् एलिमः प्रत्ययो भवति । विहीयते त्यज्यतेऽशुचि शरीरमस्मिन्निति विहेलिमः- स्वर्गः । विश्यति तनूभवति मासि मासि कलाभिर्हीयमान इति विशेलिमः- चन्द्रः, स्वर्गश्च । डुपचींष् पाके, पचति असावन्नमिति पचेलिमः- अग्निः, आदित्यः, अश्वश्च । भिदृंपी विदारणे, भिदेलिमः- तस्करः । आदिशब्दात् दृशृं प्रेक्षणे, दृशेलिमम् । अदं प्सांक् भक्षणे, अदेलिमम् । हनंक् हिंसागत्योः, घ्नेलिमम् । डुयाचृग् याञ्चायाम्, याचेलिमम् । पांक् रक्षणे, पेलिमम् । डुकृंग् करणे, केलिमम् इत्यादयो भवन्ति ॥३५४॥

दो डिमः ॥३५५॥

दांम् दाने, इत्यस्मात् डिमः प्रत्ययो भवति । दाडिमः वा दाडिमी वा- वृक्षजातिः ॥३५५॥

डिमेः कित् ॥३५६॥

Aho ! Shrutgyanam

डिमेः सौत्रात् किद् डिमः प्रत्ययो भवति । डिण्डिमः–वाद्यविशेषः ॥३५६॥

स्था-छा-मा-सा-सू-मन्य-नि-कनि-षसि-पलि-कलि-शलि-शकीर्ष्य-सहि-बन्धिभ्यो यः ॥३५७॥

एभ्यो यः प्रत्ययो भवति । ष्ठां गतिनिवृत्तौ, स्थायः–स्थानम्, स्थाया– भूमिः । दों छोंच् छेदने, छाया–तमः, प्रतिरूपम्, कान्तिश्च । मांक् माने, माया–छद्म, दिव्यानुभावदर्शनं च । षौंच् अन्तकर्मणि, सायं–दिनावसानम् । षूत् प्रेरणे, सव्यः–वामः, दक्षिणश्च । मनिच् ज्ञाने, मन्या–धमनिः । अनक् प्राणने, अन्यः–परः । कनै दीप्त्यादिषु, कन्या–कुमारी । षसक् स्वप्ने, सस्यं–क्षेत्रस्थं गोधूमादि । पल गतौ, पल्यः–कटकुसूलः । कलि शब्दसंख्यानयोः, कल्यः–नीरोगः । पल फल शल गतौ, शल्यमन्तर्गतं लोहादि । शक्लृट् शक्तौ, शक्यमसारम् । ईर्ष्यिरीर्ष्यार्थः, ईर्ष्यण ईर्ष्यति वा । ईर्ष्या–मात्सर्यम् । षहि मर्षणे, सह्यः–पश्चादर्णवपार्श्वशैलः । बन्धश् बन्धने, वन्ध्या–अप्रसूतिः ॥ ३५७ ॥

नञो हलि-पतेः ॥३५८॥

नञ्पूर्वाभ्यामाभ्यां यः प्रत्ययो भवति । हल विलेखने, अहल्या–गौतमपत्नी । पतॢं गतौ, अपत्यं–पुत्रसंतानः ॥३५८॥

सञ्जेर्ध् च ॥३५९॥

षञ्जं सङ्गे इत्यस्माद् यः प्रत्ययो भवति, धकारश्चान्तादेशो भवति । संध्या–दिननिशान्तरम् ॥३५९॥

मृशी-पसि-वस्यनिभ्यस्तादिः ॥३६०॥

एभ्यस्तकारादिर्यः प्रत्ययो भवति । मृंत् प्राणत्यागे, मर्त्यः–मनुष्यः । शीङ्क् स्वप्ने, शैत्यः–शकुनिः, संवत्सरः, अजगरश्च । पसि निवासे सौत्रो दन्त्यान्तः, पस्त्यं–गृहम् । वसं निवासे, वस्त्यः–गुरुः । अनक् प्राणने, अन्त्यः–निरवसितः, चण्डालादिश्च ॥३६०॥

ऋशि-जनि-पुणि-कृतिभ्यः कित् ॥३६१॥

एभ्यः किद् यः प्रत्ययो भवति । ऋश् गतौ स्तुतौ वा स्वरादिस्तालव्यान्तः, ऋश्यः–मृगजातिः । जनैचि प्रादुर्भावे, जन्यं–संग्रामः । जाया–पत्नी, ये नवा इत्यात्वम् । पुणत् शुभे, पुण्यं–सत्कर्म । कृतैत् छेदने, कृन्ततीति–कृत्या–दुर्गा ॥३६१॥

कुलेर्ड् च वा ॥३६२॥

कुल बन्धुसंस्त्यानयोः, इत्यस्मात् किद् यः प्रत्ययो भवति–डकारश्चान्तादेशो वा भवति । कुड्यं–भित्तिः । कुल्या–सारणी ॥३६२॥

अग-पुलाभ्यां स्तम्भेर्डित् ॥३६३॥

अग-पुल इत्येताभ्यां परस्मात् स्तम्भेः सौत्रात् डिद् यः प्रत्ययो भवति । अगस्त्यः पुलस्त्यश्च–ऋषिः ॥३६३॥

शिक्यास्याढ्य-मध्य-विन्ध्य-धिष्ण्याघ्न्य-हर्म्य-सत्य-नित्यादयः ॥३६४॥

एते यप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । शोंच् तक्षणे, इकश्चान्तः, शिक्यं–लम्बमानः पिठर्याद्याधारः–परिव्राड्भिक्षाभाजनस्थानम्, असारं च । असूच् क्षेपणे–दीर्घत्वं च आस्यं–मुखम् । आङ्पूर्वाद् ढौकतेर्डिच्च, आढ्यः–धनवान् । भव बन्धने ध् च, मध्यं–गर्भः । विधत् विधाने, स्वरान्नोऽन्तश्च, विन्ध्यः–पर्वतः । ञिधृषाट् प्रागल्भ्ये, णोऽन्तो धिष् च, धिष्ण्यं–भवनम्, आसनं च, धिष्ण्या–उल्का नञ्पूर्वाद्धन्तेरुपान्त्यलोपश्च । अघ्न्यः–धर्मः, गोपतिश्च, अघ्न्या–गौः । हरतेर्मोऽन्तश्च, हर्म्यं–सौधम् । अस्तेः सत् च सत्यम्–अमृषा । निपूर्वाद्यमेस्तोऽन्तो धातुलुक् च । नित्यं–ध्रुवम् । आदिग्रहणाल्लह्यद्रुह्यादयो भवन्ति ॥३६४॥

कु-गु-वलि-मलि-कणि-तन्याम्यक्षेरयः ॥३६५॥

एभ्यः अयः प्रत्ययो भवति । कुंक् शब्दे, कवयः–ऋषिः, पुरोडाशश्च । गुंङ् शब्दे, गवयः–गवाकृतिः पशुविशेषः । वलि संवरणे, वलयः–कटकः । मलि धारणे, मलयः–पर्वतः । कण शब्दे, कणयः–आयुधविशेषः । तनूयी विस्तारे, तनयः–पुत्रः, अमण् रोगे णिचि च, आमयः–व्याधिः । अक्षौ व्याप्तौ च, अक्षयः–विष्णुः ॥३६५॥

चायेः केक् च ॥३६६॥

चायृग् पूजानिशामनयोः इत्यस्माद् अयः प्रत्ययो भवत्यस्य च केक् इत्यादेशो भवति । केकयः–क्षत्रियः ॥३६६॥

लादिभ्यः कित् ॥३६७॥

लादिभ्यः किद् अयः प्रत्ययो भवति । लांक् आदाने, लयः । पां पाने, पयः । ष्णांक् शौचे, स्नयः । देङ् पालने, दयः । ट्धें पाने, धयः । मेंङ् प्रतिदाने, मयः । कैं शब्दे कयः । खैं खदने, खयः । श्रां पाके श्रयः । क्षैं-जैं-सैं क्षये, क्षयः जयः सयः । त्रैङ् पालने त्रयः । ओवैं शोषणे वयः । इत्यादि ॥३६७॥

कसेरलादिरिच्चास्य ॥३६८॥

कस गतौ इत्यस्मादलादिरयः प्रत्ययो भवत्यकारस्य चेकारो भवति । किसलयं–प्रवालम् ॥३६८॥

वृङः शषौ चान्तौ ॥३६९॥

वृङ्श् संभक्तौ इत्यस्मात् किद् अयः प्रत्ययो भवति, शकारषकारौ चान्तौ भवतः । वृशयं–देशनाम, आकाशम्,

Aho ! Shrutgyanam

आसनं–च । वृषयः–आशयः ॥३६९॥

गय-हृदयादयः ॥३७०॥

गय–हृदयादयः शब्दाः किदयप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । गमेर्डिच्च, गयः–प्राणः, गया–तीर्थम् । हृरतेर्दोऽन्तश्च, हृदयं-मनः, स्तनमध्यम् च । आदिशब्दात् गणेरेयः, गणेयं गणनीयमित्यादि ॥३७०॥

मुचे-र्घय-घुयौ ॥३७१॥

मुच्लृंती मोक्षणे, इत्यस्माद् घितौ अय उय इति प्रत्ययौ कितौ भवतः । मुकयः मुकुयश्च–अश्वतरादश्वायां जातः । घित्करणं कत्वार्थम् ॥३७१॥

कुलि-लुलि-कलि-कषिभ्यः कायः ॥३७२॥

एभ्यः किद् आयः प्रत्ययो भवति । कुल बन्धुसंस्त्यानयोः, कुलायः–नीडम् । लुलिः सौत्रः, लुलायः–महिषः । कलि शब्दसंख्यानयोः, कलायः–त्रिपुटः । कष हिंसायाम्, कषायः–कल्कादिः ॥३७२॥

श्रु-दक्षि-गृहि-स्पृहि-महेराय्यः ॥३७३ ।

एभ्यः आय्यः प्रत्ययो भवति । श्रुंट् श्रवणे, श्रवाय्यः-यज्ञपशुः, ग्रहणसमर्थश्च श्रोता । दक्षि हिंसागत्योः दक्षाय्यः-अग्निः, गृध्रः, वैनतेयः, दक्षतमश्च । गृहणि ग्रहणे, गृहयाय्यः– वैनतेयः, गृहकर्मकुशलश्च । स्पृहण् ईप्सायाम्, स्पृहयाय्यः-स्पृहयालु घृतं च, स्पृहयाय्यानि–तृणानि च, अहानि च । महण् पूजायाम् । महयाय्यः–अश्वमेधः ॥३७३॥

दधिषाय्य-दीधीषाय्यौ ॥३७४॥

एतौ आय्यप्रत्ययान्तौ निपात्येते । दधिपूर्वात् स्यतेः षत्वं च । दधिषाय्यं–पृषदाज्यम्, मृषावादी च । दीव्यतेर्दीधीष् च, दीधीषाय्यं तदेव ॥३७४॥

कौतेरियः ॥३७५॥

कुंङ् शब्दे इत्यस्माद् इयः प्रत्ययो भवति । कवियं-खलीनम् ॥३७५॥

कृगः कित् ॥३७६॥

डुकृंग् करणे इत्यस्मात् किद् इयः प्रत्ययो भवति । क्रियः–मेषः ॥३७६॥

मृजेर्णालीयः ॥३७७॥

मृजौक् शुद्धौ, इत्यस्माद् णदालीयः प्रत्ययो भवति । मार्जालीयम्–पापशोधनम्, मार्जालीयः–अग्निः, मृजोऽस्य वृद्धिरिति वृद्धिः । णकार उत्तरार्थः ॥३७७॥

वेतेस्तादिः ॥३७८॥

वींक् प्रजननादौ इत्यस्मात्तकारादिर्णिद् आलीयः प्रत्ययो भवति । वैतालीयं–छन्दोजातिः ॥३७८॥

धाग्-राजि-शॄ-रमि-याज्यर्तेरन्यः ॥३७९॥

एभ्यः अन्यः प्रत्ययो भवति । डुधांग्क् धारणे च, धान्यं सस्यजातिः । राजृग् दीप्तौ, राजन्यः–ज्योतिः, अग्निः, क्षत्रियश्च । शॄश् हिंसायाम्, शरण्यः–त्राता । रमिं क्रीडायाम्, रमण्यं–शोभनम् । यजीं देवपूजादौ, याजन्यः-क्षत्रियः, यज्ञश्च । ऋंक् गतौ अरण्यं–वनम् ॥३७९॥

हिरण्य-पर्जन्यादयः ॥३८०॥

हिरण्यादयः शब्दा अन्यप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । हरतेरिच्चातः । हिरण्यं–सुवर्णादि द्रव्यम् । परिपूर्वस्य पृषु सेचने इत्यस्योपसर्गान्तिलोपो धातोश्च जः समस्तादेशः, गर्जतेर्वा गकारस्य पकारः । पर्जन्यः–इन्द्रः, मेघः, शङ्कुः, पुण्यं, कुशलं च कर्म । आदि ग्रहणादन्येऽपि ॥३८०॥

वदि-सहिभ्यामान्यः ॥३८१॥

आभ्याम् आन्यः प्रत्ययो भवति । वद व्यक्तायां वाचि, वदान्यः–दाता, गुणवान्, चारुभाषी वा । षहि मर्षणे, सहान्यः–शैलः ॥३८१॥

वृङ एण्यः ॥३८२॥

वृङ्श् संभक्तौ, इत्यस्माद् एण्यः प्रत्ययो भवति । वरेण्यः–परंब्रह्म, धाम, श्रेष्ठः, प्रजापतिः, अन्नं च ॥३८२॥

मदेः स्यः ॥३८३॥

मदैच् हर्षे, इत्यस्मात् त्स्यः प्रत्ययो भवति । मत्स्यः–मीनः, धूर्तश्च ॥३८३॥

रुचि-भुजिभ्यां किष्यः ॥३८४॥

रुचि–भुजिभ्यां किद् इष्यः प्रत्ययो भवति । रुचि अभिप्रीत्यां च, रुचिष्यः–वल्लभः, सुवर्णं च । भुजंप् पालनाभ्यवहारयोः, भुजिष्यः–आचार्यः, भोक्ता, अन्नं, मृदु, ओदनः– दासश्च, भुजिष्यं–धनम् ॥३८४॥

वच्यर्थिभ्यामुष्यः ॥३८५॥

आभ्याम् उष्यः प्रत्ययो भवति । वचंक् भाषणे, वचुष्यः–वक्ता । अर्थणि उपयाचने, अर्थुष्यः–अर्थी ॥३८५॥

वचोऽथ्य उत् च ॥३८६॥

वचंक् भाषणे, इत्यस्मादथ्यः प्रत्ययो भवत्यस्य च उद् इत्यादेशो भवति । उतथ्यः–ऋषिः ॥३८६॥

भी- वृधि- रुधि- वज्य- गि- रमि- वमि- वपि- जपि- शकि- स्फायि- वन्दीन्दि- पदि- मदि- मन्दि-

Aho ! Shrutgyanam

चन्दि- दसि- घसि- नसि- हस्यसि- वासि- दहि- सहिभ्यो रः ॥३८७॥

एभ्यः रः प्रत्ययो भवति । ञिभींक् भये, भेरः–भेदः, करभः, शरः, मण्डूकः, दुन्दुभिः, कातरश्च । ऋफिडादित्वाद् लत्वे, भेलः–चिकित्साग्रन्थकारः, शरः, मण्डूकः, प्रहीणः–अप्राज्ञश्च । वृधूङ् वृद्धौ, वर्ध्रः–चर्मविकारः, चन्द्रः, मेघश्च । रुधृंपी आवरणे, रोध्रः–वृक्षविशेषः । वज गतौ, वज्रं–कुलिशम्, रत्नविशेषश्च । अग कुटिलायां गतौ, अग्रः–प्राग्भागः, श्रेष्ठश्च । रमि क्रीडायाम्, रम्रः–कामुकः । टुवमू उद्गिरणे, वम्रः–धर्मविशेषः धूमश्च, वम्री–उपदेहिका । डुवपी बीजसंताने, वप्रः–केदारः, प्राकारः, वास्तुभूमिश्च । जप मानसे च, जप्रः–ब्राह्मणः, मण्डूकश्च । शक्लृंट् शक्तौ, शक्रः–इन्द्रः । स्फायैङ् वृद्धौ, स्फारम्–उल्वणं, प्रभूतं च । वदुङ् स्तुत्यभिवादनयोः, वन्द्रः–वन्दी, केतुः, कामश्च, वन्द्रं–समूहः । इदु परमैश्वर्ये, इन्द्रः–शक्रः पदिच् गतौ, पद्रं–ग्रामादिनिवेशः, शून्यं च । मदैच् हर्षे मद्राः–जनपदः, क्षत्रियश्च, मद्रं–सुखम् । मदुङ् स्तुत्यभिवादनयोः, मन्द्रः–मधुरः स्वरः, मन्द्रं–गभीरम् । चदु दीप्त्याह्लादनयोः, चन्द्रः–शशी, सुवर्णं च । दसूच् उपक्षये, दस्रः–शिशरम्, चन्द्रमाः, अश्विनोर्ज्येष्ठश्च, दस्रौ–अश्विनौ । घस्लृं अदने, घस्रः–दिवसः । णसि कौटिल्ये नस्रः–नासिकापुटः, ऋषिश्च । हसे हसने, हस्रः–दिनं, घातुकः, हर्षुलश्च, हस्रं–बलाधानं, संनिपातश्च, सहस्रं–दश शतानि । असूच् क्षेपणे, अस्रम्–अश्रू । वासिच् शब्दे, वास्रः–पुरुषः, शब्दः, संघातः, शरभः, रासभः पक्षी च, वास्रा–धेनुः । दहं भस्मीकरणे, दह्रः–अग्निः, शिशुः–सूर्यश्च । षहि मर्षणे, सह्रः–शैलः ॥३८७॥

ऋज्यजि- तञ्चि- वञ्चि- रिपि-सृपि-तृपि-दृपि-चुपि- क्षिपि- क्षुपि- क्षुद- मुदि- रुदि- छिदि- भिदि- खिद्युन्दि- दम्भि- शुभ्युम्भि- दंशि- चि- सि- वहि- विसि- वसि- शुचि- सिधि- गृधि- वीन्धि- श्विति- वृति- नी- शी- सु- सूभ्यः कित् ॥३८८॥

एभ्यः किद् रः प्रत्ययो भवति । ऋजि गतिस्थानार्जनोपार्जनेषु, ऋज्रः–नायकः, इन्द्रः, अर्थश्च । अज क्षेपणे च, अज्रः–वीरः, विक्रान्तः । तञ्चू वञ्चू गतौ, तक्रम्–उदश्वित्, वक्रः–कुटिलः, अङ्गारकः, विष्णुश्च । उभयत्र न्यङ्क्वादित्वात् कत्वम् । रिपिः सौत्रः, रिप्रं–कुत्सितम् । सृप्लृं गतौ, सृप्रः–चन्द्रः, सृप्रं–मधु, सृप्रा–नाम नदी । तृपौच् प्रीतौ, तृप्रं–मेघान्तघर्मः, आज्यं, काष्ठं, पापं, दुःखं वा । दृपौच् हर्षमोहनयोः, दृप्रं–बलं, दुःखं च; दृप्रा-बुद्धिः । चुप मन्दायां गतौ, चुप्रः–वायुः । क्षिपींत् प्रेरणे, क्षिप्रं–शीघ्रम् । क्षुपि सादने सौत्रः, क्षुप्रं–तुहिनं, कण्टकिगुल्मकश्च । क्षुदृंपी संपेषे, क्षुद्रम्–अणु, जलगर्तश्च, क्षुद्रा मधुकर्यः, क्षुद्रः, हिंस्रः । मुदि हर्षे, मुद्रा–चिह्नकरणम् । रुदृक् अश्रुविमोचने, रुद्रः–शम्भुः । छिदृंपी द्वैधीकरणे, छिद्रं–विवरम् । भिदृंपी विदारणे, भिद्रम्–अदृढम्, भिद्रः–शरः । खिदंत् परिघाते, खिद्रम्–विघ्नः, खिद्रः–विषाणम्, विषादः, चन्द्रः, दीनश्च । उन्दैप् क्लेदने, उद्रः–ऋषिः, मत्स्यश्च । संपूर्वात् समुन्दन्ति–आर्द्रीभवन्ति वेलाकाले नद्योऽस्मादिति समुद्रः–सागरः । भीमादित्वादपादाने । दम्भूट् दम्भे, दभ्रः–अल्पः, चन्द्रः, कुशः, कुशलः, सूर्यश्च । शुभि दीप्तौ शुभ्रः–अवदातः । उम्भत् पूरणे, उभ्रः–मेघः, पेलवश्च । दंशं दशने दश्रः–दन्तः, सर्पश्च । चिंगट् चयने चिरम्–अशीघ्रम् । षिगट् बन्धने, सिरा– रुधिरस्रोतोवाहिनी नाडी । वहीं प्रापणे, उह्रः–अनड्वान् । विसच् प्रेरणे विस्रम्–आमगन्धि । वसं निवासे, उस्रः– रश्मिः । बाहुलकात् षत्वं न भवति । उस्रा–गौः । शुच शोके, शुक्रः–ग्रहः, मासः, शुक्लश्च, शुक्रं–रेतः, लत्वे शुक्लः–वर्णः, कत्वं न्यङ्क्वादित्वात् । षिधू गत्याम्, सिध्रः–साधुः, वृक्षः, मांसप्रभेदश्च । गृधूच् अभिकाङ्क्षायाम्, गृध्रः–श्येनः, लुब्धकः, कङ्कश्च । ञिइन्धैपि दीप्तौ, विपूर्वात्, वीध्रः–अग्निः, वायुः, नभः, निर्मलः, पूर्णचन्द्रमण्डलं च । श्विताङ् वर्णे, श्वित्रं–श्वेतकुष्ठम् । वृतूङ् वर्तने । वृत्रः–दानवः–बलवान्, रिपुश्च, वृत्रं–पापम् । णींग् प्रापणे, नीरं–जलम् । शीङ्क् स्वप्ने, शीरः–अजगरः । षुंगट् अभिषवे, सुरः–देवः, सुरा–मद्यम् । षूङौच् प्राणिप्रसवे, सूरः–आदित्यः, रश्मिश्च ॥३८८॥

इण्-धाग्भ्यां वा ॥३८९॥

आभ्यां रः प्रत्ययो भवति, स च किद्वा । इंण्क् गतौ, इरा–मदनीयपानविशेषः मेदिनी च, एरा–एडका । डुधांग्क् धारणे च, धीरः–सत्त्ववान्, धृतिमांश्च, धारा–जलयष्टिः–खड्गावयवः, अश्वगतिविशेषश्च ॥३८९॥

चुम्बि-कुम्बि-तुम्बेर्नलुक् च ॥३९०॥

एभ्यः किद् रः प्रत्ययो भवति, नकारस्य चैषां लुग् भवति । चुबु वक्त्रसंयोगे, चुब्रं–वक्त्रम्, चुम्ब्रः–रश्मिः । कुबु आच्छादने, कुब्रं–संकटम्, भग्नपृष्ठः, फल्गुहस्ती, चर्म, गृहाच्छादनं च । तुबु अर्दने, तुब्रं–कुटिलम् ॥३९०॥

भन्देर्वा ॥३९१॥

भदुङ् सुखकल्याणयोः, इत्यस्माद् रः प्रत्ययो भवति, नकारस्य च लुग् वा भवति । भद्रं, भन्द्रं च–कल्याणम्,

Aho ! Shrutgyanam

सुखं च ।।३९१।।

चि- जि- शु- सि- मि- तम्यमर्देर्दीर्घश्च ।।३९२।।

एभ्यो रः प्रत्ययो भवति दीर्घश्चैषां भवति । चिंगट् चयने, चीरं–जीर्णं वस्त्रं, वल्कलं च । जि अभिभवे, जीरः–अजाजी, अग्निः, वायुः, अश्वश्च, जीरम्–अन्नम्, लत्वे जीलः–चर्मपुटः । शुं गतौ, शूरः–विक्रान्तः । षिंगट् बन्धने, सीरं–हलम्, सीरा–हलविलेखिता लेखा । डुमिंगट् प्रक्षेपणे, मीरः–समुद्रः, मीरं–जलम्, मीरा–मांसपचनी, देवसीमा च । तमूच् काङ्क्षायाम्, ताम्रः–वर्णः, शुल्वं च । अम गतौ, आम्रः–वृक्षः । अर्द गतियाचनयोः, आर्द्रं–सरसम् ।।३९२।।

चकि-रमि-विकसे-रुच्चास्य ।।३९३।।

चकि–रमिभ्यां विपूर्वाच्च कसे रः प्रत्ययो भवति । अकारस्य चैषामुकारो भवति । चकि तृप्तिप्रतिघातयोः चुक्रः–अम्लो रसः, बीजपुरकम् इञ्चिका, असुरः, निमन्त्रणं च । रमि क्रीडायाम्, रुम्रः–सुन्दरः, आदित्यसारथिः, ब्राह्मणः, विनाशश्च । कस गतौ, विकुस्रः–चन्द्रः, समुद्रश्च, विकुस्रं–पुष्पितम् । बाहुलकाद् विकसेर्विकल्पः, विकस्रः ।।३९३।।

शदेरूच्च ।।३९४।।

शद्लृं शातने, इत्यस्माद् रः प्रत्ययो भवत्यकारस्य चोकारो भवति । शूद्रः–चतुर्थो वर्णः ।।३९४।।

कृतेः क्रू- कृच्छ्रौ च ।।३९५।।

कृतैत् छेदने, इत्यस्माद् रः प्रत्ययो भवत्यस्य च क्रू कृच्छ्र इत्यादेशौ भवतः । क्रूरम्–अमृदु, क्रूरः–पापकर्मा । कृच्छ्रम्–दुःखम् ।।३९५।।

खुर-क्षुर-दूर-गौर-विप्र-कुप्र-श्वभ्राभ्र-धूम्रान्ध्र-रन्ध्र-शिलीन्ध्रौड्र-पुण्ड्र-तीव्र-नीव्र-शीघ्रोग्र-तुग्र-भुग्र-निद्रा-तन्द्रा-सान्द्र-गुन्द्रा-रिञ्जादयः ।।३९६ ।।

एते रप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । खुरत् छेदने, क्षुरत् विलेखने, अनयो रलोपो गुणाभावश्च । खुरः–शफः, क्षुरः–नापितभाण्डम् । ननु च खुर-क्षुरशब्दौ 'नाम्युपान्त्यप्री–कृ–गृ–ज्ञः कः' [५१.५.४] इति केन सिध्यतः । सत्यम्, तत्र कर्त्रर्थ इह तु संप्रदानाच्चान्यत्रोणादय इत्यर्थभेदः असर्वविषयत्वं वाऽनयोर्ज्ञाप्यते, यथा अदेः परोक्षायां वा घस्लादेशवचनेन घसेः एवमन्यत्रापि स्वयमभ्यूह्यम् दुर्पूर्वादिणो लुक् च । दूरं–विप्रकृष्टम् । गवतेर्वृद्धिश्च, गौरः–अवदातः । विपूर्वात्पातेर्लुक् च विप्रः–ब्राह्मणः । विविधं प्रातीति वा विप्रः । गुपूच् व्याकुलत्वे, आदेः कत्वं च, कुप्रं–गहनम्, गृहाच्छादनं च । ट्वोश्वि गतिवृद्ध्योः अकारः भोऽन्तश्च, श्वभ्रं–बिलम्, आकाशं च आप्लृंट् व्याप्तौ, अभादेशश्च अभ्रं–मेघः । धूगश् कम्पने, मोऽन्तश्च, धूम्रः–वर्णविशेषः । अहुङ् गतौ, धश्च अन्ध्रः–क्षत्रजातिः । रधेः स्वरान्नोऽन्तश्च, रन्ध्रं–छिद्रम् । ञिइन्धैपि दीप्तौ, अस्य च तालव्यादिशिलश्चादिः, शिलिन्ध्रम्–उद्भिद्विशेषः, ओणेः डश्च, औड्रः–क्षत्रजातिः । पुणेः स्वरान्नोऽन्तो डश्च, पुण्ड्रः–क्षत्रजातिः, तिलकश्च । पुण्डेर्वा रूपम् । तिजेर्वो दीर्घश्च, तीवतेर्वा, तीव्रः–तीक्ष्णः, उत्कृष्टश्च । नियो वोऽन्तश्च, नीवतेर्वा, नीव्रं–गृहच्छदिरुपान्तः । श्यैङ ईत्वं यलोपो घश्चान्तः, शीघ्रः–त्वरितः । उवेरुषेर्वा गः कित्, उग्रः–रुद्रः, रौद्रश्च । तुदीं व्यथने, गः किच्च तुग्रं– शृङ्गम् । भुजंप् पालनाभ्यवहारयोः गः किच्च, भुग्रः–रश्मिसमूहः । णिदु कुत्सायाम्, किन्नलोपश्च, निद्रा–स्वापः । तमूच् काङ्क्षयाम्, दोऽन्तश्च, तन्द्रा–आलस्यम् । षद्लृं विशरणगत्यवसादनेषु, अस्य स्वरान्नोऽन्तो वृद्धिश्च; सान्द्रं–घनम् । गुदेः स्वरान्नोऽन्तश्च, गुन्द्रा–जलतृणविशेषः । राजे रञ्जेर्वा किच्चेच्चोपान्त्यस्य, रिञ्रः– नायकः । आदिग्रहणादन्येऽपि ।।३९६।।

ऋच्छि-चटि-वटि-कुटि-कठि-वठि-मठ्यडि-शी-कृ-शी-भृ-कदि-बदि-कन्दि-मन्दि-सुन्दि-मन्थि-मञ्जि-पञ्जि-पिञ्जि-कमि-समि-चमि-वमि-भ्रम्यमि-देवि-वासि-कास्यर्ति-जीवि-र्बबि-कु-शु-दोररः ।।३९७।।

एभ्यः अरः प्रत्ययो भवति । ऋच्छत् इन्द्रियप्रलयमूर्तिभावयोः, ऋच्छरः–त्वरावान् ऋच्छरा- वेश्या, कुलटा, त्वरा, अङ्गुलिश्च । चटण् भेदे चटरः– तस्करः । वट वेष्टने, वटरः–मधुकण्डरा । कुटत् कौटिल्ये, कोटरं–छिद्रम् । बाहुलकाद् गुणः । कठ कृच्छ्रजीवने, कठरः–दरिद्रः । वठ स्थौल्ये, वठरः–मूर्खः, बृहद्देहश्च । मठ मदनिवासयोश्च, मठरः–ऋषिः, अज्ञानी, गोत्रम्, अलसश्च । अड उद्यमे, अडरः–वृक्षः– शीकृङ् सेचने, शीकरः–जललवसेकः । शीभृङ् कत्थने, शीभरः– हस्तिहस्तमुक्तो जललवसेकः । कदिः सौत्रः, कदरः–प्लक्षविशेषः । बद स्थैर्ये, बदरी–फलवृक्षः । कदुङ् वैक्लव्ये, कन्दरः–गिरिगर्तः । मदुङ् स्तुत्यादौ, कन्दरः–शैलः । सुन्दिः सौत्रः शोभायाम्, सुन्दरः–मनोज्ञः । मन्थश् विलोडने, मन्थरः–मन्दः, खर्वश्च । मञ्जिपञ्जी सौत्रौ, मञ्जरी–आम्रादिशाखा । गौरादित्वाद् ङीः, पञ्जरः– शुकाद्यवरोधसद्म । पिजुण्–हिंसाबलदाननिकेतनेषु, पिञ्जरः–पिशङ्गः, कमूङ् कान्तौ, कमरः–मूर्खः,

Aho ! Shrutgyanam

कार्मुकं, कोमलः, चौरः, कान्तश्च । षम वैक्लव्ये, समरः—संग्रामः । चमू अदने, चमरः—आरण्यपशुः । टुवमू उद्गिरणे, वमरः—दुर्मेधाः । भ्रमुच् अनवस्थाने, भ्रमरः—षट्पदः । अम गतौ, अमरः—सुरः । देवृङ् देवने, देवरः—पत्यनुजः । वसं निवासे, णौ वासरः—दिवसः, कामः, अग्निः, प्रावृट् च । अन्ये वाशिच् शब्दे इत्यस्मादपि तालव्यान्तादिच्छन्ति, वाशरः—अग्निः, मेघः, दिवसश्च । कासृङ् शब्दकुत्सायाम्, कासरः—महिषः । ऋक् गतौ, अररः—कपाटः, बुधः, भ्रमरः, गृहं, हरणं, शलाका च । जीव प्राणधारणे, जीवरः—दीर्घायुः । बर्ब गतौ, बर्बरः—म्लेच्छजातिः, बर्बरी—कुञ्चिताः केशाः । कुंक् शब्दे, कबरः—वर्णः, कबरी—वेणिः । शुं गतौ, शबरः—म्लेच्छजातिः । शव गतौ इत्यस्येत्यन्ये । टुदुंद् उपतापे, दबरः— गुणः ।।३९७।।

अवेर्ध् च वा ।।३९८।।

अव रक्षणादौ, इत्यस्माद् अरः प्रत्ययो भवति—धकारश्चान्तादेशो वा भवति । अधरः—हीनः, उपरिभागस्य प्रतियोगी दन्तच्छदश्च । अवरः—परप्रतियोगी ।।३९८।।

मृद्युन्दि-पिठि-कुरि-कुहिभ्यः कित् ।।३९९।।

एभ्य अरः प्रत्ययः किद् भवति । मृदश् क्षोदे, मृदरः—व्याधिः, अतिकायः, क्षोदश्च । उन्दैप् क्लेदने, उदरं—जठरं, व्याधिश्च । पिठ हिंसासंक्लेशयोः, पिठरं—भाण्डम् । कुरत् शब्दे, कुररः—जलपक्षिजातिः । कुहणि विस्मापने, कुहरं—गम्भीरगर्तः ।।३९९।।

शाखेरिदेतौ चातः ।।४००।।

शाखृ व्याप्तौ, इत्यस्माद् अरः प्रत्ययो भवति—आकारस्य च इकार-एकारौ भवतः । शिखरम्—अग्रम्, शेखरः—आपीडः ।।४००।।

शपेः फ् च ।।४०१।।

शपीं आक्रोशे, इत्यस्माद् अरः प्रत्ययो भवति । फकारश्चान्तादेशो भवति । शफरः—क्षुद्रमत्स्यः ।।४०१।।

दमेर्णिद्वा दश्च डः ।।४०२।।

दमूच् उपशमे, इत्यस्माद् अरः प्रत्ययो भवति, स च णिद् वा दकारस्य च डकारो भवति । डामरः—भयानकः, डमरः स एव ।।४०२।।

जठर-क्रकर-मकर-शंकर-कर्पर-कूर्पर-तोमर-पामर-प्राग्र-सगर-नगर-तगरोर्दरा-दर-शृदर-दृदर-कृदर-कुकुन्दर-गोर्वराम्बर-मुखर-खर-डहर-कुञ्जराजगरादयः ।।४०३।।

एते किदरप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । जनेष्ठ च, जठरं—कोष्ठम् । क्रमेः क च, क्रकरः—गौरतित्तिरः । मङ्केर्नलोपश्च, मकरः—ग्राहः । शंपूर्वात् किरतेर्डिच्च, शङ्करः—रुद्रः । कृपे रुपान्त्यस्य उर्च वा, कर्परं—कपालम् । कूर्परं—कफोणी । ताम्यतेरत ओच्च, तोमरः—आयुधम् । पातेर्मोन्तश्च, पामरः—ग्रामीणः । प्रपूर्वादमतेः प्रामरः—ग्राम्यमन्दजातिः । प्रपूर्वाद्दत्तेर्मोऽन्तश्च प्राग्रः—नरपशुः । सहिनश्योर्ग च, सगरः—द्वितीयश्चक्रवर्ती । नगरं—पुरम् । तङ्गेर्नलोपश्च, तगरः—वृक्षविशेषः । ऊर्जः परात् दृणातेर्डित् जलुक् च, ऊर्जा—बलेन दृणाति बिभेति । ऊर्दरः—दुर्बलः । अदु बन्धने, नलुक् च, अदरं—वृक्षः, वृक्षः, संग्रामः, चञ्चुसमूहः, मातृवाहश्च । शृश् हिंसायाम् । दृश् विदारणे अनयोर्ह्रस्वत्वं दश्चान्तः, शृदरः—सर्पः । दृदरः— भयं विषं च । डुकृंग् करणे, दोऽन्तश्च कृदरः— वृक्षः— सर्वकर्मप्रवृत्तो दस्युजनः, कुशूलश्च । कुपूर्वात् स्कुदुङ् आप्रवणे, सलोपश्च, कुकुन्दरं—श्रोणीकूपकः । गोपूर्वाद् वृगो डिद् रश्चादिः, गोर्वरः—करीषः । अमेर्बोऽन्तश्च, अम्बरं—वस्त्रम्, आकाशं च । मुहेः ख च, मुखरः—वाचालः । खनेर्डिच्च, खरः—रासभः । दहेरादेर्डश्च, डहरं—हृत्कमलम् । कूज अव्यक्ते शब्दे, ह्रस्वः स्वरान्नोऽन्तश्च, कुञ्जरः—हस्ती । अजेरगश्चान्तः वीभावाभावश्च । अजगरः—शयुः । आदिग्रहणात् कोठराङ्गरशाङ्गरपाण्डरवानरादयो भवन्ति ।।४०३।।

मुदि-गूरिभ्यां टिद्गजौ चान्तौ ।।४०४।।

आभ्यां टिद् अरः प्रत्ययो भवति गकार-जकारौ वा यथासंख्यमन्तौ भवतः । मुदि हर्षे, मुद्गरः—प्रहरणविशेषः, मुद्गरी—स्त्री । गूरैचि गतौ, गूर्जरः—सौराष्ट्रादिः, गूर्जरी स्त्री ।।४०४।।

अग्यङ्गि-मदि- मन्दि-कडि- कसि- कासि-मृजि-कञ्जि-कलि-मलि-कचिभ्य आरः ।।४०५।।

एभ्यः आरः प्रत्ययो भवति । अग कुटिलायां गतौ, अगारं—वेश्म । अगु गतौ, अङ्गारः—निर्वातज्वालः, निर्वाणश्चोल्मुकावयवः, भूमिसुतश्च । मदैच् हर्षे, मदारः—पानशौण्डः, वराहः, हस्ती, अलसश्च । मदुङ् स्तुत्यादौ, मन्दारः—वृक्षविशेषः । कडत् मदे, कडारः—पिङ्गलः, विषमदशनश्च । कस गतौ, कसारः— हिंस्रः । कासृङ् शब्दकुत्सायाम्, कासारः—पल्वलम् । मृजौक् शुद्धौ, मार्जारः—बिडालः । कञ्जिः सौत्रः, कञ्जारः—कुशूलजातिः, यूपः, व्यञ्जनं च । कलि शब्दसंख्यानयोः, कलारः—विषमरूपः । मलि धारणे, मलारः—अलस । मलमिवारा तोदोऽस्येति वा मलारः । कचि बन्धने, कचारः—अपनेयः, तृणबुसपांशुविकारः ।।४०५।।

त्रः कादिः ।।४०६।।

तृ प्लवनतरणयोः, इत्यस्मात् ककारादिरारः प्रत्ययो

Aho ! Shrutgyanam

भवति । तर्कारः–वृक्षः ॥४०६॥

कृगो मादिश्च ॥४०७॥

करोतेर्मकारादिः ककारादिश्च आरः प्रत्ययो भवति । कर्मारः–लोहकारः । कर्कारः–वृक्षः ॥४०७॥

तुषि-कुठिभ्यां कित् ॥४०८॥

आभ्यां किद् आरः प्रत्ययो भवति । तुषंच् तुष्टौ, तुषारः–हिमम् । कुठिः सौत्रः, कुठारः–परशुः ॥४०८॥

कमेरत उच्च ॥४०९॥

कमूङ् कान्तौ इत्यस्माद् आरः प्रत्ययो भवत्यकारस्य चोकारो भवति । कुमारः–महासेनः, अभ्रष्टः, बालश्च ॥४०९॥

कनेः कोविद-कर्बुद-काञ्चनाश्च ॥४१०॥

कनै दीप्तौ इत्यस्माद् आरः प्रत्ययो भवति, अस्य च कोविद कर्बुद काञ्चन इत्यादेशा भवन्ति । कोविदारः, कर्बुदारः, काञ्चनारश्च वृक्षविशेषाः ॥४१०॥

द्वार-शृङ्गार-भृङ्गार-कह्लार-कान्तार-केदार-खारडादयः ॥४११॥

एते आरप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । उभत् पूरणे द्वादेशश्च, द्वारं–द्वाः । श्रयतेस्तालव्यादिः शृङ्गश्च, शृङ्गारः–रसविशेषः, विदग्धता च । भृगो भृङ्ग् च, भृङ्गारः–हस्तिमुखाकारगलन्तिका । कलेर्हश्च स्वरात्परः, कह्लारः–उत्पलविशेषः । कमेस्तोऽन्तो दीर्घश्च, कान्तारं–अरण्यम् । कदेः सौत्रस्यात एच, केदारः–वप्रः । खदेर्डिच्च, खारी–चतुर्द्रोणम् । खारडिति डकारो ङ्यर्थः । आदिग्रहणात् शिशुमारादयो भवन्ति ॥४११॥

मदि-मन्दि-चन्दि-पदि-खदि-सहि-वहि-कु-सृभ्य इरः ॥४१२॥

एभ्य इरः प्रत्ययो भवति । मदैच् हर्षे, मदिरा–सुरा । मदुङ् स्तुत्यादौ, मन्दिरं–वेश्म, नगरं च । चदु दीप्त्याह्लादनयोः, चन्दिरः–चन्द्रमाः, हस्ती च, चन्दिरं–चन्द्रिकावत्, जलं च । पदिच् गतौ, पदिरः–मार्गः । खद हिंसायाम्, खदिरः–वृक्षविशेषः । षहि मर्षणे, सहिरः–पर्वतः । वहीं प्रापणे, वहिरः–बलीवर्दः । कुंक् शब्दे, कविरः–अक्षिकोणः । सृं गतौ, लत्वे सलिलम्–जलम् ॥४१२॥

शव-शशेरिच्चातः ॥४१३॥

आभ्याम् इरः प्रत्ययो भवत्यकारस्य चेकारो भवति । शव गतौ तालव्यादिः, शिविरम्–सैन्यसंनिवेशः । शश प्लुतिगतौ, शिशिरं–शीतलम्, ऋतुश्च ॥४१३॥

श्रन्थेः शिथ् च ॥४१४॥

श्रथुङ् शैथिल्ये, इत्यस्माद् इरः प्रत्ययो भवत्यस्य च शिथ् इत्यादेशो भवति । शिथिरं–श्लथम् । लत्वे–शिथिलम् ॥४१४॥

अशेर्णित् ॥४१५॥

अश्नातेरश्नोतेर्वा णिद् इरः प्रत्ययो भवति । आशिरः–विष्णुः, आदित्यश्च । प्राशिरः–बह्वाशी ॥४१५॥

शुषीषि-बन्धि-रुधि-रुचि-मुचि-मुहि-मिहि-तिमि-मुदि-खिदि-च्छिदि-भिदि-स्थाभ्यः कित् ॥४१६॥

एभ्यः किदिरः प्रत्ययो भवति । शुषंच् शोषणे, शुषिरं–छिद्रम् । इषत् इच्छायाम्, इषरं–तृणम्, इषिरः–अग्निः, आहारः–क्षिप्रः, सेव्यश्च । बन्धंश् बन्धने, बधिरः–श्रुतिविकलः । रुधूंपी–आवरणे रुधिरं–द्वितीयो धातुः । रुचि अभिप्रीत्यां च, रुचिरं–दयितं, दीप्तिमच्च । मुच्लृंती मोक्षणे, मुचिरः–धर्मः, सूर्यः, मेघश्च । मुहौच् वैचित्ये, मुहिरः–कन्दर्पः, सूर्यश्च, मुहिरं–तमः । मिहं सेचने, मिहिरः–मेघः, सूर्यश्च, मिहिरं–तोयम् । तिमच् आर्द्रभावे, तिमिरं–तमः, तोयं, रोगश्च कश्चित् । मुदि हर्षे, मुदिरः–मेघः, सूर्यश्च । खिदंत् परिघाते, खिदिरः–त्रासः, तस्करश्च । छिदूंपी द्वैधीकरणे, छिदिरः–उन्दुरः, अग्निश्च, छिदिरं–शस्त्रम् । भिदूंपी विदारणे, भिदिरः–अशनिः, भेदश्च । ष्ठां गतिनिवृत्तौ, स्थिरः–अचलः ॥४१६॥

स्थविर-पिठिर-स्फिराजिरादयः ॥४१७॥

एते कित् प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते, तिष्ठतेर्वोऽन्तो ह्रस्वश्च । स्थविरः–वृद्धः । पचतेरत इत्वं ठश्च पिठिरं–साधनभाण्डम्, पठेर्वा रूपम् । स्फायतेर्डिच्च, स्फिरः–स्फारो, वृद्धिश्च । अजेर्वीभावाभावश्च, अजिरम्–अङ्गणम्, नगरं, देववेश्म च । आदिग्रहणादन्येऽपि ॥४१७॥

कृ-शृ-पृ-पूग्-मञ्जि-कुटि-कटि-पटि-कण्डि-शौण्डि-हिंसिभ्यः ईरः ॥४१८॥

एभ्य ईरः प्रत्ययो भवति । कॄत् विक्षेपे, करीरः–वनस्पतिविशेषः, वंशाद्यङ्कुरश्च । शॄश हिंसायाम्, शरीरं–वपुः । पॄश्–पालनपूरणयोः । पवीरं–बलं, लाङ्गलमुखं च । पूग्श् पवने, पवीरं–रङ्गस्थानं, फलं, पवित्रं–बीजावपनं च । मञ्जिः सौत्रः, मञ्जीरं–नूपुरः । कुटत् कौटिल्ये, कुटीरम्–आलयः, कर्कटकः, चन्द्राश्रयराशिश्च, कोटीरं–मुकुटः । बाहुलकाद् गुणः । कटे वर्षावरणयोः, कटीरं–जनपदः, जघनं, जलं च । पट गतौ, पटीरः–कन्दर्पः, पटीरं–कार्मकम्,

Aho ! Shrutgyanam

स्फिक् च । कडु मदे, कण्डीरं–हरितकम् । शौण्डृ गर्वे, शौण्डीरः–गर्वितः, सत्त्ववान्, तीक्ष्णश्च । हिसुप् हिंसायाम्, हिंसीरः–श्वापदः, हिंस्रश्च ॥४१८॥

घसि-वशि-पुटि-कुरि-कुलिकाभ्यः कित् ॥४१९॥

एभ्यः किद् ईरः प्रत्ययो भवति । घस्लृं अदने, क्षीरं–दुग्धं, मेघश्च । वशक् कान्तौ, उशीरं–वीरणीमूलम् । पुटत् संश्लेषणे, पुटीरः–कूर्मः । कुरत् शब्दे, कुरीरं–मैथुनं, वेश्म च, कुरीरः–मालाविशेषः, कम्बलश्च । कुल बन्धुसंस्त्यानयोः, कुलीरः–कर्कटः । कैं शब्दे, कीरः–शुकः, काश्मीरकश्च ॥४१९॥

कशेर्मोऽन्तश्च ॥४२०॥

कश शब्दे इत्यस्मात्तालव्यान्ताद् ईरः प्रत्ययो मश्चान्तो भवति । कश्मीरा–जनपदः ॥४२०॥

वनि-वपिभ्यां णित् ॥४२१॥

आभ्यां णिद् ईरः प्रत्ययो भवति । वन–भक्तौ, वानीरः–वेतसः । डुवपीं बीजसंताने, वापीरः–मेघः, अमोघनिष्पत्तिक्षेत्रं च ॥४२१॥

जम्बीराभीर- गभीर- गम्भीर- कुम्भीर- भडीर-भण्डीर-डिण्डीर-किर्मीरादयः ॥४२२॥

एते ईरप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । जनेर्बोऽन्तश्च, जम्बीरः–वृक्षविशेषः । आप्नोतेर्भश्च आभीरः– शूद्रजातिः । गमेर्भः स्वरान्नस्तु वा, गभीरः– अगाधः, अचपलश्च । गम्भीरः स एव । स्कुम्भेः सौत्रात् सलोपश्च, कुम्भीरः– जलचरः । भडुङ् परिभाषणे, अस्य नलुक् च वा, भडीरः भण्डीरश्च–योद्धृवचने । डीङो डित् द्वित्वं पूर्वस्य नोऽन्तश्च, डिण्डीरः–फेनः । किरतेर्मोऽन्तश्च, किर्मीरः– कर्बुरः । आदिग्रहणात् तूणीर-नासीर-मन्दीर-करवीरादयो भवन्ति ॥४२२॥

वाश्यसि-वासि-मसि- मथ्युन्दि- मन्दि- चति- चङ्क्यङ्कि-कर्बि-चकि-बन्धिभ्य उरः ॥४२३॥

एभ्य उरः प्रत्ययो भवति । वाशिच् शब्दे वाशूरः–शकुनिः, गर्दभश्च, वाशुरा–रात्रिः । असूच् क्षेपणे, असुरः–दानवः । वासण् उपसेवायाम्, वासुरा–रात्रिः । मसैच् परिमाणे, मसुरा–पण्यस्त्री; मसुरं–चर्मासनम्, धान्यविशेषश्च । मथे विलोडने, मथुरा–नगरी । उन्दैप् क्लेदने उन्दरः–मूषिकः । मदुङ् स्तुत्यादौ, मन्दुरा– वाजिशाला । चतेग् याचने, चतुरः– विदग्धः । चङ्किः सौत्रः, चङ्कति चेष्टते, चङ्कुरः– रथः, अनवस्थितश्च । अकुङ् लक्षणे अङ्कुरः–प्ररोहः, तरुप्रतानभेदश्च । घञ्युपसर्गस्य बहुलमिति बहुलवचनाद् दीर्घत्वे अङ्कूरः । कर्ब गतौ, कर्बुरः–शबलः । चकि तृप्तिप्रतिघातयोः, चकुरः– दशनः । बन्धश् बन्धने, बन्धुरः–मनोज्ञः, नम्रश्च ॥४२३॥

मङ्केर्नलुक् वोच्चास्य ॥४२४॥

मकुङ् मण्डन इत्यस्मादुरः प्रत्ययो भवति, नकारस्य लुक् अकारस्य चोकारो वा भवति । मुकुरः–आदर्शः, मुकुलं च, मकुरः–आदर्शः, कल्कः, बालपुष्पं च ॥५२४॥

विधेः कित् ॥४२५॥

विधत् विधाने, इत्यस्मात् किद् उरः प्रत्ययो भवति । विधूरं–वैशसम् ॥४२५॥

श्वशुर-कुकुन्दुर- दर्दुर-निचुर-प्रचुर-चिकुर-कुकुर-कुक्कुर- कुर्कुर- शर्कुर- नूपुर- निष्ठुर- विथुर- मद्गुर-वागुरादयः ॥४२६॥

एते किद् उरप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । आशुपूर्वात् शुपूर्वाद्वा अश्नोतेरश्नातेर्वा आकारलोपश्च । श्वशुरः- जम्पत्योः पिता । कुपूर्वात् स्कुदुङ् आप्रवणे, इत्यस्मात् सलुक् च, कुकुन्दरौ– नितम्बकूपौ । दृणातेर्दोऽन्तश्च, दर्दुरः– मण्डूकः, मेघश्च । निपूर्वात् प्रपूर्वात् चिनोतेः चरतेर्वा डिच्च, निचुरः–तरुविशेषः । लत्वे निचुलः, प्रचुरं–प्रायम् । चकेरिच्चास्य चिकुर युवतीनामीषन्निमीलितमक्षि, चिकुराः–केशाः । कुकेः कोन्तो वा, कुकुरः–यादवः, कुक्कुरः–श्वा. किरः कुर् कोऽन्तश्च कुर्कुरः–श्वा । शृश् हिंसायाम्, गुणः कोऽन्तश्च । शर्कुरस्तरुणः । णूत् स्तवने, पोऽन्तश्च । नूपुरः– तुलाकोटिः । निपूर्वात् तिष्ठतेः निष्ठुरः– कर्कशः, निष्ठुरं–काहलम् । व्यथेर्विथ् च, व्यथन्तेऽस्माज्जनाः इत्यपादानेऽपि विथुरः–राक्षसः । मदिवात्योर्गोऽन्तश्च, मद्गुरः–मत्स्यविशेषः वागुरा–मृगानायः । आदिग्रहणान्मन्यतेर्धश्च, मधुरः–रसविशेष इत्यादि ॥४२६॥

मीमसि-पशि- खटि-खडि- खर्जि-कर्जि-सर्जि-कृपि-वल्लि-मण्डिभ्य ऊरः ॥४२७॥

एभ्य ऊरः प्रत्ययो भवति । मींङ्च् हिंसायाम्, मयूरः–शिखी । मह्यां रौति मयूर इति पृषोदरादिषु संज्ञाशब्दानामनेकधा व्युत्पत्तिं लक्षयति । मसैच् परिमाणे, मसूरः–अन्नरधान्यजातिः, चर्मासनं च । पशिः सौत्रः, पश्यते गम्यते इति पशूरः–ग्रामः । खट काङ्क्षे, खटूरः–मणिविशेषः । खडण् भेदे, खडूरः–खुरलीस्थानम् । खर्ज मार्जने च, खर्जूरः–वृक्षविशेषः । कर्ज व्यथने, कर्जूरः–स एव, मलिनश्च । सर्ज अर्जने, सर्जूरः–अहः । कृपौङ् सामर्थ्ये, कर्पूरः–गन्धद्रव्यम् । वल्लि संवरणे, वल्लूरः–शुष्कमांसम् । मडु भूषायाम्, मण्डूरः–धातुविशेषः ॥४२७॥

Aho ! Shrutgyanam

महि-कणि-चण्यणि-पल्यलि-तलि-मलि-शलिभ्यो णित् ॥४२८॥

एभ्यो णिद् ऊरः प्रत्ययो भवति । मह पूजायाम्, माहूरः–शैलः । कण गतौ काणूरः–नागः । चण हिंसादानयोश्च, चाणूरः–मल्लो विष्णुहतः । अण शब्दे, आणूरः–ग्रामः । पल गतौ, पालूरं नाम नगरमान्ध्रराज्ये । अली भूषणादौ, आलूरः–विटः । तलण् प्रतिष्ठायाम्, तालूरः–जलावर्तः । मलि धारणे, मालूरः–दानवः, बिल्वश्च । शल गतौ, शालूरः–दुर्दुरः ।।४२८।।

स्था-विडेः कित् ।।४२९।।

आभ्यां किद् ऊरः प्रत्ययो भवति । ष्ठां गतिनिवृत्तौ । स्थूरः–बठरः, उच्चश्च, स्थूरा–जङ्घाप्रदेशः । विड आक्रोशे, विडूरः–बालवाये ग्रामः ।।४२९।।

सिन्दूर-कर्चूर-पत्तूर-धुत्तूरादयः ।।४३०।।

एते ऊरप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । स्यन्देः सिन्दू च, सिन्दूरं–चीनपिष्टम् । करोतेश्चोऽन्तश्च, । कर्चूरः– औषधविशेषः । पतेस्तोऽन्तश्च, पत्तूरं–गन्धदव्यम् । धुवो द्विरुक्तस्तोऽन्तो ह्रस्वश्च, धुत्तूरः–उन्मत्तकः, दधातेर्धत्तूर इत्यन्ये । आदिग्रहणात् कस्तूरहूरादयो भवन्ति ।।४३०।।

कु-गु-पति-कथि-कुथि-कठि-कुठि-कुटि-गडि-गुडि-मुदि-मूलि-दंशिभ्यः केरः ।।४३१॥

एभ्यः किद् एरः प्रत्ययो भवति । कुंङ् शब्दे, कुबेरः–धनदः । गुंत् पुरीषोत्सर्गे, गुबेरं–युद्धम् । पत्लृ गतौ, पतेरः– पक्षी, पवनश्च । कथण् वाक्यप्रबन्धे, कथेरः-कथकः, कुहकः, शकुन्तश्च । कुथच् पूतिभावे, कुथेरः-शिडाकीसंभारः । कठ कृच्छ्रजीवने, कठेरः– दरिद्रः । कुठिः सौत्रः, कुठेरः–निःसृतसारः, अर्जकश्च । कुटत् कौटिल्ये, कुटेरः–शठः । गड सेचने, गडेरः–मेघः प्रस्रवणशीलश्च । गुडत् रक्षायाम्, गुडेरः–राजा, पण्यं च बालभक्ष्यम् । मुदि हर्षे, मुदेरः–मूर्खः । मूल प्रतिष्ठायाम्, मूलेरः–वनस्पतिः मूलेरं–पण्यम् । दंशं दशने, दशेरः–सर्पः, सारमेयः, जनपदश्च ।।४३१।।

शतेरादयः ।।४३२।।

शतेर इत्यादयः शब्दाः केरप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । शद्लृ शातने तश्च, शतेरः–वायुः, तुषारश्च । आदिग्रहणाद् गुधेर-शृङ्गबेर-नालिकेरादयो भवन्ति ।।४३२।।

कठ-चकि-सहिभ्य ओरः ।।४३३।।

एभ्य ओरः प्रत्ययो भवति । कठ–कृच्छ्रजीवने, कठोरः-अमृदुः, चिरंतनश्च । चकि तृप्तौ च, चकोरः– पक्षिविशेषः पर्वतविशेषश्च । षहि मर्षणे, सहोरः–विष्णुः, पर्वतश्च ।।४३३।।

कोर-चोर-मोर-किशोर-घोर-होरा-दोरादयः ॥४३४॥

कोर इत्यादयः शब्दा ओरप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । कायतेश्चरतेर्म्रियतेश्च डिच्च, कोरः–बालपुष्पम् । चोरः–तस्करः । मोरः–मयूरः । कृशेरिच्चोपान्त्यस्य, किशोरः–तरुणः, बालाश्वश्च । हन्तेर्डित् घश्च घोरं–कष्टम् । हृंग् हरणे, होरा–निमित्तवादिनां चक्ररेखा । डुदांग्क् दाने, दोंच् छेदने वा, दोरः–कटिसूत्रं–तन्तुगुणश्च । आदिग्रहणादन्येऽपि ।।४३४।।

कि-शॄ-वृभ्यः करः ।।४३५॥

एभ्यः करः प्रत्ययो भवति । किः सौत्रः, केकरः–वक्रदृष्टिः । शॄश् हिंसायाम्, शर्करा–मत्स्यण्डिकादिः, कर्कशः, क्षुद्रपाषाणावयवश्च । वृग्ट् वरणे, वर्करः–छागशिशुः ।।४३५।।

सू-पुषिभ्यां कित् ॥४३६॥

आभ्यां कित् करः प्रत्ययो भवति । षूत् प्रेरणे, सूकरः–वराहः । पुष् पुष्टौ, पुष्करं, पद्मं, तूर्यमुखं, हस्तिहस्ताग्रम्, आकाशं, मुरजः–तीर्थनाम च ।।४३६।।

अनि-काभ्यां तरः ।।४३७।।

आभ्यां कित् तरः प्रत्ययो भवति । अनक् प्राणने, अन्तरं–बहिर्योगोपसंव्यानयोः, छिद्रमध्यविरहविशेषेषु च । कैं शब्दे, कातरः–भीरुः ।।४२७।।

इण्-पूभ्यां कित् ।।४३८।।

आभ्यां कित् तरः प्रत्ययो भवति । इण्क् गतौ, इतरः– निर्दिष्टप्रतियोगी । पूग्श् पवने, पूतरः–जलतन्तुः ।।४३८।।

मी-ज्यजि-मा-मद्य-शौ-वसि-किभ्यः सरः ।।४३९।।

एभ्यः सरः प्रत्ययो भवति । मीङ्च् हिंसायाम्, मेसरः–वर्णविशेषः । जि अभिभवे, जेसरः–शूरः । अज क्षेपणे च, वेसरः–अश्वतरः । वेसृ गतौ, इत्यस्य वा जठरेत्यादिनिपातनादरे रूपम् । मांक् माने, मासरः–आयामः । मदैच् हर्षे, मत्सरः–क्रोधविशेषः । अशौटि व्याप्तौ, अक्षरं–वर्णः, मोक्षपदम्, आकाशं च । अक्षेर्वा अरे रूपम् । वसं निवासे, वत्सरः, संवत्सरः, परिवत्सरः, अनुवत्सरः, विवत्सरः, उद्वत्सरः–वर्षाभिधानानि । इडामानेन वसन्त्यत्र कालावयवा इति इडमंवत्सरः, इडया मानेन वसन्त्यत्रेति इडावत्सरः–वर्षविशेषाभिधाने परिवत्सरादीन्यपि वर्षविशेषाभिधानानीत्येके । कि इत्यदादौ स्मरन्ति, केसरः–सिंहसटः, पुष्पावयवः, बकुलश्च । बाहुलकान्न षत्वम् ।।४३९।।

Aho ! Shrutgyanam

कृ-धू-तन्यृषिभ्यः कित् ॥४४०॥

एभ्यः कित् सरः प्रत्ययो भवति । डुकृंग् करणे, कृसरः कृसरा वा विलेपिकाविशेषः वर्णविशेषश्च । धूत् विधूनने धूसरः–भिन्नवर्णः–वायुः–धान्यविशेषश्च । तनूयी विस्तारे, तसरः–कौशेयसूत्रम् । ऋषैत् गतौ, ऋक्षरः–कण्टकः, ऋत्विक् च, ऋक्षरा–तोयधारा ॥४४०॥

कृ-गॄ-शॄ-दॄ-वृग्-चति-छटि-कटि-निषदिभ्यो वरट् ॥४४१॥

एभ्यष्टिद्वरः प्रत्ययो भवति । कॄत् विक्षेपे, कर्बरः–व्याघ्रः, विष्किरः, अञ्जलिश्च, कर्बरी–भूमिः, शिवा च । गॄत् निगरणे, गर्वरः–अहंकारः, महिषश्च, गर्वरी–महिषी, संध्या च । शॄश् हिंसायाम्, शर्वरः–सायाह्नः–रुद्रः, हिंस्रश्च, शर्वरं–तमः, अन्नं च, शर्वरी–रात्रिः । दॄश् विदारणे, दर्वरं–वज्रम्, दर्वरी–सेवा–वृग्ट् वरणे, वर्वरः–कामः, चन्दनं, देशविशेषः–लुब्धकश्च, वर्वरी–नदी, भार्या च । चतेग् याचने, चत्वरं–चतुष्पथम् अरण्यं च । चत्वरी-रथ्या, देवता, वेदिश्च । छट काङ्क्षे, छट्वरं–रससंकीर्णशाकपाकः । कटे वर्षावरणयोः, कट्वरः–व्यालाश्वः, कट्वरी–दधिविकारः । षद्लृं विशरणादौ, निपूर्वः, निषद्वरः–कर्दमः–वह्निः, कर्मकरः, कन्दर्पः, इन्द्रश्च । निषद्वरम्–आसनम्, निषद्वरी–प्रपा, रात्रिः, प्रमदा इन्द्राणी च ॥४४१॥

अश्नोतेरीच्चादेः ॥४४२॥

अशौटि व्याप्तौ, इत्यस्माद्वरट् प्रत्ययो भवति ईकारश्चादेर्भवति । ईश्वरः–विभुः । ईश्वरी–स्त्री ॥४४२॥

नी-मी-कुङ्-चेर्दीर्घश्च ॥४४३॥

एभ्यो वरट् प्रत्ययो दीर्घश्चैषां भवति । णींग् प्रापणे, नीवरः–पुरुषकारः । मींग्श् हिंसायाम्, मीवरः–हिंस्रः–समुद्रश्च । कुंङ् शब्दे, कूवरः–रथावयवः । तुंक् वृत्त्यादिषु, तूवरः–मन्दश्मश्रुः, अजननीकश्च । चिग्ट् चयने, चीवरं–मुनिजनवासः, निःसारकन्था च ॥४४३॥

तीवर-धीवर-पीवर-छित्वर-छत्वर-गह्वरोपह्वर-संयद्वरोदुम्बरादयः ॥४४४॥

एते वरट् प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । तिम्यतेस्ती च तीवतेर्वा, तीवरं–जलं, व्यञ्जनं च । ध्यायतेर्धी च । धीवरः, कैवर्तः । प्यायः प्यैङो वा पी च, पीवतेर्वा किदरः, पीवरः–मांसलः । छिनत्तेस्तः–किच्च, छित्वरः–शठः, जर्जरः, पिटकश्च छादेर्णिलुकि ह्रस्वश्च, छत्वरः–निर्भर्त्सकः, निकुञ्जश्च । छत्वरं–कुड्यहीनं गृहम्, शयनप्रच्छदः, छदिश्च । गुहेरच्चोतः गह्वरं–गहनं, महाबिलं, भयानकं, प्रत्यन्तदेशश्च । उपपूर्वात् ह्वो वादेर्लुक् च, उपह्वरं–संधिः, समीपं, रहः–स्थानं च । सम्पूर्वाद्यमेर्दश्च, संयद्वरः–रणः, संयमी, नृपश्च । उन्देः किदुम् चान्तः, उदुम्बरः–वृक्षविशेषः । आदिग्रहणाद् उम्बरशम्बरादयो भवन्ति ॥४४४॥

कडेरेवराङ्गरौ ॥४४४॥

कडत् मदे, इत्यस्माद् एवर् अङ्गर इति प्रत्ययौ भवतः । कडेवरं–मृतशरीरम् । लत्वे कलेवरम् । कडङ्गरः–वनस्पतिः ॥४४५॥

त्रट् ॥४४६॥

सर्वधातुभ्यस्त्रट् प्रत्ययो भवति । छादयतीति छत्रम् छत्री वा घर्मवारणम् । पातीति पात्रम् ऊर्जितगुणाधारः साध्वादिः । पात्री–भाजनम् । स्नायतेः–स्नात्रं–स्नानम् । राजते इति–राष्ट्रं–देशः । शिष्यतेऽनेन–शास्त्रं–ग्रन्थः । असूच् क्षेपणे, अस्त्रं–धनुः ॥४४६॥

जि-भृ-सृ-भ्रस्जि-गमि-नमि-नश्यशि-हनि-विषेर्वृद्धिश्च ॥४४७॥

एभ्यस्त्रट् प्रत्ययो भवति वृद्धिश्चैषां भवति । जिं अभिभवे, जैत्रः–जयनशीलः, जैत्रं-द्यूतम् । डुभृंग्क् पोषणे च, भार्त्रं–पोषः, यश्च भृतिं गृहीत्वा वहति । सृं गतौ, सार्त्रः–आलयः । भ्रस्जींत् पाके, भाष्ट्रम्–अम्बरीषम् । गम्लृं गतौ, गान्त्रं–मनः, शरीरं, लोकश्च । णमं प्रह्वत्वे, नान्त्रं–शिरः, शाखा, वैचित्र्यं च । नशौच् अदर्शने नशो धुटीति नोन्तः, नांष्ट्राः–यातुधानाः । अश्नोतेरश्नातेर्वा आष्ट्रम्–आकाशः, रश्मिश्च । हनंक् हिंसागत्योः, हान्त्रं–रक्षः, युद्धं, वधश्च । विष्लृंकी व्याप्तौ, वैष्ट्रः–विष्णुः, वायुश्च । वैष्ट्रं–यकृत्, त्रिदिवं, वेश्म च ॥४४७॥

दिवेर्द्यौ च ॥४४८॥

दीव्यतेस्त्रट् प्रत्ययो भवति द्यौ चास्यादेशो भवति । द्यौत्रं–त्रिदिवं, ज्योतिः, विमानं, प्रमाणं, प्रतोदश्च ॥४४८॥

सू-मू-खन्युषिभ्यः कित् ॥४४९॥

एभ्यः कित् त्रट् प्रत्ययो भवति । षूत् प्रेरणे, सूत्रं–तन्तुः, शास्त्रं च । मूङ् बन्धने, मूत्रं–प्रस्रावः । खनूग् अवदारणे, खात्रं–कूदालः, तडाकं, ग्रामाधानभृत्, चौरकृतं च छिद्रम् । उषू दाहे, उष्ट्रः–क्रमेलकः ॥४४९॥

स्त्री ॥४५०॥

स्यतेः सूतेः स्त्यायतेस्तृणातेर्वा त्रट् स्यात् डिच्च । स्त्री–योषित् ॥४५०॥

Aho ! Shrutgyanam

हु-या-मा-श्रु-वसि-भसि-गु-वी-पचि-वचि-धृ-यम्यमि-मनि-तनि-सदि-छादि-क्षि-क्षदि-लुपि-पति-धूभ्यस्त्रः ॥४५१॥

एभ्यस्त्रः प्रत्ययो भवति । हुंक् दानादनयोः, होत्रं–हवनं, होत्रा–ऋचः । यांक् प्रापणे, यात्रा–प्रस्थानं, यापनम्, उत्सवश्च । मांक् माने, मात्रा–प्रमाणं, कालविशेषः, स्तोकः, गणना च । श्रुंट् श्रवणे, श्रोत्रं–कर्णः । वसिक् आच्छादने, वस्त्रं–वासः । भसि जुहोत्यादौ स्मरन्ति, भस्त्रा–चर्ममयम्–आवपनम्, उदर च । गुंङ् शब्दे, गोत्रः–पर्वतः, गोत्रा–पृथ्वी, गोत्रम्–अन्वयः । वींक् प्रजननादौ, वेत्रं–वीरुद्विशेषः । डुपचींष् पाके, पक्त्रं–पिठरं, गार्हपत्यं च । वचंक् भाषणे, वक्त्रम्–आस्यम्, छन्दोजातिश्च । धृङत् स्थाने, धर्त्रः–धर्मः, वृक्षः, रविश्च । धर्त्रं–नभः, गृहसूत्रं च, धर्त्रा–द्यौः । यमूं उपरमे, यंत्रं–शरीरसंधानम्–अरघट्टादि च । अम गतौ, अन्त्रं–पुरीतत् । मनिच् ज्ञाने, मन्त्रः–छन्दः । तनूयी विस्तारे, तन्त्रं–प्रसारितास्तन्तवः, शास्त्रं–समूहः, कुटुम्बं च । षद्लृं विशरणगत्यवसादनेषु, सत्रं–यज्ञः–सदः, दानं, छद्म, यागविशेषश्च । छदण्–संवरणे, छादयतीति–छात्रः–शिक्षकः । क्षित् निवासगत्योः, क्षेत्रं–कर्षणभूमिः, भार्या, शरीरम् आकाशं च । क्षद संवरणे सौत्रः, क्षत्रं–राजबीजम् । लृप्लृंती छेदने, लोप्त्रम्–अपहृतं–द्रव्यम् । पत्लृ गतौ, पत्रं–पर्णं, यानं च । धूग्श् कम्पने, धोत्रं–रज्जुः ॥४५१॥

श्वितेर्वश्च मो वा ॥४५२॥

श्विताङ् वर्णे, इत्यस्मात् त्रः प्रत्ययो भवति, वकारस्य च मकारो वा भवति । श्मेत्रं, श्वेत्रं च–रोगौ ॥४५२॥

गमेरा च ॥४५३॥

गम्लृं गतौ, इत्यस्मात् त्रः प्रत्ययो भवति आकारश्चान्तादेशो भवति । गात्रं–शरीरम् । गात्रा–खट्वावयवः ॥४५३॥

चि-मि-दि-शंसिभ्यः कित् ॥४५४॥

एभ्यः कित् त्रः प्रत्ययो भवति । चिंग्ट् चयने, चित्रम्–आश्चर्यम्, आलेख्यं, वर्णश्च । ञिमिदाच् स्नेहने, मित्रं–सुहृत्, अमित्रः–शत्रुः, मित्रः–सूर्यः । शंसू स्तुतौ च, शस्त्रं–स्तोत्रम्, आयुधं च ॥४५४॥

पुत्रादयः ॥४५५॥

पुत्र इत्यादयः शब्दाः त्रप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । पुनाति पवते च पितृपूतिमिति पुत्रः–सुतः, यदाहुः–पूतीति नरकस्याख्या दुःखं च नरकं विदुः । पुन्नाम्नो नरकात् त्रायत इति व्युत्पत्तिस्तु संज्ञाशब्दानामनेकधा व्याख्यानं लक्षयति । आदिग्रहणादन्येऽपि ॥४५५॥

वृग्-नक्षि-पचि-वच्यमि-नमि-वमि-वपि-वधि-यजि पति-कडिभ्योऽत्रः ॥४५६॥

एभ्यः अत्रः प्रत्ययो भवति । वृग्ट् वरणे, वरत्रा–चर्मरज्जुः । णक्ष् गतौ, नक्षत्रम्–अश्विन्यादि । डुपचींष् पाके पचत्रं–रन्धनस्थाली । वचंक् भाषणे, वचत्रं–वचनम् । अम गतौ, अमत्रं–भाजनम् । णमं प्रह्वत्वे, नमत्रं–कर्मारोपकरणम् । टुवमू उद्गिरणे, वमत्रं–प्रक्षेपः । डुवपीं बीजसंताने, वपत्रं–क्षेत्रम् । बधि बन्धने, बधत्रम्–आयुधं, वस्त्रं, विषं, शूरश्च । यजीं देवपूजादौ, यजत्रः–यज्वा, यजत्रम्–अग्निहोत्रम् । पत्लृ गतौ, पतत्रं–बर्हं, वाहनम्, व्योम च । कडत् मदे, कडत्रं–दाराः । लत्वे कलत्रं–दाराः, जघनं च ॥४५६॥

सोर्विदः कित् ॥४५७॥

सुपूर्वाद् विदः किद् अत्रः प्रत्ययो भवति । सुष्ठु वेत्ति विन्दति विद्यते वा सुविदत्रं–कुटुम्बं, धनं, मङ्गलं च ॥४५७॥

कृतेः कृन्त् च ॥४५८॥

कृतैच् छेदने, इत्यस्माद् अत्रः प्रत्ययो भवति । अस्य च कृन्तादेशो भवति । कृन्तत्रः–मशकः । कृन्तत्रं–छेदनं, लाङ्गलाग्रं च ॥४५८॥

बन्धि-वहि-कट्यश्यादिभ्य इत्रः ॥४५९॥

एभ्य इत्रः प्रत्ययो भवति । बन्धश् बन्धने, बान्धत्रं–मन्थः । वहीं प्रापणे, वहित्रं–वाहनं वहनं च । कटे वर्षावरणयोः, कटित्रं–लेख्यचर्म । अशौटि व्याप्तौ, अशश् भोजने वा । अशित्रं–रश्मिः, हविः, अग्निः, अन्नपानं च । आदिग्रहणाद् लुनातेः लवित्रम्–कर्मद्रव्यम्, पुनातेः–पवित्रं–मङ्गल्यम् । भटतेः भटित्रं–शूले, पक्वमांसम् । कटतेः कडित्रं–कटित्रमेव । अमतेः अमित्रः–रिपुः इत्यादि ॥४५९॥

भू-गृ-वद-चरिभ्यो णित् ॥४६०॥

एभ्यो णिद् इत्रः प्रत्ययो भवति । भू सत्तायाम्, भावित्रं–त्रैलोक्यं, निधानं, भद्रंच । गॄत् निगरणे, गारित्रं–नभः, अन्नपानम्, आश्चर्यम् च । वद व्यक्तायां वाचि, वादित्रम्–आतोद्यम् । चर भक्षणे । चारित्रं–वृत्तं, स्थित्यभेदश्च ॥४६०॥

तनि-तॄ-ला-पात्रादिभ्य उत्रः ॥४६१॥

एभ्य उत्रः प्रत्ययो भवति । तनूयी विस्तारे, तनुत्रं–कवचम् । तॄ प्लवनतरणयोः, तरुत्रं–प्लवः, घासहारी च ।

Aho ! Shrutgyanam

लांक् आदाने, लोत्रम्-अपहृतद्रव्यम् । पां पाने, पोत्र-हलसूकरयोर्मुखम् । त्रैङ् पालने, त्रोत्रम्-अभयक्रिया । आदिग्रहणाद् वृणोतेः वरुत्रम्-अभिप्रेतमित्यादयः ॥४६१॥

शा-मा-श्या-शक्यम्ब्यमिभ्यो लः ॥४६२॥

एभ्यो लः प्रत्ययो भवति । शोंच् तक्षणे, शाला-सभा । मांक् माने, माला-स्रक् । श्यैंङ् गतौ, श्यालः-पत्नीभ्राता । शक्लृंट् शक्तौ, शक्लः-मनोज्ञदर्शनः, मधुरवाक्, शक्तश्च । अम्बुङ् शब्दे, अम गतौ अम्ब्लः, अम्लश्च-रसः ॥४६२॥

शुक-शी-मूभ्यः कित् ॥४६३॥

एभ्यः किद् लः प्रत्ययो भवति । शुक गतौ, शुक्लः-सितो वर्णः । शीङ्क् स्वप्ने, शील-स्वभावः, व्रतं, धर्मः, समाधिश्च । मूङ् बन्धने, मूलम्-वृक्षपादावयवः, आदिः, हेतुश्च ॥४६३॥

भिल्लाच्छभल्ल-सौविदल्लादयः ॥४६४॥

भिल्लादयः शब्दाः किद् लप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । भिदेर्लश्च भिल्लः-अन्त्यजातिः । अच्छपूर्वाद् भलेः, अच्छभल्लः-ऋक्षः । सुपूर्वाद्विदेरलोऽन्तः सोश्च वृद्धिः । सौविदल्लः-कञ्चुकी । आदिग्रहणादल्लपल्लीरल्लादयोऽपि भवन्ति ॥४६४॥

मृदि-कन्दि-कुण्डि-मण्डि-मङ्गि-पटि-पाटि-शकि-केवृ-देवृ-कमि-यमि-शलि-कलि-पलि-गु-ध्वञ्चि-चञ्चि-चपि-वहि-दिहि-कुहि-तृ-सृ-पिशि-तुसि-कु-श्यनि-द्रमेरलः ॥४६५॥

एभ्यः अलः प्रत्ययो भवति । मृदश् क्षोदे, मर्दलः-मुरजः । कदु रोदनाह्वानयोः, कन्दलः-प्ररोहः । कुडुङ् दाहे, कुण्डलं-कर्णाभरणम् । मडु भूषायाम्, मण्डलं-देशः, परिवारश्च । मगु गतौ, मङ्गलं-शुभम् । पट गतौ, पटलं-छदिः, समूहः, आवपनं, नेत्ररोगश्च । ण्यन्तात् पाटलः-वर्णः । शक्लृंट् शक्तौ, शकलं-भित्तम् असारं च । केवृङ् सेवने, केवलं-परिपूर्णज्ञानम्, असहायं च । देवृङ् देवने, देवलः-ऋषिः, देवत्रातः, क्रीडनश्च । कमूङ्-कान्तौ, कमलं-पद्मम् । णिङि, कामलः-नेत्ररोगः । यमू उपरमे, यमलं-युग्मम् । शल गतौ, शललं-शेधाङ्गरुहशङ्कुः । कलि शब्दसंख्यानयोः, कललं-गर्भप्रथमावस्था । पल गतौ, पललम्-भृष्टतिलातसीचूर्णम् । गुंङ् शब्दे, गवलः-महिषः । धूग्श् कम्पने, धवलः-श्वेतः । अञ्चू गतौ च, अञ्चलः-वस्त्रान्तः । चञ्चू गतौ, चञ्चलः-अस्थिरः । चप सान्त्वने, चपलः स एव । वहीं प्रापणे, वहलं-सान्द्रम् । दिहींक् लेपे, देहली-द्वाराधः पट्टः, कुहणि विस्मापने, कोहलः-भरतपुत्रः बाहुलकाद् गुणः । तॄ प्लवनतरणयोः, तरलः-अधीरः, हारमध्यमणिश्च । सृं गतौ, सरलः-अकुटिलः, वृक्षविशेषश्च । पिशत् अवयवे, पेशलः- मनोज्ञः । तुस शब्दे, तोसलाः-जनपदः । कुशव् श्लेषे, कोशला-जनपदः । अनक् प्राणने, अनलः-अग्निः । द्रम गतौ, द्रमलं-जलम् ॥४६५॥

नहि-लङ्गेर्दीर्घश्च ॥४६६॥

आभ्याम् अलः प्रत्ययो भवत्यनयोश्च दीर्घो भवति । णहींच् बन्धने, नाहलः-म्लेच्छः । लगु गतौ, लाङ्गलं-हलम् ॥४६६॥

ऋ-जनेर्गोऽन्तश्च ॥४६७॥

आभ्याम् अलः प्रत्ययो गकारश्चान्तो भवति । ऋंक् गतौ, अर्गला-परिघः । जनैचि प्रादुर्भावे, जङ्गलं-निर्जलो देशः ॥४६७॥

तृपि-वपि-कुपि-कुशि-कुटि-वृषि-मुसिभ्यः कित् ॥४६८॥

एभ्यः किद् अलः प्रत्ययो भवति । तृपौच् प्रीतौ, तृपला-लता, तृपलं-शुष्कपर्णम्, शुष्कतृणं च । डुवपीं बीजसंताने, उपलः-पाषाणः । कुपच् कोपे, कुपलः-प्रवालः । कुशच् श्लेषणे, कुशलः-मेधावी । कुशलम्-आरोग्यम् । कुटत् कौटिल्ये, कुटलः-ऋषिः । वृषू सेचने, वृषलः-दासजातिः । मुसच् खण्डने, मुसलम्-अवहननम् ॥४६८॥

कोर्वा ॥४६९॥

कुंङ् शब्दे इत्यस्माद् अलः स च प्रत्ययः किद्वा भवति । कुवलं-बदरम्, कुवली-क्षुद्रबदरी, कवलः-ग्रासः ॥४६९॥

शमेर्ब च वा ॥४७०॥

शमूच् उपशमे, इत्यस्माद् अलः प्रत्ययो भवति मकारस्य च बकारो वा भवति । शबलः-कल्माषः, शमलं-पुरीषम्, दुरितं च ॥४७०॥

छोर्डगादिर्वा ॥४७१॥

छोंच् छेदने, इत्यस्मात्किद् अलः प्रत्ययो भवति । स च डगादिर्गादिर्वा भवति । छगलः-छागः, छागलः-ऋषिः । छलं-वचनविघातोऽर्थविकल्पोपपत्त्या ॥४७१॥

मृजि-खन्याहनिभ्यो डित् ॥४७२॥

एभ्यः डिद् अलः प्रत्ययो भवति । मृजौक् शुद्धौ, मलं-बाह्यं रजः-अन्तर्दोषश्च । खनूग् अवदारणे, खलः-दुर्जनः, निष्पीडितरसं पिण्याकादि, खलं-सस्यफलग्रहणभूमिः । हनंक् हिंसागत्योः, आङ्पूर्वः, आहलः-विषाणं, नखरश्च ॥४७२॥

Aho ! Shrutgyanam

स्थो वा ।।४७३।।

तिष्ठतेः अलः प्रत्ययो भवति स च डिद्वा भवति । स्थलं–प्रदेशविशेषः । स्थालं–भाजनम् ।।४७३।।

मुरलोरल- विरल- केरल- कपिञ्जल- कज्जलेज्जल-कोमल-भृमल-सिंहल-काहल-शूकल- पाकल- युगल-भगल-विदल-कुन्तलोत्पलादयः ।।४७४।।

एते अलप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । मुर्व्युर्व्योर्वलोपः किच्च, मुरलाः–जनपदः । उरलः–उत्कटः । विपूर्वाद्रमेर्डिच्च, विरलः–असंहतः । किरः केर च केरला–जनपदः । कम्पेरिञ्जोऽन्तो नलोपश्च, कपिञ्जलः–गौरतित्तिरिः । कषी-षो र्जोऽन्तो जश्च, कज्जलं–मषी, इज्जलः–वृक्षविशेषः । कमेरत ओच्च कोमलं–मृदु । भ्रमेर्भृम् च, भृमलः–वायुः, कृमिजातिश्च, भृमलं–चक्रम् । हिंसेराद्यन्तविपर्ययश्च, सिंहला–जनपदः । कणेर्हो दीर्घश्च, काहलः–अव्यक्तवाक्, काहला–वाद्यविशेषः । शकेरूच्चास्य, शूकलः–अश्वाधमः । पचेः पाक् च, पाकलः–हस्तिज्वरः । युजेः किद् ग च, युगलं–युग्मम् । भातेर्गोऽन्तो ह्रस्वश्च, भगलः–मुनिः । विन्देर्नलोपश्च, विदलं–वेणुदलम् । कनेरत उत् तोऽन्तश्च, कुन्तला–जनपदः, केशाश्च । उत्पूर्वात् पिबतेर्ह्रस्वश्च, उत्पलं–पद्मम् । आदिग्रहणात् सुवर्चलामुद्गलादयो भवन्ति ।।४७४।।

ऋ-कृ-मृ-वृ-तनि-तमि-चषि-चपि-कपि-कीलि-पलि-बलि-पञ्चि-मङ्गि-गण्डि- मण्डि- चण्डि-तण्डि- पिण्डि-नन्दि-नदि-शकिभ्य आलः ।।४७५।।

एभ्य आलः प्रत्ययो भवति । ऋक् गतौ, आरालं–वक्रम् । डुकृंग् करणे, करालम्–उच्चम् । मृंत् प्राणत्यागे, मरालः–हंसः, महांश्च । वृग्ट् वरणे, वरालः–वदान्यः । तनूयी विस्तारे, तनालं–जलाशयः । तमूच् काङ्क्षायाम्, तमालः–वृक्षः, व्यालश्च । चषी भक्षणे, चषालं यूपशिरसि द्रव्यम् । चप सान्त्वने, चपालं–यज्ञद्रव्यम् । कपिः सौत्रः, कपालं–घटाद्यवयवः, शिरोऽस्थि च । कील बन्धे, कीलालं-मद्यं, जलम् असृक् च । पल गतौ, पलालम्–अकणो व्रीह्यादिः । बल प्राणनधान्यावरोधयोः बलालः–वायुः । पचुङ् व्यक्तीकरणे, पञ्चालः–ऋषिः, राजा च, पञ्चाला–जनपदः । मगु गतौ, मङ्गालः–देशः । गड्ड वदनैकदेशे, गण्डालः–मत्तहस्ती । मड्ड भूषायाम्, मण्डालः–ऋषिः राजा च । चडुङ् कोपे, चण्डालः–श्वपचः ।

अकृतज्ञमकार्यज्ञं दीर्घरोषमनार्जवम् ।

चतुरो विद्धि चण्डालान् जन्मना चेति पञ्चमम् ।।१।।

तडुङ् आघाते, तण्डालः–क्षुपः । पिडुङ् सङ्घाते, पिण्डालः–कन्दजातिः । टुनदु समृद्धौ, नन्दालः–राजा । णद अव्यक्ते शब्दे, नदालः–नादवान् । शक्लृंट् शक्तौ, शकालाः–जनपदः, मूर्खधनी च ।।४७५।।

कुलि-पिलि-विशि-बिडि-मृणि-कुणि-पी-प्रीभ्यः कित् ।।४७६।।

एभ्यः किद् आलः प्रत्ययो भवति । कुल बन्धुसंस्त्यानयोः, कुलालः–कुम्भकारः । पिलण्–क्षेपे, पिलालं–श्लिष्टम् । विशंत् प्रवेशने, विशालं–विस्तीर्णम् । बिड आक्रोशे, बिडालः–मार्जारः । मृणत् हिंसायाम्, मृणालं–बिसम् । कुणत् शब्दोपकरणयोः, कुणालः–कृतमालः, कटविशेषश्च, कुणालं–नगरं, कठिनं च । पीङ्च् पाने, पियालः–वृक्षः, पियालं–शाकं, वीरुच्च । प्रीङ्च् प्रीतौ, प्रियालः–पियालः ।।४७६।।

भजेः कगौ च ।।४७७।।

भजीं सेवायाम् इत्यस्मात् किद् आलः प्रत्ययो भवति, कगौ चान्तादेशौ भवतः । भकालं, भगालम् उभयं–कपालम् ।।४७७।।

सर्तेर्गोऽन्तश्च ।।४७८।।

सृ गतौ, इत्यस्मात् किद् आलः प्रत्ययो भवति, गश्चान्तः । सृगालः–क्रोष्टा ।।४७८।।

पति-कृ-लूभ्यो णित् ।।४७९।।

एभ्यो णिद् आलः प्रत्ययो भवति । पत्लृ गतौ, पातालं–रसातलम् । डुकृंग् करणे, कारालं–लेपद्रव्यम् । लूग्श् छेदने, लावालः–उद्दन्तः ।।४७९।।

चात्वाल- कङ्काल- हिन्ताल- वेताल- जम्बाल-शब्दाल-ममाप्तालादयः ।।४८०।।

एते आलप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । चतेर्वोन्तो दीर्घश्च । चात्वालः–यज्ञगर्तः । कचेः स्वरान्नोऽन्तः कश्च, कङ्कालः–कलेवरम् । हिंसेस्तश्च हिन्तालः–वृक्षविशेषः । वियस्तोऽन्तो गुणश्च, वेतालः–रजनीचरविशेषः । जनेर्वोऽन्तश्च, जम्बालः–कर्दमः–शैवलं च । शमेर्ऋपेर्वा शब्दभावश्च, शब्दालः–शब्दनशीलः । मवेर्वलोपो माप्तश्चान्तः मतिः, स्नेहः–पुत्रादिषु स्नेहबन्धनं च । आदिशब्दाच्चक्रवालकरवालालवालादयो भवन्ति ।।४७०।।

कल्यनि-महि-द्रमि-जटि-भटि- कुटि- चण्डि- शण्डि-तुण्डि-पिण्डि-भू-कु-किभ्य इलः ।।४८१।।

एभ्य इलः प्रत्ययो भवति । कलि शब्दसंख्यानयोः, कलिलं–गहनं, पापम्, आत्माधिष्ठितं च शुक्रार्तवम् । अनक् प्राणने, अनिलः–वायुः । मह पूजायाम्, महिला–स्त्री ।

Aho ! Shrutgyanam

द्रम गतौ, द्रमलाः– त्रैराज्यवासिनः । जट झट संघाते, जटिलः– जटावान् । भट भृतौ, भटिलः–श्वा, सेवकश्च । कुटत् कौटिल्ये, कुटिलम्–वक्रम् । चडुङ् कोपे, चण्डिलः–श्वा–क्रोधनः, नापितश्च । शडुङ् रुजायाम्, शण्डिलः–ऋषिः । तुडुङ् तोटने, तुण्डिलः–वाग्जाली । पिडुङ् सङ्घाते, पिण्डिलः–मेघः, हिंस्रः, हिमः, गणकश्च । भू सत्तायाम्, भविलः–मुनिः, समर्थः, गृहम्, बहुनेता च । कुकि आदाने, कोकिलः–परभृतः ॥४८१॥

भण्डेर्नलुक् च वा ॥४८२॥

भडुङ् परिभाषणे, इत्यस्माद् इलः प्रत्ययो भवति, नकारस्य च लुग् वा भवति । भडिलः–ऋषिः, पिशाचः, शत्रुश्च; भण्डिलः–श्वा, दूतः, ऋषिश्च ॥४८२॥

गुपि-मिथि-ध्रुभ्यः कित् ॥४८३॥

एभ्यः किद् इलः प्रत्ययो भवति । गुपौ रक्षणे, गुपिलं–गहनम् । मिथृग् मेधा–हिंसयोः, मिथिला–नगरी । ध्रु स्थैर्ये च, ध्रुविलः–ऋषिः ॥४८३॥

स्थण्डिल-कपिल-विचकिलादयः ॥४८४॥

स्थण्डिलादयः शब्दा इलप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । स्थलेः स्थण्ड् च, स्थण्डिलं–व्रतिशयनवेदिका । कबेः प् च, कपिलः–वर्णः, ऋषिश्च । विचेरकोऽन्तश्च, विचकिलः–मल्लिकाविशेषः । आदिग्रहणाद् गोभिलनिकुम्भिलादयोऽपि भवन्ति ॥४८४॥

हृ-षि-वृति-चटि-पटि-शकि-शङ्कि-तण्डि-मङ्ग्युत्कण्ठिभ्य उलः ॥४८५॥

एभ्य उलः प्रत्ययो भवति । हृषच् तुष्टौ, हृषू अलीके वा, हर्षुलः–हर्षवान्, कामी, मृगश्च । वृतूङ् वर्तते, वर्तुलः–वृत्तः । चटण् भेदे, चटुलः–चञ्चलः । पट गतौ, पटुलः–वाग्मी । शक्लृंट् शक्तौ, शकुलः–मत्स्यः । शकुङ् शङ्कायाम्, शङ्कुला–क्रीडनशङ्कुः, बन्धनभाण्डम्, आयुधं च । तडुङ् ताडने, तण्डुलो–निस्तुषो व्रीह्यादिः । मगु गतौ, मङ्गुलं–न्यायापेतम् । कठुङ् शोके, उत्कण्ठुलः–उत्कण्ठावान् ॥४८५॥

स्था-वङ्कि-बंहि-बिन्दिभ्यः किन्नलुक् च ॥४८६॥

एभ्यः किद् उलः प्रत्ययो नकारस्य च लुग् भवति । ष्ठां गतिनिवृत्तौ, स्थुलं–पटकुटीविशेषः । वकुङ् कौटिल्ये, वकुलः–केसरः, ऋषिश्च । बहुङ् वृद्धौ, बहुलं–प्रचुरम्, बहुलः–प्रासकः, कृष्णपक्षश्च । बहुलाः–कृत्तिकाः, बहुला–गौः । विदु अवयवे, विदुलः–वेतसः ॥४८६॥

कुमुल-तुमुल-निचुल-वञ्जुल-मञ्जुल-पृथुल-विशंस्थुलाङ्गुल-मुकुल-शष्कुलादयः ॥४८७॥

एते उलप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । कमितम्योरत उच्च, कुमुलं–कुसुमम्, हिरण्यं च, कुमुलः–शिशुः, कान्तश्च । तुमुलं–व्यामिश्रयुद्धम्, संकुलं च । निजेः किच्चश्च, निचुलः–वञ्जुलः । वजेः स्वरान्नोऽन्तश्च, वञ्जुलः–निचुलः । मञ्जिः सौत्रः, मञ्जुलं–मनोज्ञम् । प्रथेः पृथ् च, पृथुलः–विस्तीर्णः । विपूर्वात् शंसेस्थोऽन्तश्च, विशंस्थुलः–व्यग्रः । अञ्जेर्गश्च अङ्गुलम्–अष्टयवप्रमाणम् । मुचेः कित् कश्च, मुकुलः–अविकसितपुष्पम् । शकेः स्वरात् षोऽन्तश्च, शष्कुली–भक्ष्यविशेषः, कर्णावयवश्च । आदिग्रहणाल्लकुल-वल्गुलादयो भवन्ति ॥४८७॥

पिञ्जि-मञ्जि-कण्डि-गण्डि-बलि-बधि-वञ्चिभ्य ऊलः ॥४८८॥

एभ्य ऊलः प्रत्ययो भवति । पिजुण् हिंसा–बल–दान–निकेतनेषु, पिञ्जूलः–हस्तिबन्धनपाशः, राशिः, कुलपतिश्च । मञ्जिः सौत्रः, मञ्जूला–मृदुभाषिणी । कडुङ् मदे, कण्डूलः– अशिष्टो जनः । गडु वदनैकदेशे, गण्डूलः–कृमिजातिः । बल प्राणन–धान्यावरोधयोः, बलूलः–ऋषिः, मेघः, मासश्च । बधि बन्धने, बधूलः–हस्ती, घातकः रसायनं, तन्त्रकारश्च । वञ्चिण् प्रलम्भने, वञ्चूलः–हस्ती, मत्स्य-मारपक्षी च ॥४८८॥

तमेर्वोऽन्तो दीर्घस्तु वा ॥४८९॥

तमूच् काङ्क्षायाम् इत्यस्माद् ऊलः प्रत्ययो भवति, वोऽन्तश्च भवति, दीर्घस्तु वा । ताम्बूलं, तम्बूलम्–उभयं पूगपत्रचूर्णसंयोगः ॥४८९॥

कुल-पुल-कुसिभ्यः कित् ॥४९०॥

एभ्य ऊलः प्रत्ययो भवति, स च किद् भवति । कुल-बन्धु–संस्त्यानयोः, कुलूलः–कृमिजातिः । पुल महत्वे पुलूलः–वृक्षविशेषः । कुसच् श्लेषे, कुसूलः–कोष्ठः ॥४९०॥

दुकूल-कुकूल-बब्बूल-लाङ्गूल-शार्दूलादयः ॥४९१॥

दुकूलादयः शब्दा ऊलप्रत्यान्ता निपात्यन्ते । दुकोः कोऽन्तश्च, दुकूलं–क्षौमं वासः । कुकूलं–कारीषोऽग्निः । बधेर्बोऽन्तो बश्च । बब्बूलः–वृक्षविशेषः । लङ्गेर्दीर्घश्च, लाङ्गूलं–वालधिः । शृणातेर्दोऽन्तो वृद्धिश्च, शार्दूलः–व्याघ्रः । आदिग्रहणाद् मार्जूल–कञ्चूलादयो भवन्ति ॥४९१॥

महेरेलः ॥४९२॥

मह पूजायाम्, इत्यस्मादेलः प्रत्ययो भवति । महेला–स्त्री

Aho ! Shrutgyanam

॥४६२॥

कटि-पटि-कण्डि-गण्डि-शकि-कपि-चहिभ्य ओलः ॥४६३॥

एभ्य ओलः प्रत्ययो भवति । कटे वर्षावरणयोः, कटोलः–कटविशेषः, वादित्रविशेषश्च, कटोला–औषधिः । पट गतौ, पटोला–वल्लीविशेषः । कडु मदे, कण्डलः–विदलभाजनविशेषः । गडु वदनैकदेशे, गण्डोलः–कृमिविशेषः । शक्लृंट् शक्तौ, शकोलः–शक्तः । कपिः सौत्रः, कपोलः–गण्डः । चह कल्कने, चहोलः–उपद्रवः ॥४६३॥

ग्रह्यादभ्यः कित् ॥४६४॥

ग्रहेराकारान्तेभ्यश्च धातुभ्यः किदोलः प्रत्ययो भवति । ग्रहीश् उपादाने, गृहोलः–बालिशः । कायतेः, कोलः–बदरी, वराहश्च । गायतेः गोलः–वृत्ताकृतिः, गोला–गोदावरी, बालरमणकाष्ठं च । पातेः पोला–तालाख्यं–कपाटबन्धनं, परिखा च । लातेः लोलः–चपलः । ददातेर्दयतेर्द्यतेर्वा दोला–प्रेङ्खणम् ॥४६४॥

पिञ्छोल-कल्लोल-कक्कोल-मक्कोलादयः ॥४६५॥

पिञ्छोलादयः शब्दा ओलप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । पीडेः पिच्छ् च, पिञ्छोलः–वादित्रविशेषः । कलेर्लोऽन्तश्च, कल्लोलः–ऊर्मिः । कचि–मच्योः कादिः, कक्कोली–लताविशेषः, मक्कोलः–सुधाविशेषः । आदिग्रहणादन्येऽपि ॥४६५॥

वलि-पुषेः कलक् ॥४६६॥

आभ्यां कित् कलः प्रत्ययो भवति । वलि संवरणे, वल्कलं–तरुत्वक् । पुष् पुष्टौ, पुष्कलं, समग्रं, युद्धं, शोभनं, हिरण्यं, धान्यं च ॥४६६॥

मिगः खलश्चैच्च ॥४६७॥

डुमिगृट् प्रक्षेपणे, इत्यस्मात् खलश्चकारात् कलश्च प्रत्ययौ भवतः, एकारश्चान्तादेशो भवति । मेखला–गिरिनितम्बः, रशना च । मेकलः–नर्मदाप्रभवोऽद्रिः । मिग एत्ववचनामात्वबाधनार्थम् ॥४६७॥

शो नोऽन्तो ह्रस्वश्च ॥४६८॥

शॄश् हिंसायाम् इत्यस्मात् खलः प्रत्ययो भवति, नकारोऽन्तो ह्रस्वश्च भवति । शृङ्खला--लोहरज्जुः, शृङ्खलः, शृङ्खलं वा ॥४६८॥

शमि-कमि-पलिभ्यो बलः ॥४६९॥

एभ्यो बलः प्रत्ययो भवति । शमूच् उपशमे, शम्बलं–पाथेयम् । कमूङ् कान्तौ, कम्बलः–ऊर्णापटः । पल गतौ, पल्वलम्–अकृत्रिमोदकस्थानविशेषः ॥४६९॥

तुल्वलेल्वलादयः ॥५००॥

तुल्वलादयः शब्दा वलप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । तुलील्योर्णि-लुग्गुणाभावश्च । तुल्वलः– ऋषिः, यस्य तौल्वलिः पुत्रः । इल्वलः--असुरो, योऽगस्त्येन जग्धः, मत्स्यः, यूपश्च । इल्वलाः–तिस्रो मृगशिरः शिरस्ताराः । आदिग्रहणात् शाल्वलादयो भवन्ति ॥५००॥

शीङस्तलक्पाल-वालण्-वलण्वलाः ॥५०१॥

शीङ्क् स्वप्ने, इत्यस्मात् तलक्–पाल–वालण्–वलण्–वल, इत्येते प्रत्यया भवन्ति । शीतलं–अनुष्णम्, शेपालम्, जपादित्वात् पस्य वत्वे शेवालम्, शैवालम्, शैवलम्, पञ्चकमपि जलमलवाचि ॥५०१॥

रुचि-कुटि-कुषि-कशि-शालि-द्रुभ्यो मलक् ॥५०२॥

एभ्यः किन् मलः प्रत्ययो भवति । रुचि अभिप्रीत्यां च, रुक्मलं–सुवर्णम्, न्यङ्कादित्वात् कत्वम् । कुटत् कौटिल्ये, कुड्मलम्–मुकुलम् । कुषश् निष्कर्षे, कुष्मलं–तदेव, बिलं च । कश शब्दे तालव्यान्तः, कश्मलं–मलिनम् । शाडृङ् श्लाघायाम्, लत्वे शाल्मलः–वृक्षविशेषः । द्रुं गतौ, द्रुमलं–जलं, वनं च ॥५०२॥

कुशि-कमिभ्यां कुल-कुमौ च ॥५०३॥

आभ्यां मलक् प्रत्ययो भवति । अनयोश्च यथासंख्यं कुल-कुम इत्यादेशौ च । कुशच् श्लेषणे, कुल्मलं–छेदनम् । कमूङ् कान्तौ, कुम्मलं--पद्मम् ॥५०३॥

पतेः सलः ॥५०४॥

पत्लृ गतौ इत्यस्मात् सलः प्रत्ययो भवति । पत्सलः–प्रहारः, गोमान्, आहारश्च ॥५०४॥

लटि-खटि-खलि-नलि-कण्यशौ-सृ-शॄ-कॄ-गॄ-दॄ-पॄ-शपि-श्या-शाला-पदि-हृसीण्भ्यो वः ॥५०५॥

एभ्यः वः प्रत्ययो भवति । लट बाल्ये, लट्वा–क्षुद्रचटका कुसुम्भं च । खट काङ्क्षे खट्वा–शयनयन्त्रम् । खल संचये च, खल्वं–निम्नं, खलीनं च, खल्वा–दृतिः । णल गन्धे, नल्वः–भूमानविशेषः । कण शब्दे, कण्वः–ऋषिः, कण्वं–पापम् । अशौटि व्याप्तौ, अश्वः–तुरगः । सृं गतौ सर्वः–शम्भुः । सर्वादिश्च कृत्स्नार्थे । शॄश् हिंसायाम्, शर्वः–शम्भुः । कॄत् विक्षेपे, कर्वः–आखुः, समुद्रः, निष्पत्तिक्षेत्रं च । गॄत् निगरणे, गर्वः–अहंकारः । दॄश् विदारणे, दर्वाः–जनपदः, दर्वः–हिंस्रः । पॄश् पालन–पूरणयोः, पर्वः–रुद्रः, काण्डं च । शपीं आक्रोशे, शप्वः–आक्रोशः । श्येङ् गतौ, श्यावः–वर्णः । शोंच् तक्षणे, शावः- तिर्यग्बालः । लांक् आदाने,

Aho ! Shrutgyanam

लावः– पक्षिजातिः । पदिच् गतौ, पद्वः– रथः, वायुः, भूर्लोकश्च । ह्लस शब्दे, ह्रस्वः- लघुः । इण्क् गतौ, एवः– केवलः, एवेत्यवधारणे निपातश्च ॥५०५॥

शीङापो ह्रस्वश्च वा ॥५०६॥

आभ्यां वः प्रत्ययो वा भवति । शीङ्क् स्वप्ने, शिवं–क्षेमम्, सुखं, मोक्षपदं च, शिवा–हरीतकी च, शेवं–धनम्, शेवः–अजगरः, सुखकृच्च, शेवा–प्रचला निद्राविशेषः, मेदश्च । आप्लृंट् व्याप्तौ, अप्वा–देवायुधम्, आप्वा–वायुः ॥५०६॥

उर्देर्ध च ॥५०७॥

उर्दि मान–क्रीडनयोश्च, इत्यस्माद् वः प्रत्ययो भवति, धकारश्चान्तादेशो भवति । ऊर्ध्वः–उद्धर्ष्मा, ऊर्ध्वम्–उपरि, परस्ताच्च ॥५०७॥

गन्धेरर् चान्तः ॥५०८॥

गन्धिण् अर्दने, इत्यस्माद् वः प्रत्ययोऽर् चान्तो भवति । गन्धर्वः–गाथकः, देवविशेषश्च ॥५०८॥

लषेर्लिष् च वा ॥५०९॥

लषी कान्तौ इत्यस्माद् वः प्रत्ययोऽस्य च लिष् इत्यादेशो वा भवति । लिष्वः–लम्पटः, कान्तः, दयितश्च । लष्वः–अपत्यम्, ऋषिस्थानं च ॥५०९॥

सलेर्णिद् वा ॥५१०॥

सल गतौ, इत्यस्माद् वः प्रत्ययोः भवति, स च णिद्वा भवति । साल्वाः, सल्वाश्च–जनपदः, क्षत्रियाश्च ॥५१०॥

निघृषीष्यृषि-स्रु-प्रुषि-किणि-विशि-विल्यवि-पृभ्यः कित् ॥५११॥

एभ्यः किद् वः प्रत्ययो भवति । घृष् संघर्षे निपूर्वः निघृष्वः–अनुकूलः, सुवर्णनिकषोपलः, वायुः, क्षुरश्च । इषत् इच्छायाम्, इष्वः–अभिलषितः, आचार्यश्च, इष्वा–अपत्यसंततिः । ऋषैत् गतौ, ऋष्वः–रिपुः, हिंस्रश्च, रिषेर्व्यञ्जनादेः केचिदिच्छन्ति, रिष्वः । स्रुं गतौ, स्रुवः–हवनभाण्डम् । प्रुषू दाहे, प्रुष्वा–निवृत्तिः जललवश्च । किणः सौत्रः, किण्वं–सुराबीजम् । विशंत् प्रवेशने, विश्वं–जगत्, सर्वादि च । बिलत् भेदने, बिल्वः–मालूरः । अव रक्षणादौ, अवेति, अव्ययम्, पृश् पालन–पूरणयोः, पूवः–दिक्कालनिमित्तः ॥५११॥

नञो भुवो डित् ॥५१२॥

नञ्पूर्वाद् भवतेर्डिद् वः प्रत्ययो भवति । अभ्वम्–अद्भुतम् ॥५१२॥

लिहेर्जिह् च ॥५१३॥

लिहींक् आस्वादने, इत्यस्माद् वः प्रत्ययो भवत्यस्य च जिह् इत्यादेशो भवति । जिह्वा–रसना ॥५१३॥

प्रह्वा- ह्वाय- ह्वा- स्व- च्छेवा- ग्रीवा- मीवाऽव्वादयः ॥५१४॥

प्रह्वादयः शब्दा वप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते, प्रपूर्वस्य ह्वयतेर्वादिर्लोपो यततेर्वा ह्वादेशश्च । प्रह्वः–प्रणतः, आह्वयतेराह् च, आह्वा–कण्ठः । यमेर्यसेर्वा ह् च, यह्वा–बुद्धिः । अस्यतेरलोपश्च । स्वः–आत्मा, आत्मीयं-ज्ञातिः, धनं च । छ्यतेश्छिदेर्वा छेभावश्च, छेवा–उच्छित्तिः । ग्रन्थतेर्गिरतेर्वा ग्रीभावश्च ग्रीवा । अमेरीच्चान्तो दीर्घश्च वा अमीवा–बुभुक्षा, आमीवा–व्याधिः । मिनोतेदीर्घश्च । मीवा–मनः, उदकं च । तदेतत्त्रयमपि तन्त्रेणावृत्त्या वा निर्दिष्टम् । अव्रतेर्वलोपाभावश्च अव्वा–माता । आदिशब्दाद् अप्वादयो भवन्ति ॥५१४॥

वडि-वटि-पेलृ-चणि-पणि-पल्लि-वल्लेरवः ॥५१५॥

एभ्यः अवः प्रत्ययो भवति । वड आग्रहणे सौत्रः, वडवा–अश्वा । वट वेष्टने, वटवा–सैव । पेलृ गतौ, पेलव–निःसारम् । चण हिंसादानयोश्च चणवः–अवरधान्यविशेषः । पणि व्यवहार–स्तुत्योः, पणवः–वाद्यजातिः । पल्ल गतौ, पल्लवः–किसलयम् । वल्लि संवरणे, बल्लवः–गोपः ॥५१५॥

मणि-वसेर्णित् ॥५१६॥

आभ्यां णिद् अवः प्रत्ययो भवति । मण शब्दे, माणवः–शिष्यः । वसं निवासे, वासवः–शक्रः ॥५१६॥

मलेर्वा ॥५१७॥

मलि धारणे, इत्यस्माद् अवः प्रत्ययो भवति, स च णिद्वा भवति । मालवाः–जनपदः, मलवः–दानवः ॥५१७॥

किति-कुडि-कुरि-मुरि-स्थाभ्यः कित् ॥५१८॥

एभ्यः किद् अवः प्रत्ययो भवति । कित् निवासे, कितवः–द्यूतकारः । कुडत् बाल्ये च, कुडवः- मानम्, लत्वे कुलवः–स एव, नाली द्वयं च । कुरत् शब्दे, कुरवः–पुष्पवृक्षजातिः । मुरत् संवेष्टने, मुरवः–मानविशेषः, वाद्यजातिश्च । ष्ठां गतिनिवृत्तौ, स्थवः–अजावृषः ॥५१८॥

कैरव-भैरव-मुतव-कारण्डवादीनदादयः ॥५१९॥

कैरवादयः शब्दा अवप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । कृग्-भृगोः कैरभैरावादेशो । कैरवं–कुमुदम्, भैरवः–भर्गः, भयानकश्च । मिनोतेर्मुत् च, मुतवः– मानविशेषः ।

Aho ! Shrutgyanam

कृगोऽण्डोऽन्तो वृद्धिश्च, कारण्डवः– जलपक्षी । आङ्-पूर्वाद् दीङो नोऽन्तश्च । आदीनवः–दोषः । आदिग्रहणात् कोद्रव-कोटवादयोपि भवन्ति ॥५१९॥

शृणातेरावः ॥५२०॥

शॄश् हिंसायाम्, इत्यस्माद् आवः प्रत्ययो भवति । शरावः– मल्लकः ॥५२०॥

प्रथेरिवट् पृथ् च ॥५२१॥

प्रथिष् प्रख्याने, इत्यस्मादिवट्प्रत्ययो भवत्यस्य च पृथ् इत्यादेशो भवति । पृथिवी–भूः ॥५२१॥

पलि-सचेरिवः ॥५२२॥

पलण् रक्षणे, षचि सेवने, इत्याभ्यामिवः प्रत्ययो भवति । पलिवः–गोप्ता । सचिवः–सहायः ॥५२२॥

स्पृशेः श्वः पार् च ॥५२३॥

स्पृशंत् संस्पर्शे, इत्यस्मात् श्वः प्रत्ययो भवत्यस्य च पार् इत्यादेशो भवति । पार्श्वं–स्वाङ्गम्, समीपं च । पार्श्वः–भगवाँस्तीर्थंकरः ॥५२३॥

कुडि-तुड्यडेरुवः ॥५२४॥

एभ्य उवः प्रत्ययो भवति । कुडत् बाल्ये च, कुडुवं–प्रसृतं हस्तमानं च । तुडत् तोडने, तुडुवम्–अपनेयद्रव्यम् । अड उद्यमे, अडुवः–प्लवः ॥५२४॥

नी-ह्वीण्-ध्यै-प्या-पा-दा-माभ्यस्त्वः ॥५२५॥

एभ्यः त्वः प्रत्ययो भवति । णींग् प्रापणे, नेत्वं–द्यावा-पृथिव्यौ, चन्द्रश्च । हुंक् दानादनयोः, होत्वं–यजमानः, समुद्रश्च । इण्क् गतौ, एत्वम्–गमनपरम् । ध्यैं चिन्तायाम्, ध्यात्वं–ब्राह्मणः । प्यैङ् वृद्धौ, प्यात्वं–ब्राह्मणः, समुद्रः, नेत्रं च । पां पाने, पात्वम्, पात्रम् । डुदांग्क् दाने, दात्वः–आयुक्तः, यज्वा, यज्ञश्च । मांक् माने, मात्वम्–प्रमेयद्रव्यम् ॥५२५॥

कृ-जन्येधि-पाभ्य इत्वः ॥५२६॥

एभ्य इत्वः प्रत्ययो भवति । डुकृंग् करणे, करित्वः–करणशीलः । जनैचि प्रादुर्भावे, जनित्वः–लोकः, माता-पितरौ, द्यावा-पृथिव्यौ च, जनित्वं–कुलम् । एधि वृद्धौ, एधित्वः–अग्निः, समुद्रः, शैलश्च । पां पाने, पेत्वम्–तप्तभूमिप्रदेशः, अमृतं, नेत्रं, सुखं, मानं च ॥५२६॥

पा-दा-वम्यमिभ्यः शः ॥५२७॥

एभ्यः शः प्रत्ययो भवति । पांक् रक्षणे, पाशः–बन्धनम् । डुदांग्क् दाने, दाशः–कैवर्तः । टुवमू उद्गिरणे, वंशः–वेणुः । अम गतौ, अंशः–भागः ॥५२७॥

कृ-वृ-भृ-वनिभ्यः कित् ॥५२८॥

एभ्यः कित् शः प्रत्ययो भवति । डुकृंग् करणे, कृशः–तनुः । वृगट् वरणे, वृशं– शृङ्गबेरम्, मूलकं, लशुनं च । डुभृंग्क् पोषणे च, भृशम्–अत्यर्थम् । वन भक्तौ, वशः–आयत्तः ॥५२८॥

कोर्वा ॥५२९॥

कुङ् शब्दे, इत्यस्मात् शः प्रत्ययो भवति, स च किद्वा भवति । कुशः–दर्भः । कोशः–सारम्, कुड्मलं च ॥५२९॥

क्लिशः के च ॥५३०॥

क्लिशौश् विबाधने, इत्यस्मात् शः प्रत्ययो भवत्यस्य च के इत्यादेशो भवति । केशाः–मूर्धजाः ॥५३०॥

उरेरशक् ॥५३१॥

उर गतौ, इत्यस्मात् सौत्राद् अशक् प्रत्ययो भवति । उरशः–ऋषिः ॥५३१॥

कलेष्टित् ॥५३२॥

कलि शब्द-संख्यानयोः, इत्यस्मात् टिद् अशक् प्रत्ययो भवति । कलशः–कुम्भः । कलशी–दधिमन्थनभाजनम् ॥५३२॥

पलेराशः ॥५३३॥

पल गतौ, इत्यस्माद् आशः प्रत्ययो भवति । पलाशः–ब्रह्मवृक्षः ॥५३३॥

कनेरीश्चातः ॥५३४॥

कनै दीप्त्यादौ, इत्यस्माद् आशः प्रत्ययो भवति, ईकारश्चाकारस्य भवति । कीनाशः–कर्षकः, वर्णसङ्करः, कदर्यश्च, तथा–

लुब्धः कीनाशः स्यात् कीनाशोऽप्युच्यते कृतघ्नश्च ।
योऽश्नात्यामं मांसं स च कीनाशो यमश्चैव ॥५३४॥

कुलि-कनि-कणि-पलि-वडिभ्यः किशः ॥५३५॥

एभ्यः किद् इशः प्रत्ययो भवति । कुल बन्धु-संस्त्यानयोः कुलिशं–वज्रम् । कनै दीप्त्यादौ, कण शब्दे, कनिशं, कणिशं च–सस्यमञ्जरी । पल गतौ, पलिशं–यत्र स्थित्वा व्यापाद्यन्ते मृगाः । वड आग्रहणे सौत्रः, बडिशं–मत्स्यग्रहणम् ॥५३५॥

बलेर्णिद्वा ॥५३६॥

बल प्राणन-धान्यावरोधयोः, इत्यस्मात् किशः स च णिद्वा भवति । बालिशः–मूर्खः, बलिशः–मूर्खः, बलिशं–बडिशम् ॥५३६॥

Aho ! Shrutgyanam

तिनिशेतिशादयः ॥५३७॥

तिनिशादयः शब्दाः किशप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते, तनेरिश्चातः । तिनिशः–वृक्षः । इणस्तोऽन्तश्च, इतिशः–गोत्रकृदृषिः । आदिग्रहणादन्येऽपि ॥५३७॥

मस्ज्यडिभ्यामुशः ॥५३८॥

आभ्याम् उशः प्रत्ययो भवति । टुमस्जोंत् शुद्धौ, 'न्यङ्क्वादगमेघादयः' इति गः । मद्गुशः–नकुलः । अकुङ् लक्षणे, अङ्कुशः–सृणिः ॥५३८॥

अर्त्तीणभ्यां पिश-तशौ ॥५३९॥

आभ्यां यथासंख्यं पिश तश इत्येतौ प्रत्ययौ भवतः । ऋंक् गतौ, अर्पिशम्–आर्द्रमांसम्, बालवत्साया दुग्धं च । इणक् गतौ, एतशः–अश्वः, ऋषिः, वायुः, अग्निः, अर्कश्च ॥५३९॥

वृ-कृ-तॄ-मीङ्-माभ्यः षः ॥५४०॥

एभ्यः षः प्रत्ययो भवति । वृग्ट् वरणे, वर्षः–भर्ता, वर्षः–संवत्सरः । वर्षाः–ऋतुः । कृत् विक्षेपे, कर्षः–उन्मानविशेषः । तॄ प्लवनतरणयोः, तर्षः–प्लवः–हर्षश्च । मीङ्च् हिंसायाम्, मेषः–उरभ्रः । मांक् माने, माषः–धान्यविशेषः, हेमपरिमाणं च ॥५४०॥

योरूच्च वा ॥५४१॥

युक् मिश्रणे, इत्यस्मात् षः प्रत्ययो भवति, ऊकारश्चान्तादेशो वा भवति । यूषः–पेयविशेषः, यूषा–छाया, योषा–स्त्री ॥५४१॥

स्नु-पू-सूम्वर्कलूभ्यः कित् ॥५४२॥

स्न्वादिभ्योऽर्कपूर्वाच्च लुनातेः कित् षः प्रत्ययो भवति । स्नुक् प्रस्रवणे, स्नुषा–पुत्रवधूः । पूग्श् पवने, पूषः–पवनभाण्डम्, शूर्पादिः । षूत् प्रेरणे, सूषः–बलम् । मूङ् बन्धने मूषा–लोहरक्षणभाजनम् । लूग्श् छेदने अर्कपूर्वः, अर्कलूषः–ऋषिः ॥५४२॥

श्लिषेः शे च ॥५४३॥

श्लिषंच् आलिङ्गने, इत्यस्मात् षः प्रत्ययो भवत्यस्य च शे इत्यादेशो भवति । शेषः–नागराजः ॥५४३॥

कोरषः ॥५४४॥

कुङ् शब्दे, इत्यस्माद् अषः प्रत्ययो भवति । कवषः–क्रोधी, शब्दकारश्च ॥५४४॥

युजलेराषः ॥५४५॥

आभ्याम् आषः प्रत्ययो भवति । युक् मिश्रणे, यवाषः–दुरालभा । जल घात्ये, जलाषं–जलम् ॥५४५॥

अर्तेरिषः ॥५४६॥

ऋंक् गतौ, इत्यस्माण्ण्यन्ताद् इषः प्रत्ययो भवति । अर्पिषम्–आर्द्रमांसम् ॥५४६॥

मह्यविभ्यां टित् ॥५४७॥

आभ्यां टिद् इषः प्रत्ययो भवति । मह पूजायाम्, महिषः–सैरिभः, राजा च, महिषी–राजपत्नी, सैरिभी च । अव रक्षणादौ, अविषः–समुद्रः, राजा, पर्वतश्च । अविषी–द्यौः, भूमिः, गङ्गा च ॥५४७॥

रुहेर्वृद्धिश्च ॥५४८॥

रुहं जन्मनि, इत्यस्मात् टिद् इषः प्रत्ययो भवति, वृद्धिश्चास्य भवति । रौहिषं–तृणविशेषः, अन्तरिक्षं च, रौहिषः–मृगः । रौहिषी–वात्या, मृगी, दूर्वा च ॥५४८॥

अमिमृभ्यां णित् ॥५४९॥

आभ्याम् इषः प्रत्ययो भवति, स च णिद् भवति । अम गतौ, आमिषं–भक्ष्यम् । मृश् हिंसायाम्, मारिषः–हिंस्रः ॥५४९॥

तवेर्वा ॥५५०॥

तव गतौ, इत्यस्मात् सौत्रात् टिद् इषः प्रत्ययो भवति । स च णिद्वा भवति । ताविषः, तविषश्च–स्वर्गः । ताविषं, तविषं च–बलं, तेजश्च । ताविषी, तविषी च–वात्या, देवकन्या च ॥५५०॥

कलेः किल्व च ॥५५१॥

कलि शब्द-संख्यानयोः, इत्यस्मात् टिद् इषः प्रत्ययो भवत्यस्य च किल्व इत्यादेशो भवति । किल्बिषं–पापम्, किल्बिषी–वेश्या, रात्रिः, पिशाची च ॥५५१॥

नञो व्यथेः ॥५५२॥

नञ्पूर्वात् व्यथिष् भय-चलनयोः, इत्यस्मात् टिद् इषः प्रत्ययो भवति । अव्यथिषः–क्षेत्रज्ञः, सूर्यः, अग्निश्च । अव्यथिषी–पृथिवी ॥५५२॥

कॄ-तॄभ्यामीषः ॥५५३॥

आभ्याम् ईषः प्रत्ययो भवति । कॄत् विक्षेपे, करीषः–शुष्कगोमयरजः । तॄ प्लवनतरणयोः, तरीषः–समर्थः, स्तम्भः, प्लवश्च ॥५५३॥

ऋजि-शृ-पृभ्यः कित् ॥५५४॥

Aho ! Shrutgyanam

एभ्यः किद् ईषः प्रत्ययो भवति। ऋजि गत्यादौ, ऋजीषः–अवस्करः, ऋजीषम्–धनम्। शृश् हिंसायाम्, शिरीषः–वृक्षः। पृश् पालनपूरणयोः, पुरीषं–शकृत् ॥५५४॥

अमेर्वरादिः ॥५५५॥

अम गतौ, इत्यस्माद् वरादिः ईषः प्रत्ययो भवति। अम्बरीषं– भ्राष्ट्रं, व्योम च। अम्बरीषः–आदिनृपः ॥५५५॥

उषेर्णोऽन्तश्च ॥५५६॥

उषू दाहे, इत्यस्माद् ईषः प्रत्ययो भवति, णकारश्चान्तो भवति। उष्णीषः–मुकुटं, शिरोवेष्टनं च ॥५५६॥

ऋ–पृ–नहि–हनि–कलि–चलि–चपि–वपि–कृपि–हयिभ्य उषः ॥५५७॥

एभ्यः उषः प्रत्ययो भवति। ऋश् गतौ, अरुषः–व्रणः, हयः, आदित्यः, वर्णः, रोषश्च। पृश् पालनपूरणयोः, परुषः–कर्कशः। णहींच् बन्धने, नहुषः–पूर्वः राजा। हनक् हिंसागत्योः, हनुषः–क्रोधः, राक्षसश्च। कलि शब्दसंख्यानयोः, कलुषम्–अप्रसन्नं–पापं च। चल कम्पने, चलुषः–वायुः। चप सान्त्वने, चपुषः–शकुनिः। डुवपीं बीजसंताने, वपुषः–वर्णः। कृपौङ् सामर्थ्ये, कल्पुषः–क्रियानुगुणः। हय क्रान्तौ च, हयुषा–औषधिः ॥५५७॥

वि-दि-पृभ्यां कित् ॥५५८॥

आभ्यां किद् उषः प्रत्ययो भवति। विदक् ज्ञाने, विदुषो–विद्वान्। पृश् पालनपूरणयोः, पुरुषः–पुमान्, आत्मा च ॥५५८॥

अपुष-धनुषादयः ॥५५९॥

अपुषादयः शब्दा उषप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते। आप्नोतेर्ह्रस्वश्च, अपुषः–अग्निः, सरोगश्च। दधातेर्धन् च, धनुषः–शैलः। आदिग्रहणाल्लसुषादयो भवन्ति ॥५५९॥

खलि-फलि-वृ-पृ-कृ जृ-लम्बि-मञ्जि-पी-यि-हृन्यङ्गि-मङ्गि-गण्ड्यर्तिभ्य ऊषः ॥५६०॥

एभ्यः ऊषः प्रत्ययो भवति। खल संचये च, खलूषः–म्लेच्छजातिः। फल निष्पत्तौ, फलूषः–वीरुत्। वृग्ट् वरणे, वरूषः–भाजनम्। पृश् पालनपूरणयोः–परूषः, वृक्षविशेषः। कृत् विक्षेपे, करूषाः–जनपदः। जॄष्च् जरसि, जरूषः–आदित्यः। लबुङ् अवस्रंसने च, लम्बूषः–नीरकदम्बः, निचुलश्च। मञ्जिः, पीयिश्च सौत्रौ, मञ्जूषा–काष्ठकोष्ठः, पीयूषं–प्रत्यग्रप्रसवक्षीरविकारः, अमृतं, घृतं च। हनंक् हिंसा-गत्योः, हनूषः–राक्षसः। अगु, गतौ, अङ्गूषः, शकुनिजातिः, हस्ती, बाणः, वेगश्च। मगु गतौ, मङ्गूषः–जलचरशकुनिः। गडु वदनैकदेशे, गण्डूषः–द्रवकवलः। ऋंक् गतौ, अरुषः–रविः ॥५६०॥

कोरदूषाटरूष-कारूष-शैलूष-पिञ्जूषादयः ॥५६१॥

एते ऊषप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते। कुरेरदोऽन्तश्च, कोरदूषः–कोद्रवः। अटेराङ्पूर्वस्य चारोऽन्तश्च, आटरूषः–वासा। अटनं रूषतीति तु अटरूषः, पृषोदरादित्वात्। कृगो वृद्धिश्च, कारूषाः–जनपदः। शलेरै चातः, शैलूषः–नटः। पिजुण् हिंसादौ, पिञ्जूषः–कर्णशष्कुल्याभोगः। आदिशब्दात् प्रत्यूषाभ्यूषादयो भवन्ति ॥५६१॥

कलेर्मषः ॥५६२॥

कलि शब्दसंख्यानयोः, इत्यस्मात् मषः प्रत्ययो भवति। कल्मषं–पापम् ॥५६२॥

कुलेश्च माषक् ॥५६३॥

कुल बन्धुसंस्त्यानयोः, इत्यस्मात् कलेश्च किद् माषः प्रत्ययो भवति। कुल्माषः–अर्धस्विन्नं माषादिः, कल्माषः–शबलः ॥५६३॥

मा-वा-वद्यमि- कमि- हनि- मानि- कष्यशि-पचि-मुचि-यजि-वृ-तॄभ्यः सः ॥५६४॥

एभ्यः सः प्रत्ययो भवति। मांक् माने, मासः–त्रिंशद्रात्रः। वांक् गतिगन्धनयोः, वासा–आटरूषकः। वद व्यक्तायां वाचि, वत्सः–तर्णकः, ऋषिः, प्रियस्य च पुत्रस्याख्यानम्। अम गतौ, अंसः–भुजशिखरम्। कमूङ् कान्तौ, कंसः–लोहजातिः, विष्णोररातिः, हिरण्यमानं च। हनंक् हिंसा-गत्योः, हंसः–श्वेतच्छदः। मानि पूजायाम्, मासं–तृतीयो धातुः। कष हिंसायाम्, कक्षः–तृणम्, गहनारण्यं, शरीरावयवश्च। अशौटि व्याप्तौ, अक्षाः–प्रासकाः (पाशकाः), अक्षाणि–इन्द्रियाणि, रथ–चक्राणि च। डुपचींष् पाके, पक्षः–अर्धमासः, वर्गः, शकुन्यवयवः, सहायः, साध्यं च। मुच्लृंती मोक्षणे, मोक्षः–मुक्तिः। यजीं देवपूजादौ, यक्षः–गुह्यकः। वृग्श् वरणे, वर्सः–देशः, समुद्रश्च। तॄ प्लवनतरणयोः, तर्सः–वीतंसः, सूर्यश्च। वर्स–तर्सयोर्बाहुलकान्न षत्वम् ॥५६४॥

व्यवाभ्यां तनेरीच्च वेः ॥५६५॥

वि अव इत्येताभ्यां परात् तनोतेः सः प्रत्ययो भवति। वेरीकारश्चान्तादेशो भवति। वीतंसः–शकुन्यवरोधः। अवतंसः–कर्णपूरः ॥५६५॥

Aho ! Shrutgyan'am

प्लुषेः प्लष् च ॥५६६॥

प्लुषू दाहे, इत्यस्मात् सः प्रत्ययो भवत्यस्य च प्लष् इत्यादेशो भवति । प्लक्ष–नक्षत्रं, वृक्षश्च ॥५६६॥

ऋजि-रिषि-कुषि-कृति-व्रश्च्युन्दि-शृभ्यः कित् ॥५६७॥

एभ्यः कित् सः प्रत्ययो भवति । ऋजि गत्यादौ, ऋक्षं–नक्षत्रम्, ऋक्षः–अच्छभल्लः । रिष हिंसायाम्, रिक्षा-यूकाण्डम्, लत्वे लिक्षा सैव । कुषश् निष्कर्षे, कुक्षः–गर्भः, कुक्ष-गर्तः । कृतैत् छेदने, कृत्सः–गोत्रकृत्, ओदनं, वक्त्रं, दुःखजातं च । ओव्रश्चौत् छेदने, वृक्षः–पादपः । उन्दैप् क्लेदने उत्सः–समुद्रः, आकाशं, जलं, जलाशयश्च, उत्सं-स्रोतः । शृश् हिंसायाम्, शीर्षं–शिरः ॥५६७॥

गुधि–गृधेस्त च ॥५६८॥

आभ्यां कित् सः प्रत्ययस्तकारश्चान्तादेशो भवति । गुधच् परिवेष्टने, गुत्सः–रोषः, तृणजातिश्च । गृधूच् अभिकाङ्क्षायाम्, गृत्सः–विप्रः, श्वा, गृध्रः, अभिलाषश्च । तकारविधानमादिचतुर्थबाधनार्थम् ॥५६८॥

तप्यणि-पन्यल्यवि-रधि- नभि-नम्यमि-चमि-तमि-चट्यति-पतेरसः ॥५६९॥

एभ्योऽसः प्रत्ययो भवति । तपं संतापे, तपसः–आदित्यः, पशुः, धर्मः, घर्मश्च । अण शब्दे, अणसः–शकुनिः । पनि स्तुतौ, पनसः–फलवृक्षः । अली भूषणादौ, अलसः–निरुत्साहः । अव रक्षणादौ, अवसः–भानुः, राजा च, अवसं–चापं, पाथेयं च । रधौच् हिंसासंराद्ध्योः, रध इटि तु परोक्षायामेव इति नागमे, रन्धसः–अन्धकजातिः । णभच् हिंसायाम्, नभसः–ऋतुः, आकाशः, समुद्रश्च । णमं प्रह्वत्वे, नमसः–वेत्रः, प्रणामश्च । अम गतौ, अमसः–कालः, आहारः, संसारः, रोगश्च । चमू अदने, चमसः–सोमपात्रम्, मन्त्रपूतं, पिष्टं च । चमसी–मुद्गादिभित्तकृता । तमूच् काङ्क्षायाम्, तमसः–अन्धकारः, तमसा नाम नदी । चटण् भेदे, चटसः–चर्मपुटः । अत सातत्यगमने, अतसः–वायुः, आत्मा, वनस्पतिश्च, अतसी–औषधिः । पत्लृ गतौ, पतसः–पतङ्गः ॥५६९॥

सृ-वयिभ्यां णित् ॥५७०॥

आभ्यां णिद् असः प्रत्ययो भवति । सृं गतौ, सारसः–पक्षिविशेषः । वयि गतौ, वायसः–काकः ॥५७०॥

वहि-युभ्यां वा ॥५७१॥

आभ्याम् असः प्रत्ययः, स च णिद्वा भवति । वहीं प्रापणे, वाहसः–अनड्वान्, शकटम्, अजगरः, वहनजीवश्च । वहसः–अनड्वान्, शकटश्च । युक् मिश्रणे, यावसं–भक्तम्, तृणम्, मित्र च, यवसम्–अश्वादिघासः, अन्नं च ॥५७१॥

दिवादि–रभि–लभ्युरिभ्यः कित् ॥५७२॥

दिवादिभ्यो रभि-लभ्युरिभ्यश्च किद् असः प्रत्ययो भवति । दीव्यतेः, दिवसः–वासरः । व्रीड्यतेः लत्वे, व्रीलसः–लज्जावान् । नृत्यतेः, नृतसः–नर्तकः । क्षिप्यतेः, क्षिपसः–योद्धा । सीव्यतेः, सिवसः–श्लोकः, वस्त्रं च । श्रीव्यतेः, श्रिवसः–गतिमान् । इष्यतेः, इषसः–इष्वाचार्यः । रभि राभस्ये, रभसः–संरम्भः, उद्धर्षः, अगम्भीरश्च । डुलभिष् प्राप्तौ, लभसः–याचकः, प्राप्तिश्च । उरिः सौत्रः, उरसः–ऋषिः ॥५७२॥

फनस-तामरसादयः ॥५७३॥

फनसादयः शब्दा असप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । फण गतौ नश्च, फनसः–पनसः । तमेररोऽन्तो वृद्धिश्च, तामरसं–पद्मम् । आदिग्रहणात् कीकस-वुक्कसादयो भवन्ति ॥५७३॥

यु-वलिभ्यामासः ॥५७४॥

आभ्याम् आसः प्रत्ययो भवति । युक् मिश्रणे, यवासः–दुरालभा । बल प्राणन-धान्यावरोधयोः, बलासः–श्लेष्मा ॥५७४॥

किलेः कित् ॥५७५॥

किलत् श्वैत्य-क्रीडनयोः, इत्यस्मात् किद् आसः प्रत्ययो भवति । किलासं–सिध्मम्, किलासी–पाककर्परम् ॥५७५॥

तलि-कसिभ्यामीसण् ॥५७६॥

आभ्याम् ईसण् प्रत्ययो भवति । तलण् प्रतिष्ठायाम्, तालीसं–गन्धद्रव्यम् । कस गतौ, कासीसं–धातुजमौषधम् ॥५७६॥

सेर्डित् ॥५७७॥

षिग्ट् बन्धने, इत्यस्मात् डिद् ईसण् प्रत्ययो भवति । सीसं–लोहजातिः ॥५७७॥

त्रपेरुसः ॥५७८॥

त्रपौषि लज्जायाम्, इत्यस्माद् उसः प्रत्ययो भवति । त्रपुसं–कर्कटिका । विधानसामर्थ्यात् षत्वाभावः ॥५७८॥

Aho ! Shrutgyanam

पटि-वीभ्यां टिसडिसौ ।।५७९।।

आभ्यां यथासंख्यं टिसो डिद् इसश्च प्रत्ययो भवति । पट गतौ, पट्टिसः–आयुधविशेषः । वींक् प्रजननादौ, बिसं–मृणालम् ।।५७९।।

तसः ।।५८०।।

पटि-वीभ्यां तसः प्रत्ययो भवति । पट्टसः–त्रिशूलम् । वेतसः–वानीरः ।।५८०।।

इणः ।।५८१।।

एतेस्तसः प्रत्ययो भवति । एतसः–अध्वर्युः ।।५८१।।

पीङो नसक् ।।५८२।।

पीङ्च् पाने, इत्यस्मात् किन्नसः प्रत्ययो भवति । पीनसः–श्लेष्मा ।।५८२।।

कृ-कुरिभ्यां पासः ।।५८३।।

आभ्यां पासः प्रत्ययो भवति । डुकृंग् करणे, कर्पासः–पिचुप्रकृतिः, वीरुच्च । कुरत् शब्दे, कूर्पासः–कञ्चुकः ।।५८३।।

कलि-कुलिभ्यां मासक् ।।५८४।।

आभ्यां किद् मासः प्रत्ययो भवति । कलि शब्द-संख्यानयोः, कल्मासं–शबलम् । कुल बन्धु-संस्त्यानयोः, कुल्मासः–अर्धस्विन्नं माषादि ।।५८४।।

अलेरम्बुसः ।।५८५।।

अली भूषणादौ, इत्यस्माद् अम्बुसः प्रत्ययो भवति । अलम्बुसः–यातुधानः, अलम्बुसा नाम औषधिः ।।५८५।।

लूगो हः ।।५८६।।

लुनातेर्हः प्रत्ययो भवति । लोहं–सुवर्णादि ।।५८६।।

कितो गे च ।।५८७।।

कित् निवासे, इत्यस्मात् हः प्रत्ययो भवत्यस्य च गे इत्यादेशो भवति । गेहं–गृहम् ।।५८७।।

हिंसेः सिम् च ।।५८८।।

हिंसुप् हिंसायाम्, इत्यस्माद् हः प्रत्ययो भवत्यस्य च सिमित्यादेशो भवति । सिंहः–मृगराजः ।।५८८।।

कृ–पृ–कटि–पटि–मटि–लटि–ललि–पलि–कल्य-नि–रगि–लगेरहः ।।५८९।।

एभ्यः अहः प्रत्ययो भवति । कृत् विक्षेपे, करहः–धान्यावपनम् । पृश् पालनपूरणयोः, परहः–शंकरः । कटे वर्षावरणयोः, कटहः–पर्जन्यः, कर्णवच्च कालायसभाजनम् । पट गतौ, पटहः–वाद्यविशेषः । मट सादे सौत्रः, मटहः–ह्रस्वः । लट बाल्ये, लटति–विलसति, लटहः–विलासवान् । ललिण् ईप्सायाम्, ललहः–लीलावान् । पल गतौ, पलहः–आवापः । कलि शब्दसंख्यानयोः, कलहः–युद्धम् । अनक् प्राणने, अनहः–नीरोगः । रगे शङ्कायाम्, रगहः–नटः । लगे सङ्गे, लगहः–मन्दः ।।५८९।।

पुलेः कित् ।।५९०।।

पुल महत्वे, इत्यस्मात् किद् अहः प्रत्ययो भवति । पुलहः–प्रजापतिः ।।५९०।।

वृ-कटि-शमिभ्य आहः ।।५९१।।

एभ्य आहः प्रत्ययो भवति । वृगट् वरणे, वराहः–सूकरः । कटे वर्षावरणयोः, कटाहः–कर्णवत् कालायस-भाजनम् । शमूच् उपशमे, शमाहः–आश्रमः ।।५९१।।

विलेः कित् ।।५९२।।

विलत् वरणे, इत्यस्मात् किद् आहः प्रत्ययो भवति । विलाहः–रहः ।।५९२।।

निर इण ऊहश् ।।५९३।।

निर्पूर्वात् इंणक् गतौ, इत्यस्मात् शिद् ऊहः प्रत्ययो भवति । निर्यूहः–सौधादिकाष्ठनिर्गमः ।।५९३।।

दस्त्यूहः ।।५९४।।

ददातेः त्यूहः प्रत्ययो भवति । दात्यूहः–पक्षिविशेषः ।।५९४।।

अनेरोकहः ।।५९५।।

अनक् प्राणने, इत्यस्मादोकहः प्रत्ययो भवति । अनोकहः–वृक्षः ।।५९५।।

वलेरक्षः ।।५९६।

वलि संवरणे, इत्यस्माद् अक्षः प्रत्ययो भवति । वलक्षः–शुक्लः ।।५९६।।

लाक्षा-द्राक्षामिक्षादयः ।।५९७।।

लाक्षादयः शब्दा अक्षप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । लसेरा च, लाक्षा–जतु । रसेर्द्रा च, द्राक्षा–मृद्वीका । आङ् पूर्वान्मृदेरन्त्य-स्वरादेर्लुक् प्रत्ययादेरित्वं च । आमिक्षा–हविर्विशेषः । आदिग्रहणात् चुप मन्दायां गतौ इत्यस्य चोक्षः–ग्रामरागः, शुद्धं च । एवं पीयूक्षादयोऽपि भवन्ति ।।५९७।।

Aho ! Shrutgyanam

समिण्-निकषिभ्यामाः ॥५९८॥

सम्पूर्वादिण्क् गतौ, इत्यस्माद् निपूर्वात् कष हिंसायाम्, इत्यस्माच्च आः प्रत्ययो भवति । समया पर्वतम्, निकषा पर्वतम् । समीप-असूयावाचिनावेतौ ॥५९८॥

दिवि-पुरि-वृषि-मृषिभ्यः कित् ॥५९९॥

एभ्यः किद् आः प्रत्ययो भवति । दिवूच् क्रीडा-जयेच्छा-पणि-द्युति-स्तुति-गतिषु, दिवा–अहः । पुरत् अग्रगमने, पुरा–भूतकालवाचि । वृषू-सेचने, वृषा–प्रबलमित्यर्थः । मृषीच् तितिक्षायाम्, मृषा–अभूतमित्यर्थः ॥५९९॥

वेः साहाभ्याम् ॥६००॥

विपूर्वाभ्यां षोंच् अन्तकर्मणि, ओहांक् त्यागे, इत्येताभ्याम् आः प्रत्ययो भवति । विसाः–चन्द्रमाः, बुद्धिश्च । तालव्यान्तोऽयमित्येके विहाः–विहगः, स्वर्गश्च ॥६००॥

वृ-मिथि-दिशिभ्यस्थ-य-ट्याश्चान्ताः ॥६०१॥

एभ्यः किद् आः प्रत्ययो भवति । यथासंख्यं थकार-यकार-ट्यकाराश्चान्ता भवन्ति । वृग्ट् वरणे, वृथा–अनर्थकम् । मिथृग् मेधा-हिंसयोः, मिथ्या–मृषा, निष्फलं च । दिशींत् अतिसर्जने, दिष्ट्या–प्रीतिवचनम् ॥६०१॥

मुचि-स्वदेर्ध च ॥६०२॥

आभ्यां किद् आः प्रत्ययो भवति, धकारश्चान्तस्य भवति । मुच्लृंती मोक्षणे, मुधा–अनिमित्तम् । ष्वदि आस्वादने, स्वधा–पितृबलिः ॥६०२॥

सोर्ब्रूग आह च ॥६०३॥

सुपूर्वात् ब्रूतेः आः प्रत्ययो भवत्यस्य चाहादेशो भवति । स्वाहा–देवतातर्पणम् ॥६०३॥

सनि-क्षमि-दुषेः ॥६०४॥

एभ्यो धातुभ्य आः प्रत्ययो भवति । षणूयी दाने, सना–नित्यम् । क्षमौषि सहने, क्षमा–भूः, क्षान्तिश्च । दुषंच् वैकृत्ये, दोषा–रात्रिः ॥६०४॥

डित् ॥६०५॥

धातोर्बहुलम् आः प्रत्ययो भवति, स च डिद् भवति । मनिच् ज्ञाने, मा–निषेधे । षोंच् अन्तकर्मणि, सा–अवसानम् । अनक् प्राणने, आ–स्मरणादौ । प्रीङ्च् प्रीतौ, प्रा–स्मयने । हनंक् हिंसागत्योः, हा–विषादे । वन भक्तौ, वा–विकल्पे । रांक् दाने, रा–दीप्तिः । भांक् दीप्तौ, भा–कान्तिः, सहपूर्वः सभा–परिषत् । नाम्नीति सहस्य सः ॥६०५॥

स्वरेभ्य इः ॥६०६॥

स्वरान्तेभ्यो धातुभ्य इः प्रत्ययो भवति । जिं अभिभवे, जयिः–राजा । हिंट् गति-वृद्ध्योः, हयिः–कामः । रुक् शब्दे, रविः–सूर्यः । कुंक् शब्दे, कविः–काव्यकर्ता । ष्टुंगक् स्तुतौ, स्तविः–उद्गाता । लूगश् छेदने, लविः–दात्रम् । पूगश् पवने, पविः–वायुः, वज्रं, पवित्रं च । भू सत्तायाम्, भविः–सत्ता चन्द्रः, विधिश्च । ऋंक् गतौ, अरिः–शत्रुः । हृंग् हरणे, हरिः–इन्द्रः, विष्णुः, चन्दनम्, मर्कटादिश्च । हरयः–शक्राश्वाः । डुडुभृंगक् पोषणे च, भरिः–वसुधा । सृं गतौ, सरिः–मेघः । पॄश् पालनपूरणयोः, परिः–भूमिः । तॄ प्लवनतरणयोः, तरिः–नौः । दॄश् विदारणे, दरिः–महाभिदा । मॄश् हिंसायाम्, ण्यन्तः, मारिः–अशिवम् । वृगश् वरणे, वरिः–विष्णुः । ण्यन्ताद् वारिः–हस्तिबन्धनम्, वारि–जलम् ॥६०६॥

पदि–पठि–पचि–स्थलि–हलि–कलि–बलि–वलि–वल्लि–पल्लि–कटि–चटि–वटि–वधि–गाध्यर्चि–वन्दि–नन्द्यवि–वशि–वाशि–काशि–छर्दि–तन्त्रि–मन्त्रि–खण्डि–मण्डि–चण्डि–यत्यङ्गि–मस्यसि–वनि–ध्वनि–सनि–गमि–तमि–ग्रन्थि–श्रन्थि–जनि–मण्यादिभ्यः॥६०७॥

एभ्यः इः प्रत्ययो भवति । पदिच् गतौ, पदिः–राशिः, मोक्षमार्गश्च । पठ व्यक्तायां वाचि, पठिः–विद्वान् । डुपचींष् पाके, पचिः–अग्निः । ष्ठल स्थाने, स्थलिः–दानशाला । हल विलेखने, हलिः–हलः । कलि शब्दसंख्यानयोः, कलिः–कलहः, युगं च । बल प्राणनधान्यावरोधयोः, बलिः–देवतोपहारः दानवश्च । वलि वल्लि संवरणे, वलिः–त्वक्तरङ्गः । वल्लिः–हिरण्यशलाका, लता च । पल्ल गतौ, पल्लिः–मुनीनामाश्रमः, व्याधसंस्त्यायश्च । कटे वर्षावरणयोः, कटिः–स्वाङ्गम् । चटण् भेदे, चटिः–वर्णः । वट वेष्टने, वटिः–गुलिका, तन्तुः, शूना च, नाभिः, वर्णश्च । बधि बन्धने, बधिः–क्रियाशब्दः । गाधृङ् प्रतिष्ठालिप्साग्रन्थेषु, गाधिः–विश्वामित्रपिता । अर्च पूजायाम्, अर्चिः–अग्निशिखा । वदुङ् स्तुत्यभिवादनयोः, वन्दिः–ग्रहणिः । टुनदु समृद्धौ, नन्दि–ईश्वरप्रतीहारः, भेरिश्च । अव रक्षणादौ, अविः–ऊर्णायुः । वशक् कान्तौ, वशिः–वशिता । वाशिच् शब्दे, वाशिः–प्रकान्तिः, रश्मिः–गोमायुः, अग्निः, शब्दः, प्रजननप्राप्ता चतुष्पात्, जलदश्च । काशृङ् दीप्तौ, काशयः–जनपदः । छर्दण् वमने, छर्दिः–वमनम् । तन्त्रिण् कुटुम्बधारणे, तन्त्रिः–वीणासूत्रम् । मन्त्रिण् गुप्तभाषणे, मन्त्रिः–सचिवः । खडुण्

Aho ! Shrutgyanam

भेदे, खण्डिः–प्रद्वारम् । मडु भूषायाम्, मण्डिः–मृद्भाजनपिधानम् । चडुङ् कोपे, चण्डिः–भामिनी । यतैङ् प्रयत्ने, यतिः–भिक्षुः । अञ्जौप् व्यक्तिम्रक्षणगतिषु, अञ्जिः–सजः, पेषणी, पेजः, गतिश्च, समञ्जिः, शिश्नः । मसैच् परिणामे, मसिः–शस्त्री । असूच् क्षेपणे, असिः–खड्गः । वनूयी याचने, वनिः–साधुः, याच्ञा, शकुनिः, अग्निश्च । ध्वन शब्दे, ध्वनिः–नादः । षण भक्तौ, सनिः–संभक्ता, पन्थाः, दानं, म्लेच्छः, नदीतटं च । गम्लृं गतौ, गमिः–आचार्यः । तमूच् काङ्क्षायाम्, तमिः–अलसः । ग्रन्थश् संदर्भे, श्रन्थश् मोचनप्रतिहर्षयोः, ग्रन्थिः, श्रन्थिश्च–पर्वसंध्यादि । जनैचि प्रादुर्भावे, जनिः–वधूः, कुलाङ्गना, भगिनी, प्रादुर्भावश्च । मण शब्दे, मणिः–रत्नम् । आदिग्रहणात् वहीं प्रापणे, वहिः–अश्वः । खाद् भक्षणे, खादिः–श्वा । दधि धारणे, दधि–क्षीरविकारः । खल संचये च, खलिः–पिण्याकः । शचि व्यक्तायां वाचि, शची–इन्द्राणी, इतोऽक्त्यर्थात् इति गौरादित्वाद् वा ङीः इत्यादयोऽपि भवन्ति ॥६०७॥

किलि-पिलि-पिशि-चिटि-त्रुटि-शुण्ठि-तुण्डि-कुण्डि-भण्डि-हुण्डि-हिण्डि-पिण्डि-चुल्लि-बुधि-मिथि-रुहि-दिवि-कीर्त्यादिभ्यः ॥६०८॥

एभ्यः इः प्रत्ययो भवति । किलत् श्वैत्य-क्रीडनयोः, केलिः–क्रीडा । पिलण् क्षेपे, पेलिः–क्षुद्रपेला । पिशत् अवयवे, पेशिः–मांसखण्डम् । चिट प्रेष्ये, चेटिः–दारिका, प्रेष्या च । त्रुटत् छेदने, ण्यन्तः, त्रोटिः–चञ्चुः । शुठु शोषणे, शुण्ठिः–विश्वभेषजम् । तुडुङ् तोडने, तुण्डिः–आस्यम्, प्रवृद्धा च नाभिः । कुडुङ् दाहे, कुण्डिः–जलभाजनम् । भडुङ् परिभाषणे, भण्डिः–शकटम् हुडुङ् संघाते, हुण्डिः–पिण्डितः, ओदनः । हिडुङ् गतौ च, हिण्डिः–रात्रौ रक्षाचारः । पिडुङ् संघाते, पिण्डिः–निष्पीडितस्नेहपिण्डः । चुल्ल हावकरणे, चुल्लिः–रन्धनस्थानम् । बुधिच् ज्ञाने, बोधिः–सम्यग्ज्ञानम् । मिथृङ्–मेधा-हिंसयोः, मेथिः–खलमध्यस्थूणा । रुहं बीजजन्मनि, रोहिः–सस्यं, जन्म च । दिवूच् क्रीडादौ, देविः–भूमिः । कृतण् संशब्दने, णिजन्तः कीर्तिः–यशः । आदिग्रहणादन्येऽपि ॥६०८॥

नाम्युपान्त्यकॄ-गॄ-शॄ-पॄ-पूङ्भ्यः कित् ॥६०९॥

नाम्युपान्त्येभ्यः क्रादिभ्यश्च किदिः प्रत्ययो भवति । लिखत् अक्षरविन्यासे, लिखिः–शिल्पम् । शुच् शोके, शुचिः–पूतः, विद्वान्, धर्मः, आषाढश्च । रुचि अभिप्रीत्यां च, रुचिः–दीप्तिः, अभिलाषश्च । भुजंप् पालनाभ्यवहारयोः, भुजिः–अग्निः, राजा, कुटिलं च । कुणत् शब्दोपकरणयोः, कुणिः–विकलो हस्तः, हस्तविकलश्च । सृजंत् विसर्गे, सृजिः–पन्थाः । द्युतिः–दीप्तौ, द्युतिः–दीप्तिः । ऋत् घृणागतिस्पर्धेषु, ऋतिः–यतिः । छिदृंपी द्वैधीकरणे, छिदिः–छेत्ता–पर्शुश्च । मुदि हर्षे, मुदिः–बालः । भिदृंपी विदारणे, भिदिः–वज्रं, सूचकः, भेत्ता च । ऊछृदृपी दीप्तिदेवनयोः, छृदिः–रथकारः । लिपींत् उपदेहे, लिपिः–अक्षरजातिः । तुर्–त्वरणे सौत्रः, तुरिः–तन्तुवायोपकरणम् । डुलण् उत्क्षेपे, डुलिः–कच्छपः । त्विषीं दीप्तौ, त्विषिः–दीप्तिः, त्विषिमान् राजवर्चस्वी च । कृषींत् विलेखने, कृषिः–कर्षणम्–कर्षणभूमिश्च । ऋषैत् गतौ, ऋषिः–मुनिः, वेदश्च । कुषश् निष्कर्षे, कुषिः–शुषिरम् । शुषंच् शोषणे, शुषिः–छिद्रम्, शोषणं च । हृषू अलीके, हृषिः–अलीकवादी, दीप्तिः, तुष्टिश्च । ष्णुहौच् उद्गिरणे, स्नुहिः–वृक्षः । कॄत् विक्षेपे, किरिः–सूकरः, मूषिकः, गन्धर्वः, गर्तश्च । गॄत् निगरणे, गिरिः–नगः, कन्दुकश्च । शॄश् हिंसायाम्, शिरिः–हिंस्रः, खड्गः, शोकः, पाषाणश्च । पॄश् पालनपूरणयोः, पुरिः–नगरं, राजा, पूरयिता च । पूङ् पवने, पुविः–वातः ॥६०९॥

विदि–वृतेर्वा ॥६१०॥

आभ्याम् इः प्रत्ययो भवति, स च किद्वा । विदक् ज्ञाने, विदिः–शिल्पी, वेदिः–इज्यादिस्थानम् । वृतूङ् वर्तने, वृतिः–कण्टकशाखावरणम् । निर्वृतिः–सुखम्, वर्तिः–द्रव्यम्, दीपाङ्गं च ॥६१०॥

तॄ–भ्रम्याद्यापि–दम्भिभ्यस्तित्तिर–भृमाधाप-देभाश्च ॥६११॥

एभ्यः किद् इः प्रत्ययो भवति । एषां च यथासंख्यं तित्तिर–भृम–अध–अप–देभ इत्यादेशा भवन्ति । तॄ प्लवनतरणयोः, तित्तिरिः–पक्षिजातिः, प्रवक्ता च वेदशाखायाः । भ्रमू चलने, भृमिः–वायुः, हस्ती, जलं च । बाहुलकाद् भृमादेशाभावे, भ्रमिः–भ्रमः । अदं प्सांक् भक्षणे, अधि–उपरिभावे, अध्यागच्छति । आपलृंट् व्याप्तौ, अपि–समुच्चयादौ, प्लक्षोऽपि–न्यग्रोधोऽपि । दम्भूट दम्भे, देभिः–शरासनम् ॥६११॥

मने–रुदेतौ चास्य वा ॥६१२॥

मनिच् ज्ञाने, इत्यस्माद् इः प्रत्ययो भवत्यकारस्य च ऊकारैकारौ वा भवतः । मूनिः–ज्ञानवान् । मेनिः–संकल्पः । मनिः–धूमवर्तिः ॥६१२॥

Aho ! Shrutgyanam

क्रमि-तमि-स्तम्भेरिच्च नमेस्तु वा ।।६१३।।

एभ्यः किद् इः प्रत्ययोभवत्यकारस्य चेकारो भवति । नमेः पुनरकारस्येकारो विकल्पेन, क्रमू पादविक्षेपे, क्रिमिः–क्षुद्रजन्तुः । तमूच् काङ्क्षायाम्, तिमिः-महामत्स्यः । स्तम्भिः सौत्रः, स्तिभिः–केतकादिसूची, हृदयं, समुद्रश्च । णमं प्रह्वत्वे, निमिः–राजा, नमिः–विद्याधरणामाद्यः तीर्थकरश्च ।।६१३।।

आम्भ कुण्ठि-कम्प्यंहिभ्यो नलुक् च ।।६१४।।

एभ्य इः प्रत्ययो नकारस्य च लुग् भवति । अभूङ् शब्दे, अभि आभिमुख्येऽव्ययम्, अभ्यग्नि शलभाः पतन्ति । कुठु आलस्ये च, कुठिः–वृक्षः, पापं, वृषलः, देहः, गेहं कुठारश्च । कपुङ् चलने, कपिः, अग्निः, वानरश्च । अहुङ् गतौ, अहिः–सर्पः, वृत्रः, वप्रश्च ।।६१४।।

उभेर्द्वत्रौ च ।।६१५।।

उभत् पूरणे, इत्यस्माद् इः प्रत्ययो भवत्यस्य च द्व-त्रौ इत्यादेशौ भवतः । द्वौ द्वितीयः, द्विमुनि व्याकरणस्य । त्रयः तृतीयः, त्रिमुनि व्याकरणस्य ।।६१५।।

नी-वी-प्रहृभ्यो डित् ।।६१६।।

एभ्यो डिद् इः प्रत्ययो भवति । णींग् प्रापणे, निर्वसति । वीक् प्रजननादौ, विः–तन्तुवायः, पक्षी, उपसर्गश्च, यथा विभवति । हृग् हरणे, प्रपूर्वः, प्रहिः–कूपः, उदपानं च ।।६१६।।

वौ रिचेः स्वरान्नोऽन्तश्च ।।६१७।।

वावुपसर्गे सति रिचृंपी विरेचने, इत्यस्माद् इः प्रत्ययः स्वरात्परो नोऽन्तश्च भवति । विरिञ्चिः–ब्रह्मा ।।६१७।।

कमि-वमि-जमि-घसि-शलि-फलि-तलि-तडि-वजि-व्रजि-ध्वजि-राजि-पणि-वणि-वदि-सदि-हदि-हनि-सहि-वहि-तपि-वपि-भटि-कञ्चि-संपतिभ्यो णित् ।।६१८।।

एभ्यो णिद् इः प्रत्ययो भवति । कमूङ् कान्तौ, कामिः–वसुकः, कामी च । टुवमू उद्गिरणे, वामिः–स्त्री । जमू अदने, जामिः–भगिनी, तृणं, जनपदश्चैकः । घस्लृं अदने, घासिः–संग्रामः, गर्तः, अग्निः, बहुभुक् च । शल गतौ, शालिः–व्रीहिराजः । फल निष्पत्तौ, फालिः–दलम् । तलण् प्रतिष्ठायाम्, तालिः–वृक्षजातिः । तडण् आघाते, ताडिः–स एव । वज व्रज ध्वज गतौ, वाजिः–अश्वः, पुङ्खावसानं च । व्राजिः–पद्धतिः, पिटकजातिश्च । ध्वाजिः–पताका, अश्वश्च । राजृग् दीप्तौ, राजिः–पङ्क्तिः, लेखा च । पणि व्यवहारस्तुत्योः, पाणिः–करः । वण शब्दे, वाणिः–वाक्, ङ्याम् वाणी । वद व्यक्तायां वाचि, वादिः–वाग्मी, वीणा च । षद्लृं विशरणगत्यवसादनेषु, सादिः–अश्वारोहः, सारथिश्च । हदिं पुरीषोत्सर्गे, हादिः–लूता । हनंक् हिंसागत्योः, घातिः–प्रहरणम् । केचित्तु हानिः–अर्थनाशः, उच्छित्तिश्चेति, उदाहरन्ति तत्र बाहुलकात् 'ञ्णिति घात्' इति घाद् न भवति । बाहुलकादेव णित्वविकल्पे, हनिः–आयुधम् । षहि मर्षणे, साहिः–शैलः । वहीं प्रापणे, वाहिः–अनड्वान् । तपं संतापे, तापिः–दानवः । डुवपीं बीजसंताने, वापिः–पुष्करिणी । भट भृतौ, भाटिः–सुरतमूल्यम् । कचुङ् दीप्तौ काञ्चिः–मेखला, पुरी च । णित्–करणादनुपान्त्यस्यापि वृद्धिः । पतॢं गतौ, संपूर्वः संपातिः–पक्षिराजः ।।६१८।।

कृ-शृ-कुटि-ग्रहि-खन्यणि-कष्यलि-पलि-चरि-वसि-गण्डिभ्यो वा ।।६१९।।

एभ्य इः प्रत्ययः स च णिद्वा भवति । डुकृंग् करणे, कारिः–शिल्पी । करिः–हस्ती, विष्णुश्च । शृश् हिंसायाम्, शारिः–द्यूतप्रकरणम्, हस्तिपर्याणम्, शारिका च । शरिः–हिंसा, शूलश्च । कुटत् कौटिल्ये, कोटिः–अस्त्रः, अग्रभागः, अष्टमं चाङ्कस्थानं च, कुटिः–गृहं, शरीराङ्गं च । ग्रहीश् उपादाने, ग्राहिः–पतिः, ग्रहिः–वेणुः । खनूग् अवदारणे, खानिः–खनिश्च, निधिः, आकरः, तडागं च । अण शब्दे आणिः, अणिश्च–द्वारकीलिका । कष हिंसायाम्, कषिः–निकषोपलम्, काष्ठम्, अश्वकर्णः, खनित्रं च । अली भूषणादौ, आलिः–पङ्क्तिः, सखी च, अलिः–भ्रमरः । पल गतौ, पालिः–जलसेतुः, कर्णपर्यन्तश्च, पलिः–संस्त्यायः । चर भक्षणे च, चारिः–पशूनां भक्ष्यम्, चरिः–प्राकारशिखरम्, विषयः–वायुः पशुः, केशोर्णा च । वसं निवासे, वासिः–तक्षोपकरणम्, वसिः–शय्या, अग्निः, गृहं, रात्रिश्च । गडु वदनैकदेशे, गण्डिः–गण्डिका । णित्वपक्षे तु अनुपान्त्यस्यापि वृद्धौ गाण्डिः–धनुष्पर्वं ।।६१९।।

पादाच्चात्यजिभ्याम् ।।६२०।।

पादशब्दपूर्वाभ्यां केवलाभ्यां चाऽत्यजिभ्यां णिद् इः प्रत्ययो भवति । अत सातत्यगमने, अज क्षेपणे च । पादाभ्यामतत्यजति वा पदाजिः, पदातिः । पदः पादस्याज्यातिगोपहते इति पदभावः । उभावपि पत्तिवाचिनौ । आतिः–पक्षी, सुपूर्वात् स्वातिः–वायव्यनक्षत्रम् । आजिः–संग्रामः–स्पर्धाऽवधिश्च ।।६२०।।

Aho ! Shrutgyanam

नहेर्भ च ॥६२१॥

णहींच् बन्धने, इत्यस्माण्णिद् इः प्रत्ययो भवति । भकारश्चान्तादेशो भवति । नाभिः–अन्त्यकुलकरः, चक्रमध्यं, शरीरावयवश्च ॥६२१॥

अशो रश्चादिः ॥६२२॥

अशौटि व्याप्तौ, इत्यस्माण्णिद् इः प्रत्ययो भवति रेफश्च धातोरादिर्भवति । राशिः–समूहः, नक्षत्रपादनवकरूपश्च मेषादिः ॥६२२॥

कायः किरिच्च वा ॥६२३॥

कैं शब्दे, इत्यस्मात् किः प्रत्ययो भवति । इकारश्चान्तादेशो वा भवति । किकिः–पक्षी, विद्वांश्च । काकिः–स्वरदोषः ॥६२३॥

वर्द्धेरकिः ॥६२४॥

वर्धण् छेदनपूरणयोः, इत्यस्माद् अकिः प्रत्ययो भवति । वर्धकिः–तक्षा ॥६२४॥

सनेर्डखिः ॥६२५॥

षणूयी दाने, इत्यस्माद् डिद् अखिः प्रत्ययो भवति । सखा–मित्रम्, सखायौ, सखायः ॥६२५॥

कोर्डिखिः ॥६२६॥

कुंक् शब्दे, इत्यस्माद् डिद् इखिः प्रत्ययो भवति । किखिः–लोमसिका ॥६२६॥

मृ–श्वि–कण्यणि–दध्यविभ्य ईचिः ॥६२७॥

एभ्य ईचिः प्रत्ययो भवति । मृंत् प्राणत्यागे, मरीचिः–मुनिः, मयूखश्च । ट्वोश्वि गतिवृद्ध्योः, श्वयीचिः–चन्द्रः, श्वयथुश्च । कण अण शब्दे, कणीचिः–प्राणी, लता, चक्षुः, शकटं, शङ्खश्च । अणीचिः–वेणुः, शाकटिकश्च । दधि धारणे, दधीचिः–राजर्षिः । अव रक्षणादौ, अवीचिः–नरकविशेषः ॥६२७॥

वेगो डित् ॥६२८॥

वेंग् तन्तुसंताने, इत्यस्माद् डिद् ईचिः प्रत्ययो भवति । वीचिः–ऊर्मिः ॥६२८॥

वर्णेर्णित् ॥६२९॥

वण शब्दे, इत्यस्माद् णिद् ईचिः प्रत्ययो भवति । वाणीचिः–छाया, व्याधिश्च ॥६२९॥

कृपि–शकिभ्यामटिः ॥६३०॥

आभ्याम् अटिः प्रत्ययो भवति । कृपौङ् सामर्थ्ये, कर्पटिः–निःस्वः । शक्लृंट् शक्तौ, शकटिः–शकटम् ॥६३०॥

श्रेढिः ॥६३१॥

श्रिग् सेवायाम्, इत्यस्माद् ढिः प्रत्ययो भवति । श्रेढिः–गणितव्यवहारः ॥६३१॥

चमेरुच्चातः ॥६३२॥

चमू अदने, इत्यस्माद् ढिः प्रत्ययो भवत्यस्योकारश्च । चुण्ढिः–क्षुद्रवापी ॥६३२॥

मुषेरुण् चान्तः ॥६३३॥

मुषश् स्तेये, इत्यस्माद् ढिः प्रत्यय उण् चान्तो भवति । मुषुण्ढिः–प्रहरणम् । उणो न गुणो विधानसामर्थ्यात् ॥६३३॥

का–वा–वी–क्री–श्रि–श्रु–क्षु–ज्वरि–तूरि–चूरि–पूरिभ्यो णिः ॥६३४॥

एभ्यो णिः प्रत्ययो भवति । कै शब्दे, काणिः–वैलक्ष्यानुसर्पणम् । वेंग् तन्तुसन्ताने, वाणिः–व्यूतिः । वींक् प्रजननादौ, वेणिः–कबरी । डुक्रींग्श् द्रव्यविनिमये, क्रेणिः–क्रयविशेषः । श्रिग् सेवायाम्, श्रेणिः–पङ्क्तिः, बलविशेषश्च, श्रेणयः–अष्टादश गणविशेषाः । निपूर्वात् निश्रेणिः–संक्रमः । श्रुंट् श्रवणे, श्रोणिः–जघनम् । टुक्षुक् शब्दे क्षोणिः–पृथ्वी । ज्वर–रोगे, जूर्णिः–ज्वरः, वायुः, आदित्यः, अग्निः, शरीरं, ब्रह्मा, पुराणश्च । तूरैचि त्वरायाम्, तूर्णिः–त्वरा, मनः, शीघ्रश्च । चूरैचि दाहे, चूर्णिः–वृत्तिः । पूरैचि आप्यायने, पूर्णिः–पूरः ॥६३४॥

ऋत्–घृ–सृ–कु–वृषिभ्यः कित् ॥६३५॥

ऋकारान्तेभ्यो घृ इत्यादिभ्यश्च किद् णिः प्रत्ययो भवति । शॄश् हिंसायाम् शीर्णिः–रोगः, अवयवश्च । स्तॄग्श् आच्छादने, स्तीर्णिः–संस्तरः । घृं सेचने, घृणिः–रश्मिः, ज्वाला, निदाघश्च । सृं गतौ सृणिः–आदित्यः, वज्रम्, अनिलः, अङ्कुशः, अग्निश्च । कुंङ् शब्दे, कुणिः–विकलो हस्तः, हस्तविकलश्च । वृषू सेचने, वृष्णिः–वस्नः, मेषः, यदुविशेषश्च । पर्वतेरपीच्छन्त्येके । पृष्णिः–रश्मिः ॥६३५॥

पृषि–हृषिभ्यां वृद्धिश्च ॥६३६॥

आभ्यां णिः प्रत्ययोऽनयोश्च वृद्धिर्भवति । पृषू सेचने, पार्ष्णिः–पादपश्चाद्भागः, पृष्ठप्रदेशश्च । हृषंच् तुष्टौ, हार्ष्णिः–हरणम् ॥६३६॥

हूर्णिः–धूर्णि–भूर्णि–घूर्ण्यादयः ॥६३७॥

एते णिप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । हृंग् हरणे, धृंग् धारणे, भू सत्तायाम् घृं सेचने, ऊत्वं रश्चान्तो निपात्यन्ते । हूर्णिः–

Aho ! Shrutgyanam

कुल्या । धूर्णिः–धृतिः । भूर्णिः–चेतनं, भूमिः, कालश्च । घूर्णिः–भ्रमः । आदिग्रहणादन्येऽपि ॥६३७॥

ऋ–हृ–सृ–मृ–धृ–भृ–कृ–तॄ–ग्रहेरणिः ॥६३८॥

एभ्योऽणिः प्रत्ययो भवति । ऋंक् गतौ, अरणिः–अग्निमन्थनकाष्ठम् । हृंग् हरणे, हरणिः–कुल्या, मृत्युश्च । सृं गतौ, सरणिः–ईषद् गतिः, पन्थाः, आदित्यः, शिरासंघातश्च । मृंत् प्राणत्यागे, मरणिः–रात्रिः । धृंग् धारणे, धरणिः–क्षितिः । डुडुभृंग्क् पोषणे च, भरणिः–नक्षत्रम् । डुकृंग् करणे, करणिः–सादृश्यम् । तॄ प्लवन-तरणयोः, तरणिः–संक्रमः, आदित्यः, यवागूः, पतितगोरूपोत्थापनी च यष्टिः । वै दुःखार्थे दुःखेन तीर्यत इति, वैतरणी–नदी । ग्रहीश् उपादाने, ग्रहणिः–जठराग्निः, तदाधारो व्याधिः, मेढ्रं, मृत्युश्च ॥६३८॥

कङ्केरिच्चास्य वा ॥६३९॥

ककुङ् गतौ, इत्यस्माद् अणिः प्रत्ययो भवति धातोरस्य चेकारो वा भवति । कङ्कणिः–कङ्कणम्, किङ्कणिः–घण्टा ॥६३९॥

ककेर्णित् ॥६४०॥

ककि लौल्ये, इत्यस्माद् णिद् अणिः प्रत्ययो भवति । काकणिः–मानविशेषः ॥६४०॥

कृषेश्च चादेः ॥६४१॥

कृषींत् विलेखने, इत्यस्माद् अणिः प्रत्ययो भवत्यादेशश्च चकारो भवति । चर्षणिः–चमूः, अग्निः, बुद्धिः, व्यवसायः, वेश्या, वृषश्च ॥६४१॥

क्षिपेः कित् ॥६४२॥

क्षिपींत् प्रेरणे, इत्यस्मात् किद् अणिः प्रत्ययो भवति । क्षिपणिः–आयुधं, बडिशबन्धकः, चर्मकृता पाषाणसर्जनी च ॥६४२॥

आङः कृ–हृ–शुषेः सनः ॥६४३॥

आङः परेभ्यो डुकृंग् करणे, हृंग् हरणे, शुषंच् शोषणे, इत्येतेभ्यः सन्नन्तेभ्योऽणिः प्रत्ययो भवति । आचिकीर्षणिः–व्यवसायः । आजिहीर्षणिः–श्रीः । आशुशुक्षणिः–अग्निः, वायुश्च ॥६४३॥

वारिसर्त्यादेरिणिक् ॥६४४॥

एभ्यः किद् इणिः प्रत्ययो भवति । वृग्ट् वरणे, ण्यन्तः । वारिणिः–पशुः, पशुवृत्तिश्च । सृं गतौ, स्रिणिः–अग्निः, वज्रं च । आदिग्रहणादन्येऽपि ॥६४४॥

अदेस्त्रीणिः ॥६४५॥

अदंक् भक्षणे, इत्यस्मात् त्रीणिः प्रत्ययो भवति । अत्रीणिः–कृमिजातिः ॥६४५॥

प्लु–ज्ञा–यजि–षपि–पदि–वसि–वितसिभ्यस्तिः ॥६४६॥

एभ्यः तिः प्रत्ययो भवति । प्लुङ् गतौ, प्लोतिः–चीरम् । ज्ञांश् अवबोधने, ज्ञायते त्रैलोक्यस्य त्रातेति ज्ञातिः–इक्ष्वाकुर्वृषभः, स्वजनश्च । यजीं देवपूजादौ, यष्टिः–दण्डः, लता च । षप समवाये, सप्तिः–अश्वः । पदिच् गतौ, पत्तिः–पदातिः । वसं निवासे, वस्तिः–मूत्राधारः, चर्मपुटः, स्नेहोपकरणं च । तसूच् उपक्षये, विपूर्वः वितस्तिः–अर्धहस्तः ॥६४६॥

प्रथेर्लुक् च वा ॥६४७॥

प्रथिष् प्रख्याने, इत्यस्मात् तिः प्रत्ययो भवति, अन्तस्य च लुग् वा भवति । वृक्षं प्रति विद्योतते–प्रतिष्ठितः । पक्षे प्रत्तिः–प्रथनं, भागश्च । ॥६४७॥

कोर्यषादिः ॥६४८॥

कुंक् शब्दे, इत्यस्माद् यषादिः तिः प्रत्ययो भवति । कोयष्टिः–पक्षिविशेषः ॥६४८॥

ग्रो गृष् च ॥६४९॥

गृत् निगरणे, इत्यस्मात् तिः प्रत्ययो भवत्यस्य च गृष् इत्यादेशो भवति । गृष्टिः–सकृत् प्रसूता गौः ॥६४९॥

सौरसतेः श्वित् ॥६५०॥

सुपूर्वात् असक् भुवि इत्यस्मात् श्वित् तिः प्रत्ययो भवति । स्वस्ति–कल्याणम् । शित्त्वाद् भूभावाऽल्लुगभावः ॥६५०॥

दृ–मुषि–कृषि–रिषि–विषि–शो–शुच्यशि–पूयीण् प्रभृतिभ्यः कित् ॥६५१॥

एभ्यः कित् तिः प्रत्ययो भवति । दृङ्त् आदरे, दृतिः–छागादित्वङ्मयो जलाधारः । मुषश् स्तेये, मुष्टिः–अङ्गुलिसंनिवेशविशेषः । कृषींत् विलेखने, कृष्टिः–पण्डितः । रिष् हिंसायाम्, रिष्टिः–प्रहरणम् । विष्लृंकी व्याप्तौ, विष्टिः–अचेतनकर्मकरः । शोंच् तक्षणे, शितिः–कृष्णः, कृशश्च । शुच् शोके, शुक्तिः–मुक्तादिः । अशौटि व्याप्तौ, अष्टिः–छन्दोविशेषः । पूयैङ् दुर्गन्धविशरणयोः, पूतिः–दुर्गन्धः, दुष्टम्, तृणजातिश्च । इण्क् गतौ, इतिः–हेत्वादौ । डुडुभृंग्क् पोषणे च प्रपूर्वः, प्रभृतिः–आदिः ॥६५१॥

Aho ! Shrutgyanam

कु-च्योर्नोऽन्तश्च ॥६५२॥

आभ्यां कित् तिः प्रत्ययो भवति नकारश्चान्तो भवति । कुङ् शब्दे, कुन्तिः—राजा, कुन्तयः—जनपदः । चिग्ट् चयने, चिन्तिः—राजा ॥६५२॥

खल्यमि-रमि-वहि-वस्यर्तेरतिः ॥६५३॥

एभ्योऽतिः प्रत्ययो भवति । खल संचये च, खलतिः—खल्वाटः । अम गतौ, अमतिः—चातकः, छागः, प्रावृट्, मार्गः, व्याधिः, गतिश्च । रमिं क्रीडायाम्, रमतिः—क्रीडा, कामः, स्वर्गः स्वभावश्च । वहीं प्रापणे, वहतिः—गौः, वायुः, अमात्यः, अपत्यं, कुटुम्बं च । वसं निवासे, वसतिः—निवासः, ग्रामसंनिवेशश्च । ऋंक् गतौ, अरतिः—वायुः, सरणम्, असुखं, क्रोधः, वर्म च ॥६५३॥

हन्तेरंह् च ॥६५४॥

हनंक् हिंसागत्योः, इत्यस्मादतिः प्रत्ययो भवत्यस्य च अंह् इत्यादेशो भवति । अंहतिः—व्याधिः, पन्थाः, कालः, रथश्च ॥६५४॥

वृगो व्रत् च ॥६५५॥

वृग्ट् वरणे, इत्यस्माद् अतिः प्रत्ययो भवत्यस्य व्रत् इत्यादेशो भवति । व्रततिः—वल्लिः ॥६५५॥

अञ्चेः क् च वा ॥६५६॥

अञ्चू गतौ चेत्यस्माद् अतिः प्रत्ययो भवत्यन्त्यस्य च क् इत्यन्तादेशो वा भवति । अङ्कतिः—वायुः, अग्निः, प्रजापतिश्च । अञ्चतिः—अग्निः ॥६५६॥

वातेर्णिद्वा ॥६५७॥

वांक् गतिगन्धनयोः, इत्यस्माद् अतिः प्रत्ययो भवति, स च णिद् वा भवति । वायतिः—वातः, वातिः—गन्धमिश्रपवनः ॥६५७॥

योः कित् ॥६५८॥

युक् मिश्रणे, इत्यस्माद् अतिः प्रत्ययः किद् भवति । युवतिः—तरुणी ॥६५८॥

पातेर्वा ॥६५९॥

पांक् रक्षणे, इत्यस्माद् अतिः प्रत्ययः स च किद्वा भवति । पतिः—भर्ता, पातिः—भर्ता, रक्षिता, प्रभुश्च ॥६५९॥

अगि-विलि-पुलि-क्षिपेरस्तिक् ॥६६०॥

एभ्यः किद् अस्तिः प्रत्ययो भवति । अग कुटिलायां गतौ, अगस्तिः । विलत् वरणे, विलस्तिः । पुल महत्त्वे, पुलस्तिः । क्षिपींत् प्रेरणे, क्षिपस्तिः । एते लौकिका ऋषयः । अगस्तिः—वृक्षजातिश्च ॥६६०॥

गृधेगभ् च ॥६६१॥

गृधूच् अभिकाङ्क्षायाम् इत्यस्माद् अस्तिक् प्रत्ययो भवति, गभ् चास्यादेशो भवति । गभस्तिः—रश्मिः ॥६६१॥

वस्यर्तिभ्यामातिः ॥६६२॥

आभ्याम् आतिः प्रत्ययो भवति । वसं निवासे, वसातयः—जनपदः । ऋंक् गतौ, अरातिः—रिपुः ॥६६२॥

अभेर्यामाभ्याम् ॥६६३॥

अभिपूर्वाभ्याम् आतिः प्रत्ययो भवति । यांक् प्रापणे, मांक् माने, अभियातिः, अभिमातिश्च—शत्रुः ॥६६३॥

यजो य च ॥६६४॥

यजीं देवपूजादौ, इत्यस्माद् अतिः प्रत्ययो भवत्यस्य च यकारोऽन्तादेशो भवति । ययातिः—राजा ॥६६४॥

वद्यवि-चर्छदि-भूभ्योऽन्तिः ॥६६५॥

एभ्योऽन्तिः प्रत्ययो भवति । वद वक्तायां वाचि, वदन्तिः—कथा । अव रक्षणादिषु, अवन्तिः—राजा । अवन्तयः—जनपदः । छदण् अपवारणे, युजादिविकल्पितणिजन्तत्वादण्यन्तः, छदन्तिः—गृहाच्छादनद्रव्यम् । भू सत्तायाम्, भवन्तिः—कालः, लोकस्थितिश्च ॥६६५॥

शकेरुन्तिः ॥६६६॥

शक्लृंट् शक्तौ, इत्यस्माद् उन्तिः प्रत्ययो भवति । शकुन्तिः—पक्षी ॥६६६॥

नञो दागो डितिः ॥६६७॥

नञ्पूर्वात् डुदांग्क् दाने, इत्यस्माद् डिद् इतिः प्रत्ययो भवति । अदितिः—दाता, देवमाता च ॥६६७॥

देङः ॥६६८॥

देङ् पालने, इत्यस्माद् डिद् इतिः प्रत्ययो भवति । दितिः—असुरमाता ॥६६८॥

वीसञ्ज्यसिभ्यस्थिक् ॥६६९॥

एभ्यः थिक् प्रत्ययो भवति । वींक् प्रजननादिषु, वीथिः—मार्गः । षञ्जं सङ्गे, सक्थिः—ऊरुः, शकटाङ्गं च । असूच् क्षेपणे, अस्थिः—पञ्चमो धातुः ॥६६९॥

सारेरथिः ॥६७०॥

सृं गतौ, इत्यस्माद् ण्यन्तादथिः प्रत्ययो भवति । सारथिः—यन्ता ॥६७०॥

निषञ्जेर्घित् ॥६७१॥

Aho ! Shrutgyanam

निपूर्वात् षञ्जं सङ्गे, इत्यस्माद् धिद् अथिः प्रत्ययो भवति । निषङ्गथिः-रुद्रः, धनुर्धरश्च । धित्करणं गत्वार्थम् ॥६७१॥

उदर्तेर्णिद्वा ॥६७२॥

उत्पूर्वाद् ऋंक् गतौ, इत्यस्माद् अथिः प्रत्ययो भवति, स च णिद्वा भवति । उदारथिः-विष्णुः, उदरथिः-विप्रः, काष्ठं, समुद्रः, अनड्वांश्च ॥६७२॥

अतेरिथिः ॥६७३॥

अत सातत्यगमने, इत्यस्माद् इथिः प्रत्ययो भवति । अतिथिः-पात्रतमः, भिक्षावृत्तिः ॥६७३॥

तनेर्डित् ॥६७४॥

तनूयी विस्तारे, इत्यस्माद् डिद् इथिः प्रत्ययो भवति । तिथिः-प्रतिपदादिः ॥६७४॥

उषेरधिः ॥६७५॥

उषू दाहे, इत्यस्माद् अधिः प्रत्ययो भवति । औषधिः-उद्भिद्विशेषः ॥६७५॥

विदो रधिक् ॥६७६॥

विदक् ज्ञाने, इत्यस्मात् किद् रधिः प्रत्ययो भवति । विद्रधिः-व्याधिविशेषः ॥६७६॥

वी-यु-सु-वह्यगिभ्यो निः ॥६७७॥

एभ्यो निः प्रत्ययो भवति । वींक् प्रजननादौ, वेनिः-व्याधिः, नदी च । युक् मिश्रणे, योनिः-प्रजननमङ्गम्, उत्पत्तिस्थानं च । षुंग्ट् अभिषवे, सोनिः-सवनम्, वहीं प्रापणे । वह्निः-पावकः, बलीवर्दश्च । अग कुटिलायां गतौ, अग्निः-पावकः ॥६७७॥

धूशाशीङो ह्रस्वश्च ॥६७८॥

एभ्यो निः प्रत्ययो भवति, ह्रस्वश्चैषां भवति । धूग्श् कम्पने, धुनिः-नदी । शोंच् तक्षणे, शनिः-सौरिः । शीङ्क् स्वप्ने, शिनिः-यादवः, वर्णश्च ॥६७८॥

लू-धू-प्रच्छिभ्यः कित् ॥६७९॥

एभ्यः किद् निः प्रत्ययो भवति । लुग्श् छेदने, लूनिः-लवनः । धूग्श् कम्पने, धूनिः-वायुः । प्रच्छंत् ज्ञीप्सायाम्, पृश्निः-वर्णः, अल्पतनुः, किरणः, स्वर्गश्च ॥६७९॥

सदि-वृत्यमि-धम्यश्यटि-कट्यवेरनिः ॥६८०॥

एभ्योऽनिः प्रत्ययो भवति । षद्लृं विशरणादौ, सदनिः-जलम् । वृतूङ् वर्तने, वर्तनिः-पन्थाः, देशनाम च । अम गतौ, अमनिः-अग्निः । धमः सौत्रः, धमनिः-मन्या, रसवहा च शिरा । अशौटि व्याप्तौ, अशनिः-इन्द्रायुधम् । अट गतौ । अटनिः-चापकोटिः । कटे वर्षावरणयोः, कटनिः-शैलमेखला । अव रक्षणादौ, अवनिः-भूः ॥६८०॥

रञ्जेः कित् ॥६८१॥

रञ्जीं रागे, इत्यस्मात् किद् अनिः प्रत्ययो भवति । रजनिः-रात्रिः ॥६८१॥

अर्तेरत्निः ॥६८२॥

ऋंक् गतौ, इत्यस्माद् अत्निः प्रत्ययो भवति । अरत्निः-बाहुमध्यम्, शमः, उत्कनिष्ठश्च हस्तः ॥६८२॥

एधेरिनिः ॥६८३॥

एधि वृद्धौ इत्यस्माद् इनिः प्रत्ययो भवति । एधिनिः-मेदिनी ॥६८३॥

शकेरुनिः ॥६८४॥

शक्लृंट् शक्तौ, इत्यमाद् उनिः प्रत्ययो भवति । शकुनिः-पक्षी ॥६८४॥

अदेर्मनिः ॥६८५॥

अदं प्सांक् भक्षणे, इत्यस्माद् मनिः प्रत्ययो भवति । अद्मनिः-पशूनां भक्षणद्रोणी, अग्निः, जयः, हस्ती, अश्वः, तालु च ॥६८५॥

दमेर्दुभिर्दुम् च ॥६८६॥

दमूच् उपशमे, इत्यस्माद् दुभिः प्रत्ययो भवत्यस्य च दुमित्यादेशो भवति । दुन्दुभिः-देवतूर्यम् ॥६८६॥

नी-सा-वृ-यु-शृ-वलि-दलिभ्यो मिः ॥६८७॥

एभ्यो मिः प्रत्ययो भवति । णींग् प्रापणे, नेमिः-चक्रधारा । षोंच् अन्तकर्मणि, सामि-अर्धवाचि अव्ययम् । वृग्ट् वरणे, वर्मिः-वल्मीककृमिः । युक् मिश्रणे, योमिः-शकुनिः । शृश् हिंसायाम्, शर्मिः-मृगः । वलि संवरणे, वलिमः-इन्द्रः, समुद्रश्च । दल विशरणे, दलिमः-आयुधम्, इन्द्रः, समुद्रः, शक्रः, विषं च ॥६८७॥

अशो रश्चादिः ॥६८८॥

अशौटि व्याप्तौ, इत्यस्माद् मिः प्रत्ययो भवति, रेफश्च धातोरादिर्भवति । रश्मिः-प्रग्रहः, मयूखश्च ॥६८८॥

Aho ! Shrutgyanam

सृर्तेरूच्चातः ॥६८९॥

आभ्यां मिः प्रत्ययो भवति, गुणे च कृतेऽकारस्योकारो भवति । सृं गतौ, सूर्मिः–स्थूणा । ऋंक् गतौ, ऊर्मिः–तरङ्गः ॥६८९॥

कृ-भूभ्यां कित् ॥६९०॥

आभ्यां किद् मिः प्रत्ययो भवति । डुकृंग् करणे, कृमिः–क्षुद्रजन्तुजातिः । भू सत्तायाम्, भूमिः–वसुधा ॥६९०॥

क्रणेर्डयिः ॥६९१॥

क्रण शब्दे, इत्यस्माद् डिद् अयिः प्रत्ययो भवति । क्रयिः–पक्षिविशेषः ॥६९१॥

तङ्कि-वङ्क्यङ्कि-मङ्क्यंहि-शद्यदि-सद्यशौ-वपि-वशिभ्यो रिः ॥६९२॥

एभ्यो रिः प्रत्ययो भवति । तकु कृच्छ्रजीवने। तङ्क्रिः–युवा । वकुङ् कौटिल्ये, वङ्क्रिः–शल्यं, परशुका, रथः, अहः, कुटिलश्च । अकुङ् लक्षणे, अङ्क्रिः–चिह्नम्, वंशकठिनिकश्च । मकुङ् मण्डने, मङ्क्रिः–मण्डनम्, शठः, प्रवकश्च । अहुङ् गतौ अंह्रिः–पादः, अङ्घ्रेरप्येके । अघुङ् गत्याक्षेपे, अङ्घ्रिः । शद्लृं शातने, शद्रिः–वज्रः, भस्म, हस्ती, गिरिः, ऋषिः, शोभनश्च । अदं प्सांक् भक्षणे, अद्रिः–पर्वतः । षद्लृं विशरणादौ, सद्रिः–हस्ती, गिरिः, मेषश्च । अशौटि व्याप्तौ, अश्रिः–कोटिः । डुवपीं बीजसन्ताने, वप्रिः–केदारः । वशक् कान्तौ, वश्रिः–समूहः ॥६९२॥

भू-सू-कुशि-विशि-शुभिभ्यः कित् ॥६९३॥

एभ्यः किद् रिः प्रत्ययो भवति । भू सत्तायाम्, भूरि–प्रभूतं, काञ्चनं च । षूत् प्रेरणे, सूरिः–आचार्यः, पण्डितश्च । कुशच्–श्लेषणे, कुश्रिः–ऋषिः । विशंत् प्रवेशने, विश्रिः–मृत्युः, ऋषिश्च । शुभि दीप्तौ, शुभ्रिः–यतिः, विप्रः, दर्शनीयं, शुभं, सत्यं च ॥६९३॥

जृषो रश्च वः ॥६९४॥

जृषच् जरसि, इत्यस्मात् किद् रिः प्रत्ययो भवति, ईरि सति रेफस्य वकारश्च भवति । जीव्रिः–शरीरम् ॥६९४॥

कुब्रि-कुद्र्याद्यः ॥६९५॥

कुब्राद्यः शब्दाः किद् रिः प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । कुपेः–कौतेश्च दश्चान्तः । कुब्रिः–ऋषिः । कुद्रिः–पर्वतः, ऋषिः, समुद्रश्च । आदिग्रहणात् क्षोतेर्दोऽन्तः, क्षुद्रिः–समुद्रः । अर्तेर्गोऽन्तः, ऋग्रिः–लोकनाथः । शकेः शक्रिः–बलवानित्यादयोऽपि भवन्ति ॥६९५॥

रा-शदि-शकि-कद्यदिभ्यस्त्रिः ॥६९६॥

एभ्यः त्रिः प्रत्ययो भवति । रांक् दाने, रात्रिः–निशा । शद्लृं शातने, शत्रिः–कुञ्जरः, क्रौञ्चश्च । शक्लृंट् शक्तौ, शक्त्रिः–क्रौञ्चः, ऋषिश्च । कद वैक्लव्ये सौत्रः, कत्रिः–ऋषिः । अदं प्सांक् भक्षणे, अत्रिः–ऋषिः ॥६९६॥

पतेरत्रिः ॥६९७॥

पत्लृ गतौ, इत्यस्माद् अत्रिः प्रत्ययो भवति । पतत्रिः–पक्षी ॥६९७॥

नदि-वल्लर्यर्तिकृतेररिः ॥६९८॥

एभ्योऽरिः प्रत्ययो भवति । णद अव्यक्ते शब्दे, नदरिः–पटहः । वल्लि संवरणे, वल्लरिः–लता, वीणा, सस्यमञ्जरी च । ऋंक् गतौ, अररिः–कपाटम् । कृतैत् छेदने, कर्तरिः–केशादिकर्तनयन्त्रम् ॥६९८॥

मस्यसि-घसि-जस्यङ्गि-सहिभ्य उरिः ॥६९९॥

एभ्य उरिः प्रत्ययो भवति । मसैच् परिणामे, मसुरिः–मरीचिः । असूच् क्षेपणे, असुरिः–संग्रामः । घस्लृं अदने, घसुरिः–अग्निः । जसूच् मोक्षणे, जसुरिः–समाप्तिः, अशनिः, अरणिः, क्रोधश्च । अगु गतौ, अङ्गुरिः–करशाखा, लत्वे अङ्गुलिः । षहि मर्षणे, सहुरिः–पृथ्वी, अक्रोधनः, अनड्वान्, संग्रामः, अन्धकारः, सूर्यश्च ॥६९९॥

मुहेः कित् ॥७००॥

मुहौच् वैचित्ये, इत्यस्मात् किद् उरिः प्रत्ययो भवति । मुहुरिः–सूर्यः, अनड्वांश्च ॥७००॥

धू-मूभ्यां लिक्-लिणौ ॥७०१॥

आभ्यां यथासंख्यं लिक् लिण् एतौ प्रत्ययौ भवतः । धूगश् कम्पने, धूलिः–पांसुः । मूङ् बन्धने, मौलिः–मुकुटः ॥७०१॥

पाट्यञ्जिभ्यामलिः ॥७०२॥

आभ्याम् अलिः प्रत्ययो भवति । पट गतौ ण्यन्तः, पाटलिः–वृक्षविशेषः । अञ्जौप् व्यक्त्यादौ, अञ्जलिः–पाणिपुटः, प्रणामहस्तयुग्मं च ॥७०२॥

मा-शालिभ्यामोकुलि-मलौ ॥७०३॥

आभ्यां यथासंख्यम् ओकुलि–मलि इत्येतौ प्रत्ययौ भवतः । मांक् माने, मोकुलिः–काकः । शल गतौ ण्यन्तः, शाल्मलिः–वृक्षविशेषः ॥७०३॥

Aho ! Shrutgyanam

दृ-पृ-वृ-भ्यो विः ॥७०४॥

एभ्यो विः प्रत्ययो भवति । दृश् विदारणे, दर्विः–तर्दूः । पृश् पालनपूरणयोः, पर्विः–कङ्कः, हिंस्रश्च । वृग्श् वरणे, वर्विः–शकटं, धात्री, काकः, श्येनश्च ॥७०४॥

जॄ-शॄ-स्तॄ-जागृ-कृ-नी-घृषिभ्यो डित् ॥७०५॥

एभ्यो डिद् विः प्रत्ययो भवति । जॄष्च् जरसि, जीर्विः–वायुः, पशुः, कण्टकः, शकटः, मद्गुः, कायः, गुल्मं, शङ्का, वृद्धः वृद्धभावश्च । शॄश् हिंसायाम्, शीर्विः–हिंस्रः, कृमिः, न्यङ्कुश्च । स्तॄग्श् आच्छादने, स्तीर्विः–गर्विष्ठः, अध्वर्युः, भगः, तनुः, रुधिरं, भयम् तृणजातिः, नभः, अजश्च । जागृक् निद्राक्षये, जागृविः–राजा, अग्निः, प्रबुधश्च । ङित्वान्न गुणः । डुकृंग् करणे, कृविः–रुद्रः, तन्तुवायः, तन्तुवायद्रव्यम्, राजा च । यदुपज्ञं कृवय इति पुरा पञ्चालानाचक्षते । णींग् प्रापणे, नीविः–परिधानग्रन्थिः, मूलधनं च । घृषू संघर्षे, घृष्विः–वराहः, वायुः अग्निश्च ॥७०५॥

छवि-छिवि-स्फवि-स्फिवि-स्थवि-स्थिवि-दवि-दीवि-किकि-विदि-दिवि-दीदिवि-किकीदिवि-किकिदीवि-शिव्यटव्यादयः ॥७०६॥

एते डिद् विप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । छ्यतेर्ह्रस्वश्च, छविः–त्वक्, छाया, आवरणं च । छिदेर्लुक् च, छिविः–फल्गुद्रव्यम् । स्फायतेः स्फस्फिभावौ च, स्फविः–वृक्षजातिः: स्फिविः–वृक्षः, उदश्विच्च । तिष्ठतेः स्थ-स्थिभावौ च, स्थविः–प्रसेवकः, तन्तुवायः, सीमा, अग्निः, अजङ्गमः, स्वर्गः, कुष्ठी-कुत्रिमांसं फलं च; स्थिविः–सीमा । दमेर्लुक् च, दविः–धर्मशीलः, दाता, स्थानं, फालश्च । दीव्यतेर्दीर्घश्च, दीविः–द्युतिमान्, कितवः, कालः, व्याघ्रजातिश्च । कितेर्द्वित्वं पूर्वस्य चत्वाभावो लुक् च, किकिविः–पक्षिविशेषः । दिवेर्द्वित्वं पूर्वस्य दीर्घश्च वा, दिदिविः–स्वर्गः । दीदिविः–अन्नं स्वर्गश्च । किते किकीदिभावश्च, किकीदिविः–वर्णः, पक्षी च । किकिपूर्वाद् दीव्यतेर्दीर्घश्च, किकीति कुर्वन् दीव्यतीति किकिदीविः–चाषः । शीङो ह्रस्वश्च । शिविः–राजा । अटेरत् चान्तः अटविः–अरण्यम् । आदिग्रहणादन्येऽपि ॥७०६॥

प्रुषि-प्लुषि-शुषि-कुष्यशिभ्यः सिक् ॥७०७॥

एभ्यः कित् सिः प्रत्ययो भवति । प्रुषू प्लुषू दाहे, प्रुक्षिः–अग्निः, उदपानश्च । प्लुक्षिः–अग्निः, जठरं, कुशूलश्च । शुषंच् शोषणे, शुक्षिः–वायुः, निदाघः, यवासकः, तेजश्च । कुषश् निष्कर्षे, कुक्षिः–जठरम् । अशौटि व्याप्तौ, अक्षि–नेत्रम् ॥७०७॥

गोपादेरनेरसिः ॥७०८॥

गोप इत्यादिभ्यः परादनक् प्राणने, इत्यस्माद् असिः प्रत्ययो भवति । गोपानसिः–सौधाग्रभाच्छदिः । चित्रानसिः–जलचरः । एकानसिः–उज्जयनी । वाराणसिः–काशीनगरी ॥७०८॥

वृ-धृ-पृ-वृ-साभ्यो नसिः ॥७०९॥

एभ्यो नसिः प्रत्ययो भवति । वृग्ट् वरणे, वर्णसिः–तरुः । धृंग् धारणे, धर्णसिः–शैलः, लोकपालः, जलं, माता च । पृश् पालनपूरणयोः, पर्णसिः–जलधरः, उलूखलं, शाकादिश्च । वृश् वरणे, वर्णसिः–भूमिः । षोंच् अन्तकर्मणि, सानसिः–स्नेहः, नखः, हिरण्यम्, ऋणं, सखा सनातनश्च ॥७०९॥

व्रियो हिक् ॥७१०॥

व्रींश् वरणे, इत्यस्माद् किद् हिः प्रत्ययो भवति । व्रीहिः–धान्यविशेषः ॥७१०॥

तॄ-स्तॄ-तन्द्रि-तन्त्र्यविभ्य ईः ॥७११॥

एभ्य ईः प्रत्ययो भवति । तॄ प्लवनतरणयोः, तरीः–नौः, अग्निः, वायुः, प्लवनश्च । स्तॄग्श् आच्छादने, स्तरीः–तृणं, धूमः, मेघः, नदी, शय्या च । तन्द्रिः सादमोहनयोः सौत्रः, तन्द्री–मोहनिद्रा । तन्त्रिण् कुटुम्बधारणे, तन्त्रीः–शुष्कस्नायुः, वादित्रं, वीणा, आलस्यं च । अव रक्षणादौ, अवीः–प्रकाशः, आदित्यः, भूमिः, पशुः, राजा, स्त्री च ॥७११॥

नडेर्णित् ॥७१२॥

नडेः सौत्राद् ईः प्रत्ययो भवति, स च णिद् भवति । नाडी–आयतशुषिरं, द्रव्यम्, अर्धमुहूर्तश्च ॥७१२॥

वातात् प्रमः कित् ॥७१३॥

वातपूर्वपदात् प्रेणोपसृष्टात् मांक् माने इत्यस्मात् किद् ईः प्रत्ययोभवति । वातप्रमीः–वात्या, अश्वः, वातमृगः, पक्षी, शमीवृक्षश्च ॥७१३॥

या-पाभ्यां द्वे च ॥७१४॥

आभ्यां किद् इः प्रत्ययो भवत्यनयोश्च द्वे रूपे भवतः । यांक् प्रापणे, ययीः–मोक्षमार्गः, दिव्यवृष्टिः, आदित्यः, अश्वश्च । पां पाने, पपीः–रश्मिः, सूर्यः, हस्ती च ॥७१४॥

Aho ! Shrutgyanam

लक्षेर्मोऽन्तश्च ॥७१५॥

लक्षीण् दर्शनाङ्कनयोः, इत्यस्माद् ईः प्रत्ययो भवति । लक्ष्मीः–श्रीः ॥७१५॥

भृ-मृ-तॄ-त्सरि-तनि-धन्यनि-मनि-मस्जि-शी-वटि-कटि-पटि-गडि-चञ्च्यसि-वसि-त्रपि-शॄ-स्वृ-स्निहि-क्लिदि-कन्दोन्दि-विन्द्यन्धि-बन्ध्यणि-लोष्टि-कुन्थिभ्य उः ॥७१६॥

एभ्यः उः प्रत्ययो भवति । डुभृंग्क् पोषणे च । भृंग् भरणे वा । भरुः–समुद्रः, वर्णिः, भर्ता च । मृंत् प्राणत्यागे, मरुः–निर्जलो देशः, गिरिश्च । तॄ प्लवनतरणयोः, तरुः–वृक्षः । त्सर छद्मगतौ, त्सरुः–आदर्शखड्गादिग्रहणप्रदेशः, वञ्चकः, क्षुरिका च । तनूयी विस्तारे, तनुः–देहः, सूक्ष्मश्च । धन धान्ये सौत्रः, धनुः–अस्त्रं, दानमानं च । अनक् प्राणने, अनुः–प्राणः, अनु पश्चादाद्यर्थेऽव्ययम् । मनिच् ज्ञाने, मनुयी बोधने वा, मनुः–प्रजापतिः । टुमस्जोंत् शुद्धौ । मद्गुः–जलवायसः । शीङ्क् स्वप्ने, शयुः–अजगरः, स्वप्नः, आदित्यश्च । वट वेष्टने, वटुः–माणवकः । कटे वर्षावरणयोः, कटुः–रसविशेषः । पट गतौ, पटुः–दक्षः । गड सेचने, गडुः–घाटामस्तकयोर्मध्ये मांसपिण्डः, स्फोटश्च । चञ्चू गतौ । चञ्चूः–पक्षिमुखम् । असूच् क्षेपणे, असवः–प्राणाः । वसं निवासे, वसु–द्रव्यं, तेजो, देवता च । वसुः कश्चिद्राजा । त्रपौषि लज्जायाम्, त्रपु–लौहविशेष । शॄश् हिंसायाम्, शरुः–क्रोधः, आयुधः, हिंस्रश्च । औस्वृ शब्दोपतापयोः, स्वरुः–प्रतापः, वज्रः–वज्रास्फालनं च । ष्णिहौच् प्रीतौ, स्नेहुः–चन्द्रमाः, सन्निपातजो व्याधिविशेषः, पित्तं, वनस्पतिश्च । क्लिदौच् आर्द्रभावे, क्लेदुः–क्षेत्रं, चन्द्रः, भगः, शरीरभङ्गश्च, क्लेदयतीति क्लेदुः–चन्द्रमा इत्यन्ये । कदु रोदनाह्वानयोः, कन्दुः–पाकस्थानम्–सूत्रोतं च क्रीडनम् । इदु परमैश्वर्ये, इन्दुः–चन्द्रः । विदु अवयवे, विन्दुः–विप्रुट् । अन्धण् दृष्ट्युपसंहारे, अन्धुः–कूपः, व्रणश्च । बन्धंश् बन्धने, बन्धुः–स्वजनः, बन्धु–द्रव्यम् । अण शब्दे, अणुः–पुद्गलः, सूक्ष्मः, रालकादिश्च, धान्यविशेषः । लोष्टि संघाते, लोष्टुः–मृत्पिण्डः । कुन्थश् संक्लेशे । कुन्थुः–सूक्ष्मजन्तुः ॥७१६॥

स्यन्दि-सृजिभ्यां सिन्ध-रज्जौ च ॥७१७॥

आभ्याम् उः प्रत्ययो भवत्यनयोश्च यथासंख्यं सिन्ध् रज्ज् इत्यादेशौ भवतः । स्यन्दौङ् स्रवणे सिन्धुः–नदः, नदी, समुद्रश्च । सृंजत् विसर्गे, सृजिच् विसर्गे वा रज्जुः–दवरकः ॥७१७॥

पंसेर्दीर्घश्च ॥७१८॥

पसुण् नाशने, इत्यस्माद् उः प्रत्ययो भवति, दीर्घश्चास्य भवति । पांशुः–पार्थिवं रजः ॥७१८॥

अशेराम्नोऽन्तश्च ॥७१९॥

अशौटि व्याप्तौ, इत्यस्माद् उः प्रत्ययो भवत्यकाराच्च परो नोऽन्तो भवति । अंशुः–रश्मिः, सूर्यश्च । प्रांशुः–दीर्घः ॥७१९॥

नमेर्नाक् च ॥७२०॥

णमं प्रह्वत्वे, इत्यस्माद् उः प्रत्ययो भवत्यस्य च नाक् इत्यादेशो भवति । नाकुः–व्यलीकम्, वनस्पतिः, ऋषिः, वल्मीकश्च ॥७२०॥

मनि-जनिभ्यां धतौ च ॥७२१॥

आभ्याम् उः प्रत्ययो भवत्यनयोश्च यथासंख्यं धकार-तकारौ भवतः । मनिच् ज्ञाने, मधु–क्षौद्रम्, सीधु च । मधुः–असुरः, मासश्च चैत्रः । जनैचि प्रादुर्भावे, जतु–लाक्षा ॥७२१॥

अर्जेर्ऋज् च ॥७२२॥

अर्ज अर्जने, इत्यस्माद् उः प्रत्ययो भवत्यस्य च ऋज् इत्यादेशो भवति । ऋजु–अकुटिलम् ॥७२२॥

कृतेस्तर्क च ॥७२३॥

कृतैत् छेदने, कृतैप् वेष्टने, इत्यस्माद्वा उः प्रत्ययो भवति, अस्य च तर्क इत्यादेशो भवति । तर्कुः–चुन्दः, सूत्रवेष्टनशलाका च ॥७२३॥

नेरञ्चेः ॥७२४॥

निपूर्वादञ्चतेः उः प्रत्ययो भवति । न्यङ्कुः–मृगः, ऋषिश्च ॥७२४॥

किमः श्रो णित् ॥७२५॥

किम्पूर्वात् शॄश् हिंसायाम्, इत्यस्माद् णिद् उः प्रत्ययो भवति । किंशारुः–शूकः, धान्यशिखा, उष्ट्रः, हिंस्रः, इषुश्च ॥७२५॥

मि-वहि-चरि-चटिभ्यो वा ॥७२६॥

एभ्यः उः प्रत्ययो भवति, स च णिद्वा भवति । डुमिंग्ट् प्रक्षेपणे, मायुः–पित्तं, मानं, शब्दश्च । गोमायुः-शृगालः, मयुः–किन्नरः, उष्ट्रः, प्रक्षेपः, आकुतं च । बाहुलकाद्दात्वाभावः । वहीं प्रापणे । बाहुः–भुजः, बहुः–प्रभूतम् । चर

Aho ! Shrutgyanam

भक्षणे च। चारु–शोभनम् । चरन्ति अस्माद्देव–पितृ–भूतानि इति अपादानेऽपि भीभादित्वात्, चरुः–देवतोद्देशेन पाकः, स्थाली च । चटण् भेदे, चाटु–प्रियाचरणं, पटुजनः, प्रियवादी, स्फुटवादी, दर्व्यग्रं, शिष्यश्च । चटुः–प्रियाचरणम् ॥७२६॥

ऋ-तॄ-शॄ-मृ-भ्रादिभ्यो रो लश्च ॥७२७॥

एभ्यो णिद् उः प्रत्ययो भवति, रेफस्य च लकारो भवति । ऋंक् गतौ, ऋंत् प्रापणे च वा, आलुः–श्लेष्मा, श्लेष्मातकः, कन्दविशेषश्च । तॄ प्लवनतरणयोः, तालुः–काकुदम् । शॄश् हिंसायाम्, शालुः–हिंस्रः, कषायश्च । मृंत् प्राणत्यागे, मालुः–पत्रलता, यस्या मालुधानीति प्रसिद्धिः । डुडुभृंग्क् पोषणे च, भालुः–इन्द्रः । आदिग्रहणादन्येऽपि ॥७२७॥

कृ-क-स्थूराद्वचः क् च ॥७२८॥

आभ्यां पराद् वचो णिद् उः प्रत्ययो भवति, ककारश्चान्तादेशो भवति । वचंक् भाषणे, ब्रूग्क् व्यक्तायां वाचि, कृकमव्यक्तं ब्रूते वक्ति वा । कृकवाकुः–कुक्कुटः, कृकलासः, खञ्जरीटश्च । एवं स्थूरवाकुः–उच्चध्वनिः ॥७२८॥

पॄ-का-हृषि-धृषीषि-कुहि-भिदि-विदि-मृदि-व्यधि-गृध्यादिभ्यः कित् ॥७२९॥

एभ्यः किद् उः प्रत्ययो भवति । पॄश् पालनपूरणयोः । पुरुः, महान् लोकः, समुद्रः, यजमानः, राजा च कश्चित् । कैं शब्दे, कुः–पृथ्वी । हृषच–तुष्टौ, हृषू अलीके वा । हृषु–हृष्टः, तुष्टः, अलीकः, सूर्य–अग्नि–शशिनश्च । ञिधृषाट् प्रागल्भ्ये, धृषुः–प्रगल्भः, संतापः, उत्साहः, पर्वतश्च । इषत् इच्छायाम्, इषुः–शरः । कुहणि विस्मापने, कुहुः–नष्टचन्द्रामावास्या । भिदृंपी विदारणे, भिदुः–वज्रः, कन्दर्पश्च । विदक् ज्ञाने, विदुः–हस्तिमस्तकैकदेशः । मृदश् क्षोदे, मृदुः–अकठिनः । व्यधंच् ताडने, विधुः–चन्द्रः, वायुः, अग्निश्च । गृधूच् अभिकाङ्क्षायाम्, गृधुः–कामः । आदिग्रहणात् पूरैचि आप्यायने, पूरण् आप्यायने वा । पूरितमनेन यशसा सर्वमिति पूरुः–राजर्षिः एवमन्येऽपि ॥७२९॥

रभि-प्रथिभ्यामृच्च रस्य ॥७३०॥

आभ्यां किद् उः प्रत्ययो भवति रेफस्य च ऋकारो भवति । रभि राभस्ये, ऋभवः–देवाः । प्रथिष् प्रख्याने, पृथुः–राजा, विस्तीर्णश्च ॥७३०॥

स्पशि-भ्रस्जेः स्लुक् च ॥७३१॥

आभ्यां किद् उः प्रत्ययो भवति, सकारस्य लुक् च भवति । स्पशिः सौत्रः तालव्यान्तः, पशुः–तिर्यङ्, मन्त्रवध्यश्च जनः । भ्रस्जीत् पाके, भृगुः–प्रपातः, ब्रह्मणश्च, सुतः । कित्वात् 'ग्रह-व्रश्च-भ्रस्ज-प्रच्छ' इति वृत् 'न्यङ्कु-द्रुमेघादयः' इति गत्वम् ॥७३१॥

दुः-स्वप-वनिभ्यः स्थः ॥७३२॥

दुस्, सु, अप, वनि इत्येतेभ्यः परात् ष्ठां गतिनिवृत्तौ, इत्यस्मात् किद् उः प्रत्ययो भवति । दुष्ठु–अशोभनम्, सुष्ठु–सातिशयम्, अपष्ठु–वामम्, वनिष्ठुः–वपासनिहितोऽवयवः, अश्वः, संभक्तः, अपानं च ॥७३२॥

हनि-या-कृ-भृ-पॄ-तॄ-त्रो द्वे च ॥७३३॥

एभ्यः किद् उः प्रत्ययो भवत्येषां द्वे रूपे भवतः । हनंक् हिंसागत्योः, जघ्नुः–इन्द्रः, वेगवांश्च । यांक् प्रापणे, ययुः–अश्वः, यायावरः, स्वर्गमार्गश्च । डुकृंग् करणे, चक्रुः–कर्मठः, वैकुण्ठश्च । डुडुभृंग्क् पोषणे, भृंग् भरणे वा, बभ्रुः–ऋषिः, नकुलः, राजा, वर्णश्च । पॄश् पालनपूरणयोः, पुपुरुः–समुद्रः, चन्द्रः, लोकश्च । तॄ प्लवनतरणयोः, तितिरुः–पतङ्गः । त्रैङ् पालने, तत्रुः–नौका ॥७३३॥

कॄ-गॄ ऋत उर् च ॥७३४॥

आभ्यां किद् उः प्रत्ययो भवति, ऋकारस्य च उर् भवति । कॄत् विक्षेपे, कुरुः–राजर्षिः, कुरवः–जनपदः । गॄश् शब्दे, गुरुः–आचार्यः, लघुप्रतिपक्षः, पूज्यश्च जनः ॥७३४॥

पचेरिच्चातः ॥७३५॥

डुपचींष् पाके, इत्यस्माद् उः प्रत्ययो भवत्यकारस्य च इकारो भवति । पिचुः–निरस्थीकृतः कर्पासः ॥७३५॥

अर्तेरूर् च ॥७३६॥

ऋंक् गतौ, इत्यस्माद् उः प्रत्ययो भवत्यस्य च ऊर् इत्यादेशो भवति । ऊरुः–शरीराङ्गम् ॥७३७॥

महत्युर् च ॥७३७॥

अर्तेर्महत्यभिधेये उ प्रत्ययो भवत्यस्य च उर् इत्यादेशो भवति । उरु–विस्तीर्णम् ॥७३७॥

उड् च भे ॥७३८॥

अर्तेर्भे नक्षत्रेऽभिधेये उः प्रत्ययो भवति, धातोश्च उडादेशो भवति । उडु–नक्षत्रम् ॥७३८॥

श्लिषेः क् च ॥७३९॥

Aho ! Shrutgyanam

श्लिषंच् आलिङ्गने, इत्यस्मात् किद् उः प्रत्ययो भवति, ककारश्चान्तादेशो भवति । श्लिकुः–मृगास्थि, सव्यवसायः, राज्यं, ज्योतिषं सेवकश्च ॥७३९॥

रङ्घि-लङ्घि-लिङ्गेर्नलुक् च ॥७४०॥

एभ्य उः प्रत्ययो भवति, नकारस्य च लुग् भवति । रघु लघुङ् गतौ । रघुः–राजा । लघु–तुच्छं, शीघ्रं च । लिगुण् चित्रीकरणे, लिगुः–ऋषिः, सेवकः, मूर्खः, भूमिविशेषश्च ॥७४०॥

पी-मृग-मित्र-देव-कुमार-लोक-धर्म-विश्व-सुस्ना-श्मावेभ्यो युः ॥७४१॥

पी-मृग-मित्र-देव-कुमार-लोक-धर्म-विश्व-सुस्न-अश्मन्-अव इत्येतेभ्यः परात् यांक् प्रापणे, इत्यस्मात् किद् उः प्रत्ययो भवति । पीयुः–उलूकः, आदित्यः, सुवर्णं, कालश्च । मृगयुः–व्याधः, मृगश्च । मित्रयुः–ऋषिः, मित्रवत्सलश्च । देवयुः–धार्मिकः । कुमारयुः–राजपुत्रः । लोकयुः–वाक्यकुशलः जनः । धर्मयुः–धार्मिकः । विश्वयुः–वायुः । सुस्नयुः–यजमानः । अश्मयुः–मूर्खः । अवयुः–काव्यम् ॥७४१॥

पराङ्भ्यां शृ-खनिभ्यां डित् ॥७४२॥

पर–आङ्पूर्वाभ्यां यथासंख्यं शृ–खनिभ्यां डिद् उः प्रत्ययो भवति । शृश् हिंसायाम्, परान् शृणाति परशुः–कुठारः । खनूग् अवदारणे, आखुः–मूषिकः ॥७४२॥

शुभेः स च वा ॥७४३॥

शुभि दीप्तौ, इत्यस्माद् डिद् उः प्रत्ययो भवति, अस्य च दन्त्यः सो वा भवति । सुः शुश्च पूजायाम्, सुपुरुषः । शुनासीरः ॥७४३॥

द्यु-द्रुभ्याम् ॥७४४॥

आभ्यां डिद् उः प्रत्ययो भवति । द्युंक् अभिगमे, द्युः–स्वर्गक्रीडा, स्वर्गश्च । द्रुं गतौ, द्रुः–वृक्षशाखा, वृक्षश्च ॥७४४॥

हरि-पीत-मित-शत-वि-कु-कद्रुयो द्रुवः ॥७४५॥

हरि-पीत-मित-शत-वि-कु-कद् इत्येतेभ्यः पराद् द्रुः गतौ इत्यस्माद् डिद् उः प्रत्ययो भवति । हरिद्रुः–वृक्षः, ऋषिः, पर्वतश्च । पीतद्रुः, देवदारुः । मितद्रुः–समुद्रः, तुरङ्गः, मितङ्गमश्च । शतद्रुर्नाम नदः, नदी च । विद्रुः–दारुप्रकारः–वृक्षश्च । कुद्रुः–विकलपादः । कद्रुः–नागमाता, वह्निजातिः, गृहगोधा, वर्णश्च ॥७४५॥

केवयु-भुरण्ववध्वर्य्वादयः ॥७४६॥

केवय्वादयः शब्दा डिदुप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । केवलपूर्वाद्यातेर्ललोपश्च । केवलो यातीति केवयुः–ऋषिः । भूपूर्वाद्यातेर्दुरण्वादौ, भुवं यातीति भुरण्युः–अग्निः । अध्वरं यातीति पूर्वपदान्तलोपे, अध्वर्युः–ऋत्विक् । आदिग्रहणात् चरन् याति, इति चरण्युः–वायुः । अभिपूर्वस्य चाश्नातेः, अभीशुः–रश्मिः ॥७४६॥

शः सन्वच्च ॥७४७॥

शोंच् तक्षणे, इत्यस्माद् डिद् उः प्रत्ययो भवति, स च सन्वद् भवति । सनि इवास्मिन् द्वित्वं पूर्वस्य च इत्वं भवतीत्यर्थः । शिशुः–बालः ॥७४७॥

तनेर्डउः ॥७४८॥

तनूयी विस्तारे, इत्यस्माद् डिद् अउः प्रत्ययो भवति । स च सन्वत् । तितउः–परिपवनम् ॥७४८॥

कै-शी-शमि-रमिभ्यः कुः ॥७४९॥

एभ्यः कुः प्रत्ययो भवति । कैं शब्दे, काकुः–स्वरविशेषः । शीङ्क् स्वप्ने, शेकुः–उद्भिद्विशेषः । शमूच् उपशमे, शङ्कुः–कीलकः, बाणः, शूलम्, आयुधं, चिह्नं, छलकश्च । रमि क्रीडायाम्, रङ्कुः–मृगः ॥७४९॥

ह्रियः किद्रो लश्च वा ॥७५०॥

ह्रीक् लज्जायाम्, इत्यस्मात् कित् कुः प्रत्ययो भवति, रेफस्य च लकारो वा भवति । ह्रीकुः ह्लीकुश्च–त्रपु, जतुनी, लज्जावांश्च । ह्रीकुः–वनमार्जारः ॥७५०॥

किरः ष च ॥७५१॥

कॄत् विक्षेपे, इत्यस्मात् कित् कुः प्रत्ययो भवति, षकारश्चान्तादेशो भवति । किष्कुः–छायामानद्रव्यम् ॥७५१॥

चटि-कठि-पर्दिभ्यः आकुः ॥७५२॥

एभ्य आकुः प्रत्ययो भवति । चटण् भेदे, चटाकुः–ऋषिः, शकुनिश्च । कठ कृच्छ्रजीवने, कठाकुः–कुटुम्बपोषकः । पर्दि कुत्सिते शब्दे, पर्दाकुः–भेकः, वृश्चिकः, अजगरश्च ॥७५२॥

सिवि-कुटि-कुठि-कुकुषि-कृषिभ्यः कित् ॥७५३॥

एभ्यः किद् आकुः प्रत्ययो भवति । षिवूच् उतौ, सिवाकुः–ऋषिः । कुटत् कौटिल्ये, कुटाकुः–विटपः । कुठिः सौत्रः, कुठाकुः–श्वभ्रम् । कुंङ् शब्दे, कुवाकुः–पक्षी । कुषश् निष्कर्षे, कुषाकुः–मूषिकः, अग्निः, परोपतापी च । कृषींत् विलेखने, कृषाकुः–कृषीवलः ॥७५३॥

Aho ! Shrutgyanam

उपसर्गाच्चेर्डित् ॥७५४॥

उपसर्गपूर्वात् चिंग्ट् चयने, इत्यस्माद् डिद् आकुः प्रत्ययो भवति । उपचाकुः–संचाकुश्च–ऋषिः । निचाकुः–निपुणः, ऋषिश्च ॥७५४॥

शलेरङ्कुः ॥७५५॥

शल गतौ, इत्यस्माद् अङ्कुः प्रत्ययो भवति । शलङ्कुः–ऋषिः ॥७५५॥

सृ-पृभ्यां दाकुक् ॥७५६॥

आभ्यां किद् दाकुः प्रत्ययो भवति । सृं गतौ, सृदाकुः–दावाग्निः, वायुः, आदित्यः, व्याघ्रः, शकुनिः, अस्तः, भर्ता, गोत्रकृच्च । पृंक् पालनपूरणयोः, पृदाकुः–सर्पः, गोत्रकृच्च ॥७५६॥

इषेः स्वाकुक् च ॥७५७॥

इषत् इच्छायाम्, इत्यस्मात् कित् स्वाकुः प्रत्ययो भवति । इक्ष्वाकुः–आदिक्षत्रियः ॥७५७॥

फलि-वल्यमेर्गुः ॥७५८॥

एभ्यो गुः प्रत्ययो भवति । फल निष्पत्तौ, फल्गु–असारम् । वलि संवरणे, वल्गु–मधुरम्, शोभनं च, वल्गुः–पक्षी । अम गतौ, अङ्गुः–शरीरावयवः ॥७५८॥

दमेर्लुक् च ॥७५९॥

दमूच् उपशमे, इत्यस्माद् गुः प्रत्ययो भवत्यन्त्यस्य च लुग् भवति । दगुः–ऋषिः ॥७५९॥

हेर्हिन् च ॥७६०॥

हिंट् गतिवृद्ध्योः इत्यस्माद् गुः प्रत्ययो भवत्यस्य च हिन् इत्यादेशो भवति । हिङ्गुः–रामठः ॥७६०॥

प्री-कै-पै-णीलेङ्गुक् ॥७६१॥

एभ्यः किद् अङ्गुः प्रत्ययो भवति । प्रींग्श् तृप्तिकान्त्योः, प्रियङ्गुः–फलिनी, रालकश्च । कैं शब्दे, कङ्गुः–अणुः । पैं शोषणे, पङ्गुः–खञ्जः । णील वर्णे, नीलङ्गुः–कृमिजातिः, शृगालश्च ॥७६१॥

अवर्याति-गृभ्योऽट्टुः ॥७६२॥

एभ्योऽट्टुः प्रत्ययो भवति । अव रक्षणादौ, अवट्टुः–कृकाटिका । ऋक् गतौ, अरट्टुः–वृक्षः । गॄत् निगरणे, गरट्टुः–देशविशेषः, पक्षी, अजगरश्च ॥७६२॥

शलेराट्टुः ॥७६३॥

शल गतौ, इत्यस्माद् आट्टुः प्रत्ययो भवति । शलाट्टुः–कोमलं फलम् ॥७६३॥

अञ्ज्यवेरिष्ठुः ॥७६४॥

आभ्यामिष्ठुः प्रत्ययो भवति । अञ्जौप् व्यक्त्यादौ, अञ्जिष्ठुः–भानुः, अग्निश्च । अव रक्षणादौ, अविष्ठुः–अश्वः, होता च ॥७६४॥

तमि-मनि-कणिभ्यो डुः ॥७६५॥

एभ्यो डुः प्रत्ययो भवति । तनूयी विस्तारे, तण्डुः–प्रथमः । मनिंच् ज्ञाने, मण्डुः–ऋषिः । कण शब्दे, कण्डुः–वेदनाविशेषः ॥७६५॥

पनेर्दीर्घश्च ॥७६६॥

पनि स्तुतौ, इत्यस्माद् डुः प्रत्ययो भवति, दीर्घश्च भवति । पाण्डुः–वर्णः, क्षत्रियश्च ॥७६६॥

पलि-मृभ्यामाण्डुकण्डुकौ ॥७६७॥

आभ्यां यथासंख्यमाण्डु कण्डुक इति प्रत्ययौ भवतः । पल गतौ, पलाण्डुः–लशुनभेदः । मृंत् प्राणत्यागे, मृकण्डुकः–ऋषिः ॥७६७॥

अजि-स्था-वृ-रीभ्यो णुः ॥७६८॥

एभ्यो णुः प्रत्ययो भवति । अज क्षेपणे च, वेणुः–वंशः । ष्ठां गतिनिवृत्तौ, स्थाणुः–शिवः, ऊर्ध्वं च दारु । वृग्ट् वरणे, वर्णुः–नदः, जनपदश्च । रींश् गतिरेषणयोः, रेणुः–धूलिः ॥७६८॥

विषेः कित् ॥७६९॥

विष्लृंकी व्याप्तौ, इत्यस्मात् किद् णुः प्रत्ययो भवति । विष्णुः–हरिः ॥७६९॥

क्षिपेरणुक् ॥७७०॥

क्षिपींत् प्रेरणे, इत्यस्मात् किद् अणुः प्रत्ययो भवति । क्षिपणुः–समीरणः, विद्युच्च ॥७७०॥

अञ्जेरिष्णुः ॥७७१॥

अञ्जौप् व्यक्त्यादौ इत्यस्माद् इष्णुः प्रत्ययो भवति । अञ्जिष्णुः–घृतम् ॥७७१॥

कृ-हृ-भू-जीवि-गम्यादिभ्य एणुः ॥७७२॥

एभ्य एणुः प्रत्ययो भवति । कृंग्ट् हिंसायाम्, डुकृंग् करणे वा, करेणुः–हस्ती । हृंग् हरणे, हरेणुः–गन्धद्रव्यम् । भू सत्तायाम्, भवेणुः–भव्यः । जीव प्राणधारणे, जीवेणुः–

Aho ! Shrutgyanam

औषधम् । गम्लृं गतौ, गमेणुः–गन्ता । आदिग्रहणात् शमूच् उपशमे, शमेणुः–उपशमनम् । यजीं देवपूजादौ, यजेणुः–यज्ञादिः । डुपचींष् पाके, पचेणुः–पाकस्थानम् । पदेणुः, वहेणुरित्यादि ॥७७२॥

कृ-सि-कम्यमि-गमि-तनि-मनि-जन्यसि-मसि-सच्यवि-भा-धा-गा-ग्ला-म्ला-हनि-हा-या-हि-क्रुशि-पूभ्यस्तुन् ॥७७३॥

एभ्यः तुन्प्रत्ययो भवति । डुकृंग् करणे, कर्तुः–कर्मकरः । षिंग्ट् बन्धने, सेतुः–नदीसंक्रमः । कमूङ् कान्तौ, कन्तुः–कदर्पः, कामी, मनः, कुसूलश्च । अम गतौ, अन्तुः–रक्षिता, लक्षणं च । गम्लृं गतौ, गन्तुः–पथिकः, आगन्तुः अवास्तव्यो जनः । तनूयी विस्तारे, तन्तुः–सूत्रम् । मनिच् ज्ञाने, मन्तुः–वैमनस्यम्, प्रियंवदः, मानश्च । जनैचि प्रादुर्भावे, जन्तुः–प्राणी । असक् भुवि, अस्तुः–अस्तिभावः । बाहुलकाद् भूभावाभावः । मसैच् परिणामे, मस्तुः–दधिमूलवारि । षचि सेचने, सक्तुः–यवविकारः । अव रक्षणादौ, ओतुः–बिडालः । भांक् दीप्तौ, भातुः–दीप्तिमान्, शरीरावयवः, अग्निः, विद्वांश्च । डुधांग्क् धारणे च, धातुः–लोहादिः, रसादिः, शब्दप्रकृतिश्च । गैं शब्दे, गातुः–गायनः, उद्गाता च । ग्लैं हर्षक्षये, ग्लातुः–सरुजः । म्लैं गात्रविनामे, म्लातुः–दीनः । हनंक् हिंसागत्योः, हन्तुः–आयुधं, हिमश्च । ओहांक् त्यागे, हातुः–मृत्युः, मार्गश्च । यांक् प्रापणे, यातुः–पाप्मा जनः, राक्षसश्च । हिंट् गतिवृद्ध्योः, हेतुः–कारणम् । क्रुशं आह्वान-रोदनयोः, क्रोष्टा–शृगालः । पूगश् पवने, पोतुः–पविता, नित्करणं क्रुशस्तुनस्तृच् पुंसि इत्यत्र विशेषणार्थम् ॥७७३॥

वसेर्णिद्वा ॥७७४॥

वसं निवासे, इत्यस्मात् तुन्प्रत्ययो भवति, स च णिद्वा भवति । वास्तु–गृहं, गृहभूमिश्च । वस्तु–सत्, निवेशभूमिश्च ॥७७४॥

पः पीप्यौ च वा ॥७७५॥

पां पाने, इत्यस्मात् तुन्प्रत्ययो भवति । अस्य च पी पि इत्यादेशौ वा भवतः । पीतुः–आदित्यः, चन्द्रः, हस्ती, कालः, चक्षुः, बालघृतपानभाजनं च । पितुः–प्रजापतिः, आहारश्च । पातुः–रक्षिता, ब्रह्मा च ॥७७५॥

आपोऽप् च ॥७७६॥

आप्लृंट् व्याप्तौ, इत्यस्मात् तुन्प्रत्ययो भवत्यस्य च अप् इत्यादेशो भवति । अप्तुः–देवताविशेषः, कालः, याजकः, यज्ञयोनिश्च ॥७७६॥

अञ्ज्यर्तेः कित् ॥७७७॥

आभ्यां कित् तुन्प्रत्ययो भवति । अञ्जौप् व्यक्त्यादिषु । अक्तुः–इन्द्रः, विष्णुः, रात्रिश्च । ऋंक् गतौ, ऋतुः–हेमन्तादिः, स्त्रीरजः, तत्कालश्च ॥७७७॥

चायः के च ॥७७८॥

चायृग् पूजा-निशामनयोः, इत्यस्मात् तुन्प्रत्ययो भवत्यस्य च के इत्यादेशो भवति । केतुः–ध्वजः, ग्रहश्च ॥७७८॥

वहि-महि-गुह्येधिभ्योऽतुः ॥७७९॥

एभ्योऽतुः प्रत्ययो भवति । वहीं प्रापणे, वहतुः–विवाहः, अनड्वान्, अग्निः, कालश्च । मह पूजायाम्, महतुः–अग्निः । गुहौग् संवरणे, गूहतुः–भूमिः । एधि वृद्धौ, एधतुः–लक्ष्मीः, पुरुषः, अग्निश्च ॥७७९॥

कृ-लाभ्यां कित् ॥७८०॥

आभ्यां किद् अतुः प्रत्ययो भवति । डुकृंग् करणे, क्रतुः–यज्ञः । लांक् आदाने, लतुः–पाशः ॥७८०॥

तनेर्यतुः ॥७८१॥

तनूयी विस्तारे, इत्यस्माद् यतुः प्रत्ययो भवति । तन्यतुः–विस्तारः, वायुः, पर्वतः, सूर्यश्च ॥७८१॥

जीवेरातुः ॥७८२॥

जीव प्राणधारणे, इत्यस्मादातुः प्रत्ययो भवति । जीवातुः–जीवनम्, औषधम्, अन्नम्, उदकं, द्रव्यं च ॥७८२॥

यमेर्दुक् ॥७८३॥

यमूं उपरमे, इत्यस्मात् किद् दुः प्रत्ययो भवति । यदुः–क्षत्रियः ॥७८३॥

शीङो धुक् ॥७८४॥

शीङ्क् स्वप्ने, इत्यस्मात् किद् धुः प्रत्ययो भवति । शीधु–मद्यविशेषः ॥७८४॥

धूगो धुन् च ॥७८५॥

धूगश् कम्पने, इत्यस्माद् धुक् प्रत्ययो भवत्यस्य च धुन् इत्यादेशो भवति । धुन्धुः–दानवः ॥७८५॥

दा-भाभ्यां नुः ॥७८६॥

आभ्यां नुः प्रत्ययो भवति । डुदांक् दाने, दानुः–गन्ता, यजमानः, वायुः, आदित्यः, दक्षिणार्थं च धनम् । भांक्

Aho ! Shrutgyanam

दीप्तौ, भानुः–सूर्यः, रश्मिश्च । चित्रभानुः–अग्निः स्वर्भानुः–राहुः । विश्वभानुः–आदित्यः ॥७८६॥

धेः शित् ॥७८७॥

दधें पाने, इत्यस्माद् नुः प्रत्ययो भवति । स च शिद् भवति, शित्वादाद् 'आत्संध्यक्षरस्य' इति आकारो न भवति । धेनुः–अभिनवप्रसवा गवादिः ॥७८७॥

सूवः कित् ॥७८८॥

षूङौक् प्राणिगर्भविमोचने, इत्यस्मात् किद् नुः प्रत्ययो भवति । सूनुः–पुत्रः ॥७८८॥

हो जह् च ॥७८९॥

ओहांक् त्यागे, इत्यस्मात् किद् नुः प्रत्ययो भवत्यस्य च जह् इत्यादेशो भवति । जह्नुः–गङ्गापिता ॥७८९॥

वचेः कगौ च ॥७९०॥

वचंक् भाषणे, इत्यस्माद् नुः प्रत्ययो भवति, ककारगकारौ चान्तादेशौ भवतः । वक्नुः, वग्नुश्च–वाग्मी ॥७९०॥

कृ-हनेस्तुक्-नुकौ ॥७९१॥

आभ्यां कितौ तु नु इति प्रत्ययौ भवतः । डुकृंग् करणे, कृतुः–कर्मकरः । कृणुः–कोशकारः, कारुश्च । हनंक् हिंसागत्योः, हतुः–हिमः, हनुः–वक्त्रैकदेशः । बाहुलकान्नलोपः ॥७९१॥

गमेः सन्वच्च ॥७९२॥

गम्लृं गतौ इत्यस्मात् तुक्–नुकौ सन्वद् भवतः । जिगन्तुः–ब्राह्मणः, दिवसः, मार्गः, प्राणः, अग्निश्च । जिगत्नुः–प्राणः, बाणः, मनः, मीनः, वायुश्च ॥७९२॥

दा-भू-क्षण्युन्दि-वदिपत्यादेरनुड् ॥७९३॥

एभ्यो डिद् अनुः प्रत्ययो भवति । डुदांग्क् दाने । दनुः–दानवमाता । भू सत्तायाम्, भुवनुः–मेघः, चन्द्रः, भवितव्यता, हंसश्च । क्षणूग् हिंसायाम्, क्षणनुः–यायावरः । उन्दैप् क्लेदने, उन्दनुः–शुकः । णद अव्यक्ते शब्दे, नदनुः–मेघः–सिंहश्च । वद वक्तायां वाचि, वदनुः–वक्ता । पत्लृं गतौ, पतनुः–श्येनः । आदिग्रहणादन्येऽपि । कित्त्वमकृत्वा डित्करणं वदेर्य्वृदभावार्थम् ॥७९३॥

कृशेरानुक् ॥७९४॥

कृशच् तनुत्वे, इत्यस्मात् किद् आनुः प्रत्ययो भवति । कृशानुः–वह्निः ॥७९४॥

जीवे रदानुक् ॥७९५॥

जीव प्राणधारणे, इत्यस्मात् किद् रदानुः प्रत्ययो भवति । जीरदानुः । कित्करणं गुणप्रतिषेधार्थम् । वलोपे हि नाम्यन्तत्वाद् गुणः स्यात् ॥७९५॥

वचेरक्नुः ॥७९६॥

वचंक् भाषणे, इत्यस्मादक्नुः प्रत्ययो भवति । वचक्नुः–वाग्मी, आचार्यः, ब्राह्मणः, ऋषिश्च ॥७९६॥

हृषि-पुषि-घुषि-गदि-मदि-नन्दि-गडि-मण्डि-जनि-स्तनिभ्यो णेरित्नुः ॥७९७॥

एभ्यो ण्यन्तेभ्य इत्नुः प्रत्ययो भवति । हृषंच् तुष्टौ, हृषू अलीके वा, हर्षयित्नुः–आनन्दः, स्वजनः, रङ्गोपजीवी, प्रियंवदश्च । पुषंच् पुष्टौ, पोषयित्नुः–भर्ता, मेघः, कोकिलश्च । घुषूण् विशब्दने, घोषयित्नुः–कोकिलः, शब्दश्च । गदण् गर्जे, गदयित्नुः–पर्जन्यः, वावदूकः, भ्रमरः, कामश्च । मदैच् हर्षे, मदयित्नुः–मदिरा, सुवर्णम्, अलंकारश्च । टुनदु समृद्धौ, नन्दयित्नुः–पुत्रः, आनन्दः, प्रमुदितश्च । गड सेचने, गडयित्नुः–बलाहकः । मडु भूषायाम्, मण्डयित्नुः–मण्डयिता, कामुकश्च । जनैचि प्रादुर्भावे जनयित्नुः–पिता । स्तनण् गर्जे, स्तनयित्नुः–मेघः, मेघगर्जितं च ॥७९७॥

कस्यर्तिभ्यामिपुक् ॥७९८॥

आभ्यां किद् इपुः प्रत्ययो भवति । कस गतौ, कसिपुः–अशनम् । ऋंक् गतौ, रिपुः–शत्रुः ॥७९८॥

कम्यमिभ्यां बुः ॥७९९॥

आभ्यां बुः प्रत्ययो भवति । कमूङ् कान्तौ, कम्बुः–शङ्खः । अम गतौ, अम्बु–पानीयम् ॥७९९॥

अभ्रेरमुः ॥८००॥

अभ्र गतौ, इत्यस्मादमुः प्रत्ययो भवति । अभ्रमुः–देवहस्तिनी ॥८००॥

यजि-शुन्धि-दहि-दसि-जनि-मनिभ्यो युः ॥८०१॥

एभ्यो युः प्रत्ययो भवति । यजीं देवपूजादौ, यज्युः–अग्निः, अध्वर्युः, यज्वा, शिष्यश्च । शुन्ध् शुद्धौ, शुन्ध्युः–अग्निः, आदित्यः, पवित्रं च । दहं भस्मीकरणे, दह्युः–अग्निः । दसूच् उपक्षये, दस्युः–चौरः । जनैचि प्रादुर्भावे, जन्युः–अपत्यं, पिता, वायुः, प्रादुर्भावः, प्रजापतिः, प्राणी च । मनिच् ज्ञाने, मन्युः–कृपा, क्रोधः–शोकः, क्रतुश्च ॥८०१॥

Aho ! Shrutgyanam

भुजेः कित् ॥८०२॥

भुजंप् पालनाभ्यवहारयोः, इत्यस्मात् किद् युः प्रत्ययो भवति । भुज्युः–अग्निः, आदित्यः, गरुडः, भोगः, ऋषिश्च ॥८०२॥

सर्तेरय्वन्यू ॥८०३॥

सृं गतौ, इत्यस्माद् अयु, अन्यु इति प्रत्ययौ भवतः । सरयुः–नदी, वायुश्च । दीर्घान्तमिममिच्छन्त्येके । सरयूः । श्लिष्टनिर्देशात् तदपि संगृहीतमेव । सरण्युः–मेघः, अश्विनोर्माता, समेघो वायुश्च ॥८०३॥

भू-क्षिपि-चरेरन्युक् ॥८०४॥

एभ्यः किदन्युः प्रत्ययो भवति । भू सत्तायाम्, भुवन्युः–ईश्वरः, अग्निश्च । क्षिपींत् प्रेरणे, क्षिपण्युः–वायुः, वसन्तः, विद्युत्, अर्थः, कालश्च । चर भक्षणे, चरण्युः–वायुः ॥८०४॥

मुस्त्युक् ॥८०५॥

मृंत् प्राणत्यागे, इत्यस्मात् कित् त्युः प्रत्ययो भवति । मारयतीति मृत्युः, कालः, मरणं च ॥८०५॥

चि-नी-पी-म्यशिभ्यो रुः ॥८०६॥

एभ्यो रुः प्रत्ययो भवति । चिंग्ट् चयने, चेरुः–मुनिः । णींग् प्रापणे, नेरुः–जनपदः । पीङ्च् पाने, पेरुः–सूर्यः, गिरिः–कलविङ्कश्च । मीङ्च् हिंसायाम्, मेरुः–देवाद्रिः । अशौटि व्याप्तौ, अश्रु–नेत्रजलम् ॥८०६॥

रु-पूभ्यां कित् ॥८०७॥

आभ्यां किद् रुः प्रत्ययो भवति । रुक् शब्दे । रुरुः–मृगजातिः । पूग्श् पवने, पुरुः–राजा ॥८०७॥

खनो लुक् च ॥८०८॥

खनूग् अवदारणे, इत्यस्माद् रुः प्रत्ययो भवति, अन्त्यस्य च लुग् भवति । खरुः–दर्पः, क्रूरः, मूर्खः, दृप्तः, गीतविशेषश्च ॥८०८॥

जनि-हनि-शद्यर्तेस्त च ॥८०९॥

एभ्यो रुः प्रत्ययो भवति, तकारश्चान्तादेशो भवति । जनैचि प्रादुर्भावे, जत्रुः–शरीरावयवः, मेघः, धर्मावसानं च । अनंक् हिंसागत्योः हत्रुः–हिंस्रः । शद्लृं शातने, शत्रुः–रिपुः । बाहुलकात् तादेशविकल्पे शद्रुः–पुरुषः । ऋंक् गतौ, अर्त्रुः–क्षुद्रजन्तुः ॥८०९॥

श्मनः शीङो डित् ॥८१०॥

श्मन्पूर्वात् शीङ्क् स्वप्ने, इत्यस्माद् डिद् रुः प्रत्ययो भवति । श्मश्रु–मुखलोमानि ॥८१०॥

शिग्रु-गेरु-नमेर्वादयः ॥८११॥

शिग्र्वादयः शब्दा रुप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । शिगट् निशाने, कित् गोऽन्तश्च । शिग्रुः–शोभाञ्जनकः, हरितकविशेषश्च । गिरतेरेच्च, गेरुः–धातुः । नमेर्नञ्पूर्वस्य मयतेर्वा एच्चान्तः, नमेरुः–देववृक्षः । आदिग्रहणादन्येऽपि ॥८११॥

कटि-कुट्यर्तेररुः ॥८१२॥

एभ्योऽरुः प्रत्ययो भवति । कटे वर्षावरणयोः, कटरुः–शकटम् । कुटत् कौटिल्ये, कुटरुः–पक्षिविशेषः, मर्कटः, वृक्षः, वर्धकिश्च । कुटादित्वान्न गुणः । ऋंक् गतौ, अररुः–असुरः, आयुधं, मण्डलं च ॥८१२॥

कर्करारुः ॥८१३॥

कर्कं सौत्रादारुः प्रत्ययो भवति । कर्कारुः–क्षुद्रचिर्भिटी ॥८१३॥

उर्वेरादेरूदेतौ च ॥८१४॥

उर्वैं हिंसायाम्, इत्यस्मादारुः प्रत्ययो भवति, आदेश्च ऊकार–एकार आदेशौ भवतः । ऊर्वत्यार्तिमिति ऊर्वारुः–कटुचिर्भिटी । एर्वारुः–चारुचिर्भिटी ॥८१४॥

कृपि-क्षुधि-पी-कुणिभ्यः कित् ॥८१५॥

एभ्यः किदारुः प्रत्ययो भवति । कृपौङ् सामर्थ्ये, कृपारुः–दयाशीलः । क्षुधंच् बुभुक्षायाम्, क्षुधारुः–क्षुधमसहमानः, लत्वे कृपालुः, क्षुधालुः । पीङ्च् पाने । पियारुः–वृक्षः । कुणत् शब्दोपकरणयोः, कुणारुः–वनस्पतिः ॥८१५॥

श्यः शीत च ॥८१६॥

श्यैङ् गतौ, इत्यस्माद् आरुः प्रत्ययो भवति । अस्य च शीत इत्यादेशो भवति । शीतारुः–शीतासहः, लत्वे शीतालुः ॥८१६॥

तुम्बेरुरुः ॥८१७॥

तुबु अर्दने, इत्यस्मादुरुः प्रत्ययो भवति । तुम्बुरुः–गन्धर्वः, गन्धद्रव्यं च ॥८१७॥

कन्देः कुन्द च ॥८१८॥

कदु रोदनाह्वानयोः, इत्यस्माद् उरुः प्रत्ययो भवत्यस्य च कुन्द इत्यादेशो भवति । कुन्दुरुः–सल्लकीनिर्यासः ॥८१८॥

Aho ! Shrutgyanam

चमेरूरुः ॥८१९॥

चमू अदने, इत्यस्माद् ऊरुः प्रत्ययो भवति । चमूरुः–चित्रकः ॥८१९॥

शीङो लुः ॥८२०॥

शीङ्क् स्वप्ने, इत्यस्माद् लुः प्रत्ययो भवति । शेलुः–श्लेष्मातकः ॥८२०॥

पीङः कित् ॥८२१॥

पीङ्च् पाने, इत्यस्मात् कित् लुः प्रत्ययो भवति । पीलुः–हस्ती, वृक्षश्च ॥८२१॥

लस्जीर्ष्य-शलेरालुः ॥८२२॥

एभ्य आलुः प्रत्ययो भवति । ओलस्जैति व्रीडे, लज्जालुः–लज्जनशीलः । ईर्ष्य ईर्ष्यार्थः, ईर्ष्यालुः–ईर्ष्याशीलः । शल गतौ, शलालुः–वृक्षावयवः ॥८२२॥

आपोऽप् च ॥८२३॥

आप्लृंट् व्याप्तौ, इत्यस्मादालुः प्रत्ययो भवत्यस्य च अप् इत्यादेशो भवति । अपालुः–वायुः ॥८२३॥

गूहलु-गुग्गुलु-कमण्डलवः ॥८२४॥

एते आलुप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । गूहतेर्ह्रस्वश्च प्रत्ययादेः, गूहलुः–ऋषिः । गुंङ् शब्दे, अस्यादेर्गुग्गुः लोपश्च प्रत्ययादेः, गुग्गुलुः–वृक्षविशेषः, अश्वश्च । कम्पूर्वादनितेर्डोऽन्तः ह्रस्वश्च प्रत्ययादेः, कमण्डलुः–अमत्रम् ॥८२४॥

प्रः शुः ॥८२५॥

पृश् पालनपूरणयोः, इत्यस्मात् शुः प्रत्ययो भवति । पर्शुः–वङ्क्रिसंज्ञं वक्रास्थि ॥८२५॥

मस्जीष्यशिभ्यः सुक् ॥८२६॥

एभ्यः कित् सुः प्रत्ययो भवति । टुमस्जोंत् शुद्धौ, मस्जेः स इति नोऽन्तः, मङ्क्षुः–मुनिः । इषश् आभीक्ष्ण्ये, इक्षुः–गुडादिप्रकृतिः । अशौटि व्याप्तौ, अक्षुः–समुद्रः, वप्रश्च ॥८२६॥

तॄ-पलि-मलेरक्षुः ॥८२७॥

एभ्योऽक्षुः प्रत्ययो भवति । तॄ प्लवनतरणोः, तरक्षुः–श्वापदविशेषः । पल गतौ, मलि धारणे, पलक्षुः, मलक्षुश्च–वृक्षः ॥८२७॥

उलेः कित् ॥८२८

उल दाहे, इत्यस्मात् सौत्रात् किद् अक्षुः प्रत्ययो भवति । उलक्षुः–तृणजातिः ॥८२८॥

कृषि-चमि-तनि-धन्यन्दि-सर्जि-खर्जि-भर्जि-लस्जीर्ष्यिभ्य ऊः ॥८२९॥

एभ्य ऊः प्रत्ययो भवति । कृषींत् विलेखने, कर्षूः–कुल्या, अङ्गारः, परिखा, गर्तश्च । चमू अदने, चमूः–सेना । तनूयी विस्तारे, तनूः–शरीरम् । धन शब्दे, धन धान्ये सौत्रो वा, धनूः–धान्यराशिः, ज्या, वरारोहा च स्त्री । अदु बन्धने, अन्दूः–पादकटकः । सर्ज अर्जने, सर्जूः अर्घः, क्षारः–वनस्पतिः, वणिक् च । खर्ज मार्जने च, खर्जूः–कण्डूः, विद्युच्च । भृजैङ् भर्जने, भ्रस्जींत् पाके वा, भर्जूः–यवविकारः । ओलस्जैति वीडे, लज्जूः–लज्जालुः । ईर्ष्य ईर्ष्यार्थः, ईर्ष्यूः–ईर्ष्यालुः ॥८२९॥

फलेः फेल् च ॥८३०॥

फल निष्पत्तौ, इत्यस्मादूः प्रत्ययो भवत्यस्य च फेल् इत्यादेशो भवति । फेलूः–होमविशेषः ॥८३०॥

कषेर्ण्ड-च्छौ च षः ॥८३१॥

कष हिंसायाम्, इत्यस्माद् ऊः प्रत्ययो भवति । षकारस्य च ण्ड-च्छश्चादेशो भवति । कण्डूः, कच्छूश्च–पामा ॥८३१॥

वहेर्ध् च ॥८३२॥

वहीं प्रापणे, इत्यस्माद् ऊः प्रत्ययो धश्चान्तादेशो भवति । वधूः–पतिमुपसंपन्ना कन्या, जाया च ॥८३२॥

मृजेर्गुणश्च ॥८३३॥

मृजौक् शुद्धौ, इत्यस्माद् ऊः प्रत्ययो भवति, गुणश्चास्य भवति । मर्जूः–शुद्धिः, रजकः, नद्यास्तीरं, शिला च । गुणे सिद्धे गुणवचनमकारस्य वृद्धिबाधनार्थम् ॥८३३॥

अजेर्जोऽन्तश्च ॥८३४॥

अज क्षेपणे, इत्यस्माद् ऊः प्रत्ययो भवति, जकारश्चान्तो भवति । अज्जूः–जननी ॥८३४॥

कसि-पद्यर्त्यादिभ्यो णित् ॥८३५॥

एभ्यो णिद् ऊः प्रत्ययो भवति । कस गतौ, कासूः–शक्तिर्नामायुधम्, वाग्विकलः, बुद्धिः, व्याधिः, विकला च वाक्–प्राणी च । पदिंच् गतौ, पादूः–पादुका । ऋक् गतौ, आरूः–वृक्षविशेषः, कच्छूः, गतिः, पिङ्गलश्च । आदिग्रहणात् कचतेः–काचूः । शलतेः–शालूः इत्यादयोऽपि ॥८३५॥

अणेर्डोऽन्तश्च ॥८३६॥

Aho ! Shrutgyanam

अणेर्धातोर्णिद् ऊः प्रत्ययो भवति । डश्चान्तः । अण शब्दे, आण्डूः–जलभृङ्गारः ॥८३६॥

अडो ल च वा ॥८३७॥

अड उद्यमे, इत्यस्माण्णिद् ऊः प्रत्ययो भवति, लश्चान्तादेशो वा भवति । आलूः–भृङ्गारः, करकश्च । आडूः–दर्वी, टिट्टिभः, वनस्पतिः, जलाधारभूमिः, पादभेदनं च ॥८३७॥

नञो लम्बेर्नलुक् च ॥८३८॥

नञ्पूर्वात् लबुङ् अवस्रंसने, इत्यस्माद् णिद् ऊः प्रत्ययो भवति । नकारस्य च लुक् भवति । अलाबूः–तुम्बी ॥८३८॥

कफादीरेर्ल च ॥८३९॥

कफपूर्वाद् ईरिक् गति-कम्पनयोः, इत्यस्माद् ऊः प्रत्ययो भवति, लकारश्चान्तादेशो भवति । कफेलूः–श्लेष्मातकः, यवलाजाः, मधुपर्कः, छादिषेयं च तृणम् ॥८३९॥

ऋतो रत् च ॥८४०॥

ऋत् घृणागतिस्पर्धेषु, इत्यस्माद् ऊः प्रत्ययो भवति, रत् चास्यादेशो भवति । रतूः–नदीविशेषः, सत्यवाक्, दूतः, कृमिविशेषश्च ॥८४०॥

दृभिचपेः स्वरान्नोऽन्तश्च ॥८४१॥

आभ्यां पर ऊः प्रत्ययो भवति, स्वरात् परो नोऽन्तश्च भवति । दृभैत् ग्रन्थे, दृन्भूः–सर्पजातिः, वनस्पतिः, वज्रः, ग्रन्थकारः, दर्भणं च । बाहुलकाद् म्नां धुड्वर्गेऽन्त्योऽपदान्ते इति नकारस्य लुग् न भवति । चप सान्त्वने, चम्पूः–कथाविशेषः ॥८४१॥

धृषेर्दिधिषदिधीषौ च ॥८४२॥

ञिधृषाट् प्रागल्भ्ये, इत्यस्माद् ऊः प्रत्ययो भवति, दिधिष्, दिधीष् इत्यादेशौ चास्य भवतः । दिधिषूः–ज्यायस्याः, पूर्वपरिणीता, पुंश्चली च । दिधीषूः–ऊढायाः, कनिष्ठाया अनूढा, ज्येष्ठा, पुनर्भूः, आहुतिश्च ॥८४२॥

भ्रमि-गमि-तनिभ्यो डित् ॥८४३॥

एभ्यो डिद् ऊः प्रत्ययो भवति । भ्रमूच् अनवस्थाने, भ्रूः–अक्ष्णोरुपरि रोमराजिः । गम्लृं गतौ, अग्रे गच्छत्यग्रेगूः–पुरस्सरः । तनूयी विस्तारे, कुत्सितं तन्यते कुतूः–चर्ममयमावपनम् ॥८४३॥

नृति-शृधि-रुषि-कुहिभ्यः कित् ॥८४४॥

एभ्यः किद् ऊः प्रत्ययो भवति । नृतैच् नर्तने, नृतूः–नर्तकः, कृमिजातिः, प्लवः, प्रतिकृतिश्च । शृधूङ् शब्दकुत्सायाम्, शृधूः–शर्धनः, कृमिजातिः, अपानं, बलिश्च दानवः । रुषच् रोषे, रुषूः–भर्त्सकः । कुहणि विस्मापने, कुहूः–अमावास्या ॥८४४॥

तॄ-खडिभ्यां डूः ॥८४५॥

आभ्यां डूः प्रत्ययो भवति । तॄ प्लवनतरणयोः, तर्डूः–द्रोणी, प्लवः, परिवेषणभाण्डं च । खडण् भेदे, खड्डूः–बालानामुपकरणम्, स्त्रीणां पादाङ्गुष्ठाभरणं च ॥८४५॥

तॄ-दृभ्यां दूः ॥८४६॥

आभ्यां दूः प्रत्ययो भवति । तॄ प्लवनतरणयोः, तर्दूः–दर्वी । दृश् विदारणे, दर्दूः–कुष्ठभेदः ॥८४६॥

कमि-जनिभ्यां बूः ॥८४७॥

आभ्यां बूः प्रत्ययो भवति । कमूङ् कान्तौ, कम्बूः–भूषणम्, आदर्शत्सरुः, कुरुविन्दश्च । जनैचि प्रादुर्भावे, जम्बूः–वृक्षविशेषः ॥८४७॥

शकेरन्धूः ॥८४८॥

शक्लृंट शक्तौ, इत्यस्मादन्धूः प्रत्ययो भवति । शकन्धूः–वनस्पतिः, देवताविशेषश्च ॥८४८॥

कृगः कादिः ॥८४९॥

डुकृंग् करणे इत्यस्मात् ककारादिरन्धूः प्रत्ययो भवति । कर्कन्धूः–बदरी, व्रणं, यवलाजाः, मधुपर्कः, विष्टम्भश्च ॥८४९॥

योरागूः ॥८५०॥

युक् मिश्रणे, इत्यस्माद् आगूः प्रत्ययो भवति । यवागूः–द्रवौदनः ॥८५०॥

काच्छीङो डेरूः ॥८५१॥

कपूर्वात् शीङ्क् स्वप्ने, इत्यस्माद् डिद् एरूः प्रत्ययो भवति । कशेरूः–कन्दविशेषः, वीरुच्च ॥८५१॥

दिव ऋः ॥८५२॥

दिवूच् क्रीडादौ, इत्यस्माद् ऋः प्रत्ययो भवति । देवा–देवरः–पितृव्यस्त्री, अग्निश्च ॥८५२॥

सोरसेः ॥८५३॥

सुपूर्वादसूच् क्षेपणे, इत्यस्माद् ऋः प्रत्ययो भवति । स्वसा–भगिनी ॥८५३॥

नियो डित् ॥८५४॥

Aho ! Shrutgyanam

णींग् प्रापणे, इत्यस्माद् डिद् ऋः प्रत्ययो भवति । ना–पुरुषः ॥८५४॥

सव्यात् स्थः ॥८५५॥

सव्यपूर्वात् ष्ठां गतिनिवृत्तौ, इत्यस्माद् डिद् ऋः प्रत्ययो भवति । सव्येष्ठा–सारथिः ॥८५५॥

यति-ननन्दिभ्यां दीर्घश्च ॥८५६॥

यतेर्नञ्पूर्वाद् नन्देश्च ऋः प्रत्ययो भवति । दीर्घश्चानयोर्भवति । यतैङ् प्रयत्ने, याता–पति-भ्रातृभगिनी, देवरभार्या, ज्येष्ठाभार्या च । टुनदु समृद्धौ, ननान्दा–भर्तृभगिनी । नखादित्वान्नञोऽन्न भवति ॥८५६॥

शासि-शंसि-नी-रु-क्षु-हृ-भृ-धृ-मन्यादिभ्यस्तृः ॥८५७॥

एभ्यः तृः प्रत्ययो भवति । शासूक् अनुशिष्टौ, शास्ता–गुरुः, राजा च; प्रशास्ता–राजा, ऋत्विक् च । शंसू स्तुतौ च, शंस्ता–स्तोता । णींग् प्रापणे, नेता–सारथिः । रुक् शब्दे, रोता–मेघः । टुक्षुक् शब्दे, क्षोता–मुसलम् । हृंग् हरणे, हर्ता–चौरः । डुभृंग्क् पोषणे च, भर्ता–पतिः । धृङ्त् अवध्वंसने, धर्ता–धर्मः । मनिच् ज्ञाने, मन्ता–विद्वान्, प्रजापतिश्च । आदिग्रहणादुपद्रष्टा–ऋत्विक्, विशस्ता–घातकः, इत्यादयोऽपि ॥८५७॥

पातेरिच्च ॥८५८॥

पांक् रक्षणे, इत्यस्मात् तृः प्रत्ययो भवति, धातोश्चेकारोन्तादेशो भवति । पिता–जनकः ॥८५८॥

मानिभ्राजेर्लुक् च ॥८५९॥

आभ्यां तृः प्रत्ययो भवति, लुक् चान्तस्य भवति । मानि पूजायाम्, माता–जननी । भ्राजि दीप्तौ, भ्राता–सोदर्यः ॥८५९॥

जाया मिगः ॥८६०॥

जाशब्दपूर्वाद् डुमिग्ट् प्रक्षेपणे, इत्यस्मात् तृः प्रत्ययो भवति । जायां–प्रजायां, मिन्वन्ति तमिति जामाता–दुहितृपतिः ॥८६०॥

आपोऽप् च ॥८६१॥

आप्लृंट् व्याप्तौ, इत्यस्मात् तृः प्रत्ययो भवति । अप् चास्यादेशो भवति । अप्ता–यज्ञः, अग्निश्च ॥८६१॥

नमेः प् च ॥८६२॥

णमं प्रह्वत्वे, इत्यस्मात् तृः प्रत्ययो भवति, पश्चास्यान्तादेशो भवति । नप्ता–दुहितुः–पुत्रस्य वा पुत्रः ॥८६२॥

हु-पुग्-गोन्नी-प्रस्तु-प्रतिहृ-प्रतिप्रस्थाभ्य ऋत्विजि ॥८६३॥

एभ्य ऋत्विज्यभिधेये तृः प्रत्ययो भवति । हुंक् दानादनयोः, होता । पूग्श् पवने, पोता । गैं शब्दे, णींग् प्रापणे उत्पूर्वः, उद्गाता, उन्नेता । ष्टुंग्क् स्तुतौ, प्रपूर्वः–प्रस्तोता । हृंग् हरणे प्रतिपूर्वः, प्रतिहर्ता । ष्ठां गतिनिवृत्तौ, प्रतिप्रपूर्वः, प्रतिप्रस्थाता । एते ऋत्विजः ॥८६३॥

नियः षादिः ॥८६४॥

णींग् प्रापणे, इत्यस्मात् षकारादिः तृः प्रत्ययो भवति । ऋत्विज्यभिधेये । नेष्टा–ऋत्विक् ॥८६४॥

त्वष्टृ-क्षत्तृ-दुहित्रादयः ॥८६५॥

एते तृप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । त्विषेरितोऽच्च । त्वष्टा–देववर्धकिः, प्रजापतिः, आदित्यश्च । क्षद खदने सौत्रः, क्षत्ता–नियुक्तः, अविनीतः, दौवारिकः, मुसलः, पारशवः, रुद्रः, सारथिश्च । दुहेरिट् किच्च, दुहिता–तनया । आदिग्रहणादन्येऽपि ॥८६५॥

रातेर्डैः ॥८६६॥

रांक् दाने, इत्यस्माद् डिद् ऐः प्रत्ययो भवति । राः–द्रव्यम् । रायौ, रायः ॥८६६॥

द्यु-गमिभ्यां डोः ॥८६७॥

आभ्यां डिद् ओः प्रत्ययो भवति । द्युंक् अभिगमे, द्यौः–स्वर्गः, अन्तरिक्षं च । गम्लृं गतौ, गौः–पृथिव्यादिः ॥८६७॥

ग्ला-नुदिभ्यां डौः ॥८६८॥

आभ्यां डिद् औः प्रत्ययो भवति । ग्लैं हर्षक्षये, ग्लौः–चन्द्रमाः, व्याधितः, शरीरग्लानिश्च । णुदंत् प्रेरणे, नौः–जलतरणम् ॥८६८॥

तोः किक् ॥८६९॥

तुक् वृत्त्यादौ, इत्यस्मात् किक् प्रत्ययो भवति । ककारः कित्कार्यार्थः, इकार उच्चारणार्थः, तुक्–अपत्यम् ॥८६९॥

द्रागादयः ॥८७०॥

द्राक् इत्यादयः शब्दाः किक् प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते ।

Aho ! Shrutgyanam

द्रवतेरा च, द्राक्–शीघ्रम् । एवं सरतेः स्राक् स एवार्थः । इयर्तेरवदिशश्च । अर्वाक्–अचिरन्तनम् । आदिग्रहणादन्येऽपि ॥८७०॥

स्रोश्चिक् ॥८७१॥

स्रुं गतौ, इत्यस्मात् चिक् भवति । स्रुक्–जुहूप्रभृति-अग्निहोत्रभाण्डम् । स्रुचौ । स्रुचः । इकार उच्चारणार्थः । ककारः कित्कार्यार्थः ॥८७१॥

तनेड्वच् ॥८७२॥

तयूनी विस्तारे, इत्यस्माद् डिद् वच् प्रत्ययो भवति । त्वक्–शरीरादिवेष्टनम् ॥८७२॥

पारेरज् ॥८७३॥

पारण् कर्मसमाप्तौ, इत्यस्मादज्प्रत्ययो भवति । पारक् शाकविशेषः, प्राकारः, सुवर्णं रत्नं च । पारजौ । पारजः ॥८७३॥

ऋधि-प्रथि-भिषिभ्यः कित् ॥८७४॥

एभ्यः किद् अज्प्रत्ययो भवति । ऋधौच् वृद्धौ, ऋधक्–समीपवाचि अव्ययम् । प्रथिष् प्रख्याने–निर्देशादेव य्वृत् । पृथग् नानार्थेऽव्ययम् । भिषः सौत्रः, भिषक्–वैद्यः, भिषजौ, भिषजः ॥८७४॥

भृ-पणिभ्यामिज् भुरवणौ च ॥८७५॥

भृ-पणिभ्यामिज्प्रत्ययो यथासंख्यं भुर वण इत्यादेशौ भवतः । भृंग् भरणे, भुरिक्–बाहुः, शब्दः, भूमिः, वायुः, एकाक्षराधिकपादं च ऋक्छन्दः । पणि व्यवहार-स्तुत्योः, वणिक्–वैदेहिकः ॥८७५॥

वशेः कित् ॥८७६॥

वशक् कान्तौ, इत्यस्मात् किद् इज् प्रत्ययो भवति । उशिक्–कान्तः, उशीरम्, अग्निः, गौतमश्च ऋषिः ॥८७६॥

लङ्घेरट् नलुक् च ॥८७७॥

लघुक् गतौ, इत्यस्माद् अट्प्रत्ययो भवति नलोपश्चास्य भवति । लघट्–वायुः, लघु च शकटम् ॥८७७॥

सर्तेरड् ॥८७८॥

सृं गतौ, इत्यस्मादड्प्रत्ययो भवति । सरड्–वृक्षविशेषः मेघः, उष्ट्रजातिश्च ॥८७८॥

ईडेरविड् ह्रस्वश्च ॥८७९॥

ईडिक् स्तुतौ, इत्यस्माद् अविड्प्रत्ययो भवति, ह्रस्वश्चास्य भवति । इडविट्–विश्रवाः ॥८७९॥

क्विपि म्लेच्छश्च वा ॥८८०॥

म्लेच्छेरीडेश्च क्विपि प्रत्यये वा ह्रस्वो भवति । अत एव वचनात् क्विप् च । म्लेच्छ अव्यक्ते शब्दे, म्लेट्, मिलट्–उभयं म्लेच्छजातिः । इट्, ईट्–स्वामी, मेदिनी च ॥८८०॥

तृपेः कत् ॥८८१॥

तृपौच् प्रीतौ, इत्यस्मात् किद् अत्प्रत्ययो भवति । तृपत्–चन्द्रः, समुद्रः, तृणभूमिश्च ॥८८४॥

संश्चद्-वेहत्-साक्षादादयः ॥८८१॥

एते कत्प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । संपूर्वाच्चिनोतेर्डित् समो मकारस्यानुस्वारपूर्वः शकारश्च । संश्चत्–अध्वर्युः, कुहकश्च । अनुस्वारं नेच्छन्त्येके, संश्चत्–कुहकः । विपूर्वाद्धन्तेर्डिद्धेश्च गुणः, विहन्ति–गर्भमिति वेहत्–गर्भघातिनी अप्रजाः स्त्री, अनड्वांश्च । संपूर्वादीक्षतेः साक्षाभावश्च साक्षात्–समक्षमित्यर्थः । आदिग्रहणाद् रेहत्, वियत्, पुरीतदादयोऽपि ॥८८२॥

पट-च्छपदादयोऽनुकरणाः ॥८८३॥

पटदित्यादयोऽनुकरणशब्दाः कत्प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । पट गतौ, पटत् छुपत् संस्पर्शे उकारस्याकारश्च । छपत् । पत्लृं गतौ पतत् । शृश् हिंसायाम्, शरत् । शल गतौ, शलत् । खट काङ्क्षे, खटत् । दहेः प च, दपत् । डिपेः डिपत् । खनते रश्च, खरत् । खादतेः खादत् । सर्व एते कस्यचिद्विशेषस्य श्रुतिप्रत्यासत्त्याऽनुकरणशब्दाः । अनुकरणमपि साध्वेव कर्तव्यम्, न यत्किञ्चित्, यथाऽनक्षरमिति शिष्टाः स्मरन्ति ॥८८३॥

द्रुहि-वृहि-महि-पृषिभ्यः कतृः ॥८८४॥

एभ्यः किद् अतृः प्रत्ययो भवति । द्रुहौच् जिघांसायाम्, द्रुहन्–ग्रीष्मः, वृह वृद्धौ वृहन्–प्रवृद्धः, वृहती छन्दः । मह पूजायाम्, महान्–पूजितः, विस्तीर्णश्च । महान्तौ, महान्तः, महती । पृषू सेचने, पृषत्–तन्त्रं, जलबिन्दुः, चित्रवर्णजातिः, दध्युपसिक्तमाज्यं च । पृषती–मृगी । स्थूलपृषतिमालभेत । ऋकारो ङ्यर्थः ॥८८४॥

गमेर्डिद् द्वे च ॥८८५॥

गम्लृं–गतौ, इत्यस्मात् कतृप्रत्ययो डिद् भवति, द्वे चास्य रूपे भवतः । जगत्–स्थावरजङ्गमो लोकः, जगती पृथ्वी ॥८८५॥

Aho ! Shrutgyanam

भातेर्डवतुः ।।८८६।।

भांक् दीप्तौ, इत्यस्माद् डिद् अवतुः प्रत्ययो भवति । भवान् । भवन्तौ । भवन्तः । उकारो दीर्घत्वादिकार्यार्थः ।।८८६।।

हृ-सृ-रुहि-युषि-तडिभ्य इत् ।।८८७।।

एभ्यः इत्प्रत्ययो भवति । हृंग् हरणे, हरित्-हरितो वर्णः, ककुब्, वायुः, मृगजातिः, अश्वः, सूर्यश्च । सृं गतौ, सरित्-नदी । रुहं जन्मनि, रोहित्-वीरुत्प्रकारः, मत्स्यः, सूर्यः, अग्निः, मृगः, वर्णश्च । युषः सौत्रः, योषति-गच्छति पुरुषमिति योषित् स्त्री । तडण् आघाते, तडित्-विद्युत् ।।८८७।।

उदकात् श्वेर्डित् ।।८८८।।

उदकपूर्वात् ट्वोश्वि गति-वृद्ध्योः इत्यस्माद् डिद् इत्-प्रत्ययो भवति । उदकेन श्वयति उदश्वित्-तक्रम् । नाम्न्युत्तरपदस्य च इति उदकस्य उदभावः ।।८८८।।

मृ उत् ।।८८९।।

मृंत् प्राणत्यागे, इत्यस्याद् उत् प्रत्ययो भवति । मरुत्-वायुः, देवः, गिरिशिखरं च ।।८८९।।

ग्रो मादिर्वा ।।८९०।।

गृत् निगरणे, इत्यस्माद् उत् प्रत्ययो भवति, स च मकारादिर्वा भवति । गर्मुत्-गरुडः, आदित्यः, मधुमक्षिका, तक्षा, तृणं, सुवर्णं च । गरुत्-बर्हः, अजगरः, मरकतमणिः, वेगः, तेजसां वर्तिश्च ।।८९०।।

शकेर्ऋत् ।।८९१।।

शक्लृंट् शक्तौ, इत्यस्माद् ऋत् प्रत्ययो भवति । शकृत्-पुरीषम् ।।८९१।।

यजेः क च ।।८९२।।

यजीं देवपूजादौ, इत्यस्माद् ऋत् प्रत्ययो भवति, कश्चान्तादेशो भवति । यकृत्-अन्त्रम् ।।८९२।।

पातेः कृथ् ।।८९३।।

पांक् रक्षणे, इत्यस्मात् किद् ऋथ् प्रत्ययो भवति । पृथो नाम क्षत्रियाः ।।८९३।।

शृ-दृ-भसेरद् ।।८९४।।

एभ्योऽद् प्रत्ययो भवति । शृश् हिंसायाम्, शरद्-ऋतुः । दृ-भये, दरत्-जनपदसमानशब्दः, क्षत्रियः । दरदः-जनपदः । भस भर्त्सन-दीप्त्योः सौत्रः, भसत्-जघनम्, आस्यम्, आमाशयस्थानं च । भषेरपीच्छन्त्येके भषत् ।।८९४।।

तनि-त्यजि-यजिभ्यो डद् ।।८९५।।

एभ्यो डिद् अद् प्रत्ययो भवति । तनूयी विस्तारे, तत्-सः । त्यजं हानौ, त्यद्-स्यः । एतौ निर्देशवाचिनौ । यजीं देवपूजादौ, यद्-यः । अयमुद्देशवाची ।।८९५।।

इणस्तद् ।।८९६।।

इणक् गतौ, इत्यस्मात् तद् प्रत्ययो भवति । एतद्-एषः, समीपवाची शब्दः ।।८९६।।

प्रः सद् ।।८९७।।

पृश् पालनपूरणयोः, इत्यस्मात् सद् इत्येवं प्रत्ययो भवति । पर्षत्-सभा ।।८९७।।

द्रो ह्रस्वश्च ।।८९८।।

दृश् विदारणे, इत्यस्मात् सद् प्रत्ययो भवति । ह्रस्वश्चास्य भवति, दृषत्-पाषाणः ।।८९८।।

युष्यसिभ्यां क्मद् ।।८९९।।

आभ्यां किद् मद् इत्ययं प्रत्ययो भवति । युषः सौत्रः सेवायाम्, युष्मद्-यूयम् । असूच् क्षेपणे, अस्मद्-वयम् ।।८९९।।

उक्षि-तक्ष्यक्षीशि-राजि-धन्वि-पञ्चि-पूषि-क्लिदि-स्निहि-नु-मस्जेरन् ।।९००।।

एभ्यः अन् प्रत्ययो भवति । उक्ष सेचने, उक्षा-वृषः । तक्षौ तनूकरणे, तक्षा-वर्धकिः । अक्षौ व्याप्तौ च, अक्षा-दृष्टिनिपातः । ईशिक् ऐश्वर्ये, ईशा-परमात्मा । राजृग् दीप्तौ, राजा-ईश्वरः । धन्विः सौत्रो गतौ, धवु गतौ वा, धन्वा-मरुः, धनुश्च । पचुङ् व्यक्तीकरणे पञ्च-संख्या । पूष वृद्धौ, पूषा-आदित्यः । क्लिदौच् आर्द्रभावे, क्लेदा-मुखप्रसेकः, चन्द्रः, इन्द्रश्च । ष्णिहौच् प्रीतौ, स्नेहा-स्वाङ्गम्, सुहृत्, वशा च-गौः । णुक् स्तुतौ नव-संख्या । टुमस्जोंत् शुद्धौ, मज्जा-षष्ठो धातुः ।।९००।।

लू-पू-यु-वृषि-दंशि-द्यु-दिवि-प्रतिदिविभ्यः कित् ।।९०१।।

एभ्यः किद् अन् प्रत्ययो भवति । लूग्श् छेदने, लुवा-दात्रं, स्थावरश्च । पूग्श् पवने, पुवा-वायुः । युक् मिश्रणे, युवा-तरुणः । वृषू सेचने, वृषा-इन्द्रः, वृषभश्च । दंशं दशने, दश-संख्या । द्युंक् अभिगमे, द्युवा-अभिगमनीयः,

Aho ! Shrutgyanam

राजा, सूर्यश्च । दिवूच् क्रीडादौ, दिवा–दिनम् । प्रतिपूर्वात् प्रतिदिवा–अहः, अपराह्णश्च ॥६०१॥

श्वन्-मातरिश्वन्-मूर्धन्-पीहन्नर्यमन्-विश्वप्सः-परिज्वन्-प्हन्नहन्-मघवन्नथर्वन्निति ॥६०२॥

एते अन् प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । श्वयतेर्लुक् च, श्वा–कुकुरः । मातरि अन्तरिक्षे श्वयति, मातरिश्वा–वायुः । अत्र तत्पुरुषे कृति सप्तम्या अलुप् इकारलोपश्च पूर्ववत् । मूर्छेर्धश्च, मूर्छन्त्यस्मिन्नाहताः प्राणिन इति, मूर्धा–शिरः । प्लिहो दीर्घश्च, प्लीहा-जठरान्तरावयवः । अरिपूर्वादमेर्ण्यन्ताद् अरीन् आमयतीति, अर्यमा–सूर्यः । विश्वपूर्वात् प्सातेः कित् च विश्वप्सा–कालः, वायुः, अग्निः, इन्द्रश्च । परिपूर्वात् ज्वलतेर्डिच्च परिज्वा–सूर्यः, चन्द्रः, अग्निः, वायुश्च । महीयतेरीयलोपश्च महा–महत्त्वम् । अंहेर्नलोपश्च, अंहते–अहः–दिवसः । मङ्घेर्नलोपोऽच् चान्तः मङ्घते इति, मघवा–इन्द्रः । नञ्पूर्वात् खर्वेः खस्थश्च न खर्वति, अथर्वा–वेदः, ऋषिश्च । इतिकरणादन्येऽपि भवन्ति ॥६०२॥

षप्यशौभ्यां तन् ॥६०३॥

आभ्यां तन् प्रत्ययो भवति । षप समवाये, अशौटि व्याप्तौ । सप्त, अष्ट–सङ्ख्ये ॥६०३॥

स्ना-मदि-पद्यर्ति-पॄ-शकिभ्यो वन् ॥६०४॥

एभ्यो वन् प्रत्ययो भवति । ष्णांक् शौचे, स्नावा–शिरा, नदी च । मदैच् हर्षे, मद्वा–हंसः, पानं, कान्तिः, क्रीडा, मुनिः, शिरश्च । मद्वरी–मदिरा । बाहुलकाद् डीः, वनोरश्च । पदिंच् गतौ, पद्वा–पत्तिः, वत्सः, रथः, पादः, गतिश्च । ऋंक् गतौ अर्वा–अश्वः, अशनिः, आसनं, मुनिश्च । पॄश् पालनपूरणयोः, पर्व–सन्धिः, पूरणं, पुण्यतिथिश्च । शक्लृंट् शक्तौ, शक्वा–वर्धकिः, समर्थः । शक्वरी–नदी, विद्युत्, छन्दोजातिः, युवतिः, सुरभिश्च । शाक्वरः–वृषः ॥६०४॥

ग्रहेरा च ॥६०५॥

ग्रहीश् उपादाने, इत्यस्माद् वन् प्रत्ययो भवति । आकारश्चान्तादेशो भवति । ग्रावा–पाषाणः, पर्वतश्च ॥६०५॥

ऋ-शी-क्रुशि-रुहि-जि-क्षि-हृ-सृ-धृ-हृभ्यः क्वनिप् ॥६०६॥

एभ्यः क्वनिप् प्रत्ययो भवति । ऋंक् गतौ, ऋत्वा–ऋषिः । शीङ्क् स्वप्ने, शीवा, अजगरः । क्रुशं आह्वानरोदनयोः, क्रुश्वा–शृगालः । रुहं बीजजन्मनि, रुह्वा–वृक्षः । जिं अभिभवे, जित्वा–धर्मः, इन्द्रः, योद्धा च । जित्वरी–नदी, वणिजश्च; वाराणसीं जित्वरीमाहुः । क्षि क्षये, क्षित्वा वायुः, विष्णुः, मृत्युश्च । क्षित्वरी–रात्रिः । हृंग् हरणे, हृत्वा–रुद्रः, मत्स्यः, वायुश्च । सृं गतौ, सृत्वा–कालः, अग्निः, सर्पः, नीचजातिश्च । सृत्वरी–वेश्यामाता । धृङ्त् स्थाने, धृत्वा–विष्णुः, शैलः, समुद्रश्च । धृत्वरी–भूमिः । हृङ्त् आदरे, हृत्वा–हृप्तः । पकारस्तागमार्थः ॥६०६॥

सृजेः स्रज्-सृकौ च ॥६०७॥

सृजंत् विसर्गे, इत्यस्मात् क्वनिप् प्रत्ययो भवति । स्रज्–सृक् इत्यादेशौ चास्य भवतः । स्रज्वा–मालाकारः, रज्जुश्च । सृक्वणी–आस्योपान्तौ ॥६०७॥

ध्या-प्योर्धी पी च ॥६०८॥

ध्यैं चिन्तायाम्, प्यैङ् वृद्धौ, इत्याभ्यां क्वनिप् प्रत्ययो यथासंख्यं च धी पी इत्येतावादेशौ भवतः । ध्यायतीति, धीवा–मनीषी, निषादः, व्याधिः, मत्स्यश्च । प्यायतेः, पीवा–पीनः ॥६०८॥

अतेर्ध च ॥६०९॥

अत सातत्यगमने, इत्यस्मात् क्वनिप् प्रत्ययो भवति, धश्चान्तादेशो भवति । अध्वा–मार्गः ॥६०९॥

प्रात्सदि-री-रिणस्तोऽन्तश्च ॥६१०॥

प्रपूर्वेभ्यः सद्यादिभ्यः क्वनिप् प्रत्ययो भवति, तोऽन्तश्च भवति । षद्लृं विशरणगत्यवसादनेषु, प्रसत्वा–मूढः, वायुश्च । प्रसत्वरी–माता, प्रतिपत्तिश्च । रींश् गति–रेषणयोः, प्रीत्वा–वायुः । प्रीत्वरी–स्त्रीविशेषः । ईरिक् गतिकम्पनयोः, प्रेत्वा–सागरः, वायुश्च । प्रेत्वरी–नगरी । इण्क् गतौ, प्रेत्वरी नगरीत्याहुः ॥६१०॥

मन् ॥६११॥

सर्वधातुभ्यो बहुलं मन् प्रत्ययो भवति । डुकृंग् करणे, कर्म–व्यापारः । वृग्ट् वरणे, वर्म–कवचम् । वृतूङ् वर्तने, वर्त्म–पन्थाः । चर भक्षणे च, चर्म–अजिनम् । भस भर्त्सनदीप्त्योः सौत्रः, भसितं तदिति, भस्म–भूतिः । जनैचि प्रादुर्भावे, जन्म–उत्पत्तिः । शॄश् हिंसायाम्, शर्म–सुखम् । वसवोऽस्य दुरितं, शीर्यासुरिति वसुशर्मा, एवं हरिशर्मा । मृंत् प्राणत्यागे, मर्म–जीवप्रदेशप्रचयस्थानम्, यत्र जायमाना वेदना महती जायते । नॄश् नये, नर्म–परिहासकथा । श्लिषंच् आलिङ्गने श्लेष्मा–कफः । ऊष रुजायाम्, ऊष्मा–तापः । डुडुभृंग्क् पोषणे च, भर्म–सुवर्णम् । यांक् प्रापणे,

Aho ! Shrutgyanam

यामा-रथः। वांक् गति-गन्धनयोः, वामा-करचरणह्रस्वः। पांक् रक्षणे, पामा-कच्छूः। वृषू सेचने, वर्ष्म-शरीरम्। षद्लृं विशरण-गत्यवसादनेषु, सद्म-गृहम्। विशंत् प्रवेशने, वेश्म-गृहम्। हिट् गति-वृद्ध्योः, हेम-सुवर्णम्। छदण् अपवारणे, छद्म-माया। दीङ्च् क्षये, देङ् पालने वा, दाम-रज्जुः, माता च। डुधांग्क् धारणे च, धाम-स्थानं, तेजश्च। ष्ठां गतिनिवृत्तौ, स्थाम-बलम्। षुंग्ट् अभिषवे, सोमः-यज्ञः, पयः, रसः, चन्द्रमाश्च। अशौटि व्याप्तौ, अश्मा-पाषाणः। लक्षीण् दर्शनाङ्कनयोः, लक्ष्म-चिह्नम्। अयि गतौ, अय्म-संग्रामः। तक् हसने, तक्मा-रतिः, आतपः, दीपश्च। हुंक् दानादनयोः, होम-हव्यद्रव्यम्, अग्निहोत्रशाला च। धृंग् धारणे, धर्म-पुण्यम्। विपूर्वात् विधर्मा-अहितः, वायुः, व्यभिचारश्च। ध्यैं चिन्तायाम्। ध्याम-ध्यानम् ॥६११॥

कुष्युषि-सृपिभ्यः कित् ॥६१२॥

एभ्यः कित् मन् प्रत्ययो भवति। कुषश् निष्कर्षे, कुष्म-शल्यम्। उषू दाहे, उष्मा-दाहः। सृप्लृं गतौ, सृप्मा-सर्पः, शिशुः, यतिश्च ॥६१२॥

बृंहेर्नोऽच्च ॥६१३॥

बृहुः शब्दे, इत्यस्माद् मन् प्रत्ययो भवति, नकारस्य च अकारो भवति। ब्रह्म-परं तेजः, अध्ययनं, मोक्षः, बृहत्वादात्मा। ब्रह्मा-भगवान् ॥६१३॥

व्येग एदोतौ च वा ॥६१४॥

व्येंग् संवरणे, इत्यस्माद् मन् प्रत्ययो भवति, एदोतौ चान्तादेशौ वा भवतः। व्येम-वस्त्रम्, व्येमा-संसारः, कुविन्दभाण्डं च। व्योम-नभः। पक्षे व्याम-न्यग्रोधाख्यं प्रमाणम् ॥६१४॥

स्यतेरी च वा ॥६१५॥

षोंच् अन्तकर्मणि, इत्यस्माद् मन् प्रत्ययो भवति, ईकारश्चान्तादेशो वा भवति। सीमा-आघाटः। पक्षे साम-प्रियवचनं, वामदेव्यादि च ॥६१५॥

सात्मन्नात्मन्-वेमन्-रोमन्-क्लोमन्-ललामन्-नामन्-पाप्मन्-पक्ष्मन्-यक्ष्मन्निति ॥६१६॥

एते मन्प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते। स्यतेस्तोऽन्तश्च। सात्म-अत्यन्ताभ्यस्तं प्रकृतिभूतम्, अन्तकर्म च, अतेः दीर्घश्च, आत्मा-जीवः। वेग-आत्वाभावश्च, वेम-तन्तुवायोपकरणम्। रुहेर्लुक् च, रोम-तनूरुहम्। लत्वे लोम-तदेव। क्लमेरोच्च क्लोम-शरीरान्तरवयवः। लातेर्द्वित्वं च ललाम-भूषणादि। नमेरा च, नाम-संज्ञा, कीर्तिश्च। पातयतेस्तः प् च, पाप्मा-पापं रक्षश्च। पक्षेः कः षोऽन्तो नलोपश्च, पक्ष्म-अक्ष्यादिलोम। यस्यतेः यक्षिणो वा, यक्ष्मा-रोगः। इति करणात् तोक्म-रुक्म-शुष्मादयो भवन्ति ॥६१६॥

हृ-जनिभ्यामिमन् ॥६१७॥

आभ्याम् इमन् प्रत्ययो भवति। हृंग् हरणे, हरिमा-पापविशेषः, मृत्युः, वायुश्च। जनैचि प्रादुर्भावे, जनिमा-धर्मविशेषः, संसारश्च ॥६१७॥

सृ-हृ-भृ-धृ-स्तृ-सूभ्य ईमन् ॥६१८॥

एभ्य ईमन् प्रत्ययो भवति। सृं गतौ, सरीमा-कालः। हृंग् हरणे, हरीमा-मातरिश्वा। डुभृंग्क् पोषणे च, भरीमा-क्षमी, राजा, कुटुम्बं च। धृंग् धारणे, धरीमा-धर्मः। स्तृग्श् आच्छादने, स्तरीमा-प्रावारः। षूत् प्रेरणे, सवीमा-गर्भः, प्रसूतिश्च ॥६१८॥

गमेरिन् ॥६१९॥

गम्लृं गतौ, इत्यस्माद् इन् प्रत्ययो भवति। गमिष्यतीति, गमी-जिगमिषुः ॥६१९॥

आङश्च णित् ॥६२०॥

आङ्पूर्वात् केवलाच्च गमेर्णिद् इन् प्रत्ययो भवति। आगमिष्यतीति, आगामी-प्रोषितादिः। गमिष्यतीति, गामी-प्रस्थितादिः ॥६२०॥

सुवः ॥६२१॥

षूङौच् प्राणिप्रसवे, इत्यस्माद् णिद् इन् प्रत्ययो भवति। आसावी-आसविष्यमाणः, जनिष्यमाण इत्यर्थः ॥६२१॥

भुवो वा ॥६२२॥

भू सत्तायाम्, इत्यस्माद् इन् प्रत्ययो भवति, स च णिद्वा भवति। भविष्यतीति, भावी-कर्मविपाकादिः। भवी-भविष्यन् ॥६२२॥

प्रप्रतेर्या-बुधिभ्याम् ॥६२३॥

प्रपूर्वात् प्रतिपूर्वाच्च यांक् प्रापणे, बुधि मनिच् ज्ञाने, इत्यस्माच्च णिद् इन् प्रत्ययो भवति। प्रयास्यतीति-प्रयायी, प्रतियास्यतीति-प्रतियायी, प्रभोत्स्यत इति प्रबोधी। प्रतिबोधी-बालादिः ॥६२३॥

प्रात् स्थः ॥६२४॥

Aho ! Shrutgyanam

प्रपूर्वात् ष्ठां गतिनिवृत्तौ, इत्यस्माद् णिद् इन् प्रत्ययो भवति । प्रस्थास्यत इति प्रस्थायी–गन्तुमनाः ॥६२४॥

परमात् कित् ॥६२५॥

परमपूर्वात् तिष्ठतेः किद् इन् प्रत्ययो भवति । परमे पदे तिष्ठतीति परमेष्ठी–अर्हदादिः । भीरुष्ठानादित्वात् षत्वम्, सप्तम्या अलुप् च ॥६२५॥

पथि-मन्थिभ्याम् ॥६२६॥

आभ्यां किद् इन् प्रत्ययो भवति । पथे गतौ, पन्थाः–मार्गः, पन्थानौ, पन्थानः; पथिप्रियः । मन्थश् विलोडने, मन्थाः–क्षुब्धः, वायुः, वज्रश्च । मन्थानौ, मन्थानः; मथिप्रियः ॥६२६॥

होर्मिन् ॥६२७॥

हुंक् दानादनयोः, इत्यस्माद् मिन् प्रत्ययो भवति । होमी–ऋत्विक्, घृतं च ॥६२७॥

अर्तेर्भुक्षिनक् ॥६२८॥

ऋंक् गतौ, इत्यस्माद् भुक्षिनक् प्रत्ययो भवति । ऋभुक्षा–इन्द्रः । ऋभुक्षाणौ, ऋभुक्षाणः ॥६२८॥

अदेस्त्रिन् ॥६२९॥

अदंक् भक्षणे, इत्यस्मात् त्रिन् प्रत्ययो भवति । अत्रिः–ऋषिः ॥६२९॥

पतेरत्रिन् ॥६३०॥

पत्लृं गतौ, इत्यस्माद् अत्रिन् प्रत्ययो भवति । पतत्री–पक्षी ॥६३०॥

आपः क्विप् ह्रस्वश्च ॥६३१॥

आप्लृंट् व्याप्तौ, इत्यस्मात् क्विप् प्रत्ययो भवति । ह्रस्वश्चास्य भवति । आपः–अम्भः । स्वभावाद् बहुत्वम् ॥६३१॥

ककुप्-त्रिष्टुबनुष्टुभः ॥६३२॥

एते क्विप् प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । कपूर्वात् स्कुभ्नातेः सलोपश्च–कं–वायुः, ब्रह्म च, स्कुभ्नन्तीति ककुभः–दिशः । ककुप्–उष्णिक्छन्दः । त्र्यनुपूर्वात् स्तुभ्नातेः सः षश्च, त्रिष्टुप्छन्दः, अनुष्टुप्छन्दः, बहुवचनान्निजिविजिविषां क्विप् शित्, नेनिक्–प्रजापतिः । वेविक्–शुचिः । वेविट्–चन्द्रमाः ॥६३२॥

अवेर्मः ॥६३३॥

अव रक्षणादौ, इत्यस्माद् मः प्रत्ययो भवति । अवतीति ओम्–ब्रह्म, प्रणवश्च ॥६३३॥

सोरेतेरम् ॥६३४॥

सुपूर्वाद् इणक् गतौ, इत्यस्माद् अम् प्रत्ययो भवति । स्वयम्–आत्मना ॥६३४॥

नशि-नूभ्यां नक्त-नूनौ च ॥६३५॥

नशौच् अदर्शने, णूत् स्तवने, आभ्याम् अम् प्रत्ययो भवति, नक्त नून इत्यादेशौ चाऽनयोर्भवतः । नक्तं–रात्रौ । नूनं–वितर्के ॥६३५॥

स्यतेर्णित् ॥६३६॥

षोंच् अन्तकर्मणि, इत्यस्माद् णिद् अम् प्रत्ययो भवति । सायम्–दिवसावसानम् ॥६३६॥

गमि-जमि-क्षमि-कमि-शमि-समिभ्यो डित् ॥६३७॥

एभ्यो डिद् अम् प्रत्ययो भवति । गम्लृं गतौ, गम् । जमू अदने, जम् । क्षमौषि सहने, क्षम् । एतानि भार्यानामानि कमूङ् कान्तौ, कम्–पानीयम् । शमूच् उपशमे, शम्–सुखम् । षम वैक्लव्ये, सम्–संभवति ॥६३७॥

इणो दमक् ॥६३८॥

इणक् गतौ, इत्यस्मात् कित् दम् प्रत्ययो भवति । इदम् प्रत्यक्षनिर्देशे ॥६३८॥

कोर्डिम् ॥६३९॥

कुंक् कुंङ् शब्दे, इत्यस्माद् डिद् इम् प्रत्ययो भवति । किम्–अनेनाविज्ञातं वस्तु पर्यनुयुज्यते ॥६३९॥

तूषेरीम् णोऽन्तश्च ॥६४०॥

तूष तुष्टौ, इत्यस्माद् ईम् प्रत्ययो भवति, णकारश्चास्यान्तो भवति । तूष्णीम्–वाङ्नियमे ॥६४०॥

ईड्-कमि-शमि-समिभ्यो डित् ॥६४१॥

एभ्यो डिदीम् प्रत्ययो भवति । ईडिक् स्तुतौ, ईम् । कमूङ् कान्तौ, कीम् । शमूच् उपशमे, शीम् । षम वैक्लव्ये, सीम् । अभिनयव्याहरणान्येतानि । ईम्, सीम्–अव्यक्ते । कीम्–संशयप्रश्नादिषु । सीम्–अमर्ष-पादपूरणयोः ॥६४१॥

क्रमि-गमि-क्षमेस्तुमाच्चातः ॥६४२॥

एभ्यः तुम् प्रत्ययो भवति, अकारस्य चाकारो भवति । क्रमू पादविक्षेपे, क्रान्तुं–गमनम् । गम्लृं गतौ, गान्तुम्–पान्थः । क्षमौषि सहने, क्षान्तुम्–भूमिः । तुमर्थश्च सर्वत्र ॥६४२॥

Aho ! Shrutgyanam

गॄ-पॄ-दुर्वि-धुर्विभ्यः क्विप् ॥६४३॥

एभ्यः क्विप् प्रत्ययो भवति । गॄश् शब्दे, गीः–वाक् । पॄश् पालनपूरणयोः, पूः–नगरी । दुर्वै धुर्वै हिंसायाम्, दूः–देहान्तरवयवः, धूः–शकटाङ्गम्, आदिश्च ॥६४३॥

वाद्वारौ ॥६४४॥

एतौ क्विप् प्रत्ययान्तौ निपात्येते । वृणोतेर्वृद्धिश्च । वाः–पानीयम् । कर्मणि दश्च धात्वादिः । वृण्वन्ति तामिति द्वाः–द्वारम् । द्वृं वरणे, इत्यस्य च णिगन्तस्य रूपम् ॥६४४॥

प्रादतेरर् ॥६४५॥

प्रपूर्वात् अत सातत्यगमने, इत्यस्माद् अर प्रत्ययो भवति । प्रातः–प्रभातम् ॥६४५॥

सोरर्तेर्लुक् च ॥६४६॥

सुपूर्वात् ऋंक् गतौ, इत्यस्माद् अर् प्रत्ययो भवति, धातोश्च लुग् भवति । स्वः–स्वर्गः ॥६४६॥

पू-सन्यमिभ्यः पुनसनुतान्ताश्च ॥६४७॥

पूगुश् पवने, षण् भक्तौ, अम गतौ, इत्येतेभ्यः अर् प्रत्ययो भवति, यथासंख्यं च पुन्, सनुत्, अन्त् इत्यादेशा एषां भवन्ति । पुनः–भूयः । सनुतः–कालवाची । अन्तः–मध्ये ॥६४७॥

चतेरुर् ॥६४८॥

चतेग् याचने, इत्यस्माद् उर् प्रत्ययो भवति । चत्वारः–संख्या । चत्वारि, चतस्रः ॥६४८॥

दिवेर्डिव् ॥६४९॥

दिवूच् क्रीडादौ, इत्यस्माद् डिद् इव् प्रत्ययो भवति । द्यौः–स्वर्गः, अन्तरिक्षं च । दिवौ, दिवः ॥६४९॥

विशि-विपाशिभ्यां क्विप् ॥६५०॥

आभ्यां क्विप् प्रत्ययो भवति । विशंत् प्रवेशने, विशः–प्रजाः, विट्–वैश्यः, पुरीषं, अपत्यं च । पशण् बन्धने, विपूर्वः, विपाशयति स्म विशिष्टमिति विपाट्–नदी ॥६५०॥

सहेः षष् च ॥६५१॥

षहि मर्षणे, इत्यस्मात् क्विप् प्रत्ययो भवति, षष् चास्यादेशो भवति । षट्–संख्या ॥६५१॥

अस् ॥६५२॥

सर्वधातुभ्यो बहुलम् अस् प्रत्ययो भवति । तपं संतापे, तपः–संतापः, माघमासः, निर्जराफलं च अनशनादि । सुष्ठु तपतीति–सुतपाः । एवं महातपाः । णमं प्रह्वत्वे, नमः–पूजावाची । तमूच् काङ्क्षायाम्, तमः-अन्धकारः, तृतीयगुणः, अज्ञानं च । इण्क् गतौ, अयः–काललोहम् । वींक् प्रजननादौ, वयः–पक्षी, प्राणिनां कालकृता शरीरावस्था च यौवनादिः । वर्चि दीप्तौ, वर्चो–लावण्यम्, अन्नमलं, तेजश्च । सुष्ठु वर्चत इति सुवर्चाः । रक्ष पालने, रक्षः–निशाचरः । ञिमिदाच् स्नेहने, मेद–चतुर्थो धातुः । रह त्यागे, रहः–प्रच्छन्नम् । षहि मर्षणे, सहाः–मार्गशीर्षमासः । णभच् हिंसायाम्, नभः–आकाशं, श्रावणमासश्च । चितै संज्ञाने, चेतः–चित्तम् । प्रचेताः–वरुणः । मनिच् ज्ञाने, मनः–नोइन्द्रियम् । ब्रूग्क् व्यक्तायां वाचि, वचः–वचनम् । रुदृक् अश्रुविमोचने, रोदः–नभः, रोदसी–द्यावापृथिव्यौ । रुधृंपी आवरणे, रोधः–तीरम् । अनक् प्राणने, अनः–शकटम्, अन्नं, भोजनं च । सृ गतौ, सरः–जलाशयविशेषः । तॄ प्लवन–तरणयोः, तरः–वेगः, बलं च । रहु गतौ, रंहः–जवः । तिजि क्षमा-नि-शानयोः, तेजः–दीप्तिः । मयि गतौ, मयः–सुखम् । मह पूजायाम्, महः–तेजः । अर्चिण् पूजायाम्, अर्चः–पूजा । षद्लृं विशरण–गत्यवसादनेषु, सदः–सभा, भवनं च । अञ्जौप् व्यक्त्यादौ, अञ्जः–स्नेहः ॥६५२॥

पा–ह्वाक्भ्यां पयह्यौ च ॥६५३॥

पां पाने, ओहांक् त्यागे, इत्येताभ्याम् अस् प्रत्ययो भवति । यथासंख्यं च पय ह्य इत्यादेशावनयोर्भवतः । पयः–क्षीरं, जलं च । ह्यः–अनन्तरातीते दिने ॥६५३॥

छदि-वहिभ्यां छन्दोधौ च ॥६५४॥

छदण् संवरणे, वहीं प्रापणे, इत्येताभ्याम् अस् प्रत्ययो भवति, यथासंख्यं चानयोः छन्द ऊध इत्यादेशौ भवतः । छन्दः–वेदः, इच्छा, वाग्बन्धविशेषश्च । ऊधः–धेनोः क्षीराधारः ॥६५४॥

श्वेः शव् च वा ॥६५५॥

ट्वोश्वि गति-वृद्ध्योः, इत्यस्माद् अस् प्रत्ययो भवति, अस्य च शव् इत्यादेशो वा भवति । शवः–रोगाभिधानं, मृतदेहश्च । शवसी, शवांसि । श्वयः–शोफः, बलं च । श्वयसी, श्वयांसि ॥६५५॥

विश्वाद् विदि–भुजिभ्याम् ॥६५६॥

विश्वपूर्वाभ्यामाभ्याम् अस् प्रत्ययो भवति । विदक् ज्ञाने, विश्ववेदाः–अग्निः । भुजंप् पालनाभ्यवहारयोः, विश्वभोजाः, अग्निः, लोकपालश्च ॥६५६॥

Aho ! Shrutgyanam

चायेर्नो ह्रस्वश्च वा ॥६५७॥

चायृग् पूजा-निशामनयोः, इत्यस्माद् अस् प्रत्ययो भवति, नकारोऽन्तादेशो ह्रस्वश्चास्य वा भवति । चनः-चाणश्चान्नम् । बाहुलकाण्णत्वम् । णत्वं नेच्छन्त्येके ॥६५७॥

अशेर्यश्चादिः ॥६५८॥

अशश् भोजने, अशौटि व्याप्तौ, इत्यस्माद् वा अस् प्रत्ययो भवति, यकारश्च धात्वादिर्भवति । यशः-माहात्म्यम्, सत्त्वं, श्रीः, ज्ञानं, प्रतापः, कीर्तिश्च । एवं शोभनम्-अश्नाति, अश्नुते वा इति सुयशाः । नागमेवाश्नाति नागयशाः । बृहदेनोऽश्नाति बृहद्यशाः । श्रुत एनोऽश्नाति श्रुतयशाः । एवमन्येऽपि द्रष्टव्याः ॥६५८॥

उषेर्ज् च ॥६५९॥

उषू दाहे, इत्यस्मादस् प्रत्ययो भवति, जकारश्चान्तादेशो भवति । ओजः-बलं, प्रभावः, दीप्तिः, शुक्रं च ॥६५९॥

स्कन्देर्ध् च ॥६६०॥

स्कन्दृं गति-शोषणयोः, इत्यस्माद् अस् प्रत्ययो भवति । धकारश्चान्तादेशो भवति । स्कन्धः-स्वाङ्गम् ॥६६०॥

अवेर्वा ॥६६१॥

अव रक्षणादौ, इत्यस्माद् अस् प्रत्ययो भवति, धकारश्चान्तादेशो वा भवति । अधः-अवरम्, अवः-रक्षा ॥६६१॥

अमेर्भहौ चान्तौ ॥६६२॥

अम गतौ, इत्यस्माद् अस् प्रत्ययो भवति, भकार-हकारौ चान्तौ भवतः । अम्भः-पानीयम् । अंहः-पापम्, अपराधः, दिनश्च ॥६६२॥

अदेरन्ध् च वा ॥६६३॥

अदंक् भक्षणे, इत्यस्मादस् प्रत्ययो भवति, अन्धादेशश्चास्य वा भवति । अद्यते तदिति अन्धः-अन्नम् । अद्यते दशा मनसा च तद् इति अदः अनेन प्रत्यक्षविप्रकृष्टम् अप्रत्यक्षं च बुद्धिस्थमपदिश्यते ॥६६३॥

आपोऽपाप्ताप्सराब्जाश्च ॥६६४॥

आप्लृंट् व्याप्तौ, इत्यस्माद् अस् प्रत्ययो भवति, अप्, अप्त, अप्सर, अब्ज, इत्यादेशाश्चास्य भवन्ति । अपः-सत्कर्म, अप्तः, तदेव, अप्सरसः-देवगणिकाः, अब्जः-जलजम्, अजर्यं च रूपम् ॥६६४॥

उच्यञ्चेः क च ॥६६५॥

उचच् समवाये, अञ्चू गतौ चेत्याभ्याम् अस् प्रत्ययो भवत्यनयोश्च कोऽन्तादेशो भवति । ओकः-आलयः, जलौकसश्च । अङ्कः-स्वाङ्गम्, रणश्च ॥६६५॥

अञ्ज्यजि-युजि-भृजेर्ग च ॥६६६॥

एभ्यः अस् प्रत्ययो भवति, गकारश्चान्तादेशो भवति । अञ्जौप् व्यक्त्यादौ, अङ्गः-क्षत्रियनाम, गिरिपक्षी, व्यक्तिश्च । अज क्षेपणे च, अगः-क्षेमम् । युजूंपि-योगे, योगः-मनः, युगं च । भृजैङ् भर्जने, भर्गाः-रुद्रः, हविः, तेजश्च ॥६६६॥

अर्तेरुराशौ च ॥६६७॥

ऋंक् गतौ, इत्यस्माद् अस् प्रत्ययो भवत्यस्य च उरिति अर्श् इति च तालव्य-शकारान्त आदेशो भवति । उरः-वक्षः । अर्शांसि-गुहादिकीलाः ॥६६७॥

येन्धिभ्यां यादेधौ च ॥६६८॥

यांक् प्रापणे, ञिइन्धैपि दीप्तौ, इत्याभ्याम् अस् प्रत्ययो भवति, यथासंख्यं च याद् एध् इत्यादेशौ भवतः । यादः-जलदुष्टसत्त्वम् । एधः-इन्धनम् ॥६६८॥

चक्षः शिद्वा ॥६६९॥

चक्षिङ्क् व्यक्तायां वाचि, इत्यस्माद् अस् प्रत्ययो भवति, स च शिद्वा भवति । चक्षः, ख्याः, उभे अपि रक्षोनाम्नी । आचक्षाः-वाग्मी । आख्याः, प्रख्याश्च-बृहस्पतिः । संचक्षाः-ऋत्विक् । नृचक्षाः-राक्षसः ॥६६९॥

वस्त्यगिभ्यां णित् ॥६७०॥

वस्त्यगिभ्यां णिद् अस् प्रत्ययो भवति । वसिक् आच्छादने, वासः-वस्त्रम् । अग कुटिलायां गतौ, आगः-अपराधः ॥६७०॥

मिथि-रञ्ज्युषि-तॄ-पॄ-शॄ-भूवशिभ्यः कित् ॥६७१॥

एभ्यः किद् अस् प्रत्ययो भवति । मिथृग् मेधा-हिंसयोः, मिथः-परस्परम्, रहसि चेत्यर्थः । रञ्जीं रागे, रजः-गुणः, अशुभम्, पांशुश्च । उषू दाहे, उषा-सन्ध्या, रात्रिश्च । तॄ प्लवन-तरणयोः, तिरस्करोति-तिरः कृत्वा काण्डं गतः । तिर इति अन्तर्धावनृजुत्वे च । पॄश् पालन-पूरणयोः, पुरः पूजायाम् । तथा च पठन्ति नमः पूजायां पुरश्चेति । शॄश् हिंसायाम्, शृणाति-तद्वियुक्तमिति, शिरः-उत्तमाङ्गम् । भू सत्तायाम्, भुवः-लोकः, अन्तरिक्षम्, सूर्यश्च । वशक् कान्तौ, उशा-रात्रिः ॥६७१॥

Aho ! Shrutgyanam

विधेर्वा ॥६७२॥

विधत् विधाने, इत्यस्माद् अस् प्रत्ययो भवति, स च किद्वा भवति । वेधाः–विद्वान्, सर्ववित्, प्रजापतिश्च । विधाः–स एव ॥६७२॥

नुवो धथादिः ॥६७३॥

णूत् स्तवने, इत्यस्माद् धकारादिस्थकारादिश्च किद् अस् प्रत्ययो भवति । नूधा नूथाश्च–सूत-मागधौ । धादौ गुणमिच्छन्त्येके । नोधाः–ऋषिः, ऋत्विक् ॥६७३॥

वयः-पयः-पुरोरेतोभ्यो धागः ॥६७४॥

एभ्यः पराद् डुधांग्क् धारणे, इत्यस्मात् किद् अस् प्रत्ययो भवति । वयोधाः–युवा, चन्द्रः, प्राणी च । पयोधाः–पर्जन्यः । पुरोधाः–पुरोहितः, उपाध्यायश्च । रेतोधाः–जनकः ॥६७४॥

नञ ईहेरेहेधौ च ॥६७५॥

नञ् पूर्वाद् ईहि चेष्टायाम्, इत्यस्माद् अस् प्रत्ययो भवति, अस्य च एह एध इत्यादेशौ भवतः । अनेहाः–कालः, इन्द्रः, चन्द्रश्च । अनेधाः–अग्निः, वायुश्च ॥६७५॥

विहायस्-सुमनस्-पुरुदंशस्-पुरूरवो-ऽङ्गिरसः ॥६७६॥

एतेऽस् प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । विपूर्वाज्जहातेर्जिहीतेर्वा योऽन्तश्च । विजहातीति, विहायः–आकाशम् । विजिहीत इति विहायाः–पक्षी । सुपूर्वान्मानेर्ह्रस्वश्च । सुष्ठु मानयन्ति मन्यन्ते वा, सुमनसः–पुष्पाणि । पुरु दशतीति पुरुदंशाः–इन्द्रः । पुरुपूर्वाद्रौतेर्दीर्घश्च, पुरु रौति पुरूरवाः–राजा, यमुर्वशीं चकमे । अङ्गेरिरोऽन्तश्च । अङ्गतीति–अङ्गिराः–ऋषिः ॥६७६॥

पातेजस्थसौ ॥६७७॥

पांक् रक्षणे, इत्यस्माद् जस् थस् इत्येतौ प्रत्ययौ भवतः । पाजः–बलम् । पाथः–उदकम्, अन्नं च ॥६७७॥

स्रुरीभ्यां तस् ॥६७८॥

आभ्यां तस् प्रत्ययो भवति । स्रुं गतौ. स्रोतः–निर्झरणम्. सुष्ठु स्रवतीति सुस्रोताः । रींश् गति–रेषणयोः, रेतः–शुक्रम् ॥६७८॥

अर्त्तीणभ्यां नस् ॥६७९॥

आभ्यां नस् प्रत्ययो भवति । ऋंक् गतौ, अर्णः–जलम् । इण्क् गतौ, एनः–पापम्, अपराधश्च ॥६७९॥

रिचेः क् च ॥६८०॥

रिचूंपी विरेचने, इत्यस्माद् नस् प्रत्ययो भवति, अस्य च ककारोऽन्तादेशो भवति । रेक्णः–पापं, धनं च ॥६८०॥

री-वृभ्यां पस् ॥६८१॥

आभ्यां पस् प्रत्ययो भवति । रींश् गति-रेषणयोः, रेपः–पापम् । वृग्ट् वरणे, वर्षः–रूपम् ॥६८१॥

शीङः फश्च ॥६८२॥

शीङ्क् स्वप्ने, इत्यस्मात् फस् चकारात् पस् प्रत्ययो भवति । शेफः, शेपश्च मेण्ढ्रम् ॥६८२॥

पचि-वचिभ्यां सस् ॥६८३॥

आभ्यां सस् प्रत्ययो भवति । डुपचींष् पाके, पक्षः–चक्रम्, इन्धनं च । वचंक् भाषणे, वक्षः–उरः, शरीरं च ॥६८३॥

इणस्तशस् ॥६८४॥

इणंक् गतौ, इत्यस्मात् तशस् प्रत्ययो भवति । एतशाः–सोमः, अध्वर्युः, वायुः, अग्निः, अर्कः, इन्द्रश्च ॥६८४॥

वष्टेः कनस् ॥६८५॥

वशक् कान्तौ, इत्यस्माद् किद् अनस् प्रत्ययो भवति । उशनाः–शुक्रः ॥६८५॥

चन्दो रमस् ॥६८६॥

चदु दीप्त्याह्लादयोः, इत्यस्माद् रमस् प्रत्ययो भवति । चन्द्रमाः–शशी ॥६८६॥

दमेरुनसूनसौ ॥६८७॥

दमूच् उपशमे, इत्यस्माद् उनस् ऊनस् इत्येतौ प्रत्ययौ भवतः । दमुनाः–अग्निः । दमूनाः–सूर्यः, देवः, उपशान्तश्च ॥६८७॥

इण आस् ॥६८८॥

इणंक् गतौ, इत्यस्माद् आस् प्रत्ययो भवति । अयाः–कालः, आदित्यश्च ॥६८८॥

रुच्यर्चि-शुचि-हु-सृ-पि-छादि-छृदिभ्य इस् ॥६८९॥

एभ्य इस् प्रत्ययो भवति । रुचि अभिप्रीत्यां च, रोचिः–किरणः । वसुपूर्वाद् वसुरोचिः–वासवः, किरणः, ऋतुश्च । अर्च पूजायाम्, अर्चिः–ज्वाला । शुच् शोके, शोचिः–रश्मिः, शोकः, पिङ्गलभावः, विविक्तं च । हुंक् दानादनयोः, हविः–पुरोडाशादिः । सृप्लृं गतौ, सर्पिः–घृतम् । छदण् संवरणे, छादयतीति छदिः । छदेरिस् मन् । त्रट् क्वौ

Aho ! Shrutgyanam

इति ह्रस्वः । बाहुलकाद्दीर्घत्वे छादिः–उभयं गृहच्छादनम् । ऊछृदृपी दीप्ति-देवनयोः, छर्दिः–वमनम् ॥९८९॥

बर्हि-बृंहेर्नलुक् च ॥९९०॥

आभ्याम् इस् प्रत्ययो भवति, नकारस्य च लुक् भवति । बहुङ् वृद्धौ, बर्हिः–अनभ्यन्तरे, बृहु शब्दे च, बर्हिः, शिखी, दर्भश्च ॥९९०॥

द्युतेरादेश्च जः ॥९९१॥

द्युति दीप्तौ, इत्यस्माद् इस् प्रत्ययो भवति, धात्वादेश्च वर्णस्य जकारो भवति । ज्योतिः–तेजः, सूर्यः, अग्निः, तारका च ॥९९१॥

सहेर्ध च ॥९९२॥

षहि मर्षणे, इत्यस्माद् इस् प्रत्ययो भवति, धकारश्चान्तादेशो भवति । सधिः–सत्त्वम्, भूमिः, संयोगः, सहिष्णुः, अग्निः, अनड्वांश्च ॥९९२॥

पस्थोऽतन्श्च ॥९९३॥

पां पाने, इत्यस्माद् इस् प्रत्ययो भवति, थकारश्चान्तो भवति । पाथिः–पानं, नदी, आदित्यः, ज्योतिः, स्वर्गलोकश्च ॥९९३॥

नियो डित् ॥९९४॥

णींग् प्रापणे, इत्यस्माद् डिद् इस् प्रत्ययो भवति । निश्चिनोति निरुपसर्गोऽयं पृथग्भावे ॥९९४॥

अवेर्णित् ॥९९५॥

अव रक्षणादौ, इत्यस्माद् णिद् इस् प्रत्ययो भवति । आविः–प्राकाश्ये, आविरभूत् आविष्करोति ॥९९५॥

तु-भू-स्तुभ्यः कित् ॥९९६॥

एभ्यः किद् इस् प्रत्ययो भवति । तुंक् वृत्त्यादौ, तुविः–समुद्रः, सरित्, विवस्वान्, प्रभुसंयोगश्च । भू सत्तायाम्, भुविः–क्रतुः, समुद्रः, सरित्, विवस्वांश्च । ष्टुंग्क् स्तुतौ, स्तुविः–स्तोता, यज्ञश्च ॥९९६॥

रुद्यर्ति-जनि-तनि-धनि-मनि-ग्रन्थि-पृ-तपि-त्रपि-वपि-यजि-प्रादि-वेपिभ्य उस् ॥९९७॥

एभ्य उस् प्रत्ययो भवति । रुदृक् अश्रुविमोचने, रोदुः–अश्रुनिपातः । ऋक् गतौ, अरुः–व्रणः, आदित्यः, प्राणः, समुद्रश्च । जनैचि प्रादुर्भावे, जनुः, अपत्यं, पिता, माता, जन्म, प्राणी च । तनूयी विस्तारे, तनुः, शरीरम् । धन धान्ये सौत्रः, धनुः–चापम् । मनिच् ज्ञाने, मनुः–प्रजापतिः । ग्रन्थश् संदर्भे, ग्रन्थुः–ग्रन्थः । पृश् पालन-पूरणयोः, परुः–पर्व, समुद्रः, धर्मश्च । तपं संतापे, तपुः–त्रपु, शत्रुः–भास्करः, अग्निः, कृच्छ्रादि च । त्रपौषि लज्जायाम्, त्रपुः–त्रपु । डुवपीं बीजसंताने, वपुः–शरीरम्, लावण्यं, तेजश्च । यजीं देवपूजा–संगति–करणदानेषु, यजुः–अच्छन्दा श्रुतिः, यज्ञोत्सवश्च । अदंक् भक्षणे, प्रपूर्वः, प्रादुः–प्राकाश्ये–उत्पत्तौ च । प्रादुर्बभूव । प्रादुरासीत् । टुवेपृङ् चलने, वेपुः–वेपथुः ॥९९७॥

इणो णित् ॥९९८॥

इणंक् गतौ, इत्यस्माद् णिद् उस् प्रत्ययो भवति । आयुः–जीवितम् । जटापूर्वादपि जटायुः–अरुणात्मजः । तं नीलजीमूतनिकाशवर्णं, स पाण्डुरोरस्कमुदारधैर्यम् । ददर्श लङ्काधिपतिः पृथिव्यां, जटायुषं शान्तमिवाग्निदाहम् ॥९९८॥

दुषेर्डित् ॥९९९॥

दुषंच् वैकृत्ये, इत्यस्माद् डिद् उस् प्रत्ययो भवति । दुः–निन्दायाम्, दुष्पुरुषः ॥९९९॥

मुहि-मिथ्यादेः कित् ॥१०००॥

आभ्यां किदुस् प्रत्ययो भवति । मुहौच् वैचित्ये, मुहुः–कालावृत्तिः मिथृग् मेधाहिंसयोः, मिथुः–संगमः । आदिग्रहणादन्येभ्योऽपि भवति ॥१०००॥

चक्षेः शिद्वा ॥१००१॥

चक्षिक् व्यक्तायां वाचि, इत्यस्मात् किद् उस् प्रत्ययो भवति, स च शिद्वा भवति । चक्षुः, परिचक्षुः, अवचक्षुः, अवसंचक्षुः, अचक्षुः, अवख्युः । बाहुलकाद् द्विर्वचने सचचक्षुः, विचख्युः ॥१००१॥

पातेर्डुम्सुः ॥१००२॥

पांक् रक्षणे, इत्यस्माद् डिदुम्सुः प्रत्ययो भवति । पुमान्–पुरुषः, पुमांसौ, पुमांसः । उकार उदित्कार्यार्थः ॥१००२॥

न्युद्भ्यामञ्चेः ककाकसष्टावच्च ॥१००३॥

न्युद्भ्यां परादञ्चू गतौ, इत्यस्मात् कितः अ आ ऐस् इत्येते प्रत्यया भवन्ति, ते च टावत्–टायामिव एषु कार्यं भवतीत्यर्थः । तेन अच्च प्रागदीर्घश्च इति भवति । नीचम्, उच्चम् । नीचा, उच्चा । नीचैः, उच्चैः प्रसिद्धार्था एते ।

Aho ! Shrutgyanam

लाघवार्थं सन्ताधिकारेऽपि अकाराकारप्रत्ययविधानम् ॥१००३॥

शमो नियो डैस् मलुक् च ॥१००४॥

शम्पूर्वात् णींग् प्रापणे, इत्यस्माद् डिद् ऐस् प्रत्ययो भवति । शमो मकारस्य च लुक् भवति । शनैः-मन्दम् ॥१००४॥

यमि-दमिभ्यां डोस् ॥१००५॥

आभ्यां डिद् ओस् प्रत्ययो भवति । यमूं उपरमे, योः-विषयसुखम् । दमूच् उपशमे, दोः-बाहुः ॥१००५॥

अनसो वहेः क्विप् सश्च डः ॥१००६॥

अनस् शब्दपूर्वात् वहीं प्रापणे, इत्यस्मात् क्विप् प्रत्ययो भवति, सकारस्य च डो भवति । अनो वहति अनड्वान्-वृषभः ॥१००६॥

॥ इत्याचार्य श्रीहेमचन्द्रकृतं स्वोपज्ञोणादिगणसूत्रविवरणं परिसमाप्तम् ॥

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam

सूत्रक्रमानुसारिणी प्रत्ययानुक्रमणिका

अ २–२०. क २१–२६. अक २७–३३. आक ३४–३७. इक ३८–४५. ईक ४६–५०. उक ५१–५७. ऊक ५८–६१. अङ्क ६२–६३. इङ्क ६४. अविङ्क ६५. एलक ६६. आतृक ६७. आणक ६८–७०. आनक ७१–७२. ईनक ७३. ईधुक, एधुक ७४. तिक ७५–७६. तक ७७–७८. ईतक ७९–८०. आहृक ८१. आतक ८२–८३. ख ८४–९०. ऊख, इख ९१. ग ९२–९६. आग ९७. अङ्ग ९८–१०१. इङ्ग १०२–१०५. उङ्ग १०६–१०८. घ १०९–११०. अघ १११. च ११२–११३. अच ११४–११५. आच ११६. इच ११७. ईच ११८. उच ११९. ऊच १२०–१२१. ओच, अश्च १२२. इश्च १२३. छ १२४–१२६. ज १२७–१२९. अज १३०–१३४. इज १३५. अञ्ज १३६. झ १३७. ट १३८–१४१. अट १४२–१४४. आट १४५–१४८. इट १४९. इण्ट १५०. ईट १५१. अरीट १५२. उट, उड १५३. उट १५४–१५५. उट, ऊट १५६. ऊट १५७. एट १५८–१५९. ओट १६०–१६१. ठ १६२–१६६. अठ १६७. ड १६८–१७०. अड १७१–१७२. अण्ड १७३–१७६. उड १७७. उण्ड १७८. ढ १७९–१८१. ण १८२–१८६. अण १८७–१९०. आण १९१–१९३. इण १९४–१९५. उण १९६–१९८. एण्ण १९९. त २००–२०६. अत २०७–२०८. आत २०९. इत २१०–२१२. ईत २१३. उत २१४. ऊत २१५–२१६. ओत २१७–२१८. अन्त २१९–२२२. उन्त २२३–२२४. थ २२५–२३१. अथ २३२–२३५. ऊथ २३६. द २३७–२४०. इद, ईद २४१. उद २४२–२४४. अन्द २४५. इन्द २४६–२४८. उन्द २४९. उकुन्द २५०. ध २५१. अध २५२–२५३. वध २५४–२५५. उध २५६. अन्ध २५७. न २५८–२६८. अन २६९–२७५. आन २७६–२७८. असान २७९–२८१. इन २८२–२८५. ईन २८६–२८७. उन २८८–२९१. तन २९२–२९३. स्न २९४. शसान २९५. प २९६–३०३. अप ३०४–३०७. आप ३०८. इप ३०९. ईप ३१०. उप ३११. ऊप ३१२. षप ३१३. फ ३१४–३१६. ब ३१७–३२०. अम्ब ३२१–३२३. इम्ब ३२४–३२५. उम्ब ३२६. भ ३२७–३२८. अभ ३२९–३३१. इभ ३३२. उभ ३३३–३३५. अम्भ ३३६. उम्भ ३३७. म ३३८–३४६. अम ३४७–३४८. इम ३४९–३५०. उम ३५१–३५२. ऊम ३५३. एलिम ३५४. ङिम ३५५–३५६. य ३५७–३६४. अय ३६५–३७०. अय, उय ३७१. आय ३७२. आय्य ३७३–३७४. इय ३७५–३७६. आलीय ३७७–३७८. अन्य ३७९–३८०. आन्य ३८१. एण्य ३८२. स्य ३८३. इष्य ३८४. उष्य ३८५. अथ्य ३८६. र ३८७–३९६. अर ३९७–४०४. आर ४०५–४११. इर ४१२–४१७. ईर ४१८–४२२. उर ४२३–४२६. ऊर ४२७–४३०. एर ४३१–४३२. ओर ४३३–४३४. कर ४३५–४३६. तर ४३७–४३८. सर ४३९–४४०. वर ४४१–४४४. एवर, अङ्गर ४४५. त्र ४४६–४५५. अत्र ४५६–४५८. इत्र ४५९–४६०. उत्र ४६१. ल ४६२–४६४. अल ४६५–४७४. आल ४७५–४८०. इल ४८१–४८४. उल ४८५–४८७. ऊल ४८८–४९१. एल ४९२. ओल ४९३–४९५. कल ४९६. कल, खल ४९७. खल ४९८. बल, वल ४९९–५००. तल, पाल, वाल, वल ५०१. मल ५०२–५०३. सल ५०४. व ५०५–५१४. अव ५१५–५१९. आव ५२०. इव ५२१–५२२. श्व ५२३. उव ५२४. त्व ५२५. इत्व ५२६. श ५२७–५३०. अश ५३१–५३२. आश ५३३–५३४. इश ५३५–५३७. उश ५३८. पिश, तश ५३९. ष ५४०–५४३. अष ५४४. आष ५४५. इष ५४६–५५२. ईष ५५३–५५६. उष ५५७–५५९. ऊष ५६०–५६१. मष ५६२. माष ५६३. स ५६४–५६८. अस ५६९–५७३. आस ५७४–५७५. ईस ५७६–५७७. उस ५७८. टिस, इस ५७९. तस ५८०–५८१. नस ५८२. पास ५८३. मास ५८४. अम्बुस ५८५. ह ५८६–५८८. अह ५८९–५९०. आह ५९१–५९२. ऊह ५९३. त्यूह ५९४. ओकह ५९५. अक्ष ५९६–५९७.

Aho ! Shrutgyanam

आ ५९८–६०५.

इ ६०६–६२२. कि ६२३. अकि ६२४. अखि ६२५. इखि ६२६. ईचि ६२७–६२९. अटि ६३०. ढि ६३१–६३३. णि ६३४–६३७. अणि ६३८–६४३. इणि ६४४. त्रीणि ६४५. ति ६४६–६५२. अति ६५३–६५९. अस्ति ६६०–६६१. आति ६६२–६६४. अन्ति ६६५. उन्ति ६६६. इति ६६७–६६८. थि ६६९. अथि ६७०–६७२. इथि ६७३–६७४. अधि ६७५. रधि ६७६. नि ६७७–६७९. अनि ६८०–६८१. अत्नि ६८२. इनि ६८३. उनि ६८४. मनि ६८५. दुभि ६८६. मि ६८७–६९०. अयि ६९१. रि ६९२–६९५. त्रि ६९६. अत्रि ६९७. अरि ६९८. उरि ६९९–७००. लि ७०१. अलि ७०२. ओकुलि, मलि ७०३. वि ७०४–७०६. सि ७०७. असि ७०८. नसि ७०९. हि ७१०.

ई ७११–७१५.

उ ७१६–७४८. कु ७४९–७५१. आकु ७५२–७५४. अङ्कु ७५५. दाकु ७५६. स्वाकु ७५७. गु ७५८–७६०. अङ्गु ७६१. अद्रु ७६२. आट्रु ७६३. इष्ठु ७६४. डु ७६५–७६६. आण्डु, कण्डुक ७६७. णु ७६८–३६९. अणु ७७०. इष्णु ७७१. एणु ७७२. तु ७७३–७७८. अतु ७७९–७८०. यतु ७८१. आतु ७८२. दु ७८३. धु ७८४–७८५. नु ७८६–७९०. तु, नु ७९१–७९२. अनु ७९३. आनु ७९४. रदानु ७९५. अकु ७९६. इत्नु ७९७. इपु ७९८. बु ७९९. अमु ८००. यु ८०१–८०२. अयु, अन्यु ८०३. अन्यु ८०४. त्यु ८०५. रु ८०६–८११. अरु ८१२. आरु ८१३–८१६. उरु ८१७–८१८. ऊरु ८१९. लु ८२०–८२१. आलु ८२२–८२३. अलु ८२४. शु ८२५. सु ८२६. अक्षु ८२७–८२८.

ऊ ८२९–८४४. डू ८४५. दू ८४६. वू ८४७. अन्धू ८४८–८४९. आगू ८५०. एरू ८५१.

ऋ ८५२–८५६. तृ ८५७–८६५.

ऐ ८६६.

ओ ८६७.

औ ८६८.

क ८६९–८७०.

च् ८७१. वच् ८७२.

अज् ८७३–८७४. इज् ८७५–८७६.

अट् ८७७.

अड् ८७८. अविड् ८७९. क्विप् [छ् ड्] ८८०.

अत् ८८१–८८५. अवत् ८८६. इत् ८८७–८८८. उत् ८८९–८९०. ऋत् ८९१–८९२.

ऋथ् ८९३.

अद् ८९४–८९५. तद् ८९६. सद् ८९७–८९८. मद् ८९९.

अन् ९००–९०२. तन् ९०३. वन् ९०४–९१०. मन् ९११–९१६. इमन् ९१७. ईमन् ९१८. इन् ९१९–९२६. मिन् ९२७. भुक्षिन् ९२८. त्रिन् ९२९. अत्रिन् ९३०.

क्विप् [प्] ९३१.

क्विप् [भ्] ९३२.

म् ९३३. अम् ९३४–९३७. दम् ९३८. इम् ९३९. ईम् ९४०–९४१. तुम् ९४२.

क्विप् [र्] ९४३–९४४. अर् ९४५–९४७. उर् ९४८.

इव् ९४९.

क्विप् [श्] ९५०.

क्विप् [ष्] ९५१.

अस् ९५२–९७६. जस्, थस् ९७७. तस् ९७८. नस् ९७९–९८०. पस् ९८१. पस् फस् ९८२. सस् ९८३. तशस् ९८४. अनस् ९८५. रमस् ९८६. उनस्, ऊनस् ९८७. आस् ९८८. इस् ९८९–९९६. उस् ९९७–१००१. उम्स् १००२. अ, आ, ऐस् १००३. ऐस् १००४. ओस् १००५.

क्विप् [ह्] १००६.

Aho ! Shrutgyanam

॥ उणादिशब्दानां सूत्राङ्कानुसारिण्यनुक्रमणिका ॥

शब्द	सूत्रांक
अक्त	२०१
अक्तु	७७७
अक्ष	५६४
अक्षन्	९००
अक्षय	३६५
अक्षर	४३९
अक्षि	७०७
अक्षु	८२६
अक्षोट	१६१
अक्षण	२९४
अगस्	९६६
अगस्ति	६६०
अगस्त्य	३६३
अगार	४०५
अग्नि	६७७
अग्र	३८७
अग्रेगू	८४३
अघ	११०
अघ्न्य	३६४
अघ्न्या	३६४
अङ्कति	६५६
अङ्कस्	९६५
अङ्कुर	४२३
अङ्कुश	५३८
अङ्कूर	४२३
अङ्कि	६९२
अङ्ग	९२
अङ्गण	१८७
अङ्गस्	९६६
अङ्गार	४०५
अङ्गिरस्	९७६
अङ्गु	७५८
अङ्गुरि	६९९

शब्द	सूत्रांक
अङ्गुल	४८७
अङ्गुलि	६९९
अङ्गूष	५६०
अङ्घ्रि	६९२
अच्छ	१२४
अच्छभल्ल	४६४
अजगर	४०३
अजिन	२८४
अजिर	४१७
अज्जू	८३४
अञ्ज	३८८
अञ्जल	४६५
अञ्जलि	७०२
अञ्जस्	९५२
अञ्जि	६०७
अञ्जिष्ठु	७६४
अञ्जिष्णु	७७१
अञ्जूक	५८
अटनि	६८०
अटरूष	५६१
अटवि	७०६
अडङ्गर	४०३
अडर	३९७
अडुव	५२४
अणस	५६९
अणि	६१९
अणीचि	६२७
अणु	७१६
अण्ड	१६९
अतस	५६९
अतसी	५६९
अतिथि	६७३
अत्क	२१

शब्द	सूत्रांक
अत्रि	६९६
अत्रिन्	९२९
अत्रीणि	६४५
अत्न	२५८
अत्रु	८००
अथर्वन्	९०२
अदन्त	२२१
अदन्ती	२२१
अदर	४०३
अदस्	९६३
अदिति	६६७
अदेलिम	३५४
अद्र	९२
अद्भुत	२१४
अद्मनि	६८५
अद्रि	६९२
अधम	३४८
अधर	३९८
अधस्	९६१
अधि	६११
अध्वन्	९०९
अध्वर्यु	७४६
अनड्डुह्	१००६
अनफा	३१६
अनल	४६५
अनस्	९५२
अनह	५८९
अनाट	१४५
अनिल	४८१
अनीक	४६
अनु	७१६
अनुवत्सर	४३९
अनुष्टुभ्	९३२

शब्द	सूत्रांक
अनुसंवत्सर	४३९
अनूक	६१
अनेधस्	९७५
अनेहस्	६७५
अनोकह	५९५
अन्त	२००
अन्तर्	९४७
अन्तर	४३७
अन्तु	७७३
अन्त्य	३६०
अन्त्र	४५१
अन्दू	८२९
अन्ध	२५१
अन्धस्	९६३
अन्धु	७१६
अन्ध्र	३९६
अन्न	२५८
अन्य	३५७
अप्	९३१
अप	३०३
अपत्य	३५८
अपष्टु	७३२
अपस्	९६४
अपालु	८२३
अपि	६११
अपुष	५५९
अपूप	३१२
अप्तस्	९६४
अप्तु	७७६
अप्तृ	८६१
अप्वा	५०६
अप्सरस्	९६४
अब्जस्	९६४
अब्द	२३८

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक
अब्बा	५१४	अरण्य	३७६	अर्शस्	६६७	अवभृथ	२२६
अभि	६१४	अरति	६५३	अर्शसान	२६५	अवम	३४८
अभिमाति	६६३	अरत्नि	६८२	अर्हसान	२७६	अवयु	७४१
अभियाति	६६३	अरर	३६७	अलक	२७	अवर	३६८
अभीक्ष्ण	१८६	अररि	६६८	अलका	२७	अवलत्तिका	७६
अभीशु	७४६	अररु	८१२	अलम्बुस	५८५	अवस्	६६१
अभ्यूष	५६१	अराति	६६२	अलम्बुसा	५८५	अवस	५६६
अभ्र	३६६	अराल	४७५	अलर्क	२६	अवसंचक्षुस्	१००१
अभ्रमु	८००	अरि	६०६	अलवाल आलवाल	४८०	अवि	६०७
अम्व	५१२	अरुण	१६६			अविन	२८२
अमठ	१६७	अरुष	५५७	अलस	५६६	अविष	५४७
अमत	२०७	अरुस्	६६७	अलात	२०६	अविषी	५४७
अमति	६५३	अरूष	५६०	अलाबू	८३८	अविष्ठु	७६४
अमत्र	४५६	अर्क	२१	अलि	६१६	अवी	७११
अमनि	६८०	अर्कलूष	५४२	अलिक	३८	अवीचि	६२७
अमर	३६७	अर्गला	४६७	अलिन्द	२४६	अव्यथिष	५५२
अमस	५६६	अर्घ	१०६	अलीक	४६	अव्यथिषी	५५२
अमित्र	४५४	अर्चस्	६५२	अलीका	४६	अशनि	६८०
अमित्र	४५६	अर्चि	६०७	अलुम	३५१	अशित्र	४५६
अमिलातक	८३	अर्चिस्	६८६	अल्प	२६६	अशोक	२१
अमीवा	५१४	अर्जुन	२८८	अल्ल	४६४	अश्मक	३३
अम्बर	४०३	अर्जुनी	२८८	अव	५११	अश्मन्	६११
अम्बरीष	५५५	अर्णस्	६७६	अवका	२७	अश्मयु	७४१
अम्बा	३१८	अर्थ	२२५	अवख्युस्	१००१	अश्रि	६६२
अम्बु	७६६	अर्थुष्य	३८५	अवगथ	२२६	अश्रु	८०६
अम्बल	४६२	अर्पिम	३४६	अवगाथ	२२६	अश्व	५०५
अम्भस्	६५२	अर्पिश	३३६	अवगीथ	२२७	अषाढा	१८१
अम्ल	४६२	अर्पिष	५४६	अवच	११४	अष्ठका	७७
अयस्	६५२	अर्बुद	२४२	अवचक्षुस्	१००१	अष्टन्	६०३
अयास्	६८८	अर्भ	३२७	अवट	१४२	अष्टि	६५१
अयुत	२०४	अर्भक	३३	अवट्ठु	७६२	असन	२६६
अय्मन्	६११	अर्म	३३८	अवड	१७१	असि	६०७
अरट्ठु	७६२	अर्यमन्	६०२	अवतंस	५६५	असु	७१६
अरड	१७१	अर्वन्	६०४	अवनि	६८०	असुर	४२३
अरणि	६३८	अर्वाक्	८७०	अवन्ति	६६५	असुरि	६६६
						अस्त	२००

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक
अस्तीक	५०
अस्तु	७७३
अस्त्र	४४६
अस्थि	६६६
अस्मद्	८९९
अस्र	३८७
अहन्	९०२
अहल्या	३५८
अहि	६१४
अंश	५२७
अंशु	७१९
अंशुक	५७
अंस	५६४
अंहति	६५४
अंहस्	९९२
अंह्रि	६९२
आ	६०५
आकषिक	४२
आखु	७४२
आख्यस्	९६९
आगन्तु	७७३
आगस्	९७०
आगामिन्	९२०
आचक्षस्	९६९
आचिकीर्षणि	६४३
आजि	६२०
आजिहीर्षणि	६४३
आटरूष	५६१
आड्ड	८३७
आढक	३३
आढ्य	३६४
आणि	६१९
आणुक	५६
आणूक	५९
आणूर	४२८
आण्ड	१६९
आण्डू	८३६
आति	६२०
आत्मन्	९१६
आदिङ्ग	१०४
आदीनव	५१९
आनक	७२
आपणिक	३९
आपतिक	३९
आपदिक	३९
आपनिक	३९
आप्वा	५०६
आभीर	४२२
आमय	३६५
आमिक्षा	५९७
आमिष	५४९
आमीवा	५१४
आम्ब	३१८
आम्र	३९२
आम्रातक	८३
आयु	१
आयुस्	९९८
आरग्वध	२५४
आरू	८३५
आर्द्र	३९२
आलत्तिका	७६
आलवाल, अलवाल	४८०
आलि	६१९
आलिङ्ग	१०२
आलु	७२७
आलू	८३७
आलूर	४२८
आवसथ	२३३
आविस्	९९५
आशिर	४१५
आशु	१
आशुशुक्षणि	६४३
आष्ट्र	४४७
आसाविन्	९२१
आस्फोता	२१८
आस्य	३६४
आहल	४७२
आह्वा	५१४
इक्षु	८२६
इक्ष्वाकु	७५७
इङ्गुद	२४२
इजसान	२८०
इज्जल	४७४
इड्	८८०
इड	३
इडविड्	८७९
इडावत्सर	४३९
इड्वत्सर	४३९
इतर	४३८
इति	६५१
इतिक	४५
इतिश	५३७
इदम्	९३८
इध्म	३४०
इन	२६१
इन्दु	७१६
इन्द्र	३८७
इफ, रिफ	३१६
इभ	३२८
इरा	३८९
इरिण	१९५
इलात	२०९
इल्वल	५००
इल्वला	५००
इषस	५७२
इषिर	४१६
इषीका	४८
इषु	७२९
इषुध	२५६
इष्टका	७७
इष्व	५११
इष्वा	५११
ईड्	८८०
ईड	३
ईम्	९४१
ईर्म	३३८
ईर्ष्या	३५७
ईर्ष्यालु	८२२
ईर्ष्यू	८२९
ईशान्	९००
ईशान	२७७
ईश्वर	४४२
ईश्वरी	४४२
ईषीका	४८
ईष्म	३४०
उक्थ	२२७
उक्षन्	९००
उखा	८८
उग्र	३९६
उचित	२१२
उच्च	१००३
उच्चा	१००३
उच्चिलिङ्ग	१०५
उच्चैस्	१००३
उच्छीथ	२२८
उटज	१३४
उडु	७३८
उडुप	३११
उडुव	३११
उत	२०४

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक
उतथ्य	३८६	उरल	४७४	ऊर्वारु	८१४	एत्व	५२५
उत्कण्ठुल	४८५	उरश	५३१	ऊष्मन्	९११	एघट	१४२
उत्कलिका	३८	उरस्	९६७	ऋक्ष	५६७	एधतु	७७९
उत्कुरुट	१५५	उरस	५७२	ऋक्षर	४४०	एधस्	९६८
उत्पल	४७४	उरु	७३७	ऋक्षरा	४४०	एधिख	९१
उत्स	५६७	उरुवूक	६१	ऋग्रि	६९५	एधिच्छ	१२६
उदक	२९	उलक्षु	८२८	ऋचीक	४८	एधिठ	१६६
उदर	३९९	उलप	३०७	ऋच्छर	३९७	एधित्व	५२६
उदरथि	६७२	उलूक	६१	ऋच्छरा	३९७	एधिनि	६८३
उदर्क	२६	उल्का	२६	ऋजीक	४८	एनस्	९७९
उदश्वित्	८८८	उल्मुक	५७	ऋजीष	५५४	एरका	३३
उदारथि	६७२	उल्व	३१९	ऋजु	७२२	एरण्ड	१७६
उदिश्व	१२३	उल्वण	१९०	ऋज्र	३८८	एरा	३८९
उदीची	११२	उशनस्	९८५	ऋञ्जसान	२७९	एर्वारु	८१४
उदुम्ब	३२६	उशास्	९७१	ऋण	१८३	एव	५०५
उदुम्बर	४४४	उशिज्	८७६	ऋत	२०१	ओकस्	९६५
उद्गातृ	८६३	उशीर	४१९	ऋति	६०९	ओजस्	९५९
उद्गीथ	२२७	उषष्	३०५	ऋतु	७७७	ओड्र	३९६
उद्र	३८८	उषस्	९७१	ऋत्वन्	९०६	ओतु	७७३
उद्रद्रुम	३५१	उष्ट्र	४४९	ऋधज्	८७४	ओदन	२७१
उद्वत्सर	४३९	उष्ण	१८३	ऋभु	७३०	ओम्	९३३
उन्दनु	७९३	उष्णीष	५५६	ऋभुक्षिन्	९२८	ओषधि	६७५
उन्दुर	४२३	उष्मन्	९१२	ऋश्य	३६१	ओष्ठ	१६२
उन्नेतृ	८६३	उस्त्र	३८८	ऋषभ	३३१	ककन्द	२४५
उप	३०३	उस्त्रा	३८८	ऋषि	६०९	ककुद	२४३
उपक	३३	उह्ल	३८८	ऋष्व	५११	ककुभ्	९३२
उपचाकु	७५४	ऊक	२२	एक	२१	ककुभ	३३३
उपद्रष्टृ	८५७	ऊधस्	९५४	एकानसि	७०८	कक्कोली	४९५
उपल	४६८	ऊन	२६१	एडका	३३	कक्खट	१४२
उपवसथ	२३३	ऊम	३४२	एण	१८२	कक्ष	५६४
उपह्वर	४४४	ऊरु	७३६	एत	२००	कङ्क	६३
उभ्र	३८८	ऊर्णा	१८२	एतद्	८९६	कङ्कट	१४२
उमा	३४२	ऊर्दर	४०३	एतश	५३९	कङ्कण	१८७
उम्बर	४४४	ऊर्ध्व	५०७	एतशस्	९८४	कङ्कणि	६३९
उरण	१९०	ऊर्मि	६८९	एतस	५८१	कङ्कणीक	५०

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक
कङ्कृत	२०७	कडम	३४७	कन्दर	३९७	करञ्ज	१३६
कङ्कन	८	कडम्ब	३२१	कन्दल	४६५	करट	१४२
कङ्काल	४८०	कडार	४०५	कन्दु	७१६	करण	१८७
कङ्गु	७६१	कडित्र	४५९	कन्दुक	५४	करणि	६३८
कचप	३०४	कडेवर	४४५	कन्या	३५७	करण्ड	१७३
कचार	४०५	कणच	११४	कपट	१४४	करभ	३२९
कच्छ	१२४	कणय	३६५	कपाट	१४८	करम्ब	३२१
कच्छू	८३१	कणिश	५३५	कपाल	४७५	करम्भ	३३६
कज्जल	४७४	कणीक	४६	कपि	६१४	करवाल	४८०
कञ्चुक	५७	कणीका	४६	कपिञ्जल	४७४	करवीर	४२२
कञ्चूल	४९१	कणीचि	६२७	कपिल	४८४	करह	५८९
कञ्जार	४०५	कणूक	६०	कपोट	१६१	कराल	४७५
कटक	२७	कण्टक	२७	कपोत	२१७	करि	६१९
कटनि	६८०	कण्ठ	१६२	कपोल	४९३	करित्व	५२६
कटम्ब	३२१	कण्ड	१६९	कफ	३१६	करीर	४१८
कटरु	८१२	कण्डीर	४१८	कफैलू	८३९	करीष	५५३
कटह	५८९	कण्डु	७६५	कबर	३९७	करुण	१९६
कटाह	५९१	कण्डू	८३१	कबरी	३९७	करुणा	१९६
कटि	६०७	कण्डूल	४८८	कम्	९३७	करूष	५६०
कटित्र	४५९	कण्डोल	४९३	कमट	१४२	करेणु	७७२
कटीर	४१८	कण्व	५०५	कमठ	१६७	करोट	१६०
कटु	७१६	कत	२०८	कमण्डलु	८२४	कर्क	२३
कटुक	५१	कत्रि	६९६	कमर	३९७	कर्कट	१४२
कटोल	४९३	कथक	३३	कमल	४६५	कर्कटी	१४२
कटोला	४९३	कथेर	४३१	कम्पीट	१५१	कर्कन्धू	८४९
कट्वर	४४१	कदम्ब	३२२	कम्बल	४९९	कर्कर	९
कट्वरी	४४१	कदर	३९७	कम्बु	७९९	कर्करी	९
कठर	३९७	कद्रु	७४५	कम्बू	८४७	कर्कार	४०७
कठाकु	७५२	कनक	२७	कय	३९७	कर्कारु	८१३
कठिन	२८२	कनिश	५३५	कर	२	कर्कोट	१६१
कठेर	४३१	कनीनक	७७	करक	२७	कर्चूर	४३०
कठोर	४३३	कनीनका	७३	करकर	१४	कर्जूर	४२७
कडङ्गर	४४५	कन्तु	७७३	करका	२७	कर्ण	१८२
कडत्र	४५६	कन्था	२२५	करङ्क	६२	कर्तरि	६९८
कडभ	३२९	कन्द	२३७	करञ्ज	९८	कर्तु	७७३

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक
कर्दम	३४७	कलिका	३८	कसार	४०५	काशि	६०७
कर्पट	१४२	कलिङ्ग	१०२	कशिपु	७६८	काषि	६१६
कर्पटि	६३०	कलिञ्ज	१२३	कस्तूर	४३०	काष्ठ	१६२
कर्पर	४०३	कलिन्द	२४६	कहोड	१७२	काष्ठा	१६२
कर्पास	५८३	कलिल	४८१	कह्लार	४११	कासर	३६७
कर्पूर	४२७	कलुष	५५७	कंस	५६४	कासार	४०५
कर्बट	१४२	कलेवर	४४५	काक	२१	कासिका	४०
कर्बर	४४१	कल्क	२१	काकणि	६४०	कासीस	५७६
कर्बरी	४४१	कल्पुष	५५७	काकन्दी	२४५	कासू	८३५
कर्बुदार	४१०	कल्मलीक	५०	काकि	६२३	काहल	४७४
कर्बुर	४२३	कल्मष	५६२	काकु	७४६	काहला	४७४
कर्मन्	६११	कल्माष	५६३	काकुड	२४३	किकि	६२३
कर्मार	४०७	कल्मास	५८४	काकोली	१८	किकिदीवि	७०६
कर्व	५०५	कल्य	३५७	काचू	८३५	किकिवि	७०६
कर्ष	५४०	कल्याण	१६३	काञ्चन	२७५	किकीदिवि	७०६
कर्षक	३१	कल्लोल	४६५	काञ्चनार	४१०	किखि	६२६
कर्षू	८२६	कवक	११४	काञ्चि	६१८	किङ्कणि	६३६
कलकल	१४	कवच	२७	काणि	६३४	किङ्किणीका	५०
कलङ्क	६२	कवट	१४२	काणुक	५६	किञ्जल्क	२६
कलच	११४	कवन्ध	२५७	काणूक	६०	किण्व	५११
कलत्र	४५६	कवय	३६५	काणूर	४२८	कितव	५१८
कलभ	३२६	कवल	४६६	काण्ड	१६६	किम्	६३६
कलम	३४७	कवष	५४४	कातर	४३७	किरण	१८८
कलम्भ	३३६	कवाक	३४	कादम्ब	३२२	किराट	१४७
कलल	४६५	कवाट	१४८	कानन	२७५	किरात	२०६
कलविङ्क	६५	कवि	६०६	कान्तार	४११	किरि	६०६
कलश	५३२	कविय	३७५	कामल	४६५	किरीट	१५१
कलशी	५३२	कविर	४१२	कामि	६१८	किर्मीर	४२२
कलह	५८६	कशेरू	८५१	कारण्डव	५१६	किलाट	१४७
कलात	२०६	कश्मल	५०२	काराल	४७६	किलास	५७५
कलाप	३०८	कश्मीर	४२०	कारि	६१६	किलासी	५७५
कलापक	३३	कषाकष	१६	कारु	१	किलिकिल	१७
कलाय	३७२	कषाय	३७२	कारूष	५६१	किल्विष	५५१
कलार	४०५	कषि	६१६	कार्ण	१८६	किल्विषी	५५१
कलि	६०७	कषीका	४६	कार्षक	३१	किशोर	४३४

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक
किष्कु	७५१	कुटि	६१९	कुथुम	३५१	कुरुकुर	१७
किसलय	३६८	कुटिञ्च	१२३	कुथेर	४३१	कुरुण्टक	२८
किशारु	७२५	कुटिल	४८१	कुद्रि	६९५	कुरुम	३५१
कीकट	१४४	कुटीर	४१८	कुद्रु	७४५	कुरुम्ब	३२६
कीकस	५७३	कुटुकुट	१७	कुन्त	२२४	कुर्कुर	४२६
कीचक	३३	कुटुम	३५१	कुन्तल	४७४	कुलक	२९
कीट	१४०	कुटुम्ब	३२६	कुन्ति	६५२	कुलटा	१४३
कीनाश	५३४	कुटेर	४३१	कुन्थु	७१६	कुलव	५१८
कीम्	६४१	कुट्टिम	३४९	कुन्द	२४०	कुलाय	३७२
कीर	४१९	कुठाकु	७५३	कुन्दुम	३५२	कुलाल	४७६
कीर्ति	६०८	कुठार	४०८	कुन्दुरु	८१८	कुलिङ्क	६४
कीलाल	४७५	कुठि	६१४	कुपल	४६८	कुलिज	१३५
कु	७२९	कुठेर	४३१	कुपिन्द	२४७	कुलिञ्च	१२३
कुकुन्दर	४०३	कुड	१७०	कुप्र	३९६	कुलिश	५३५
कुकुन्दुर	४२६	कुडव	५१८,	कुबेर	४३१	कुलीर	४१९
कुकुर	४२६	कुडुमा	३५१	कुब्ज	१२९	कुलुम	३५१
कुकूल	४९१	कुडुव	५२४	कुब्द्रि	६९५	कुलूत	२१५
कुक्कण	१६०	कुड्मल	५०२	कुब्र	३९०	कुलूल	४९०
कुककुट	१५५	कुड्य	३६२	कुमार	४०९	कुल्फ	३१५
कुक्कुम	३३४	कुणप	३०५	कुमारयु	७४१	कुल्मल	५०३
कुक्कुर	४२६	कुणारु	८१५	कुमुद	२४४	कुल्माष	५६३
कुक्ष	५६७	कुणाल	४७६	कुमुल	४८७	कुल्मास	५८४
कुक्षि	७०७	कुणि	६०९, ६३५	कुम्भ	३३७	कुल्या	३६२
कुङ्कण	१६०	कुणिन्द	२४६	कुम्भीर	४२२	कुवल	४६९
कुङ्कुम	३५२	कुणुकुण	१७	कुम्मल	५०३	कुवली	४६९
कुङ्ग	१०७	कुण्ठ	१६३	कुरङ्ग	१०१	कुवाकु	७५३
कुञ्ज	१२९	कुण्ड	१७०	कुरडी	१०१	कुविन्द	२४७
कुञ्जर	४०३	कण्डल	४६५	कुरड	१७२	कुश	५२९
कुटच	११४	कुण्डि	६०८	कुरण्टक	२८	कुशल	४६८
कुटज	१३०	कुण्डिन	२८२	कुरर	३९९	कुशाम्ब	३२०
[कुटजी	१३०]	कुण्ढ	१०८	कुरव	५१८	कुशिक	४५
कुटप	३०५	कुतप	३०५	कुरवक	२८	कुशुण्ड	१७८
कुटरु	८१२	कुतू	८४३	कुरिन्द	२४६	कुश्रि	६९३
कुटल्ल	४६८	कुथ	२३१	कुरीर	४१९	कुषप	३०५
कुटाकु	७५३	कुथा	२३१	कुरु	७३४	कुषाकु	७५३

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक
कुषि	६०९	कृतु	७९१	केलि	६०८	क्रमेलक	६६
कुषित	२१२	कृत्तिका	७६	केलिकिल	१९	क्रयिक	३८
कुषीतक	८०	कृत्या	३६१	केवयु	७४६	क्रन्तुम्	९४२
कुष्ठ	१६४	कृत्स	५६७	केवल	४६५	क्रिमि	६१३
कुष्मन्	९१२	कृत्स्न	२६४	केश	५३०	क्रिय	३७६
कुष्मल	५०२	कृदर	४०३	केसर	४३९	क्रुशिक	४१
कुसित	२१२	कृन्तत्र	४५८	कैरव	५१९	क्रुशित	२१२
कुसिद	२४१	कृपण	१८८	कैलिकिल	१९	क्रुश्वन	९०६
कुसीद	२४१	कृपाण	१९१	कोक	२१	क्रूर	३९५
कुसुण्ड	१७८	कृपारु	८१५	कोकिल	४८१	क्रेणि	६३४
कुसुम	३५१	कृपालु	८१५	कोक्काण }	१९३	क्रेलिम	३५४
कुसुम्भ	३३७	कृपीट	१५१	बोक्काण }		क्रोड	१७२
कुसूल	४९०	कृमि	६९०	कोटर	३९७	क्रोष्टु	७७३
कुहड	१७१	कृमुक	५३	कोटव	५१९	क्रौश्न	२६५
कुहर	३९९	कृवि	७०५	कोटि	६१९	क्लेदन्	९००
कुहु	७२९	कृश	५२८	कोटीर	४१८	क्लेदु	७१६
कुहुक	५१	कृशानु	७६४	कोठर	४०३	क्लोमन्	९१६
कुहू	८४४	कृषक	३१	कोथुम	३५३	क्वयि	६६१
कूच	११२	कृषाकु	७५३	कोद्रव	५१९	क्षणनु	७९३
कूची	११२	कृषि	६०९	कोमल	४७४	क्षत्तृ	८६५
कूप	२९७	कृषिक	४१	कोयष्टि	६४८	क्षत्र	४५१
कूर्च	११३	कृषीट	१५१	कोर	४३४	क्षम्	९३७
कूर्चक	११३	कृष्टि	६५१	कोरक	२७	क्षमा	६०४
कूर्चिका	११३	कृष्ण	१८३	कोरदूष	५६१	क्षय	३६७
कूर्प	२९८	कृष्णवेण्णा	१८२	कोल	४९४	क्षवक	२७
कूर्पर	४०३	कृसर	४४०	कोविदार	४१०	क्षान्तुम्	९४२
कूर्पास	५८३	कृसरा	४४०	कोश	५२९	क्षारक	२७
कूर्म	३४६	केकय	३६६	कोशातकी	८३	क्षित्वन्	९०६
कूवर	४४३	केकर	४३५	कोष्ठ	१६४	क्षित्वरी	९०६
कूष्माण्ड	१७६	केका	२६	कोसल	४६५	क्षिप	५
कृक	२३	केक्काण	१९३	कोहल	४६५	क्षिपक	२९
कृकण	१९०	केतु	७७८	क्रकच	११५	क्षिपका	२९
कृकवाकु	७२८	केदार	४११	क्रकर	४०३	क्षिपण	२७३
कृच्छ्र	३९५	केरड	१७२	क्रतु	७८०	क्षिपणि	६४२
कृणु	७९१	केरल	४७४	क्रमुक	५३	क्षिपणु	७७०

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक
क्षिपण्यु	८०४
क्षिपस	५७२
क्षिपस्ति	६६०
क्षिप्र	३८८
क्षीर	४१९
क्षीरकाकोली	१८
क्षुण	१९७
क्षुद्र	३८८
क्षुद्रा	३८८
क्षुद्रि	६९५
क्षुधारु	८१५
क्षुधालु	८१५
क्षुधुन	२९०
क्षुप	३०१
क्षुपक	२९
क्षुप्र	३८८
क्षुभक	२९
क्षुमा	३४१
क्षुर	३९६
क्षुल्ल	३३
क्षुल्लक	३३
क्षूण	१८५
क्षेत्र	४५१
क्षेम	३३८
क्षोणि	६३४
क्षोतृ	८५७
क्षोम	३४१
क्ष्मा	३४६
ख	८७
खचिम	३५०
खजप	३०४
खजाक	३४
खञ्जरीट	१५२
खटत्	८८३
खट्टर	४२७
खट्वर	४४१
खट्वा	५०५
खडूर	४२७
खड्ग	९२
खड्ड	८४५
खण्ड	१६९
खण्डि	६०७
खदिर	४१२
खनि	६१९
खय	३६७
खर	४०३
खरण्ड	१७६
खरत्	८८३
खरप	३०७
खरु	८०८
खर्जू	८२९
खर्जूर	४२७
खल	४७२
खलत	२०७
खलति	६५३
खलि	६०७
खलिन	२८२
खलीन	२८६
खलूष	५६०
खल्व	५०५
खल्वा	५०५
खल्वाट	१४८
खष्प	२९९
खाण्ड	१६९
खात्र	४४९
खादत्	८८३
खादि	६०७
खानि	६१९
खारी	४११
खिदिर	४१६
खिद्र	३८८
खुर	३९६
ख्यस्	९६९
गगन	२७५
गङ्गम	१३
गङ्गा	९२
गच्छ	१२४
गडन्त	२२१
गडयन्त	२२१
गडयन्ती	२२१
गडयित्नु	७९७
गडाक	३४
गडु	७१६
गडेर	४३१
गङ्ग	९२
गणिम	३४९
गणेय	३७०
गण्ड	१६८
गण्डयन्त	२२१
गण्डाल	४७५
गण्डि	६१९
गण्डूल	४८८
गण्डूष	५६०
गण्डोल	४९३
गदयित्नु	७९७
गद्र	९२
गद्गद	८
गन्तु	७७३
गन्दिक } गब्दिक }	४५
गन्धर्व	५०८
गब्दिक } गन्दिक }	४५
गभस्ति	६६१
गभीर	४२२
गम्	९३७
गमथ	२३२
गमि	६०७
गमिन्	९१९
गमेणु	७७२
गम्भीर	४२२
गय	३७०
गया	३७०
गरद्रु	७६२
गरभ	३२९
गरुट	१५३
गरुड	१५३
गरुत्	८९०
गर्ग	९२
गर्गर	९
गर्गरी	९
गर्त	२००
गर्दभ	३२९
गर्भ	३२७
गर्मुत	८९०
गर्व	५०५
गर्वर	४४१
गर्वरी	४४१
गवय	३६५
गवल	४६५
गवीधुक	७४
गवेधुका	७४
गहन	२७५
गह्वर	४४४
गाण्डि	६१९
गातु	७७३
गात्र	४५३
गात्रा	४५३
गाथा	२२५

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक
गाधि	६०७	गृहतु	७७९	ग्राहि	६१९	चक्रधर	२०
गान्तुम्	९४२	गृहलु	८२४	ग्रीवा	५१४	चक्रवाल	४८०
गान्त्र	४४७	गुञ्जन	२६९	गीष्म	३४६	चक्रु	७३३
गामिन्	९२०	गृत्स	५६८	ग्लातु	७७३	चक्रु:	२०
गारित्र	४६०	गृधु	७२९	ग्लौ	८६८	चक्षस्	९६९
गारेट	१५९	गृध्र	३८८	घङ्घ	११०	चक्षुस्	१००१
गिर्	९४३	गृष्टि	६४९	घङ्घा	११०	चङ्कुर	४२३
गिरण	१८८	गृह्याय्य	३७३	घटघट	१४	चङ्क्रम	१२
गिरि	६०९	गृहाक	३५	घटा	१४१	चञ्चरीक	५०
गुगुलु	८२४	गृहाण	१९१	घण्टा	१४१	चञ्चल	४६५
गुच्छ	१२४	गृहोल	४९४	घतन	२७२	चञ्चा	१२२
गुजुगुज	७१	गेरु	८११	घर्घर	९	चञ्चु	७१६
गुड	१७०	गेष्ण	१९९	घर्घरी	९	चटक	२७
गुडा	१७०	गेह	५८७	घर्घरीका	५०	चटर	३९७
गुडुगुड	१७	गो	८६७	घर्म	३३८	चटस	५६९
गुडूची	१२०	गोत्र	४५१	घसुरि	६९९	चटाकु	७५२
गुडेर	४३१	गोत्रा	४५१	घस्र	३८७	चटि	६०७
गुण	१८६	गोधूम	३५३	घाटा	१४१	चटु	७२६
गुत्स	५६८	गोपानसि	७०८	घाति	६१८	चटुल	४८५
गुद	२३९	गोपीथ	२२७	घासि	६१८	चणक	२७
गुधेर	४३२	गोभिल	४८४	घुरुघुर	१७	चणव	५१५
गुन्द्रा	३९६	गोमायु	७२६	घूक	२४	चणस्	९५७
गुपिल	४८३	गोर्वर	४०३	घूर्णि	६३७	चण्ड	१६८
गुबेर	४३१	गोल	४९४	घृणा	१८३	चण्डातक	८२
गुरु	७३४	गोलत्तिका	७६	घृर्णि	६३५	चण्डाल	४७५
गुलुञ्छ	१२६	गोला	४९४	घृत	२०१	चण्डि	६०७
गुल्फ	३१५	गोलुगुल	१९	घृष्वि	७०५	चण्डिल	४८१
गुल्म	३४६	गौर	३९६	घोर	४३४	चण्प	२९६
गुवाक	३५	गौलुगुल	१९	घोषयित्नु	७९७	चण्पा	२९६
गुह	५	ग्रन्थि	६०७	घोलिम	३५४	चतुर्	९४८
गुहा	५	ग्रन्थुस्	९९७	घ्रोम	३४६	चतुर	४२३
गूथ	२३१	ग्रहणि	६३८	चकुर	४२३	चत्वर	४४१
गूर्जर	४०४	ग्रहि	६१९	चकोर	४३३	चत्वरी	४४१
गूर्जरी	४०४	ग्राम	३३९	चक्र	७	चनस्	९५७
गूवाक	३७	ग्रावन्	९०५			चन्दन	२६९

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक
चन्दिर	४१२
चन्द्र	३८७
चन्द्रमस्	९८६
चपट	१४२
चपल	४६५
चपाल	४७५
चपुष	५५७
चपेट	१५८
चपेटा	१५८
चमट	१४२
चमड	१७१
चमर	३१७
चमस	५६९
चमसी	५६९
चमू	८२९
चमूरु	८१९
चम्पक	३३
चम्पा	२९६
चम्पू	८४१
चर	२
चरक	२७
चरण	१८७
चरण्यु	८०४, ७४६
चरम	३४७
चरि	६१९
चरिण्टी	१५०
चरु	७२६
चर्करित	२०६
चर्करीत	२०६
चर्मन्	९११
चर्षणि	६४१
चलुष	५५७
चषक	२७
चषाल	४७५
चहोल	४९३
चाटु	७२६

शब्द	सूत्रांक
चाणस्	९५७
चाणूर	४२८
चात्वाल	४८०
चानस्	९५७
चारि	६१९
चारित्र	४६०
चारु	७२६
चारुदेष्ण	१९९
चार्वाक	३७
चिकुर	४२६
चिक्कण	१९०
चित्त	२०१
चित्र	४५४
चित्रभानु	७८६
चित्रानसि	७०८
चिन्ति	६५२
चिबुक	५७
चिम्बा	३२५
चिर	३८८
चिरिङ्क	६४
चिरिण्टी	१५०
चिर्भिटी	१४९
चिलात	२०९
चिह्न	२९८
चीर	३९२
चीवर	४४३
चुक्कण	१८७
चुक्र	३९३
चुण्ढि	६३२
चुप्प	३०१
चुप्र	३८८
चुब्र	३९०
चुरिक	४५
	मुरिक देखो
चुरुचुर	१७
चुरुम्ब	३२६

शब्द	सूत्रांक
चुलुक	५७
चुल्लि	६०८
चूचुक	५७
चर्च	११३
चूर्णि	६३४
चेक्रीयित	२०५
चेटि	६०८
चेतस्	९५२
चेरु	८०६
चोक्ष	५९७
चोच	१२२
चोर	४३४
चोरड	१७१
च्यूप	२९७
च्यौवन	२६८
च्यौवनी	२६८
छगल	४७१
छटा	१४१
छत्र	४४६
छत्री	४४६
छत्वर	४४४
छदन्ति	६६५
छदिस्	९८९
छद्मन्	९११
छन्दस्	९५४
छपत्	८८३
छर्दि	६०७
छर्दिस्	९८९
छल	४७१
छवि	७०६
छाग	९२
छागल	४७१
छात्र	४५१
छादिस्	९८९
छाया	३५७
छित्वर	४४४

शब्द	सूत्रांक
छिदक	३०
छिदि	६०९
छिदिर	४१६
छिद्र	३८८
छिवि	७०६
छुपत्	८८३
छुरुछुर	१७
छुदि	६०९
छेक	२६
छेदक	३०
छेवा	५१४
जगत	८८५
जगती	८८५
जघन	२७२
जघ्नु	७३३
जङ्गम	१३
जङ्गल	४६७
जङ्घा	१०९
जजल	१८
जटा	१३९
जटायु	१
जटायुस्	९९८
जटिल	४८१
जठर	४०३
जतु	७२१
जत्रु	८०९
जनक	२७
जनयित्नु	७९७
जनि	६०७
जनित्व	५२६
जनिमन्	९१७
जनुस्	९९७
जन्तु	७७३
जन्मन्	९११
जन्य	३६१
जन्यु	८०१

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक
जप्र	३८७	जामि	६१८	झंझर	९	तनू	८२९
जम्	९३७	जाय	३६१	झर्झरी	९	तन्त	२००
जम्बाल	४८०	जायु	१	झर्झरीक	५०	तन्तिडीक	५०
जम्बीर	४२२	जाल्म	३४६	झर्झरीका	५०	तन्तु	७७३
जम्बुक	५७	जिगन्तु	७९२	टिट्टिभ	३३२	तन्त्र	४५१
जम्बू	८४७	जिंगन्तु	७९२	डमर	४०२	तन्त्रि	६०७
जम्भ	३२७	जित्वन्	९०६	डहर	४०३	तन्त्री	७११
जम्भा	३२७	जित्वरी	९०६	डामर	४०२	तन्द्रा	३९६
जय	३६७	जिन	२६१	डिण्डिम	३५६	तन्द्री	७११
जयन	२६९	जिह्म	३३९	डिण्डीर	४२२	तन्यतु	७८१
जयन्त	२२१	जिह्मियाण	२७८	डिपत्	८८३	तपस्	९५२
जयन्ती	२२१	जिह्वा	५१३	डिम्ब	३२५	तपस	५६९
जयि	६०६	जीमूत	२१६	ढक्का	२६	तपुस्	९९७
जरठ	१६७	जीर	३९२	तक्मन्	९११	तमक	२७
जरण्ड	१७३	जीरदानु	७९५	तक्र	३८८	तमङ्ग	९८
जरन्त	२१९	जीवि	७०५	तक्षन्	९००	तमत	२०७
जरायु	१	जील	३९२	तगर	४०३	तमस्	९५२
जरुट	१५३	जीवथ	२३२	तङ्कि	६१२	तमस	५६९
जरुड	१५३	जीवन्त	२२०	तङ्गण	१८७	तमसा	५६९
जरूथ	२३६	जीवन्ती	२२०	तट	१३९	तमाल	४७५
जरूष	५६०	जीवर	३९७	तटाक	३४	तमि	६०७
जर्जर	९	जीवातु	७८२	तडाक	३४	तम्बूल	४८९
जर्जरी	९	जीवेगु	७७२	तडाग	९७	तर	२
जर्जरीका	४७	जीव्रि	६९४	तडित्	८८७	तरक्षु	८२७
जर्ण	१८२	जुघुषु	२०	तण्ड	१६८	तरङ्ग	९८
जर्त	२००	जुहुराण	२७८	तण्डाल	४७५	तरट	१४२
जलधर	२०	जूट	१४०	तण्डु	७६५	तरड	१७१
जलाष	५४५	जूर्णि	६३४	तण्डुल	४८५	तरण	१८७
जलूका	५८	जेसर	४३९	तत	२०३	तरणि	६३८
जसुरि	६९९	जैत्र	४४७	तत्रु	७३३	तरण्ड	१७३
जहक	३३	जैवातृक	६७	तद्	८९५	तरन्त	२२१
जह्नु	७८९	जैवातृका	६७	तनय	३६५	तरन्ती	२२१
जागृवि	७०५	ज्ञाति	६४६	तनाल	४७५	तरल	४६५
जाजलि	१८	ज्योतिरिङ्गण	१९०	तनु	७१६	तरस्	९५२
जाण्ट	१४०	ज्योतिस्	९९१	तनुत्र	४६१	तरि	६०६
जानु	१	ज्योन्ताक	३७	तनुस्	९९७	तरी	७११
जामातृ	८६०	झज्झा	१३७			तरीष	५५३

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक
तरु	७१६	तिथ	२३१	तुविस्	९९६	त्रोत्र	४६१
तरुण	२८८	तिथि	६७४	तुषार	४०८	त्वच्	८७२
तरुत्र	४६१	तिनिश	५३७	तुस्ता	२०३	त्वष्टृ	८६५
तर्कार	४०६	तिन्तिडीक	५०	तुहिन	२८३	त्विषि	६०९
तर्कु	७२३	तिन्दुक	५४	तूक	२४	त्सरु	७१६
तर्दू	८४५	तिमि	६१३	तूण	१८५	दक्षाय्य	३७३
तर्ण	१८२	निमिर	४१६	तूणीर	४२२	दक्षिण	१९४
तर्दू	८४६	तिरस्	९७१	तूप	२९७	दक्षिणा	१९४
तर्प	२९६	तिरीट	१५१	तूर्णि	६३४	दगु	७५९
तर्ष	५४०	तिर्तिर	१०	तूवर	४४३	दण्ड	१६८
तर्स	५६४	तिलक	२९	तूष्णीम्	९४०	दधि	६०७
तलप	३०४	तीक्ष्ण	१८६	तूस्त	२०३	दधिषाय्य	३७४
तलुन	२८८	तीर्थ	२२७	तृण	१८६	दधीचि	६२७
तलूक	५८	तीवर	४४४	तृपत्	८८१	दनु	७९३
तल्प	२९६	तीव्र	३९६	तृपल	४६८	दन्त	२००
तविष	५५०	तुक्	८६९	तृपला	४६८	दपत्	८८३
तविषी	५५०	तुग्र	३९६	तृप्र	३८८	दभ्र	३८८
तसर	४४०	तुञ्ज	१०७	तृष्णा	१८३	दमाहक	८१
ताडि	६१८	तुच्छ	१२४	तेजस्	९५२	दमुनस्	९८७
तात	२०३	तुडुव	५२४	तोक	२१	दमूनस्	९८७
तापि	६१८	तुण्ड	१७०	तोक्मन्	९१६	दय	३६७
तामरस	५७३	तुण्डि	६०८	तोमर	४०३	दरक	२७
ताम्बूल	४८९	तुण्डिल	४८१	तोसल	४६५	दरत	२०७
ताम्र	३९२	तुत्थ	२२७	तौल्वलि	५००	दरद्	८९४
तालि	६१८	तुर	५	त्यद्	८९५	दरदर	१४
तालीस	५७६	तुदन	२७३	त्रपिचा	११७	दरि	६०६
तालु	७२७	तुन्द	२४०	त्रपु	७१६	दरुट	१५३
तालूर	४२८	तुभ्र	३९०	त्रपुम्	९९७	दरुड	१५३
ताविष	५५०	तुमुल	४८७	त्रपुस	५७८	दर्ण	१८२
ताविषी	५५०	तुम्ब	३२०	त्रय	३६७	दर्दर	९
तिक्का	२०४	तुम्बुरु	८१७	त्रवण	१९०	दर्दरी	९
तिग्म	३४५	तुरण	१९०	त्राक	२१	दर्दरीक	४७
तितउ	७४८	तुरि	६०९	त्रि	६१५	दर्दुर	४२६
तितल	१८	तुम्बरु	३२६	त्रिषवण	२७४	दर्दू	८४६
तितिरु	७३३	तुरुष्क	२६	त्रिष्टुभ्	९३२	दर्भ	३२७
तित्तिरि	६११	तुल्वल	५००	त्रोटि	६०८	दर्व	५०५
						दर्वर	४४१

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक
दवरी	४४१	दिव्	२०,९४९	दृषद्	८९८	द्रुहत्	८८४
दर्वि	७०४	दिवन्	९०१	देभि	६११	द्रुहथ	२३४
दर्शत	२०७	दिवस	५७२	देवका	२७	द्रुहाण	१९१
दलप	३०४	दिवा	५९९	देवट	१४२	द्रुहिण	१९५
दलिक	३८	दिष्ट्या	६०१	देवन	२६९	द्रुह्य	३६४
दलभ	३२७	दीदिवि	७०६	देवयु	७४१	द्रेक्काण	१९३
दल्मि	६८७	दीधीषाय्य	३७४	देवर	३९७	द्रोण	१८४
दवर	३९७	दीन	२६१	देवल	४६५	द्रोणी	१८४
दवाक	३४	दीर्घ	११०	देवि	६०८	द्वार्	७४४
दवि	७०६	दीवि	७०६	देविका	२७	द्वार	४११
दशन्	९०१	दुकूल	४९१	देवृ	८५२	द्वि	६१५
दशेर	४३१	दुण्डुभ	३३५	देष्ण	१९९	धत्तूर	४३०
दश्र	३८८	दुन्दुभि	६८६	देहली	४६५	धनायु	१
दस्म	३४०	दुर्	९४३	दोर	४३४	धनु	७१६
दस्यु	८०१	दुर्दुरुट	१५६	दोला	४९४	धनुस्	५५९
दस्र	३८७	दुर्दुरूट	१५६	दोषा	६०४	धनुस्	९९७
दहन	२६९	दुलि	६०९	दोस्	१००५	धनू	८२९
दह्यु	८०१	दुष्टु	७३२	दोहद	२४४	धन्वन्	९००
दह्र	३८७	दुष्वन्त	२२२	द्यु	७४४	धमक	३३
दाक	२१	दुस्	९९९	द्युति	६०९	धमनि	६८०
दाडिम	३५५	दुहितृ	८६५	द्युम्न	२६६	धय	३६७
दाडिमी	३५५	दुःख	८७	द्युवन्	९०१	धरक	२७
दात्यूह	५९४	दूत	२०१	द्यो	८६७	धरणि	६३८
दात्व	५२५	दूर	३९६	द्योतन	२६९	धरीमन्	९१८
दानु	७८६	दूषिका	३८	द्यौत्र	४४८	धरुण	१९६
दामन्	९११	दूषीका	४६	द्रङ्ग	९५	धर्णसि	७०९
दारु	१	दृति	६५१	द्रङ्गा	९५	धर्तृ	८५७
दारुण	१९६	दृत्वन्	९०६	द्रमल	४६५	धर्त्र	४५१
दाश	५२७	दृदर	४०३	द्रमिल	४८१	धर्त्री	४५१
दिङ्ग	१०२	दृन्भू	८४१	द्रविण	१९४	धर्म	३३८
दिति	६६८	दृप्र	३८८	द्राक्	८७०	धर्मन्	९११
दिदिवि	७०६	दृप्रा	३८८	द्राक्षा	५९७	धर्मयु	७४१
दिधिषू	८४२	दृशान	२७७	द्राङ्ग	९५	धवन	२७४
दिधीषू	८४२	दृशीक	४८	द्रु	७४४	धवल	४६५
दिन	२६८	दृशीका	४८	द्रुणा	१८४	धाक	२१
दिलीप	३१०	दृशेलिम	३५४	द्रुमल	५०२	धाणक	७०

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक
धातु	७७३	धृषु	७२६	नभस्	६५२	नांष्ट्र	४४७
धानका	७१	धेन	२६८	नभस	५६६	नि	६१६
धाना	२५८	धेना	२६८	नभाक	३४	निकषा	५९८
धान्त	३३	धेनु	७८७	नमत	२०७	निकुञ्ज	१२६
धान्य	३७६	धोत	२००	नमत्र	४५६	निकुम्भिल	४८४
धाम	३३८	धोत्र	४५१	नमस्	६५२	निकुरुम्ब	३२६
धामन्	६११	ध्यात्व	५२५	नमस	५६६	निघृष्व	५११
धारा	३८६	ध्याम	३४०	नमाक	३४	निचाकु	७५४
धिङ्ग	१०२	ध्यामन्	६११	नमि	६१३	निचुर	४२६
धिषण	१८६	ध्रुवक	२९	नमेरु	८११	निचुल	४२६,४८७
धिषणा	१८६	ध्रुवका	२९	नयन	२६६	नितम्ब	३१७
धिष्ण्य	३६४	ध्रुविल	४८३	नरक	२७	नित्य	३६४
धिष्ण्या	३६४	ध्वजप	३०४	नर्कुट	१५५	निथ	२३१
धीना	२६८	ध्वनि	६०७	नर्मन्	६११	निद्रा	३९६
धीर	३८६	ध्वाजि	६१८	नलिन	२८२	निधन	२७३
धीवन्	६०८	नक्तम्	६३५	नल्व	५०५	निमि	६१३
धीवर	४४४	नक्र	४	नवन्	६००	निमित्त	२०४
धुत्तूर	४३०	नक्षत्र	४५६	नश	४	निम्न	२६६
धुनि	६७८	नख	४, ८७	नस्र	३८७	निम्ब	३२५
धुन्धु	७८५	नग	४	नहुष	५५७	नियुत्	२०४
धुर्	६४३	नगर	४०३	नंशुक	५७	निरुथ	२३१
धुवक	२९	नग्न	२६८	नाक	४	निर्ऋथ	२२६
धुवका	२९	नट	१३९	नाकु	७२०	निर्यूह	५६३
धुवन	२७४	नदनु	७६३	नागयशस्	६५८	निर्वृति	६१०
धूक	२२	नदरि	६६८	नाडी	७१२	निलीक	४८
धूका	२२	नदाल	४७५	नाथात	२०६	निवसथ	२३३
धूनि	६७९	ननान्दृ	८५६	नान्त्र	४४७	निवेष्प	२६६
धूम	३४०	नन्दन्त	२२०	नापित	२११	निशीथ	२२८
धूम्र	३९६	नन्दन्ती	२२०	नाभि	६२१	निश्रेणि	६३४
धूर्णि	६३७	नन्दयन्त	२२१	नामन्	६१६	निषङ्गथि	६७१
धूर्त	२०१	नन्दयन्ती	२२१	नारङ्ग	६६	निषद्वर	४४१
धूलि	७०१	नन्दयित्नु	७६७	नालिकेर	४३२	निषद्वरी	४४१
धूसर	४४०	नन्दाल	४७५	नासिका	४०	निषध	२५२
धृत्वन्	६०६	नन्दि	६०७	नासीर	४२२	निष्क	२६
धृत्वरी	६०६	नपुंसक	३२	नाहल	४६६	निष्ठुर	४२६
धृषाण	१९१	नप्तृ	८६२				

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक
निस्	६६४	नौ	८६८	पण्ड	१६८	पयोधस्	६७४
निहाक	२१	नौनुदुद	१६	पण्ण	१८२	पर	२
निहाका	२१	न्यङ्कु	७२४	पतङ्ग	६८	परङ्ग	६८
नीक	२२	न्यर्बुद	२४२	पतत्	८८३	परण	१८७
नीका	२२	न्युङ्ख	६०	पतत्र	४५६	परत	२०७
नीच	१००३	पक्त्र	४५१	पतत्रि	६६७	परम	३४७
नीचा	१००३	पक्ष	५६४	पतत्रिन्	६३०	परमेष्ठिन्	६२५
नीचैस्	१००३	पक्षस्	६८३	पतनु	७६३	परशु	७४२
नीड	१७०	पक्ष्मन्	६१६	पतस्	५६६	परश्वध	२५५
नीथ	२२७	पड	६३	पताका	३४	परह	५८६
नीप	३०२	पड	७६१	पति	६५६	पराक	३७
नीर	३८८	पचत	२०७	पतेर	४३१	पराट	१४५
नीलङ्गु	७६१	पचत्र	४५६	पत्तन	२६२	परि	६०६
नीवर	४४३	पचन	२६६	पत्ति	६४६	परिचक्षुस्	१००१
नीवि	७०५	पचि	६०७	पत्तूर	४३०	परिज्वन्	६०२
नीव्र	३९६	पचेणु	७७२	पत्त्र	४५१	परिवत्सर	४३६
नुद	५	पचेलिम	३५४	पत्सल	५०४	परिस्तोम	३४६
नूथ	२२७	पच्छ	१२४	पथ	२३१	प[illegible]ीर	४१८
नूथस्	६७३	पञ्चन्	६००	पथिन	९२६	परुष	९९७
नूधस्	६७३	पञ्चाल	४७५	पदपद	१४	परूष	५६०
नूनम्	६३५	पञ्जर	३६७	पदाजि	६२०	पर्जन्य	३८०
नूपुर	४२६	पटत्	८८३	पदाति	६२०	पर्ण	१८२
नृ	८५४	पटल	४६५	पदि	६०७	पर्णमुच्	२०
नृचक्षस्	६६६	पटह	५८६	पदिर	४१२	पर्णरुह्	२०
नृतस	५७२	पटाका	३४	पदेणु	७७२	पर्णशुष्	२०
नृतू	८४४	पटीर	४१८	पद्म	३३८	पर्णसि	७०९
नेतृ	८५७	पटु	७१६	पद्र	३८७	पर्दाकु	७५२
नेत्व	५२५	पटुल	४८५	पद्व	५०५	पर्प	२६६
नेनिज्	६३२	पटोला	४६३	पद्वन्	९०४	पर्पट	१४४
नेप	३०२	पट्टन	२६२	पनस	५६६	पर्परीक	४७
नेम	३३८	पट्टस	५८०	पन्न	२५८	पर्परीका	४७
नेमि	६८७	पट्टिस	५७६	पपी	७१४	पर्याण	१६३
नेरु	८०६	पट्टुम	३५२	पम्पा	३००	पर्व	५०५
नेष्टृ	८६४	पठि	६०७	पय	३६७	पर्वत	२०७
नोदुनुद	१६	पणव	५१५	पयस्	६५३	पर्वन्	६०४
नोधस्	६७३						

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक
पर्वि	७०४
पर्शु	८२५
पर्षद्	८६७
पलक्षु	८२७
पलल	४६५
पलह	५८६
पलाण्डु	७६७
पलाल	४७५
पलाश	५३३
पलि	६१६
पलिङ्ग	१०२
पलित	२१०
पलिव	५२२
पलिश	५३५
पल्य	३५७
पल्लव	५१५
पल्लि	६०७
पल्ली	४६४
पल्वल	४६६
पवन	२६६
पवाका	३४
पवि	६०६
पवित्र	४५६
पवीर	४१८
पशु	७३१
पशूर	४२७
पष्ठ	१६६
पस्त्य	३६०
पाक	२१
पाकल	४७४
पाकुक	५७
पाजस्	६७७
पाटल	४६५
पाटलि	७०२
पाठीन	२८७
पाणि	६१८

शब्द	सूत्रांक
पाण्ट	१४०
पाण्डर	४०३
पाण्डु	७६६
पाताल	४७६
पाति	६५६
पातु	७७५
पात्र	४४६
पात्री	४४६
पात्व	५२५
पाथस्	६७७
पाथिस्	६६३
पादू	८३५
पाप	२६६
पाप्मन्	११६
पामन्	६११
पामर	४०३
पामा	३३८
पायु	१
पारज्	८७३
पारिन्द	२४८
पार्श्व	५२३
पार्ष्णि	६३६
पालि	६१६
पालिन्द	२४८
पालीक	४६
पालूर	४२८
पाश	५२७
पाषाण	१९२
पांसु	७१८
पिक	४१
पिङ्ग	१०२
पिचण्ड	१७६
पिचु	७३५
पिच्छ	१२५
पिच्छल	१२५
पिच्छिल	१२५
पिञ्छ	१२६

शब्द	सूत्रांक
पिञ्छोल	४६५
पिञ्जर	३६७
पिञ्जूल	४८८
पिञ्जूष	५६१
पिटक	३०
पिठर	३६६
पिठिर	४१७
पिण्डाल	४७५
पिण्डि	६०८
पिण्डिल	४८१
पिण्डीतक	७६
पिण्याक	३६
पितु	७७५
पितृ	८५८
पित्त	२०४
पिनाक	३६
पिपीलिका	४५
पिप्परी	११
पिप्पली	११
पियारु	८१५
पियाल	४७६
पिलाल	४७६
पिलिपिञ्छ	१२६
पिशङ्ग	१०१
पिशाच	११६
पिशित	२१२
पिशुन	२६०
पिष्टातक	८३
पीक	२४
पीठ	१६३
पीत	२०१
पीतद्रु	७४५
पीतु	७७५
पीथ	२२७
पीनस	५८२
पीयु	७४१
पीयूक्षा	५६७
पीयूष	५६०

शब्द	सूत्रांक
पीलु	८२१
पीवन्	६०८
पीवर	४४४
पुङ्ख	८६
पुच्छ	१२५
पुञ्ज	१२८
पुटिन	२८३
पुटीर	४१६
पुटुपुट	१७
पुण्ड	१७०
पुण्डरीक	५०
पुण्ड्र	३६६
पुण्य	३६१
पुण्यकृत्	२०
पुत	२०४
पुत्तिका	७६
पुत्र	४५५
पुद्गल	४७४
पुनर्	६४७
पुपुरु	७३३
पुर्	६४३
पुरण	१८८
पुरस्	६७१
पुरा	५६६
पुरि	६०६
पुरीतत्	८८२
पुरीष	५५४
पुरु	७२६
पुरुट	१५५
पुरुदंशस्	६७६
पुरूपुर	१७
पुरुम्ब	३२६
पुरुष	५५८
पुरूरवस्	६७६
पुरोधस्	६७४
पुर्पुर	१०

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक
पुलक	२६
पुलस्ति	६६०
पुलस्त्य	३६३
पुलह	५६०
पुलाक	३५
पुलिक	४१
पुलिन	२८३
पुलिन्द	२४६
पुलूल	४६०
पुवन्	६०१
पुवि	६०६
पुष्क	२२
पुष्कर	४३६
पुष्कल	४६६
पुस्त	२०१
पुंस्	१००२
पूग	६३
पूच	११२
पूची	११२
पूतना	२६३
पूतर	४३८
पूति	६५१
पूतीक	५०
पूप	३०१
पूरिम	३४६
पूरु	८०७, ७२६
पूर्णि	६३४
पूर्त	२०१
पूर्व	५११
पूष	५४२
पूषन्	६००
पृतना	२६३
पृथ	८६३
पृथज्	८७४
पृथिवी	५२१
पृथु	७३०
पृथुक	५७
पृथुल	४८७
पृदाकु	७५६
पृश्नि	६७९
पृषत्	८८४
पृषत	२०८
पृषती	८८४
पृषित	२१२
पृष्ठ	१६३
पृष्णि	६३५
पेचक	३३
पेटच	३०
पेत्व	५२६
पेरु	८०६
पेलव	५१५
पेलि	६०८
पेलिम	३५४
पेशल	४६५
पेशि	६०८
पोषिम	३४९
पोगण्ड	१७४
पोत	२००
पोतु	७७३
पोतृ	८६३
पोत्र	४६१
पोला	४६४
पोषयित्नु	७६७
प्यात्व	५२५
प्यान	२५८
प्रत्यस्	६६६
प्रगाथ	२३१
प्रचुर	४२६
प्रचेतस्	६५२
प्रति	६४७
प्रतिदिवन्	६०१
प्रतिप्रस्थातृ	८६३
प्रतिबोधिन्	६२३
प्रतियायिन्	६२३
प्रतिहर्तृ	८६३
प्रतीक	५०
प्रत्ति	६४७
प्रत्यूष	५६१
प्रथम	३४७
प्रपणिक	४२
प्रपतन	२६६
प्रपुनाट	१४८
प्रबोधिन्	६२३
प्रभृति	६५१
प्रयायिन्	६२३
प्रतीत्वन्	६१०
प्रतीत्वरी	६१०
प्रशास्तृ	८५७
प्रसत्वन्	६१०
प्रसत्वरी	६१०
प्रसकन्दन	८६६
प्रस्तोतृ	८६३
प्रस्थायिन्	६२४
प्रहि	६१६
प्रह	५१४
प्रा	६०५
प्राकषिक	४२
प्राणथ	२३२
प्राणन्त	२२०
प्राणन्ती	२२०
प्रातर्	६४५
प्राह्स्	६६७
प्राचर	४०३
प्रापणिक	४२
प्रापनिक	४२
प्रामर	४०३
प्राशिर	४१५
प्रांशु	७१६
प्रियङ्गु	७६१
प्रियाणक	६६
प्रियाल	४७६
प्रुक्षि	७०७
प्रुष्वा	५११
प्रेत्वरी	६१०
प्रेत्वन्	६१०
प्रेत्वरी	६१०
प्रोथ	२२५
प्लक्ष	५६६
प्लव	२
प्लीहन्	६०२
प्लुक्षि	७०७
प्लोती	६४६
प्व	५१४
फनस	५७३
फर्फरीक	५०
फलक	२७
फलहक	३३
फलाफल	१६
फलुष	५६०
फल्गु	७५८
फल्गुन	२६१
फल्गुनी	२६१
फालि	६१८
फेन	२६८
फेलू	८३०
बदरी	३६७
बधिर	४१६
बन्धक	२७
बन्धित्र	४५६
बन्धु	७१६
बन्धुर	४२३
बन्धूक	५८
बन्ध्या	३५७

Aho ! Shrutgyanam

शष्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शष्द	सूत्रांक
बब्बूल	४६१	बुध्न	२६१	भरु	७१६	भार्त्रं	४४७
बभ्रु	७३३	बुस्त	२०१	भरुज	१३४	भालु	७२७
बर्बर	३९७	बृहत्	८८४	भरुट	१५३	भालूक	५८
बर्बरी	३९७	बृहती	८८४	भरुड	१५३	भाल्लूक	६०
बर्हिण	१९४	बृहद्यशस्	९५८	भर्ग	९२	भावित्र	४६०
बर्हिस्	९९०	बोक्काण	१९३	भर्गस	९६६	भाविन्	९२२
बलजा	१३३	बोधि	६०८	भर्जू	८२९	भावुक	५७
बलाका	३४	बोलुबुल	१९	भर्तृ	८५७	भासन्त	२२१
बलाल	४७५	बौलुबुल	१९	भर्भर	९	भासन्ती	२२१
बलास	५७४	ब्रह्मन्	९१३	भर्भरी	९	भासयन्त	२२१
बलाहक	८१	भकाल	४७७	भर्मन्	९११	भिक्षुणी	१९८
बलि	६०७	भगल	४७४	भल्लातक	८२	भिङ्ग	१०२
बलिश	५३६	भगाल	४७७	भल्लुक	५१	भित्तिका	७६
बलूक	५८	भटित्र	४५९	भल्लूक	६०	भिदक	३०
बलूल	४८८	भटिल	४८१	भव	२	भिदथ	२३४
बल्व	३१७	भडिल	४८२	भवत	८८६	भिदि	६०९
बल्वज	१३३	भडीर	४२२	भवन	२७४	भिदिर	४१६
बहिस्	९९०	भण्ड	१६८	भवन्त	२२१	भिदु	७२९
बहु	७२६	भण्डि	६०८	भवन्ति	६६५	भिदेलिम	३५४
बहुल	४८६	भण्डिल	४८२	भबन्ती	२२१	भिद्र	३८८
बहुला	४८६	भण्डीर	४२२	भवाणक	६८	भिलिङ्ग	१०३
बालिश	५३६	भदन्त	२२२	भवि	६०६	भिल्म	३४०
बाष्प	२९९	भद्र	३९१	भविन्	९२२	भिल्ल	४६४
बाहु	७२६	भद्राक	३७	भविल	४८१	भिषज्	८७४
बिभीतक	७८	भन्दाक	३४	भवेणु	७७२	भिषज	१३१
बिम्ब	३२५	भन्द्र	३९१	भषद्	८९४	भिष्णाज	१३१
बिम्बी	३२५	भयानक	७१	भसद्	८९४	भीम	३४४
बिलाहक	८१	भरक	२७	भस्त्रा	४५१	भीष्म	३४४
बिल्व	५११	भरट	१४२	भस्मन्	९११	भुग्र	३९६
बिज	१२७	भरण	१८७, २६९	भाटि	६१८	भुजप	३०५
बुक्कण	१८७	भरणि	६३८	भाण्ड	१६८	भुजि	६०९
बुक्कस	५७३	भरण्ड	१७३	भातु	७७३	भुजिष्य	३८४
बुद्बुद	२४४	भरत	२०७	भानु	७८६	भुज्यु	८०२
बुध	५	भरथ	२३२	भाप	२९६	भुरण	१९०
बुधन	२७३	भरि	६०६	भाम	३३८	भुरण्यु	७४६
बुधान	२७७	भरीमन्	९१८	भीमा	३३८	भुरिक	४५

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक
भुरिज्	८७५	मकन्द	२४५	मण्डन	२६६	मनु	७१६
भुर्भुर	१०	मकर	४०३	मण्डयन्त	२२१	मनुस्	९९७
भुलिक	४५	मकुट	१५४	मण्डयित्नु	७९७	मनूक	५८
भुलिङ्ग	१०३	मकुर	४२४	मण्डल	४६५	मन्तु	७७३
भुवन	२७४	मक्कोल	४६५	मण्डाल	४७५	मन्तृ	८५७
भुवनु	७६३	मक्षिका	४५	मण्डि	६०७	मन्त्र	४५१
भुवन्यु	८०४	मख	८६	मण्डु	७६५	मन्त्रि	६०७
भुवस्	९७१	मगध	२५३	मण्डूक	५८	मन्थर	३९७
भुविस्	९९६	मघवन्	९०२	मण्डूर	४२७	मन्थान	२७६
भूक	२२	मघा	११०	मतङ्ग	१००	मन्द	२३७
भूत	२०१	मङ्कुण	१८७	मत्सर	४३९	मन्दन	२६६
भूघर	२०	मङ्क्षि	६९२	मत्स्य	३८३	मन्दर	३९७
भूमि	६९०	मङ्क्षु	८२६	मथिन्	९२६	मन्दसान	२७९
भूरि	६९३	मङ्ख	८४	मथुरा	४२३	मन्दाका	३४
भूर्ज	१३४	मङ्खा	८४	मदच	११४	मन्दार	४०५
भूर्णि	६३७	मङ्गल	४६५	मदन	२६६	मन्दिर	४१२
भृगु	७३१	मङ्गाल	४७५	मदयन्त	२२१	मन्दीर	४२२
भृङ्ग	९४	मङ्गुल	४८५	मदयन्ती	२२१	मन्दुर	४२३
भृङ्गार	४११	मङ्गूष	५६०	मदयित्नु	७९७	मन्द्र	३८७
भृज्जन	२७४	मच्छ	१२४	मदार	४०५	मन्मथ	१२
भृमल	४७४	मच्छा	१२४	मदिरा	४१२	मन्मन	८
भृमि	६११	मज्जन	६००	मद्गु	७१६	मनया	३५७
भृश	५२८	मज्जन	२६६	मद्गुर	४२६	मन्यु	८०१
भेक	२१	मञ्च	१२२	मद्गुश	५३८	ममासाल	४८०
भेदक	३०	मञ्जरी	३९७	मद्र	३८७	मय	३६७
भेर	३८७	मञ्जीर	४१८	मद्वन्	९०४	मयस्	९५२
भेल	३८७	मञ्जुल	४८७	मद्वरी	९०४	मयु	७२६
भेषज	१३१	मञ्जूला	४८८	मधु	७२१	मयुक	५१
भैरव	५१९	मञ्जूषा	५६०	मधुक	५७	मयूख	९१
भ्रज्जन	२७४	मटह	५८९	मधुर	४२६	मयूता	२१५
भ्रमर	३९७	मठर	३९७	मधूक	६१	मयूर	४२७
भ्रमि	६११	मड्डुक	५५	मध्य	३६४	मरक	२७
भ्रातृ	८५९	मणच	११४	मनस्	९५२	मरठ	१६७
भ्राष्ट्र	४४७	मणि	६०७	मनाका	३४	मरणि	६३८
भ्रू	८४३	मणिन्द	२४६	मनि	६१२	मरत	२०७
भ्रूण	१८६	मण्ड	१६८	मनीक	४६		

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक
मरमर	१४	मसुरि	६९९	मार्ग	९६	मुखर	४०३
मराल	४७५	मसूर	४२७	मार्जार	४०५	मुचिर	४१६
मरिच	११७	मस्त	२००	मार्जालीय	३७७	मुचुकुन्द	२५०
मरीचि	६२७	मस्तक	७७	मार्जूल	४९१	मुणमुण	१७
मरु	७१६	मस्तु	७७३	मालव	५१७	मुण्ड	१७०
मरुत्	८८९	मस्मस	१५	माला	४६२	मुतव	५१९
मरूक	५८	महत्	८८४	मालु	७२७	मुदि	६०९
मर्क	२१	महतु	७७९	मालुधानी	७२७	मुदिर	४१६
मर्कट	१४२	महन्	९०२	मालूर	४२८	मुदेर	४३१
मर्जू	८३३	महयाय्य	३७३	माष	५४०	मुद्ग	९३
मर्त	२०२	महस्	९५२	मास	५६४	मुदर	४०४
मर्त्य	३६०	महातपस्	९५२	मासर	४३९	मुद्गरी	४०४
मर्दल	४६५	महारजन	२७३	माहिन	२८५	मुद्गल	४७४
मर्मन्	९११	महिन	२८५	माहूर	४२८	मुद्रा	३८८
मर्मर	९	महिम	३४९	मांस	५६४	मुधा	६०२
मर्मरा	९	महिला	४८१	मितद्रु	७४५	मुनि	६१२
मर्मरीक	४७	महिष	५४७	मित्र	४५४	मुमुचान	२७८
मल	४७२	महिषी	५४७	मित्रयु	७४१	मुरज	१३२
मलक्षु	८२७	महेला	४९२	मिथस्	९७१	मुरल	४७४
मलमल	१४	मा	६०५	मिथिला	४८३	मुरव	५१८
मलय	३६५	माकन्दी	२४५	मिथुन	२९०	मुरुट	१५५
मलव	५१७	मातरिश्वन्	९०२	मिथुस्	१०००	मुरुमुर	१७
मलार	४०५	माणव	५१६	मिथ्या	६०१	मुरुम्ब	३२६
मलीक	४६	मात	२००	मिहिर	४१६	मुर्मुर	१०
मलूक	५८	मातङ्ग	१००	मीन	२६१	मुषुण्ढि	६३३
मल्लक	२७	मातुलिङ्ग	१०६	मीर	३९२	मुष्क	२२
मल्लिका	२७	मातुलुङ्ग	१०६	मीरा	३९२	मुष्टि	६५१
मल्लूक	५८	मातृ	८५९	मीवर	४४३	मुष्म	३४०
मवाक	३७	मात्रा	४५१	मीवा	५१४	मुसल	४६८
मशक	२७	मात्व	५२५	मुकय	३७१	मुस्ता	२०१
मषमष	१५	माया	३५७	मुकुट	१५४	मुहिर	४१६
मष्मष	१५	मायु	७२६	मुकुन्द	२५०	मुहुरि	७००
मसमस	१५	मारि	६०६	मुकुय	३७१	मुहुस्	१०००
मलि	६०७	मारिष	५४९	मुकुर	४२४	मुहूर्त	२०४
मसुर	४२३	मारीच	११८	मुकल	४८७	मूक	२२
मसुरा	४२३	मार्क	२१	मुख	८९	मूत	२०१

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक
मूत्र	४४९	म्लातु	७७३	याचेलिम	३५४	रङ्ग	६२
मूर्ख	८६	म्लिच्छ	३	याजन्य	३७९	रचना	२६९
मूर्धन्	६०२	म्लिछ्	८८०	यातु	७७३	रजत	२०८
मूल	४६३	म्लेच्छ	३	यातृ	८५६	रजन	२७३
मूलेर	४३१	म्लेछ्	८८०	यात्रा	४५१	रजनि	६८१
मूषा	५४२	यकृत्	८९२	यादस्	९६८	रजस्	९७१
मूषिक	४३	यक्ष	५६४	याम	३३८	रज्जु	७१७
मृकण्डुक	७६७	यक्ष्म	३३८	यामन्	६११	रञ्जसान	२७९
मृगयु	७४१	यक्ष्मन्	६१६	यावस	५७१	रण्ड	१६८
मृडीक	४८	यजत	२०७	युगल	४७४	रण्डा	१६८
मृणाल	४७६	यजत्र	४५६	युग्म	३४५	रतू	८४०
मृत	२०२	यजुना	२८८	युजान	२७७	रत्न	२६४
मृत्यु	८०५	यजुस्	६९७	युधान	२७७	रथ	२२७
मृदङ्ग	१०१	यजेणु	७७२	युध्म	३४०	रन्धस	५६९
मृदर	३१६	यज्यु	८०१	युयुधान	२७८	रन्ध्र	३९६
मृदीका	४९	यति	६०७	युवति	६५८	रपठ	१६७
मृदु	७२९	यद्	८९५	युवन	६०१	रभस	५७२
मृद्वीका	४९	यदु	७८३	युवान	२७७	रमठ	१६७
मृशान	२७७	यन्त्र	४५१	युषाण	१६१	रमण्य	३७९
मृषा	५६६	यमड	१७१	युष्मद्	८९९	रमति	६५३
मृषाण	१६१	यमल	४६५	यूका	२४	रमथ	२३२
मेकल	४९७	यमुना	२८८	यूथ	२३१	रमभ	३२९
मेखला	४९७	यमुन्द	२४९	यूप	२९७	रम्पा	२९६
मेचक	३३	ययाति	६६४	यूष	५४१	रम्भा	३२७
मेथि	६०८	ययी	७१४	यूषा	५४१	रम्र	३८७
मेदस्	९५२	ययु	७३३	योगस्	९६६	रल्ल	४६४
मेनका	३३	यवन	२६९	योनि	६७७	रवण	१८७
मेनि	६१२	यवस	५७१	योमि	६८७	रवथ	२३५
मेरु	८०६	यवागू	८५०	योषा	५४१	रवि	६०६
मेष	५४०	यवाष	५४५	योषित्	८८७	रशना	१७०
मेसर	४३९	यवास	५७४	योस्	१००५	रश्मि	६८८
मोक्ष	५६४	यशस्	९५८	रक्षस्	९५२	रसना	२६९
मोचा	१२२	यष्टि	६४६	रगह	५८९	रसायु	१
मोर	४३४	यस्क	२६	रघु	७४०	रस्न	२६०
मौकुलि	७०३	यह्वा	५१४	रङ्क	६३	रस्ना	२६०
मौलि	७०१			रङ्कु	७४९	रहस्	९५२

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक
रंहस्	९५२
रा	६०५
राक	२१
राका	२१
राजन्	९००
राजन्य	३७९
राजानक	७१
राजि	६१८
रात्रि	६९६
रात्रिगेष्ण	१९९
राशि	२७०, ६२२
राष्ट्र	४४६
रासभ	३२९
रास्ना	२६०
राहु	१
रिक्थ	२२७
रिक्षा	५६७
रिज्र	३९६
रिपु	७९८
रिप्र	३८८
रिफ	३१६
इफ देखो	
रिष्टि	६५१
रिष्व	५११
रीत	२०१
रुक्म	३४६
रुक्मल	५०२
रुचक	२९
रुचि	६०९
रुचिर	४१६
रुचिष्य	३८४
रुदथ	२३४
रुद्र	३८८
रुधिर	४१६
रुमा	३४०
रुम्र	३९३
रुरु	८०७
रुवथ	२३५
रुषू	८४४
रुहसान	२८०
रुह्वन्	९०६
रूप	२९७
रेक्णस्	९८०
रेणु	७६८
रेतस्	९७८
रेतोधस्	९७४
रेपस्	९८१
रेफ	३१४
रेवन्त	२२१
रेहत्	८८२
रैं	८६६
रोचन	२६९
रोचना	२६९
रोचिस्	९८९
रोतृ	८५७
रोदस्	९५२
रोदुस्	९९७
रोधस्	९५२
रोध्र	३८७
रोमन्	९१६
रोहण	१८७
रोहन्त	२२०
रोहन्ती	२२०
रोहि	६०८
रोहित्	८८७
रोहित	२१०
रोहीतक	७९
रौहिष	५४८
रौहिषी	५४८
लकुच	११९
लकुल	४८७
लक्षण	१८७
लक्ष्मन्	९११
लक्ष्मी	७१५
लगह	५८९
लगुड	१७७
लघक	३३
लघट्	८७७
लघट	१४४
लघु	७४०
लडा	६३
लङ्कुक	२७
लज्जालु	८२२
लज्जू	८२९
लटह	५८९
लट्वा	५०५
लता	२०८
लतु	७८०
लत्तिका	७६
लभस	३७२
लमक	३३
लम्बन	२७३
लम्बूष	५६०
लय	३६७
ललह	५८९
ललाट	१४५
ललामन्	९१६
लवङ्ग	९८
लवण	१९०
लवाणक	७०
लवानक	७१
लवि	६०६
लवित्र	४५९
लशुन	२८९
लश्व	५०९
लसुष	५५९
लहोड	१७२
लह्म	३६४
लाक्षा	५९७
लाङ्कल	४६६
लाङ्गूल	४६१
लाणक	६८
लात	२०९
लाव	५०५
लावास	४७९
लिक्षा	५६७
लिखक	२९
लिखि	६०९
लिगु	७४०
लिङ्ग	१०२
लिन्दुम	३५२
लिपि	६०९
लिप्त	२०४
लिष्व	५०९
लुलाय	३७२
लुवन्	९०१
लुसभ	३३१
लूता	२०२
लूनि	६७९
लेहड	१७१
लोकयु	७४१
लोत	२०२
लोत्र	४६१
लोप्त्र	४५१
लोमन्	९१६
लोल	४९४
लोष्ट्र	१३८
लोष्टु	७१६
लोह	५८६
लोहित	२१०
वकुल	४८९
वकोट	१६१

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक
वक्त्र	४५१	वदन्ति	६६५	वयुन	२८८	वर्त्मन्	९११
वक्नु	७८०	वदन्ती	२२१	वयोधस्	९७४	वर्धकि	६२४
वक्र	३८८	वदवद	१४	वर	२	वर्धमान	२८१
वक्षस्	९८३	वदान्य	३८१	वरक	२७	वर्ध्र	३८७
वग्रु	७९०	वधक	३३	वरट	१४२	वर्पस्	९८१
वङ्क्रि	६९२	वधत्र	४५६	वरण	१८७	वर्मन्	९११
वङ्क्षण	१९०	वधन	३३	वरण्ड	१७३	वर्मि	६८७
वचक्नु	७९६	वधि	६०७	वरत्रा	४५६	वर्वर	९, ४४१
वचत्र	४५६	वधितृ	३३	वरवर	१४	वर्वरी	९, ४४१
वचस्	९५२	वधू	८३२	वराट	१४५	ववरीक	४७
वचुष्य	३८५	वधूटी	१५७	वराल	४७५	वर्वरीका	४७
वज्र	३८७	वधूल	४८८	वराह	५९१	वर्वि	७०४
वज्रधर	२०	वध्य	३३	वरि	६०६	वर्ष	५४०
वञ्चथ	२३२	वनि	६०७	वरिम	३४९	वर्षा	५४०
वञ्चूल	४८८	वनिष्ठु	७३२	वरुट	१५३	वर्ष्मन्	९११
वञ्जुल	४८७	वन्दथ	२३२	वरुड	१५३	वर्स	५६४
वट	१३९	वन्दाक	३४	वरुण	१९६	वलक्ष	५६६
वटम्ब	३२१	वन्दि	६०७	वरुत्र	४६१	वलत	२०७
वटर	३९७	वन्द्र	३८७	वरूक	६१	वलप	३०४
वटवक	३३	वपत्र	४५६	वरूथ	२३६	वलभी	३२९
वटवा	५१५	वपुष	५५७	वरूष	५६०	वलय	३६५
वटि	६०७	वपुस्	९९७	वरेण्य	३८२	वलि	६०७
वटु	७१६	वप्प	२९६	वर्कर	४३५	वलीक	४६
वठर	३९७	वप्र	३८७	वर्ग	९२	वल्क	२१
वडभी	३२९	वप्रि	६९२	वर्चस्	९५२	वल्कल	४९६
वडवा	५१५	वमक	२७	वर्ण	१८२	वल्गु	७५८
वडिश	५३५	वमड	१७१	वर्णसि	७०९	वल्गुला	४८७
वणिज्	८७५	वमत्र	४५६	वर्णु	७६८	वल्म	३३८
वण्ठ	१६२	वमर	३९७	वर्तका	२७	वल्मि	६८७
वण्ड	१६८	वमुक	५१	वर्तनि	६८०	वल्मीक	५०
वतण्ड	१७५	वम्र	३८७	वर्ताका	३४	वल्लकी	२७
वत्स	५६४	वम्रि	३८७	वर्ति	६१०	वल्लभ	३२९
वत्सर	४३९	वय	३६७	वर्तिका	२७	वल्लरि	६९८
वद	२	वयस्	९५२	वर्तुल	४८५	वल्लव	५१५
वदनु	७९३	वयिम	३५०	वर्त्तिका	७५	वल्लि	६०७
वदन्त	२२१						

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक
वल्लूर	४२७	वात	२००	वासस्	६७०	विद्रुम	३५२
वश	५२८	वातप	३०७	वासा	५६४	विधर्मन्	६११
वशि	६०७	वातप्रमी	७१३	वासि	६१६	विघस्	६७२
वश्रि	६६२	वाति	६५७	वासिका	४०	विधु	७२६
वसति	६५३	वादि	६१८	वासुरा	४२३	विधुर	४२५
वसन्त	२२१	वादित्र	४६०	वास्तु	७७४	विन्दु	७१६
वसाति	६६२	वानर	४०३	वाहस	५७१	विन्ध्य	३६४
वसि	६१६	वानीर	४२१	वापि	६१८	विपाश्	६५०
वसु	७१६	वापि	६१८	वाहीक	५०	विपिन	२८४
वसुरोचिस्	६८६	वापीर	४२१	वि	६१६	विप्र	३६६
वसुशर्मन्	६११	वाम	३३८	विकसुक	५२	वियत्	८८२
वस्त	२००	वामन्	६११	विकस्र	३६३	विरल	४७४
वस्ति	६४६	वामि	६१८	विकुस्र	३६३	विराट	१४८
वस्तु	७७४	वायति	६५७	विक्र	२२	विरिञ्चि	६१७
वस्त्य	३६०	वायस	५७०	विचकिल	४८४	विरोचन	२६६
वस्त्र	३६०	वायु	१	विचक्षण	१८७	विलङ्ग	१०१
वस्न	२५८	वार्	६४४	विचख्युस्	१००१	विलटा	१४३
वहति	६५३	वारङ्ग	६६	विटप	३०५	विलम्ब	३२३
वहतु	७७६	वाराणसि	७०८	विडङ्ग	१०१	विलस्ति	६६०
वहन	२६६	वारि	६०६	विडाल	४७६	विलात	२०६
वहन्त	२२१	वारिणि	६४४	विडूर	४२६	विलाल	४७६
वहन्ती	२२१	वार्ताक	३७	वितण्डा	१६८	विलाह	५६२
वहल	४६५	वार्ताकी	३७	वितस्ता	२००	विलिम्ब	३२४
वहस	५७१	वालुक	५७	वितस्त	६४६	विल्म	३४०
वहि	६०७	वालुकी	५७	विथुर	४२६	विवत्सर	४३६
वहित्र	४५६	वाल्हीक	५०	विद	६	विश्	६५०
वहिर	४१२	वावदूक	६१	विदथ	२३४	विशम्प	२६६
वहेणु	७७२	वाशर	३६७	विदन	२७५	विशस्तृ	८५७
वह्नि	६७७	वाशि	६०७	विदल	४७४	विशंस्थुल	४८७
वंश	५२७	वाशुर	४२३	विदाका	३५	विशा	६००
वा	६०५	वाशुरा	४२३	विदि	६१०	विशाख	८५
वागुरा	४२६	वाश्र	३८७	विदु	७६२	विशाखा	८५
वाजि	६१८	वाश्रा	३८७	विदुल	४८६	विशाल	४७६
वाणि	६१८, ६३४	वासर	३९७	विदुष	५५८	विशिख	८५
बाणी	६१८	वासव	५१६	विद्रधि	६७६	विशिखा	८५
वाणीचि	६२६			विद्रु	७४५		

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक
विशिप	३०६	वृजिन	२८३	वेविज्	६३२	शकोट	१६०
विशेलिम	३५४	वृत्ति	६१०	वेविष्	६३२	शकोल	४६३
विश्रि	६६३	वृत्र	३८८	वेशन्त	२१६	शक्ति	६६६
विश्व	५११	वृत्रवध	३३	वेश्मन्	६११	शक्य	३५७
विश्वप्सन्	६०२	वृथा	६०१	वेष्टिम	३४६	शक्र	३८७
विश्वभानु	७८६	वृधसान	२८१	वेष्प	२६६	शक्रि	६६५
विश्वभोजस्	६५६	वृधूक	६१	वेसर	४३६	शक्ल	४६२
विश्वयु	७४१	वृन्ताक	३७	वेहत्	८८२	शक्वन्	६०४
विश्ववेदस्	६५६	वृन्ताकी	३७	वैतरणी	६३८	शक्वरी	६०४
विष	५	वृन्द	२४०	वैतालीय	३७८	शङ्कु	७४६
विषाण	१६१	वृश	५२८	वैष्ट्र	४४७	शङ्कुला	४८५
विष्टप	३०७	वृशय	३६६	व्यलीक	४६	शङ्ख	८४
विष्टि	६५१	वृश्चिक	४१	व्यलीका	४६	शची	६०७
विष्टा	१६३	वृषण	१८८	व्याड	१७१	शठ	१६५
विष्णु	७६६	वृषन्	६०१	व्याम	३३८	शण्ठ	१६५
विस	५७६	वृषभ	३३१	व्यामन्	६१४	शण्ड	१६८
विसा	६००	वृषय	३६६	व्येमन्	६१४	शण्डिल	४८१
विस्त	२०१	वृषल	४६८	व्योमन्	६१४	शण्ढ	१७६
विस्र	३८८	वृषा	५६६	व्रत	२०८	शतद्रु	७४५
विहङ	१७२	वृषाण	१६१	व्रतति	६५५	शतेर	४३२
विहुण	१८६	वृष्णि	६३५	व्रध्न	२६८	शत्रि	६६६
विहा	६००	वेग	६२	व्राजि	६१८	शत्रु	८०६
विहायस्	६७६	वेणि	६३४	व्रात	२०६	शद्रि	६६२
विहेलिम	३५४	वेणु	७६८	व्रीलस	५७२	शद्रु	८०६
वीक	२२	वेण्णा	१८२	व्रीहि	७१०	शनि	६७८
वीका	२२	वेतन	२६२	शकट	१४२	शनैस्	१००४
वीचि	६२८	वेतस	५८०	शकटि	६३०	शपथ	२३२
वीणा	१८३	वेताल	४८०	शकन्धु	८४८	शप्व	५०५
वीतंस	५६५	वेत्र	४५१	शकल	४६५	शफ	३१६
वीथि	६६६	वेदि	६१०	शकाल	४७५	शफर	४०१
वीध्र	३८८	वेधस्	६७२	शकुल	२८८	शबर	३६७
वृक	२२	वेन	२५८	शकुनि	६८४	शब्द	२३७
वृक्क	२६	वेनि	६७७	शकुन्त	२२३	शब्दाल	४८०
वृक्ष	५६७	वेपुस्	६६७	शकुन्ति	६६६	शम्	६३७
वृङ्ग	६४	वेमन्	६१६	शकुल	४८५	शमथ	२३२
वृजन	२७३			शकृत्	८६१	शमल	४७०

शब्द	सूत्रांक
शमाह	५६१
शमेणु	७७२
शम्पा	२६६
शम्ब	३१८
शम्बर	४४४
शम्बल	४६६
शम्बशाम्ब	३१८
शम्बूक	६१
शय	२
शयण्ड	१७६
शयत	२०७
शयथ	२३२
शयाण्ड	१७६
शयानक	७१
शयु	७१६
शयुन	२८८
शेर	२
शरङ्ग	६८
शरठ	१६७
शरण	१८७
शरण्ड	१७३
शरण्य	३७६
शरत्	८८३
शरद्	८९४
शरभ	३२६
शराट	१४५
शराव	५२०
शरि	६१६
शरीर	४१८
शरु	७१६
शर्करा	४३५
शर्कुर	४२६
शर्म	३३८
शर्मन्	६११
शर्मि	६८७
शर्व	५०५

शब्द	सूत्रांक
शर्वर	४४१
शर्वरी	४४१
शर्शरीक	४७
शर्शरीका	४७
शलङ्कु	७५५
शलत्	८८३
शलभ	३२९
शलल	४६५
शलशल	१४
शलाटु	७६३
शलालु	८२२
शलाहक	८१
शल्क	२१
शल्य	३५७
शवल	४७०
शवस्	९५५
शष्कुली	४८७
शष्प	२६६
शस्त्र	४५४
शंकर	४०३
शंस्तृ	८५७
शाङ्कर	६०४
शाखा	८५
शाखोट	१६०
शाङ्कर	४०३
शाण	१८२
शाद	२३७
शाम्बूक	६१
शारि	६१६
शार्ङ्ग	६६
शार्दूल	४६१
शाला	४६२
शालि	६१८
शालु	७२७
शालू	८३५

शब्द	सूत्रांक
शालूक	५६
शालूर	४२८
शाल्मल	५०२
शाल्मलि	७०३
शाल्वल	५००
शाव	५०५
शास्तृ	८५७
शास्त्र	४४६
शिक्य	३६४
शिखर	४००
शिखा	८५
शिग्रु	८११
शिङ्ग	१०२
शिङ्घाणक	७०
शिङ्घानक	७१
शिति	६५१
शिथिर	४१४
शिथिल	४१४
शिनि	४७८
शिफा	३१६
शिम्ब	३२५
शिम्बी	३२५
शिरस्	९७१
शिरि	६०६
शिरीष	५५४
शिशिर	१०
शिलम्ब	३२३
शिलिन्ध्र	३६६
शिलिशिल } सिलिसिल }	१७
शिलीक	४८
शिल्प	३००
शिव	५०६
शिवा	५०६
शिवि	७०६
शिविर	४१३

शब्द	सूत्रांक
शिशिर	४१३
शिशु	७४७
शिशुमार	४११
शिश्न	२६७
शिश्विदान	२७८
शिंशपा	३०६
शीकर	३६७
शीघ्र	३९६
शीत	२०१
शीतल	५०१
शीतारु	८१६
शीतालु	८१६
शीधु	७८४
शीन	२६१
शीभर	३६७
शीम्	६४१
शीर	३८८
शीर्णि	६८५
शीर्वि	७०५
शीर्ष	५६७
शील	४६३
शीवन्	६०६
शु	७४३
शुक	२२
शुक्त	२०४
शुक्ति	६५१
शुक्र	३८८
शुक्ल	४६३, ३८८
शुक्षि	७०७
शुङ्ग	१०७
शुङ्गा	१०७
शुचि	६०६
शुण्ठि	६०८
शुण्डा	१७०
शुनासीर	७४३

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक
शुन्ध्यु	८०१
शुभाका	३५
शुभ्र	३८८
शुभ्रि	६६३
शुल्क	२६
शुल्व	३१९
शुषि	६०६
शुषिर	४१६
शुष्क	२२
शुष्ण	१८३
शुष्म	३४०
शुष्मन्	६१६
शूक	२४
शूकल	४७४
शूका	२४
शूथ	२२७
शूद्र	३६४
शूर	३६२
शूर्प	२६८
शृङ्खल	४६८
शृङ्खला	४६८
शृङ्ग	६६
शृङ्गबेर	४३२
शृङ्गाट	१४८
शृङ्गार	४११
शृदर	४०३
शृधू	८४४
शेकु	७४६
शेखर	४००
शेल्य	३६०
शेप	२६६
शेपस्	६८२
शेपाल	५०१
शेफ	३१४
शेफस्	६८२
शेलिशिल	१९
शेलु	८२०
शेव	५०६
शेवल	५०१
शेवा	५०६
शेवाल	५०१
शेष	५४३
शैलिशिल	१६
शैलूष	५६१
शैवल	५०१
शैवाल	५०१
शोचिस्	६८६
शोणित	२१०
शोफ	३१६
शोभुशुभ	१९
शौण्डीर	४१८
शौभुशुभ	१६
श्मश्रु	८१०
श्मेत्र	४५२
श्याम	३४०
श्यामा	३४०
श्यामाक	३७
श्याल	४६२
श्याव	५०५
श्येत	२१०
श्येन	२८२
श्रन्थि	६०७
श्रय	३६७
श्रवट	१४२
श्रवण	१८७
श्रवाय्य	३७३
श्रिवस	५७२
श्रुतयशस्	६५८
श्रेढि	६३१
श्रेणि	६३४
श्रोणि	६३४
श्रोत्र	४५१
श्लक्ष्ण	१८६
श्लिकु	७३६
श्लेष्मन्	६११
श्लेमातक	८३
श्वन्	६०२
श्वफल्क	२६
श्वभ्र	३६६
श्वयस्	६५५
श्वयीचि	६२७
श्वसुर	४२६
श्वित्र	३८८
श्वेत्र	४५२
षण्ड	१६८
षण्ढ	१७६
षष्	६५१
सक्तु	७७३
सक्थि	६६६
सखि	६२५
सगर	४०३
सचिव	५२२
सटा	१३६
सत्र	४५१
सत्य	३६४
सदनि	६८०
सदस्	६५२
सद्मन्	६११
सद्रि	६६२
सधिस्	६६२
सना	६०४
सनि	६०७
सनुतर्	९४७
सप्तन्	६०३
सप्ति	६४६
सभा	३३०, ६०५
सम्	६३७
समञ्जि	६०७
सभया	५६८
सभर	३९७
सभिथ	२२६
सभीक	५०
समीच	११२
समीची	११२
समीरण	१८७
समुद्र	३८८
सय	३६७
सरक	२७
सरका	२७
सरघा	१११
सरट	१४२
सरड्	८७८
सरड	१७१
सरणि	६३८
सरण्ड	१७३
सरण्यु	८०३
सरभा	३४७
सरयु	८०३
सरयू	८०३
सरल	४६५
सरस्	६५२
सरसर	१४
सरासर	१६
सरि	६०६
सरित्	८८७
सरिर	४१२
सरीमन्	६१८
सरीसृप	१८
सर्जू	८२६
सर्जूर	४२७
सर्प	२६६
सर्पिस्	६८६

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक
सर्ण्ण	१८२	सा	६०५	सिव	५	सुरुङ्गा	१०८
सर्म	३३८	साक्षात्	८८२	सिवन	२७३	सुरुसुर	१७
सर्व	५०५	सात्मन्	६१६	सिवस	५७२	सुवन	२७४
सर्षप	३१३	सादि	६१८	सिवाकु	७५३	सुवर्चला	४७४
सलसल	१४	साधन्त	२२१	सिंह	५८८	सुवर्चस्	६५२
सलिल	४१२	साधयन्त	२२१	सिंहल	४७४	सुवसथ	२३३
सल्लकी	२७	साधयन्ती	२२१	सीता	२०३	सुविदत्र	४५७
सल्व	५१०	साधु	१	सीम्	६४१	सुष्ठु	७३२
सव्रन	२७४	सानसि	७०६	सीम	३४३	सुस्नयु	७४१
सवीमन्	६१८	सानु	१	सीमन्	६१५	सुस्रोतस्	६७८
सव्य	३५७	सान्द्र	३९६	सीमन्त	२२२	सुह्म	३४०
सव्यष्ठु	८५५	सामन्	६१५	सीमिक	४४	सूकर	४३६
सश्वत्	८८२	सामि	६८७	सीमिका	४४	सूक्ष्म	३४६
सस्य	३५७	साय	३५७	सीर	३९२	सूच	१२१
सहस्	६५२	सायन्	६३६	सीरा	३९२	सूची	१२१
सहसान	२७९	सारङ्ग	९९	सीस	५७७	सूत	२०३
सहस्र	३८७	सारथि	६७०	सु	७४३	सूत्र	४४६
सहान्य	३८१	सारस	५७०	सुक	२२	सूना	२६३
सहिर	४१२	सार्त्र	४४७	सुख	८७	सूनु	७८८
सहुरि	६९९	सार्थ	२३०	सुगेष्णा	१९९	सूप	२९७
सहोर	४३३	साल्व	५१०	सुत	२०३	सूम	३४०
सह्म	३५७	सास्ना	२५९	सुतपस्	६५२	सूर	३८८
सह्	३८७	साहि	६१८	सुदेष्णा	१९९	सूरत	२०४
संकसुक	५२	सिकता	२०८	सुनफा	३१६	सूरथ	२३१
संगीथ	२३१	सिक्थ	२२७	सुनीथ	२२७	सूरि	६९३
संचक्षम्	६९९	सित	२०३	सुन्द	२४०	सूर्प	२९८
संचचक्षुस्	१००१	सिध्म	३४०	सुन्दर	३९७	सूर्मि	६८९
संचाकु	७५४	सिध्र	३८८	सुप्रतीक	५०	सूर्मी	३४६
संध्या	३५९	सिन	२६२	सुमनस्	६७६	सूष	५४२
संपाति	६१८	सिन्दूर	४३०	सुम्न	२६६	सृक	२२
संयद्वर	४४४	सिन्धु	७१७	सुयशस्	६५८	सृका	२२
संवत्सर	४३९	सिम	३४३	सुर	५, ३८८	सृक्कन्	६०७
संवसथ	२३३	सिमीक	४४	सुरण	२७३	सृगाल	४७८
संश्ववत्	८८२	सिरा	३८८	सुरत	२०१	सृजि	६०९
सस्तवान	२७६	सिलिसिल	१७	सुरा	३८८	सृणि	६३५
संस्पर्शान	२७६	शिलीशिल		सुरिक	४५		

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक
सृणीक	५०	स्थण्डिल	४८४	स्फिर	४१७	हनुष	५५७
सृणीका	५०	स्थपुट	१५५	स्फिवि	७०६	हनूष	५६०
सृत्वन्	९०६	स्थल	४७३	स्फुलिङ्ग	१०२	हन्तु	७७३
सृत्वरी	९०६	स्थलि	६०७	स्फुलिङ्गा	१०२	हम्मा	३२७
सृदाकु	७५६	स्थव	५१८	स्यन्दन	२६६	हयि	६०६
सृपाट	१४६	स्थवि	७०६	स्यमीक	४६	हयुषा	५५७
सृपाटी	१४६	स्थविर	४१७	स्यमीका	४६	हरणि	६३८
सृप्मन्	९१२	स्थाध	१०९	स्यूम	३४०	हराणक	६८
सृप्र	३८८	स्थाणु	७६८	स्योन	२५८	हराहर	१६
सृप्रा	३८८	स्थामन्	९११	स्योनाक	३७	हरि	६०६
सेचिम	३४९	स्थाय	३५७	स्रज्वन्	९०७	हरिण	१९४
सेतु	७७३	स्थाया	३५७	स्राक्	८७०	हरित्	८८७
सेना	२६२	स्थाल	४७३	स्राट	१४६	हरित	२१०
सैरिभ	३३२	स्थिर	४१६	स्रिणि	६४४	हरिद्रु	७४५
सोनि	६७७	स्थिवि	७०६	स्रुच्	८७१	हरिमन्	९१७
सोम	३८८	स्थुल	४८६	स्रुव	५११	हरिशर्मन्	९११
सोमन्	९११	स्थूणा	१८५	स्रोतस्	९७८	हरीतकी	७९
सौविदल्ल	४६४	स्थूर	४२९	स्व	५१४	हरीमन्	९१७
स्कन्ध	२५१	स्थूरवाकु	७२८	स्वधा	६०२	हरेणु	७७२
स्कन्धस्	९६०	स्थूरा	४२९	स्वन्न	२५८	हर्तृ	८५७
स्तनयित्नु	७९७	स्थूलपृषती	८८४	स्वप्न	२५८	हर्म्य	३६४
स्तबक	२७	स्नय	३६७	स्वयम्	९३४	हर्यत	२०७
स्तम्ब	३२०	स्नात्र	४४६	स्वर्	९४६	हर्षयित्नु	७९७
स्तरी	७११	स्नायु	१	स्वरु	७१६	हर्षुल	४८५
स्तरीमन्	९१८	स्नावन्	९०४	स्वर्ग	९२	हलहल	१४
स्तव	२	स्नुषा	५४२	स्वर्भानु	७८६	हलि	६०७
स्तवि	६०६	स्नुहि	६०९	स्वस्र	८५३	हविस्	९८९
स्तिभि	६१३	स्नेहन्	९००	स्वस्ति	६५०	हष्प	२९९
स्तीर्णि	६३५	स्नेहु	७१६	स्वाति	६२०	हस्त	२००
स्तीर्वि	७०५	स्पर्शानि	२७६	स्वादु	१	हस्र	३८७
स्तुविस्	९९६	स्पृक्का	२६	स्वाहा	६०३	हंस	५६४
स्तूप	२९७	स्पृहयाय्य	३७३	हतु	७९१	हा	६०५
स्तेन	२६८	स्फटिक	३८	हत्नु	८०९	हातु	७७३
स्तोक	२१	स्फवि	७०६	हथ	२२७	हादि	६१८
स्तोम	३३८	स्फार	३८७	हनि	६१८	हानि	६१८
स्त्री	४५०			हनु	७९१		

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक
हान्त्र	४४७	हिरण्य	३८०	हृदिक	४५	होत्रा	४५१
हारहूर	४३०	हिलिहिल	१७	हृषि	६०६	होत्व	५२५
हारीत	२१३	हिंसीन	२८६	हृषीक	४८	होम	३३८
हार्ग	६६	हिंसीर	४१८	हृषु	७२६	होमन्	६११
हार्ष्णि	६३६	हीक	२४	हेतु	७७३	होमिन्	६२७
हिङ्गु	७६०	हुड	१७०	हेम	३४१	होरा	४३४
हिडिम्ब	३२४	हुण्डि	६०८	हेमन्	६११	ह्रस्	६५३
हिण्डि	६०८	हुलुहुल	१७	हेमन्त	२२२	ह्रस्व	५०५
हित	२०१	हूण	१८३	हेलिहिल	१६	ह्लीक	२५
हिन्ताल	४८०	हूर्णि	६३७	हैलिहिल	१६	ह्लीकु	७५०
हिबकु	५७	हृत्वन्	६०६	होतृ	८६३	ह्लीक	२५
हिम	३४१	हृदय	३७०	होत्र	४५१	ह्लीकु	७५०

Aho ! Shrutgyanam

सूत्राणामानुक्रमेणादेशादिविधानम् ।

शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक	शब्द	सूत्रांक
उ	१	तिक	७५-७६	ईच	११८	उट, उड	१५३
अ	२-२०	तक	७७-७८	उच	११९	उद	१५४-१५५
क	२१-२६	ईतक	७९-८०	ऊच	१२०-१२१	उट, ऊट	१५६
अक	२७-३३	आहक	८१	ओच, अश्च	१२२	ऊट	१५७
आक	३४-३७	आतक	८२-८३	इश्च	१२३	एट	१५८-१५९
इक	३८-४५	ख	८४-९०	छ	१२४-१२६	ओट	१६०-१६१
ईक	४६-५०	उख, इख	९१	ज	१२७-१२९	ठ	१६२-१६६
उक	५१-५७	ग	९२-९६	अज	१३०-१३४	अठ	१६७
ऊक	५८-६१	आग	९७	इज	१३५	ड	१६८-१७०
अङ्क	६२-६३	अङ्ग	९८-१०१	अञ्ज	१३६	अड	१७१-१७२
इङ्क	६४	इङ्ग	१०२-१०५	झ	१३७	अण्ड	१७३-१७६
अविङ्क	६५	उङ्ग	१०६-१०८	ट	१३८-१४१	उड	१७७
एलक	६६	घ	१०९-११०	अट	१४२-१४४	उण्ड	१७८
आतृक	६७	अघ	१११	आट	१४५-१४८	ढ	१७९-१८१
आणक	६८-७०	च	११२-११३	इट	१४९	ण	१८२-१८६
आनक	७१-७२	अच	११४-११५	इण्ट	१५०	अण	१८७-१९०
ईनक	७३	आच	११६	ईट	१५१	आण	१९१-१९३
ईधुक, एधुक	७४	इच	११७	अरीट	१५२	कल, खल	४९७
इण	१९४-१९५	तन	२९२-२९३	आलीय	३७७-३७८	खल	४९८
उण	१९६-१९८	स्न	२९४	अन्य	३७९-३८०	बल, वल	४९९-५००
एण्ण	१९९	शसान	२९५	आन्य	३८१	तल, पाल, वाल, वल	५०१
त	२००-२०६	प	२९६-३०३	एण्य	३८२	मल	५०२-५०३
अत	२०७-२०८	अप	३०४-३०७	स्य	३८३	सल	५०४
आत	२०९	आप	३०८	इष्य	३८४	व	५०५-५१४
इत	२१०-२१२	इप	३०९	उष्य	३८५	अव	५१५-५१९
ईत	२१३	ईप	३१०	अध्य	३८६	आव	५२०
उत	२१४	उप	३११	र	३८७-३९६	इव	५२१-५२२
ऊत	२१५-२१६	ऊप	३१२	अर	३९७-४०४	श्व	५२३
ओत	२१७-२१८	षप	३१३	आर	४०५-४११		
अन्त	२१९-२२२	फ	३१४-३१६	इर	४१२-४१७		
उन्त	२२३-२२४	ब	३१७-३२०	ईर	४१८-४२२		
थ	२२५-२३१	अम्ब	३२१-३२३	उर	४२३-४२६		
अथ	२३२-२३५	इम्ब	३२४-३२५	ऊर	४२७-४३०		

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक
ऊथ	२३६
द	२३७-२४०
इद, ईद	२४१
उद	२४२-२४४
अन्द	२४५
इन्द	२४६-२४८
उन्द	२४९
उकुन्द	२५०
ध	२५१
अध	२५२-२५३
वध	२५४-२५५
उध	२५६
अन्ध	२५७
न	२५८-२६८
अन	२६९-२७५
आन	२७६-२७८
असान	२७९-२८१
इन	२८२-२८५
ईन	२८६-२८७
उन	२८८-२९१
आस	५७४-५७५
ईस	५७६-५७७
उस	५७८
टिस, इस	५७९
तस	५८०-५८१
नस	५८२
पास	५८३
अम्बुस	५८५
ह	५८६-५८८
अह	५८९-५९०
आह	५९१-५९२
ऊह	५९३
त्यूह	५९४
ओकह	५९५

शब्द	सूत्रांक
उम्ब	३२६
भ	३२७-३२८
अभ	३२९-३३१
इभ	३३२
उभ	३३३-३३५
अम्भ	३३६
उम्भ	३३७
म	३३८-३४६
अम	३४७-३४८
इम	३४९-३५०
उम	३५१-३५२
ऊम	३५३
एलिम	३५४
ड्रिम	३५५-३५६
य	३५७-३६४
अय	३६५-३७०
अय, उय	३७१
आय	३७२
आय्य	३७३-३७४
इय	३७५-३७६
थि	६६९
अथि	६७०-६७२
इथि	६७३-६७४
अधि	६७५
रधि	६७६
नि	६७७-६७९
अनि	६८०-६८१
अत्नि	६८२
इनि	६८३
उनि	६८४
मनि	६८५
दुभि	६८६
मि	६८७-६९०
अयि	६९१
रि	६९२-६९५

शब्द	सूत्रांक
एर	४३१-४३२
ओर	४३३-४३४
कर	४३५-४३६
तर	४३७-४३८
सर	४४०
वर	४४१-४४४
एवर, अङ्कर	४४५
त्र	४४६-४५५
अत्र	४५६-४५८
इत्र	४५९-४६०
उत्र	४६१
ल	४६२-४६४
अल	४६५-४७४
आल	४७५-४८०
इल	४८१-४८४
उल	४८५-४८७
ऊल	४८८-४९१
एल	४९२
ओल	४९३-४९५
कल	४९६
अङ्गु	७६१
अट्टु	७६२
आट्टु	७६३
इष्टु	७६४
ड्डु	७६५-७६६
आण्डु, कण्डुक	७६७
णु	७६८-७६९
अणु	७७०
इणु	७७१
एणु	७७२
तु	७७३-७७८
अतु	७७९-७८०
यतु	७८१
आतु	७८२

शब्द	सूत्रांक
उव	५२४
त्व	५२५
इत्व	५२६
श	५२७-५३०
अश	५३१-५३२
आश	५३३-५३४
इश	५३५-५३७
उश	५३८
पिश, तश	५३९
ष	५४०-५४३
अष	५४४
आष	५४५
इष	५४६-५५२
ईष	५५३-५५६
उष	५५७-५५९
ऊष	५६०-५६१
म्ष	५६२
माष	५६३
स	५६४-५६८
अस	५६९-५७३
उरु	८१७-८१८
ऊरु	८१९
लु	८२०-८२१
आलु	८२२-८२३
अलु	८२४
शु	८२५
सु	८२६
अक्षु	८२७-८२८
ऊ	८२९-८४४
ड्रू	८४५
दू	८४६
बू	८४७
अन्धू	८४८
आगू	८५०
एरू	८५१

Aho ! Shrutgyanam

शब्द	सूत्रांक
अक्ष	५९६-५९७
आ	५९८-६०५
इ	६०६-६२२
कि	६२३
अकि	६२४
अखि	६२५
इखि	६२६
ईचि	६२७-६२९
अटि	६३०
ठि	६३१-६३३
णि	६३४-६३७
अणि	६३८-६४३
इणि	६४४
श्रीणि	६४५
ति	६४६-६५२
अति	६५३-६५९
अस्ति	६६०-६६१
आति	६६२-६६४
अन्ति	६६५
उन्ति	६६६
इति	६६७-६६८
तद्	८९६
सद्	८९७-८९८
मद्	८९९
अन्	९००-९०२
तन्	९०३
वन्	९०४-९१०
मन्	९११-९१६
इमन्	९१७
ईमन्	९१८
इन्	९१९-९२६
मिन्	९२७
भुक्षिन्	९२८
त्रिन्	९२९

शब्द	सूत्रांक
त्रि	६९६
अत्रि	६९७
अरि	६९८
उरि	६९९-७००
लि	७०१
अलि	७०२
ओकुलि मलि	७०३
वि	७०४-७०६
सि	७०७
असि	७०८
नीस	७०९
हि	७१०
ई	७११-७१५
उ	७१६-७४८
कु	७४९-७५१
आकु	७५२-७५४
अङ्कु	७५५
दाकु	७५६
स्वाकु	७५७
गु	७५८-७६०
अत्रिन्	९३०
क्विप् [प्]	९३१
क्विप् [भ्]	९३२
म्	९३३
अम्	९३४-९३७
दम्	९३८
इम्	९३९
ईम्	९४०-९४१
तुम्	९४२
क्विप् [र्]	९४३-९४४
अर्	९४५-९४७
उर्	९४८
इव्	९४९

शब्द	सूत्रांक
दु	७८३
धु	७८४-७८५
नु	७८६-७९०
तु नु	७९१-७९२
अनु	७९३
आनु	७९४
रदानु	७९५
अकु	७९६
इत्नु	७९७
इपु	७९८
बु	७९९
अभु	८००
यु	८०१-८०२
अयु अन्यु	८०३
अन्यु	८०४
त्यु	८०५
रु	८०६-८११
अरु	८१२
आरु	८१३-८१६
क्विप् [श्]	९५०
क्विप् [ष्]	९५१
अस्	९५२-९७६
जस् थस्	९७७
तस्	९७८
नस्	९७९-९८०
पस्	९८१
पस् फस्	९८२
सम्	९८३
तशस्	९८४
अनस्	९८५

शब्द	सूत्रांक
ऋ	८५२-८५६
तृ	८५७-८६५
ए	८६६
ओ	८६७
औ	८६८
क्	८६९-८७०
च्	८७१
वच्	८७२
अज्	८७३-८७४
इज्	८७५-८७६
अट्	८७७
अड्	८७८
अविड्	८७९
छिप् [छुड्]	८८०
अत्	८८१-८८५
अवत्	८८६
इत्	८८७-८८८
उत्	८८९-८९०
ऋत्	८९१-८९२
ऋथ्	८९३
अद्	८९४.८९५
रमस्	९८६
उनस् ऊनस्	९८७
आस्	९८८
इस्	९८९-९९६
उस्	९९७-१००१
उम्स्	१००२
अ आ ऐस्	१००३
ऐस्	१००४
ओस्	१००५
क्विप् [ह्]	१००६

Aho ! Shrutgyanam

अथ पञ्चमाध्यायसूचिता गणाः

[१] "पार्श्वादिभ्यः शीङः" ५-१-१३५, **पार्श्वादिगणः–**
पार्श्व, पृष्ठ, उदर, दिग्धसह, इति ४॥

[२] "ऊर्ध्वादिभ्यः कर्तुः" ५-१-३६, **ऊर्ध्वादिगणः–**
ऊर्ध्व, उत्तान, अवमूर्ध्वः, इति ३॥

[३] "भिदादयः" ५-३-१०८, **भिदादिगणः–**
भिदा विदारणम्, छिदा द्वैधीकरणम्, विदा विचारणा, मृजा शरीरसंस्कारः, क्षिया प्रेरणम्, दया अनुकम्पा, रुजा रोगः, चुरा चौर्यम्, पृच्छा प्रश्नः, एतेऽर्थविशेषे; अन्यत्र– भित्तिः कौड्यम्, छित्तिश्चौर्यादिकरणाद् राजापराधः, इत्यादि । तथा ऋ-कृ-हृ-धृ-तृभ्यः संज्ञायां वृद्धिश्च– आरा शस्त्री, ऋतिरन्या; कारा गुप्तिः, कृतिरन्या; हारो मानं, हृतिरन्या; धारा प्रपातः खड्गादेर्वा, धृतिरन्या; तारा ज्योतिः, तीर्णिरन्या । तथा गुहि-कुहि-वशि-वपि-तुलि-क्षपि-क्षिम्यश्च संज्ञायाम्– गुहा पर्वतकन्दरा ओषधिश्च, गूढिरन्या; कुहा नाम नदी, कुहना अन्या; वशा स्नेहनद्रव्यं धातुविशेषश्च, उष्टिरन्या; वपा मेदोविशेषः, उप्तिरन्या; एवं– तुला उन्मानम्, क्षया रात्रिः, क्षिया आचारभ्रंशः । तथा संज्ञायामेव रिखि-लिखि-शुभि-सिधि-मिधि-गुधिभ्यो गुणश्च– रिखिर्लिखेः समानार्थः सौत्रो धातुः, रेखा राजिः, लेखा सैव, शोभा कान्तिः, सेधा सत्त्वम्, मेधा बुद्धिः, गोधा प्राणिविशेषो दोस्त्राणं च ।२७। भिदादिराकृतिगणस्तेन चूडेत्यादि सिद्धम् ॥

[४] "लिहादिभ्यः" ५-१-५०, **लिहादिगणः–**
लेहः, शेषः, सेवः, देवः, मेघः, देहः, प्ररोहः, न्यग्रोधः, कोपः, गोपः, सर्पः, नर्तः, दर्शः, एषु नाम्युपान्त्यलक्षणं कं दृशेस्तु वा शं बाधते । अनिमिष इति बहुलाधिकारात् कोऽपि भवति । श्वपचः पारावतः कद्वदः, यद्वदः, अरीन् व्रणयतीत्यरिव्रणा शक्तिः, जारभरा, कन्यावरः, रघूद्वहः, रसावहः, एष्वणं बाधते । बहुवचनमाकृतिगणार्थम्, तेन– नदी, भषी, प्लुवी, गरी, चरी, तरी, दरी, स्तरी, सूदी, देवी, सेवी, चोरी, गोही, एतेऽजन्ता गौरादौ वेदितव्याः ।३५॥

[५] "आयुधादिभ्यो धृगोऽदण्डादेः" ५-१-९४, **आयुधादिगणः–**
धनुर्धरः, भूधरः, जलधरः, विषधरः, शशधरः, विद्याधरः, श्रीधरः, जटाधरः, पयोधरः ९। बहुवचनाद् यथादर्शनमन्येभ्यो भवति ॥

[६] **दण्डादिगणः–** दण्ड, कुण्ड, काण्ड, कर्ण, सूत्र, छत्र ६॥

[७] "नन्द्यादिभ्योऽनः" ५-१-५२, नन्द्यादयो नन्दनरमणेत्यादि-नामगणशब्देभ्योऽपोद्धृत्य वेदितव्याः, स च सप्रत्ययपाठो विशिष्टविषयार्थो रूपनिग्रहणार्थश्च ।
नन्द्यादिगणः–
नन्दि-वाशि-मदि-दूषि-साधि-वर्धि-शोभि-रोचिभ्यो ण्यन्तेभ्यः संज्ञायाम्– नन्दनः, वाशनः, मदनः, दूषणः, साधनः, वर्धनः, शोभनः, रोचनः । सहि-रमि-दमि-रुचि-कृति-तपि-तृदि-दहि-यु-पू-लूभ्यः संज्ञायामेवाण्यन्तेभ्यः– सहते सहनः, एवं– रमणः, दमनः, विरोचनः, विकर्तनः, तपनः, प्रतर्दनः, दहनः, यवनः, पवनः, लवणः, निपातनाण्णत्वम् । समः क्रन्दि-कृषि-हृषिभ्यः संज्ञायामेव– संक्रन्दनः, संकर्षणः, संहर्षणः । कर्मणो दमि-अर्दि-नाशि-सूदिभ्यः– सर्वदमनः, जनार्दनः, वित्तनाशनः, मधुसूदनः; असंज्ञायामपि– रिपुदमनः, कुलदमनः, परार्दनः, रोगनाशनः, अरिसूदनः । नर्दि-भीषि-भूषि-दृपि-जल्पिभ्यः– नर्दयति नर्दनः, बिभीषयते बिभीषणः, भूषयति भूषणः, दृप्यति दर्पणः, जल्पति जल्पनः ।३१॥

Aho ! Shrutgyanam

[८] "रम्यादिभ्य: कर्तरि" ५-३-१२६, **रम्यादिगण:–**
रम-कम-नन्द-ह्लाद-वक्ष्र-शाति ६। बहुवचनं प्रयोगानुसरणार्थम् ।।

[९] "भुजि-पत्यादिभ्य: कर्मापादाने" ५-३-१२८, **भुज्यादिगण:–**
कर्मणि– भुज् भोजनम्, निरद् निरदनम्, आच्छादि आच्छादनम्, अवस्रावि अवस्रावणम्, अवसिच् अवसेचनम्, अस् असनम्, वस् वसनम्, आभृग् आभरणम् ८।।

[१०] **पत्यादिगण:–**

अपादाने– प्रपत् प्रयतन:, स्कन्दि प्रस्कन्दन:, श्च्योति प्रश्च्योतन:, स्रु प्रस्रवण:, झृष् निर्झरण:, धृ शङ्खोद्धरण:, दाग् अपादानम् ७। बहुवचनं प्रयोगानुसरणार्थम् ।।

[११] "वर्षादय: क्लीबे" ५-३-२९, वर्षादय: शब्दा अलन्ता: क्लीबे यथादर्शनं भावाकर्त्रोर्निपात्यन्ते, नपुंसके क्तानड्निवृत्त्यर्थं वचनम्। **वर्षादिगण:–**
वर्षम्, भयम्, धनम्, ततम्, खलम्, पदम्, युगम्, अत्र रथाङ्ग-कालविशेष-युग्मेषु अल् गत्व-गुणाभावौ च निपातनात्। अनपुंसकक्तस्तु असरूपविधिना भवत्येव– वृष्यते स्म वृष्टं मेघेन, भीतं बटुना ।।७।।

[१२] "मूलविभुजादय:" ५-१-१४४, मूलविभुजादय: कप्रत्ययान्ता नियतार्थधातूपपदा यथाशिष्टप्रयोगं निपात्यन्ते। **मूलविभुजादिगण:–**
मूलानि विभुजति मूलविभुजो रथ:, उर्व्यां रोहति उर्वीरुहो वृक्ष:, कौ मोदते कुमुदं `रवम्, महीं धरति महीध्र:, उषसि बुध्यते उषर्बुधोऽग्नि:, अपो बिभर्ति अभ्रं मेघ:, सरसि रोहति सरसिरुहं पद्मम्, नखानि मुञ्चन्ति नखमुचानि धनूंषि, काकेभ्यो गूहनीया: काकगुहास्तिला:, धर्माय प्रददाति धर्मप्रद:, एवं– कामप्रद:, शब्दप्रद:, शास्त्रेण प्रजानाति शास्त्रप्रज्ञ: ।१४।।

[१३] "स्थादिभ्य: क:" ५-३-८२, **स्थादिगण:–**
प्रतिष्ठन्त्यस्मिन् प्रस्थ: सानु:, संतिष्ठन्तेऽस्यामिति संस्था, व्यवतिष्ठन्तेऽनयेति व्यवस्था, प्रस्नान्त्यस्मिन्निति प्रस्न:, प्रपिबन्त्यस्यामिति प्रपा, विध्यत्यनेनेति विध:, विहन्यतेऽनेनास्मिन् वा विघ्न:, आयुध्यन्तेऽनेनेत्यायुधम्, आध्यायन्ति तमिति आढ्य: १०।।

[१४] "ज्ञानेच्छार्चार्थ-ञीच्छील्यादिभ्य: क्त:" ५-२-९२, **शील्यादिगण:–**

शीलितो रक्षित: क्षान्त आक्रुष्टो जुष्ट उद्यत: ।
संयत: शयितस्तुष्टो रुष्टो रुषित आशित: ।।१।।
कान्तोऽभिव्याहृतो हृष्टो हृप्रस्तृप्त: सृत: स्थितो भृत: ।
अमृतो मुदित: पूर्त: शक्तोऽक्त: श्रान्त-विस्मितौ ।।२।।
संरब्धाऽऽरब्ध-दयिता दिग्ध: स्निग्धोऽवतीर्णक: ।
आरूढो मूढ आयस्त: क्षुधित-क्लान्त-व्रीडिता: ।।३।।
मत्तश्चैव तथा क्रुद्ध: श्लिष्ट: सुहित इत्यपि ।
लिप्त-दृष्टौ च विज्ञेयौ सति लग्नादयस्तथा ।।४।।४६।
बहुलाधिकाराद् यथाभिधानमेभ्यो भूतेऽपि क्तो भवति, तथा च तद्योगे तृतीयासमासोऽपि सिद्ध: । अन्ये तु तक्रकौण्डिन्यन्यायेन वर्त्तमाने क्तं भूते क्तस्य बाधकमाहु: ।।

[१५] "क्रुत्-सम्पदादिभ्य: क्विप्" ५-३-११४, **क्रुधादिगण:–**
क्रुध्, युध्, क्षुध्, तृष्, त्विष्, रुष्, रुज्, रुच्, शुच्, मुद्, मृद्, गृ, त्रै, दिश्, सृज् १५। क्रुधादिराकृतिगण: ।

[१६] **संपदादिगण:–**

संपद्, विपद्, आपद्, व्यापद्, प्रतिपद्, संसद्, परिषद्, उपसत्, उपनिषद्, निवित्, प्रशी:, आशी:, प्रतिश्रुत्, उपस्तुत्, परिश्रुत्, उपानत्, प्रावृट्, विप्रुट्, नीवृत्, उपावृत्, संयत्, इण:– समित्, उपभृत्, इन्धे: समित् २४। संपदादिराकृतिगण: ।।

[१७] "भ्यादिभ्यो वा" ५-३-११५, **भ्यादिगण:–**
भी:, भीति:; ह्री:, ह्रीति:; लू:, लूति:; भू:, भूति:; कण्डू:, कण्डूया; कृत्, कृति:; भित्, भित्ति:; छित्, छित्ति:; तुत्, तुत्ति:; दृक्, दृष्टि:; नशे:– नक्,

Aho ! Shrutgyanam

नष्टिः; युजेः– युक्, युक्तिः; ज्वरेः– जूः, जूर्तिः; त्वरेः– तूः, तूर्तिः; अवतेः– ऊः, ऊतिः; स्रिवेः– स्रूः, स्रूतिः; भवतेः– भूः, भूतिः; नौतेः– नुत्, नुतिः; शकेः– शक्, शक्तिः १६।।

[१८] "व्यतिहारेऽनीहादिभ्यो ञः" ५-३-११६, **ईहादिगणः–**
व्यतीहा, व्यतीक्षा, व्यतिपृच्छा, व्यवहृतिः ४। व्यत्युक्षेत्यप्येके ।।

[१९] "ब्रह्मादिभ्यः" ५-१-८५, **ब्रह्मादिगणः–**
ब्रह्म, कृत, शत्रु, वृत्र, भ्रूण, बाल, शश, गो ८। बहुवचनाद् यथादर्शनमन्येऽपि ब्रह्मादिषु द्रष्टव्याः ।।

[२०] "क्लेशादिभ्योऽपात्" ५-१-८१, **क्लेशादिगणः–**
क्लेश, तमस्, दुःख, ज्वर, दर्प, दोष, रोग, वात-पित्त-कफ, विषाग्निदर्प ९। बहुवचनाद् यथादर्शनमन्येऽपि ।।

[२१] "वा ज्वलादि०" ५-१-६२, **ज्वलादिगणः–**
ज्वल, कुच, पत्लु, पथे, क्रथे, मथे, षद्लृं, बुध, टुवमू, भ्रमू, क्षर, चल, जल, टल, टुल, ष्ठल, हल, णल, बल, पुल, कुल, पल, फल, शल, हुल, कुश, कस, रुहं, रमिं, षहि ३१ वृत् ज्वलादिः ।।

[२२] "ग्रहादिभ्यो णिन्" ५-१-५३, **ग्रहादिगणः–**
ग्राही, स्थायी, उपस्थायी, मन्त्री, संमर्दी, उपावाभ्यां रुधः– उपरोधी, अवरोधी, अपराधः– अपराधी, उदः सहि-दहि [सि]-भासिभ्यः– उत्साही, उद्दाही [सो], उद्भासी, नेः श्रु-शी-विश-वस-वप-रक्षिभ्यः– निश्रावी, निशायी, निवेशी, निवासी, निवापी, निरक्षी, नञो व्याहृ-संव्याहृ-संव्यवहृ-याचि-व्रज-वद-वसिभ्यः– अव्याहारी, असंव्याहारी, असंव्यवहारी, अयाची, अव्राजी, अवादी, अवासी, नञः स्वरान्तादचित्तवत्कर्तृकात्– अकारी घर्मस्य बालातपः, अहारी शीतस्य शिशिरः, व्यभिभ्यां भुवोऽतीते– विभावी, अभिभावी, विपरिभ्यां भुवो ह्रस्वश्च वा– विभावी, विभवी, परिभावी, परिभवी, वेः शीङ्–श्रिगो देशे ह्रस्वश्च– विशयी विषयी च प्रदेशः ३४। ग्रहादिराकृतिगणः ।।

इति पञ्चमाध्यायगता गणाः ।।

Aho ! Shrutgyanam

Aho ! Shrutgyanam